मंथन

2019

सम्पादक :

राजवन्त राव

प्रदीप कुमार राव

प्रकाशक :

महोत्सव समिति गोरखपुर

मंथन 2019

सर्वाधिकार : सुरक्षित

प्रकाशन वर्ष : जनवरी, 2019

अध्यक्ष आयोजन समिति :
अमित गुप्ता, मण्डलायुक्त, गोरखपुर

उपाध्यक्ष आयोजन समिति :
के. विजयेन्द्र पाण्डियन, जिलाधिकारी, गोरखपुर

सचिव आयोजन समिति :
रविन्द्र कुमार, क्षेत्रीय पर्यटन अधिकारी, गोरखपुर

सम्पादक मण्डल :
प्रो. हर्ष कुमार सिन्हा
डॉ. अविनाश प्रताप सिंह
प्रो. रविशंकर सिंह
प्रो. विनोद कुमार सिंह
डॉ. रामप्यारे मिश्र
डॉ. महेन्द्र कुमार सिंह

प्रकाशक :
महोत्सव समिति
गोरखपुर

मुद्रक :
मोती पेपर कनवर्टर्स, बेतियाहाता, गोरखपुर

Manthan-2019
Chief Editor : Prof. Rajawant Rao
Editor : Dr. Pradeep Kumar Rao

स्वस्ति

गोरखपुर नगर पर केन्द्रित पत्रिका का दूसरा अंक आपके हाथ में देते हुए हमें खुशी का अनुभव हो रहा है। यह पत्रिका गोरखपुर नगर के भौतिक एवं सांस्कृतिक विकास पर केन्द्रित है। विगत वर्ष की भाँति इस वर्ष भी यह गोरखपुर महोत्सव के अवसर पर प्रकाशित हो रही है। कहने की आवश्यकता नहीं किसी भी नगर का महोत्सव, मात्र अतीत के गौरवगान के लिए नहीं होता अपितु नगर के वर्तमान भौतिक एवं सांस्कृतिक कलेवर के मूल्यांकन का भी होता है। पिछले वर्ष समाज के विभिन्न वर्गों के प्रतिनिधियों द्वारा खुले मंच से नगर के विभिन्न आयामों की समस्याओं, चुनौतियों तथा विकास को लेकर चर्चा भी हुई थी। पिछले वर्ष ही सुधीजन द्वारा यह अपेक्षा की गयी थी कि एक वर्ष के पश्चात आकलन करना चाहिए कि हम कितना आगे बढ़े हैं। इस तरह एक वर्ष के मूल्यांकन के साथ यह मंथन पत्रिका आपके हाथ में है।

सभ्यता का प्रारम्भ नगर–जीवन से ही माना जाता है। यद्यपि भारतीय संस्कृति की त्रिवेणी आरण्यक, ग्राम्य एवं नागर जीवन की धाराओं से सम्पन्न होती है तथापि सभ्यता के विकास के साथ ही नगर समस्त मूल्यवान उपादानों के केन्द्र हो गये। राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक, शिल्प एवं कला आदि के केन्द्र के रूप में नगर विकसित हुए। भारत में नगर–जीवन का प्रारम्भ हड़प्पा सभ्यता से माना जाता है। हड़प्पा सभ्यता के नगरों की आधारभूत संरचनाएँ आधुनिक नगरों के सन्निकट हैं। ऋग्वेद एवं ब्राह्मण ग्रन्थों में पुरों का उल्लेख मिलता है। यजुर्वेद संहिता में महापुरों का भी उल्लेख मिलता है। तैत्तिरीय संहिता में नगर का उल्लेख मिलता है। इस प्रकार भारत में नागर–जीवन की परम्परा काफी प्राचीन है।

राजस्व एवं भौगोलिक इकाई के रूप में गोरखपुर का अस्तित्व 15वीं शताब्दी से निरन्तरता के साथ दिखायी देता है। कालिंजर के बुन्देला शासक प्रताप रुद्रदेव के सन् 1486 ईस्वी के कालिंजर प्रशस्ति में 'श्री गोरक्षपुर' नाम सबसे पहले देखने को मिला। यह सुविदित तथ्य है कि 9वीं शताब्दी के सन्त महायोगी गोरखनाथ के नाम पर ही इस नगर का नाम गोरखपुर पड़ा। गोरक्षपुर अथवा गोरखपुर नामकरण के पीछे गोरक्षण का तर्क भी दिया जाता है। उल्लेखनीय है कि गोचारण एवं गोरक्षा की परम्परा महायोगी गोरखनाथ के साथ भी जुड़ी है। महायोगी गोरखनाथ के व्यापक प्रसिद्धि एवं जनसाधारण में उनकी लोकप्रियता को देखते हुए उन्हीं के नाम पर गोरखपुर का नाम मानना समीचीन प्रतीत होता है। उल्लेखनीय है कि गोरखपुर की साहित्यिक धारा का प्रारम्भ भी गोरखवाणी से माना जा सकता है। यह आश्चर्जनक है कि भारत की सभी भाषाओं में उनसे सम्बन्धित सामग्री प्राप्त होती है। सन्त गोरखनाथ ने पतंजलि के विच्छिन्न योग–परम्परा को पुनर्जीवित कर इसे आसान बनाकर लोक–जीवन से जोड़ा। हजारी प्रसाद द्विवेदी के शब्दों में 'शंकराचार्य के बाद इतना प्रभावशाली और महिमान्वित महापुरुष भारतवर्ष में दूसरा नहीं हुआ (नाथ सम्प्रदाय, पृ. 16)। बीच में राजनीतिक कारणों से कुछ समय के लिए इस नगर के नाम में परिवर्तन अवश्य हुआ था किन्तु तब भी लोकचेतना में महायोगी गोरखनाथ

के नाम पर प्रचलित नाम गोरखपुर ही प्रचलित रहा।

यह नगर प्राकृतिक एवं वैचारिक दृष्टि से काफी समृद्ध रहा है। हिमालय की उपत्यका में अवस्थित सरयू, अनोमा, रोहिणी, अचिरावती प्रभृति नदियों के जल से अभिसिंचित अश्वत्यन्यगाध, शाल के वनों से सुशोभित तथा शालिपुष्पों से सुवासित गोरखपुर जनपद अपने प्राकृतिक सौन्दर्य एवं वानस्पतिक वैविध्य के कारण मोहक तो है ही साथ ही आध्यात्मिक चिन्तन के कारण अपना उदात्त स्थान रखता है। नगर के मध्य में स्थित रामगढ़ ताल एवं पूर्वी छोर पर कुसम्ही जंगल इस नगर के जीवन–स्रोत हैं। पूरा नगर तालाबों से भरा है। इसे तीसरे दर्जे का हील–स्टेशन भी कहा जाता था।

यद्यपि मुगल काल में गोरखपुर नगर का स्वरूप ग्रहण कर चुका था तथापि अंग्रेजों ने सिविल लाइन्स को विकसित कर, पार्कों, भवनों से सुसज्जित कर इसे आधुनिक स्वरूप दिया। स्वतंत्र भारत में उर्वरक कारखाने की स्थापना ने न केवल इस शहर को पंख दिया अपितु पूरे शहर का मिजाज बदल दिया। उर्वरक कारखाने का पूरा सेट–अप आधुनिक था। उसकी कालोनी, पार्क, गन्तव्य का संकेत करतीं चमचमाती सड़कें, नये तरह के स्पीड–ब्रेकर, बाजार सब कुछ आधुनिक। उर्वरक कारखाने के बन्द होते ही शहर की रफ्तार पुनः मद्धिम हो गयी। वीरबहादुर सिंह जी के मुख्यमंत्री होते ही शहर के विकास को नयी उम्मीद मिली। तारामण्डल के विकास की राह उन्होंने ही खोली। सर्किट हाउस, पर्यटन विभाग, वेधशाला, पार्क आदि के विकास की योजना उन्हीं के समय की है। काफी काम उनके समय में हुआ। उनके अवसान के पश्चात विकासशील योजनाएँ आधी–अधूरी रह गयीं और विकास की रफ्तार मद्धिम पड़ गयी।

पिछले एक वर्ष से गोरखपुर नगर के विकास की रफ्तार तेज हो गयी है। बेहतर संचार व्यवस्था किसी भी शहर के विकास की पहली शर्त होती है। गोरखपुर वायु, ट्रेन एवं सड़क मार्ग सेवा में बेहतर हुआ है। वायुसेवा से गोरखपुर देश के सभी महत्त्वपूर्ण शहरों से जुड़ चुका है। गोरखपुर से दिल्ली, बंगलूरू, सूरत, लखनऊ की हवाई सेवा शुरू हो चुकी है। जनवरी माह के अन्त तक मुम्बई एवं कलकत्ता की हवाई सेवा भी शुरू हो जायेगी। गोरखपुर आने एवं जाने वाले यात्रियों की संख्या काफी बढ़ गयी है। इसके साथ ही पूरा नगर चतुर्भुजी सड़कों से जुड़ गया है। असम, नेपाल, देवरिया, बिहार जाने वालों के लिए व्यवस्था है कि वे बिना शहर में प्रवेश किये बाहर ही बाहर अपने गन्तव्य तक पहुँच जायँ। शहर के चारों ओर रिंग रोड बन रही है। शहर के भीतर से भी फोरलेन गुजर रही है। शहर के अन्य भागों में अतिक्रमण हटाकर सड़कें चौड़ी की जा रही हैं। नन्दानगर एवं कौआबाग के रेलवे क्रासिंग पर अण्डरपास से एक बड़े नागरिक समाज को काफी सुविधा मिली है। रामगढ़ ताल की महत्त्वाकांक्षी योजना पूरा होने के कगार पर है। पूरे ताल पर रिंग रोड बना दी गयी है। ताल में गिरने वाले नालों पर ट्रीटमेण्ट प्लाण्ट लगाया गया है, जिससे ट्रीटमेण्ट के उपरान्त पानी रामगढ़ ताल में गिरता है। ताल के किनारे बोटिंग प्वाइण्ट बना है जिसका आनन्द शहरवासी उठाते हैं। ताल के किनारे–किनारे सर्किट हाउस वाली सड़कों पर चलते हुए बम्बई के मैरिन–ड्राइव पर चलने का एहसास होता है।

गोरखपुर शहर की सबसे महत्त्वाकांक्षी योजना चिड़ियाघर है जिसके जून से खुल जाने की

उम्मीद है। एम्स का निर्माण तेजी से हो रहा है। जून से ओ.पी.डी. शुरू होने की उम्मीद है। बी.आर.डी. मेडिकल कॉलेज की सुविधाएँ बढ़ी हैं इसे आधुनिक उपकरण उपलब्ध हुए हैं। इस मेडिकल कॉलेज ने सरकार की दृढ़ इच्छाशक्ति के कारण इन्सेफेलाइटिस जैसी जानलेवा बीमारी पर काफी हद तक नियंत्रण किया है। उर्वरक कारखाने का निर्माण भी तेजी से हो रहा है। इसके पूरा होते ही गोरखपुर नगर की पुरानी आभा लौट आने की उम्मीद है। इससे रोजगार एवं आर्थिक विकास के साथ–साथ शहर का मिजाज भी बदल जायेगा। गोरखपुर शहर को ओ. डी.एफ. घोषित किया जा चुका है। बिजली इतनी पर्याप्त रह रही है कि मुख्य बाजारों में अब जनरेटर की आवाज सुनायी नहीं देती। जनरेटर और इन्वर्टर बेमतलब हो गये हैं। सफाई व्यवस्था पहले से बहुत बेहतर हुई है। डोर–टू–डोर कूड़ा कलेक्शन का काम शुरू हो गया है। अण्डर ग्राउण्ड विद्युत तारों एवं सीवेज तथा नाली का निर्माण कार्य भी अपनी तेजी पर है।

नगर को साफ–सुथरा रखने में सरकार का प्रयत्न सराहनीय है किन्तु सक्रिय नागरिक–सहयोग के बगैर स्वच्छ नगर के अभीष्ट को प्राप्त नहीं किया जा सकता। स्वच्छता का अभियान आध्यात्मिक प्रयत्न के समान होता है। सरकार एवं नागरिक समाज दोनों के प्रयत्न से ही स्वच्छता का अभियान परवान चढ़ेगा।

गोरखपुर जनपद के वनटांगिया लोगों का एक बहुत बड़ा समाज वर्षों से अपनी अस्मिता को लेकर बेचैन और आन्दोलनरत था। वनटांगिया अधिवास स्थलों को राजस्व ग्राम का दर्जा देकर सरकार ने बहुत बड़ा काम किया है। सरकार ने इन समाज के लोगों को नयी पहचान दी है। अब इन गाँवों में बिजली, पानी की सुविधाओं के साथ–साथ पाठशालाएँ भी हैं जिनमें उनके बच्चे पढ़ रहे हैं। सरकार उनकी दक्षता एवं कौशल को विकसित करने, उनके द्वारा निर्मित शिल्प का मार्केटिंग करने के लिए प्रयत्नशील है। विगत लगभग दस वर्षों से उनके बच्चों के बीच दीपावली मनाने की अपनी विशिष्ट परम्परा को विगत वर्ष उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री बनने के पश्चात भी महन्त योगी आदित्यनाथ जी ने दीपावली उन्हीं समाजों के साथ मनाकर समाज में बड़ा सन्देश देने का कार्य किया।

गोरखपुर नगर में किसी ओर से प्रवेश कीजिए दूधिया रोशनी में नहाये सड़क के दोनों ओर बिजली के खम्भे किलोमीटरों तक तोरणद्वार बनाये आपका स्वागत करते नजर आते हैं।

नगर के सभी चौराहों का चौड़ीकरण हुआ है। महापुरुषों की मूर्तियाँ छत्रयुक्त एवं सुसज्जित हुई हैं। कुछ चौराहे फव्वारों से युक्त हैं जिनपर पड़ती रंग–बिरंगी रोशनी खूबसूरती बढ़ाती है। गोरखपुर नगर में जितनी भी योजनाएँ चल रही हैं उनके 2019 के अन्त तक पूर्ण होने की आशा की जाती है। यानि हम उम्मीद कर सकते हैं कि अगले गोरखपुर महोत्सव तक गोरखपुर नगर स्मार्ट नगर का स्वरूप ग्रहण कर लेगा।

राजवन्त राव
प्रदीप कुमार राव

मंथन

CONTENTS

Articles		Pages
1.	बदल रहा है गोरखपुर	1
2.	गोरखपुर परिक्षेत्र के कतिपय स्थल नाम - एक विवेचन - **प्रो. विपुला दूबे**	5
3.	हमारा गोरखपुर - **सुबोध कुमार मिश्र**	10
4.	छप्परफाड़ विकास के गवाह बने हम - **अजय कुमार सिंह एवं प्रदीप कुमार राव**	17
5.	नया गोरखपुर: सड़कें ही नही गोरखपुर वासियों की मानसिकता में भी आ रहा है बदलाव - **महेन्द्र कुमार सिंह**	34
6.	जागरुकता, सक्रियता बढ़ी तो साफ दिखने लगा शहर - **अजय श्रीवास्तव**	37
7.	गोरखपुर में पर्यटन की सम्भावनाएं एवं विकास - **संदीप कुमार श्रीवास्तव**	41
8.	1857 के महाविद्रोह में गोरखपुर - **प्रो. हरिशंकर श्रीवास्तव**	46

9. पिपराइच चीनी मिल से गुलजार हो रहे बाजार, आबाद होंगे किसान-नौजवान
- **वेद प्रकाश पाठक** 49

10. गोरखपुर का औद्योगिक विकास एवं सम्भावनाएँ
- **एस.के. अग्रवाल** 53

11. बी.आर.डी. मेडिकल कॉलेज, गोरखपुर
- **डॉ. गणेश कुमार** 57

12. इन्सेफ्लाईटीस पर विजय की ओर योगी सरकार का वार, दिवा स्वप्न हुआ साकार
- **डॉ. राज किशोर सिंह** 60

13. आधी सदी का कहर- एन्सेफ्लाइटिस
- **डॉ. आर. एन. सिंह** 63

14. गोरखपुर के वनटांगिया समुदाय : इतिहास, संघर्ष और सौगात
- **डॉ. अविनाश प्रताप सिंह** 70

15. सँवरते गोरखपुर का पर्यावरण
- **प्रो. विनय कुमार सिंह** 80

16. आजादी के बाद का सबसे बड़ा उपहार है गोरखपुर एम्स
- **प्रो. हर्ष कुमार सिन्हा** 86

17. गो-रक्षा में गोरखपुर का योगदान
- **प्रसून कुमार मल्ल** 90

18. गोरखपुर- साहित्य, कला और संस्कृति में गढ़ते नये सोपान
- **शैवाल शंकर श्रीवास्तव** 96

19. गोरखपुर नगर में स्थापित नया ज्ञान केन्द्र : श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ
- **प्रो. रविशंकर सिंह** 104

20. आंतरिक सुरक्षा चुनौतियां : गोरखपुर परिक्षेत्र की भूमिका तथा संभावनाएं
- **प्रो. विनोद कुमार सिंह, डॉ. प्रवीण कुमार सिंह, सुमित गुप्ता** 110

21. खेल
- **चन्द्रविजय सिंह** 114

22. राष्ट्रीय सेवा योजना, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर
- **डॉ. केशव सिंह** 116

23. गोरखपुर का सांस्कृतिक परिदृश्य (वर्ष 2018 के परिप्रेक्ष्य में)
- **डॉ. वेदप्रकाश पाण्डेय** 121

24. गोरखपुर की अमूल्य धरोहर है - दीक्षा एवं दीक्षान्त
- **रामप्यारे मिश्र** 126

25. सरयूपार-क्षेत्र के प्राचीन कलावशेष
- **माता प्रसाद त्रिपाठी** 130

26. पूर्वी उत्तर प्रदेश की भौगोलिक एवं धार्मिक पहचान के पुरातात्त्विक सन्दर्भ
- **प्रो. विपुला दुबे** 134

27. गोरखपुर जनपद के ग्राम-नाम : एक सांस्कृतिक दृष्टि
- **ध्यानेन्द्र नारायण दूबे** 141

28. ज्ञान, भक्ति एवं वैराग्य का केन्द्र : गीतावाटिका
- **प्रसून कुमार मल्ल** 145

29. विश्वविद्यालय के शिल्पी महन्त दिग्विजयनाथ
- **डॉ. प्रदीप कुमार राव** 150

30. गीताप्रेस : सनातन धर्म एवं संस्कृति की अमूल्य धरोहर
- **डॉ. शैलेन्द्र प्रताप सिंह एवं डॉ. बसन्त नारायण सिंह** 160

31. श्रीगोरखनाथ मंदिर के प्रमुख आयोजन
- **डॉ. फूलचन्द प्रसाद गुप्त** 160

32. हमारी विरासत
- **अजय कुमार सिंह** 166

33. शिवावतार महायोगी गुरु श्री गोरखनाथ
- **डॉ. फूलचन्द प्रसाद गुप्त** 180

34. जाति न पूछो साधु की -
- **डॉ. प्रदीप कुमार राव** 191

35. जनपद गोरखपुर में मा. मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी द्वारा किये गये शिलान्यास कार्यों की भौतिक प्रगति विवरण दिनांकः 31.12.2018
..... 203

बदल रहा है गोरखपुर

भारत के माननीय राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविन्द जी 9-10 दिसम्बर 2018 ई. को गोरखपुर में थे। वे महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के संस्थापक सप्ताह समारोह के मुख्य महोत्सव में मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित होने आए थे। 10 दिसम्बर 2018 ई. को श्रीगोरक्षनाथ मन्दिर के दिग्विजयनाथ स्मृति सभागार में गोरखपुर को उन्हें सुनने का गौरव प्राप्त हुआ। उन्होंने अपने उद्बोधन में गोरखपुर के बहुआयामी विकास पर जहाँ संतोष जताया वहीं गोरखपुर को ज्ञान शहर के रूप में विकसित करने का लक्ष्य भी दे दिया। प्रस्तुत है उनका प्रेरक उद्बोधन।

– सम्पादक

नाथ–परम्परा के महान योगी, गुरु गोरक्षनाथ की स्मृति से जुड़े, राप्ती और रोहिन नदियों के संगम क्षेत्र में बसे, गोरखपुर नगर में आना, सबके लिए बड़े सौभाग्य की बात होती है। उससे भी बढ़ कर, शिक्षा से जुड़े हुए कार्यक्रम में भाग लेना, और भी सुखद संयोग है। गोरखपुर मेरा कई बार आना हुआ है। मैं आश्वस्त हूँ कि गोरखपुर बदल रहा है।

विगत पूरे सप्ताह के दौरान आयोजित कार्यक्रमों और प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले सभी विद्यार्थियों को मेरी हार्दिक बधाई। पारितोषिक प्राप्त करने वाले सभी विद्यार्थी–गण, विशेष बधाई के पात्र हैं।

स्वाभिमान और आत्म–गौरव के लिए सदैव सचेत रहने वाले, पूर्वी उत्तर प्रदेश और गोरखपुर परिक्षेत्र को, अठारह सौ सत्तावन के स्वाधीनता संग्राम के बाद, विदेशी शासन की क्रूरता और उदासीनता का सामना करना पड़ा था।

20वीं सदी में, भारतीय दर्शन और क्रिया योग के प्रति, देश और विदेश में आकर्षण उत्पन्न करने वाले, **परमहंस योगानन्द** का जन्म गोरखपुर में ही हुआ था। हजरत **रोशन अली शाह** जैसे संतों; **मोहम्मद सैयद हसन, बाबू बंधु सिंह** और **राम प्रसाद बिस्मिल** जैसे शहीदों की स्मृतियों से जुड़ा यह गोरखपुर क्षेत्र, **बाबा राघव दास** जैसे राष्ट्र–सेवी संत और महान साहित्यकार **मुंशी प्रेमचन्द** की कर्म–स्थली भी रहा है। **मुंशी प्रेमचंद** के कथा–संसार में हमें गोरखपुर, खासकर यहाँ के ग्रामीण अंचल की झलक दिखाई देती है। **फिराक 'गोरखपुरी'** ने इस शहर के नाम को, उर्दू साहित्य में अमर कर दिया है।

गोरखपुर में स्थित 'गीता प्रेस' ने, आध्यात्मिक और नैतिक मूल्यों को प्रसारित करने वाला प्रामाणिक साहित्य उपलब्ध कराके, अपना अतुलनीय योगदान दिया है। गीता प्रेस से नियमित रुप से प्रकाशित होने वाली, मासिक पत्रिका **'कल्याण'** ने, एक बहुत बड़े पाठक वर्ग को, भारत की अमूल्य विरासत से जोड़ रखा है। 'कल्याण' के प्रथम सम्पादक, विद्वान मनीषी **हनुमान प्रसाद पोद्दार जी** ने, लोगों के संस्कार–निर्माण द्वारा, समाज को सात्विक ऊर्जा प्रदान की है। मुझे बताया गया है कि सन् 1923 में स्थापित किए गए इस प्रेस में छपी पुस्तक–प्रतियों की कुल संख्या अब 62 करोड़ से भी अधिक हो चुकी है।

इस क्षेत्र में, तथा पूरे उत्तर प्रदेश में, समग्र विकास हेतु, पूरी कर्म–निष्ठा के साथ नेतृत्व प्रदान करने के लिए, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी प्रशंसा के पात्र हैं। प्रदेश के मुख्यमंत्री का पदभार संभालने से पहले, एक सक्रिय सांसद के रुप में, गोरखपुर को उनका निरंतर, नेतृत्व लगभग दो दशकों से, प्राप्त हो रहा था। उन्होंने निरंतर राष्ट्रीय और प्रादेशिक मुद्दों के साथ–साथ, इस क्षेत्र की समस्याओं की ओर, सबका ध्यान आकृष्ट किया और उनके समाधान के लिए सक्रिय योगदान दिया है।

यह उत्तर प्रदेश के निवासियों का सौभाग्य है कि, आप सबको, राज्यपाल श्री राम नाईक जी के रुप में, एक ऐसे वरिष्ठ एवं अनुभवी व्यक्तित्व का मार्गदर्शन प्राप्त है, जिनकी योग्यता तथा सार्वजनिक जीवन में विपुल योगदान की जितनी भी प्रशंसा की जाए, वह कम है।

शिक्षा विकास की कुंजी होती है। भारत के विकास का अर्थ है, भारत में शिक्षा का विकास। शिक्षा ही अच्छे व्यक्ति और समाज के निर्माण की आधारशिला भी है। सही मायने में, उसी समाज और व्यक्ति को शिक्षित माना जा सकता है, जहाँ प्रेम, करुणा, और सद्भाव जैसे मूल्यों को सर्वाधिक महत्व दिया जाता है। शिक्षा के इस व्यापक अर्थ के अनुसार, **गौतम बुद्ध** और **संत कबीर** महान शिक्षक थे। यह इस अंचल का सौभाग्य है कि गौतम बुद्ध से जुड़े कुशीनगर, श्रावस्ती, कपिलवस्तु और लुम्बिनी तथा कबीर से जुड़ा मगहर, जो संत कबीर नगर में है, गोरखपुर के ही परिक्षेत्र में स्थित है।

भक्ति आंदोलन से लेकर, अठारह सौ सत्तावन के स्वाधीनता संग्राम तक, 'नाथ–पंथ' के योगी जन–जागरण के सूत्रधार रहे हैं। समाज की एकता, देश की अखंडता और इस क्षेत्र के लोगों को अज्ञानता व अशिक्षा से मुक्ति दिलाने के लिए, गोरखनाथ पीठ से जुड़े महानुभावों ने, परिस्थिति व तत्कालीन समय के अनुसार, महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

आजादी की लड़ाई के दौरान, राष्ट्रीय–स्वाभिमान से जुड़ी आधुनिक शिक्षा प्रदान करने का एक अभियान शुरू हुआ। **महामना मदन मोहन मालवीय** द्वारा स्थापित 'बी.एच.यू.' से

लेकर **महंत दिग्विजय नाथ** द्वारा 'महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद' की स्थापना, गोरखपुर तथा पूर्वी उत्तर प्रदेश में शिक्षा के विकास को गति और दिशा प्रदान करने में मील का पत्थर साबित हुई है।

'परिषद' ने, अपने दो महत्वपूर्ण महाविद्यालयों का, गोरखपुर विश्वविद्यालय में पूर्ण विलय करके, निर्माणाधीन विश्वविद्यालय को एक बना–बनाया परिसर उपलब्ध कराया था। आज इसका नाम **'दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय'** है।

संयोग से, 'परिषद' के सेवा–कार्यों को भी, **योगी आदित्यनाथ जी** अपना मार्गदर्शन प्रदान कर रहे है। मुझे बताया गया है कि उनकी सक्रियता के कारण ही गोरखपुर नगर को **'गुरु श्री गोरक्षनाथ चिकित्सालय'** जैसा एक बड़ा एवं अत्याधुनिक चिकित्सा केन्द्र प्राप्त हुआ है। मुझे यह जानकर प्रसन्न्ता हुई है कि आज 'परिषद' द्वारा शिक्षा एवं समाज सेवा के लिए कार्यरत, 44 संस्थान चलाए जा रहे हैं।

गोरखपुर में, **'मदन मोहन मालवीय प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय'** और **'बाबा राघव दास मेडिकल कालेज'** द्वारा तकनीकी और मेडिकल शिक्षा की सुविधा उपलब्ध कराई गई है। यहाँ AIIMS का निर्माण भी प्रगति पर है, जिसके पूरी तरह से विकसित हो जाने के बाद, इस क्षेत्र में, चिकित्सा और मेडिकल एजुकेशन के स्तर में वृद्धि होगी। यहाँ, टेक्निकल, मेडिकल और प्रोफेशनल एजुकेशन के क्षेत्र में अनेक निजी संस्थान भी अपना योगदान दे रहे हैं। मुझे विश्वास है कि, इन संस्थानों में, शिक्षा की गुणवत्ता पर विशेष जोर दिया जाएगा, और युवाओं को, समय की मांग के अनुसार, और अधिक समर्थ बनाया जाएगा।

यह स्पष्ट ही है कि इस 'परिषद' के संस्थापकों नें, बहुत सोच–समझकर, इसे महाराणा प्रताप के नाम से स्थापित किया था। जैसा हम सभी जानते हैं कि असाधारण राष्ट्र–गौरव, वीरता, और आत्म–सम्मान के प्रतीक, महाराणा प्रताप ने, जन–भावना की रक्षा करने के लिए, हँसते–हँसते, वनवासी जीवन के असहनीय कष्टों को सहन किया था। उन्होंने समाज के प्रत्येक वर्ग को साथ लेकर, आजीवन संघर्ष करते हुए, पराक्रम और बलिदान के एक ऐसे स्वर्णिम अध्याय की रचना की है, जो सदैव हम सब के लिए प्रेरणा का स्रोत बना रहेगा। आप सब के कार्यों की सार्थकता की पुष्टि तभी होगी, जब उनमें, महाराणा प्रताप के जीवन–आदर्शों के अनुपालन की झलक दिखाई पड़े।

मुझे यह जानकर प्रसन्न्ता हो रही है कि, 'परिषद' द्वारा सन् 1981 से हर वर्ष यह 'संस्थापक सप्ताह समारोह' मनाया जाता है, जिसमें हजारों विद्यार्थी विभिन्न प्रतियोगिताओं तथा शोभा–यात्रा में भाग लेते हैं। संस्कृति के प्रति आदर, राष्ट्र के प्रति समर्पण तथा सामाजिक कार्यों

के लिए तत्परता पर बल देकर, 'परिषद' द्वारा, युवाओं के व्यक्तित्व निर्माण में सराहनीय योगदान दिया जा रहा है। यह समारोह, इस 'परिषद' के संस्थानों से जुड़े प्रत्येक व्यक्ति के लिए, संस्थापकों के आदर्शों के प्रति अपनी आस्था को दोहराने का भी अवसर है।

मुझे विश्वास है कि महान विभूतियों के नाम से आज पदक प्राप्त करने वाले सभी युवा, देश के भविष्य के लिए अपना सार्थक योगदान देंगे। साथ ही, वे अपने संगी–साथियों में प्रेरणा का भी संचार करेंगे।

देश में युवाओं की सबसे बड़ी संख्या, उत्तर प्रदेश में ही है। यह अपने–आप में एक बहुत ही बड़ी संपदा है। इस 'यंग वर्क–फोर्स' के बल पर प्रदेश की उपजाऊ जमीन, प्रचुर जल–संसाधन, बहुत बड़ा घरेलू बाजार तथा अच्छी कनेक्टिविटी जैसी अनेक विशेषताओं का पूरा लाभ उठाया जा सकता है। मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि प्रदेश में 'इन्फोर्मेशन टेक्नालॉजी' और 'स्टार्ट–अप' को प्रोत्साहित करने के लिए, नई नीति लागू की गई है। इस नीति के तहत, उत्तर प्रदेश 'स्टार्ट–अप फंड' , 'आई.टी. पार्क्स', तथा 'ईज ऑफ डूइंग बिजनेस' के सुधारों पर विशेष जोर दिया जा रहा है। युवाओं को 'जॉब क्रिएटर' बनने के लिए प्रोत्साहन और सुविधाएं प्रदान की जा रही हैं। इन प्रयासों से, प्रदेश के विकास में, युवाओं की भागीदारी, और बढ़ेगी।

पूर्वांचल क्षेत्र के विकास के बिना, उत्तर प्रदेश के समग्र विकास की कल्पना नहीं की जा सकती है। मुझे विश्वास है कि अपने पूर्वांचल के विकास से समृद्ध होकर, उत्तर प्रदेश, प्रगति के पथ पर और तेज गति से आगे बढ़ेगा।

लगभग एक दशक पहले, सन् 2007 में, 'महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद' का 'हीरक जयंती' वर्ष था। प्रायः सभी संस्थान, ऐसे अवसरों पर, अपनी उपलब्धियों का उत्सव मनाते हैं, और अपने भविष्य के लक्ष्य निश्चित करते हैं। आज से लगभग डेढ़ दशक बाद सन् 2032 में इस 'परिषद' का 'शताब्दी–वर्ष' मनाया जाएगा। मेरा सुझाव है कि, 'परिषद' के 'शताब्दी–वर्ष' तक, सुविचारित योजनाओं और प्रयासों के बल पर, गोरखपुर को **'सिटी ऑफ नॉलेज'** के रूप में स्थापित करने का, आप सभी को संकल्प लेना चाहिए। आप लोगों की कर्मठता को देखकर, मुझे पूरा विश्वास है कि आप सभी, इस लक्ष्य को प्राप्त करने में अवश्य सफल होंगे।

मैं एक बार फिर, पारितोषिक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को विशेष बधाई देता हूँ तथा आप सभी के, उज्ज्वल भविष्य के लिए, अपनी शुभकामनाएँ देता हूँ।

धन्यवाद

जय हिन्द!

गोरखपुर परिक्षेत्र के कतिपय स्थल नाम - एक विवेचन

प्रो. विपुला दूबे

गोरखपुर परिक्षेत्र (गोरखपुर, कुशीनगर, देवरिया, बस्ती) अपनी भौगोलिक संरचना, समशीतोष्ण जलवायु, वनस्पतियों की बहुलता एवं जल की प्रचुरता के कारण आदिकाल से मानव के आकर्षण का केन्द्र रहा है, जिसका प्रमाण यहाँ के नवपाषाण कालीन पुरास्थल (लहुरावीर देवा, सोहगौरा) एवं पुराभिलेख हैं। (सोहगौरा कॉस्य फलक लेख एवं पिपरहवॉ बौद्ध कलश लेख)। इस क्षेत्र की प्राकृतिक संरचना की अभिव्यक्ति जहाँ 'सौम्य सिन्धु' 'उत्तर समुद्र' 'दरदगण्डकी' सरूवार (सरयूपार) जैसे अभिधानों में हुई है वहीं यहां के नगर एवं ग्राम नामों में अवैदिक, वैदिक एवं भारतेरानी संस्कृति का बिम्ब दिखाई देता है जो इस क्षेत्र की प्राचीनता को आथर्वणिक काल तक (अथर्ववेद की परम्परा काल) ले जाता है। ध्यानार्ह है कि इस क्षेत्र की सांस्कृतिक परम्परा को देखते हुए कतिपय विद्वान इसकी प्राचीनता को ऋग्वेदीय युग से पूर्व का मानते हैं।

इस आलेख में गोरखपुर परिक्षेत्र के स्थल नामों में पुरानामान्त, गंजनामान्त, रच (राओचो–राइच) नामान्त स्थल नामों का विवेचन किया गया है, जो इस क्षेत्र के ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक कलेवर को समेटे प्रतीत होते हैं।

पुर नामान्त स्थल :

इस क्षेत्र के 'पुर' नामान्त स्थलों में गोरखपुर एक महत्वपूर्ण नाम है, इस स्थल नाम में जहां गो–रक्षा का भाव सन्निहित है वहीं यह गुरु गोरक्षनाथ की पावन तपःस्थली भी है, जो इस नगर के नामकरण का महत्वपूर्ण कारण माना जाता है। इसमें संशय नहीं कि गोरक्षा एवं गुरु गोरक्षनाथ इस नाम के केन्द्र में हैं लेकिन यहां 'पुर' का क्या इतिहास है, यह विवेचनीय विषय

प्रोफेसर (अ.प्रा.), प्राचीन इतिहास, पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग, दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

है। कहते हैं नाम–नामी का स्मारक ही नहीं होता अपितु नामी के स्वरूप का परिचय भी उससे प्राप्त होता है। कालगति से नामों में परिवर्तन भी होता रहा है यथा 17वीं सदी में इस नगर का नाम बदल कर 'मुअज्मावाद' कर दिया गया। उल्लेख्य है कि 11वीं, 12वीं सदी के इस क्षेत्र (देवरिया के लार, भाटपार, श्रावस्ती) पर शासन करने वाले गाहडवाल शासकों के लेखों में 'तुरूस्कदण्ड' जैसे 'कर' कर उल्लेख मिलता है जो तुर्कों को दण्डित करने के लिए लगाया गया अस्थायी आपात् कर था। स्पष्ट है कि 12वीं सदी से तुर्कों का इस क्षेत्र पर दबाव बढ़ा। यही कारण है कि इस क्षेत्र एवं स्वयं गोरखपुर के अधिकांश मोहल्ले मुस्लिम प्रभाव को दर्शाते हैं। प्रताप रुद्रदेव के 1486 ई. के कालिंजर लेख में 'गोरखपुर' का नाम मिलता है। इन स्थलों का नामान्त 'पुर' ऐसा पद है जो अति प्राचीन काल से ही (ऋग्वेदीय युग) 'असुरों के अधिवास' के रूप में मिलता है। असुर शम्बर को ऋग्वेद (2.19.6; 2.14.6; 1.54.6) में 99–100 पुरों का स्वामी कहा गया है वहीं देवताओं के राजा इन्द्र को अनेकशः पुरों को ध्वस्त करने वाला 'पुरन्दर' कहा गया है। भारत में दो जीवन दृष्टियाँ प्रभावी रही हैं : 'सुर' एवं 'असुर' विचारधारा। देवासुर संग्राम विचारधारा का संघर्ष था। उल्लेख्य है कि पुरवासी असुर वे थे जिन्हें वास्तु विद्या में महारत हासिल थी तथा वे भौतिकता के पोषक थे वहीं वैदिकजन आध्यात्मिकता की ओर उन्मुख प्रकृतिजीवी थे। असुरों के शिल्पी मय को महाकाव्य एवं पौराणिक परम्परा में क्रमशः रावण के श्वसुर तथा पाण्डवों के उस सभा का निर्माता बताया गया है जिसे देखकर दुर्योधन को जल एवं स्थल में भ्रम उत्पन्न हुआ था। इस संदर्भ में उल्लेखनीय है कि मय ने स्वयं के निवास के लिए 'त्रिपुर' बनाया था जिसे महादेव ने ध्वस्त किया और 'त्रिपुरारी' कहलाये। ऋग्वैदिक काल से लेकर पौराणिक काल तक सतत् असुरों का सम्बन्ध 'पुरों' से दिखाई देता है। असुराधिपति नरकासुर एवं बाणासुर क्रमशः प्राग्ज्योतिषपुर (असम–गोहाटी) एवं शोणितपुर (सोनपुर–बिहार) के राजा थे। ये दोनों 'पुर' अभेद्य थे। प्राग्ज्योतिषपुर सोलह लौहपाशों से घिरा था (महाभारत) जो भगवान कृष्ण के लिए भी दुर्जेय था।

असुरों की मूल प्रकृति पर विचार करने पर ज्ञात होता है कि यह शब्द प्राणवान, शक्ति सम्पन्न, तापस वृत्ति वालों तथा सुरा (मदिरा) को अस्वीकार करने का द्योतक था। यह शब्द ऋग्वेद में वरुण के लिए भी आया है। भारत से लेकर पश्चिमी एशिया तक फैले असुरों (अहुर, असीरियन) के बहुमंजिली इमारतों का ज्ञान पुरातात्विक एवं साहित्यिक साक्ष्य से मिलता है। जबकि वैदिक जन इससे अपरिचित एवं इनके विरोधी प्रतीत होते हैं।

इसी प्रकाश में गोरखपुर एवं इस परिक्षेत्र के 'पुर' नामान्त स्थलों के इतिहास को भी समझा जा सकता है। गोरखपुर का 'असुरन चौराहा' 'असुरन पोखरा' 'सूरजकुण्ड' जैसे स्थल इसे असुर संस्कृति से जोड़ते दिखाई देते हैं। ध्यातव्य है कि असुर सूर्योपासक एवं शैवोपासक

थे। सूर्य पूजा एवं जलकुण्ड का अविछिन्न सम्बन्ध रहा है। अतिप्राचीन काल से असुरों का प्रतीक चिह्न 'पक्षयुक्त सूर्यचक्र' था जिसे वे रण क्षेत्र में ले जाते थे तथा अधिकांश असुर शैवोपासक थे। यह भी एक कारण है कि कुछ विद्वान शिव को जनजातियों का देवता कहते हैं। ध्यानार्ह है कि गुरु गोरक्षनाथ को भी शिव का अवतार माना जाता है। यहाँ इस सम्भावना को नकारा नहीं जा सकता कि कोसल से लेकर मगध तक का क्षेत्र आथर्वणिक (अथर्ववेदीय) आर्यों का क्षेत्र था, ये लोग असुरों के समान अभिचार, तन्त्र, मन्त्र, जादू–टोने में विश्वास करते थे तथा मूल वैदिक धारा में समादृत नहीं थे।

यहाँ अल्लेखनीय तथ्य यह है कि गोरखपुर नगर के अधिकांश मुहल्लों का नामान्त 'पुर' से है जो संयोगात् नहीं है। इन नामों के पूर्व पद में मुस्लिम नामों की बहुलता है, जो इस्लाम के आगमन का परिणाम है। यथा– हुमायूँपुर, मोहद्दीपुर, रूस्तमपुर, खूनीपुर, उस्मानपुर, छोटे काजीपुर, शाहपुर, धर्मपुर, तिवारीपुर इत्यादि।

राइच (राओचो = सूर्य की किरणें) नामान्त स्थल :

इस क्षेत्र के राइच नामान्त स्थल नामों में (जो सरयू अचिरावती के मध्य स्थित हैं) में भारतेरानी काल की सांस्कृतिक चेतना का बिम्ब दिखाई देता है क्योंकि 'राइच', 'राओचो' का अर्थ ईरानी साहित्य में 'सूर्य किरणें' है। इनमें गोरखपुर के उत्तर–पूर्व में 19–25 किलोमीटर की दूरी पर स्थित पिपराइच, गोडराइच, सोनराइच, खखराइच तथा अचिरावती से सिंचित भू–भाग पर स्थित बहराइच जैसे स्थल नामों में 'राइच' पद जुड़ा हुआ है, जो इन स्थलों की प्राचीनता को प्राक्वैदिक युग तक ले जाता है एवं सूर्योपासना से सम्बद्ध करता है। इस संदर्भ में उल्लेखनीय है कि इन स्थलों से सूर्य प्रतिमाओं की प्राप्ति, मन्दिर अवशेष तथा लोक परम्परा में कुष्ठ रोग निवारण, पुत्र प्राप्ति हेतु बहराइच का माहात्म्य इनके सूर्य स्थल होने का लोक एवं पुरातात्त्विक प्रमाण है। बहराइच से प्राप्त सूर्य प्रतिमा प्राचीनतम है। भारतीय साहित्य में ऐसे अनेक उदाहरण है जिनसे ज्ञात होता है कुष्ठ रोग निवारण के लिए सूर्य की आराधना एवं नीम के सेवन का विधान था। नीम वृक्ष में सूर्य का वास होता है इसीलिए 'सूर्य' का एक नाम 'निम्बार्क' भी है। साम्बपुराण से ज्ञात होता है कि कुष्ठ पीड़ित कृष्ण पुत्र साम्ब ने रोगमुक्ति हेतु (यहाँ के पुराहितों द्वारा मना कर दिये जाने पर) शाक–द्वीप (पूर्वी ईरान) के सूर्य पूजा के लिए विख्यात 'मग' पुरोहित को आमन्त्रित किया था। इसी प्रकार चर्म रोग ग्रसित सम्राट हर्ष कालीन विद्वान कवि मयूर शर्मा के विषय में भी कहा जाता है कि वे 'सूर्यशतक' की रचना द्वारा चर्मरोग से मुक्त हुए थे। इस प्रसंग में 'राइच' नामान्त बहराइच की गरिमा का आख्यान सैय्यद सालार मसूद गाजी के उस आक्रमण में निहित है जब उसने 1032–33 ई. में बहराइच पर आक्रमण किया था (उत्तर प्रदेश डिस्ट्रिक्ट गजेटियर पृ. 25), वहाँ के भर, थारू सरदारों (विशेषकर

सरदार सुहेलदेव) ने उसका कड़ा प्रतिरोध किया। लोक परम्परा से ज्ञात है कि कुछ शर्तों के साथ समझौता हुआ जिसमें मसूद ने सरदार कन्या से विवाह का प्रस्ताव रखा, जिससे कन्या सहमत नहीं थी। सरदार कन्या ने सूर्य की आराधना की, सूर्य देव के प्रसाद से भयंकर झंझावात एवं वृष्टि हुयी, अन्ततः विवाह सम्पन्न नहीं हो सका एवं मसूद मारा गया। उसकी मजार बहराइच में है जो मजार शरीफ एवं बाले मियाँ की मजार के नाम से जानी जाती है। इस मजार पर हिन्दू–मुस्लिम समान रूप से मत्था टेकते हैं। बाले मियाँ दो शब्दों का युग्म है, जिसका पूर्व पद बालक, सूर्य का वाची प्रतीत होता है तो उत्तर पद मसूद का। यहाँ लोक परम्परा में व्याप्त घटना को इतिहासविद् भले न स्वीकार करें, लेकिन बहराइच, पिपराइच इत्यादि में निहित 'राइच' इन स्थानों को सूर्य किरणों से युक्त, सूर्य पूजा का प्राचीन क्षेत्र सिद्ध करता है। उल्लेखनीय है कि गोरखपुर के पार्श्व में स्थित पिपराइच नामक स्थान से 1980–81 में वहां के तत्कालीन थानेदार को एक सूर्य प्रतिमा प्राप्त हुई थी, जो सम्प्रति प्राचीन इतिहास विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के संग्रहालय में सुरक्षित है। ईरानी साहित्य में 'राइच' का सगोत्र 'राओचो' सूर्य किरणों के लिए बहुशः प्रयुक्त है यथा–

रओचो। ख्वँग अस्नाँम उक्षा अअेरूश।
क्ष्माकाई अशा वहमाइ मज्दा अहुरा।।

अवेस्ता, यस्न 50/10

अर्थात् ओ! अहुरमज्दा तुम्हारे आन्तरिक कानून (ऋत्) व्यवस्था के गौरव हेतु सूर्य किरणें (ख्वगरओचो) प्रातः काल की परतों को छाँट रही है।

इन साहित्यिक, पुरातात्त्विक एवं लोक में व्याप्त तथ्यों के आलोक में 'राइच' नामान्त स्थलों के सूर्य भूमि होने में संदेह नहीं किया जा सकता। भौगोलिक कालगत परिवर्तन के बावजूद सांस्कृतिक तत्व शीघ्र नष्ट नहीं होते, उनकी जड़े गहरी एवं दीर्घजीवी होती हैं, जिसका प्रमाण पिपराइच, बहराइच इत्यादि में निहित 'राइच' पद है जो भारत ईरान के आपसी संवाद का भी प्रमाण है।

गंज नामान्त स्थल : (साहबगंज, महाराजगंज, कैम्पियरगंज, बृजमनगंज, पीपीगंज इत्यादि)

इस क्षेत्र की प्राचीनता का सूत्र जहाँ पुरातात्त्विक साक्ष्य से 7000 ई. पूर्व तक जाता है (लहुरादेवा–संत कबीर नगर) वहीं 'गंज' नामान्त स्थलों की प्राचीनता का बिम्ब आभिलेखिक साक्ष्यों के प्रकाश में प्रथम शताब्दी ई. से मिलने लगता है। 'गंज' शब्द भारतीय भाषा वर्ग का शब्द नहीं है, यह शक भाषा का शब्द है जो शकों के साथ भारत आया। 'गंज' का शब्दिक अर्थ

'बाजार' होता है। यह शब्द सर्वप्रथम शक शासक शोडास के मथुरा अभिलेख में प्रयुक्त है (स्वामिस्य महाक्षत्रपस्य शोडासस्य गंजवरेण ब्राह्मणेन शेग्रव – सगोत्रेण)। इसके पश्चात अनेक अभिलेखों, ग्रंथों (राजतरंगिणी) में गंज, गंजवर, गंजपति, गंजदिविर जैसे पदों का प्रयोग मिलता है, जो कोषाध्यक्ष, बाजार से राजस्व एकत्रित करने वाले राजा को अधिकारी, या कर्मचारी का बोधक रहा है। गोरखपुर परिक्षेत्र के गंज नामान्त स्थल आज भी 'बाजार' 'हाट' के ही व्यन्जक है, यथा– साहबगंज, महाराजगंज इत्यादि, इन नामों का पूर्व पद सम्मानसूचक है। यथा– साहब का बाजार, महाराज या राजा का बाजार। कैम्पियरगंज एवं पीपीगंज में अंग्रेजी हुकूमत की ध्वनि सुनाई देती है, ये 'बाजार' इन शासकों के राजस्व के स्रोत थे।

इस क्षेत्र के अनेक स्थल नाम ऐसे हैं जो धार्मिक, आर्थिक (विकर ग्राम) चेतना से युक्त हैं, तथा उनका उल्लेख इस क्षेत्र पर शासन करने वाले कलचुरी, गाहडवाल, सावर्णि एवं मलयकेतु शासकों के दानपत्रों एवं अभिलेखों में हुआ है, इनमें उनवल, पाली, रामपुर, भाटपार इत्यादि प्रमुख हैं तथा इस क्षेत्र की भौगोलिक चेतना का बिम्ब सरुवार, सौम्यसिन्धु 'उत्तर समुद्र' में देखा जा सकता है।

निष्कर्षतः गोरखपुर परिक्षेत्र के स्थल नामों में वैदिक, अवैदिक एवं भारतेरानी संस्कृति का बिम्ब दिखाई देता है जो दो संस्कृतियों तथा विचारधाराओं के आदान–प्रदान का सूचक है। इस आलेख के माध्यम से मैं गोरखपुर महोत्सव के आयोजकों के प्रति अपनी हार्दिक शुभकामना प्रेषित करती हूँ।

गोरखपुर परिक्षेत्र के कतिपय स्थल नाम

पुर नामान्त असुर संस्कृति बिम्ब

गोरखपुर जिला– हुमायूंपुर, मोहद्दीपुर, रूस्तमपुर, उस्मानपुर, छोटे काजीपुर, खुनीपुर, शाहपुर, तिवारीपुर, धर्मपुर, पुर्दिलपुर एवं बसन्तपुर इत्यादि

देवरिया जिला– सलेमपुर, भागलपुर इत्यादि

राइच, इच (राओचो – नामान्त सूर्य किरण)

गोरखपुर जिला– पिपराइच, खखराइच, गोडराइच, सोनराइच (गोरखपुर से 18–25 किमी उत्तर पूर्व स्थित) इत्यादि

गोण्डा जिला– बहराइच इत्यादि

गंज नामान्त (बाजार)

गोरखपुर जिला– साहबगंज, महाराजगंज, पीपीगंज, कैम्पियरगंज इत्यादि

हमारा गोरखपुर

सुबोध कुमार मिश्र

अयोध्या के पराक्रमी राजा दशरथ के साम्राज्याधीन गोरखपुर भू–भाग हिमांचल की तराई में समुद्र सतह से 150 मीटर ऊँचाई पर राप्ती, रोहिणी के संगम पर स्थित था। बौद्धग्रन्थों के अनुसार इसका प्राचीनतम नाम 'पिप्पलीपुरम' था। गोरखपुर मण्डल में कपिल (कपिलवस्तु), वशिष्ठ (लार–देवरिया), दुर्वासा (फूलपुर–आजमगढ़) के आश्रय थे। देवरिया का प्राचीनतम नाम देवपुर था। महाकाव्य काल तक सैन्धव एवं आर्य सभ्यता, संस्कृतियों का सम्मिलन परिपक्व हो चुका था। सरस्वती से आगे गंगा गण्डक घाटियों तक ई.पूर्व 2000–1500 तक आर्य सभ्यता का प्रचार हो चुका था। महाप्रयाण से पूर्व पुरुषोत्तम राम ने शासन व्यवस्था हेतु भरत के पुत्र तक्ष को तक्षशिला, पुष्कल को पुष्कलावती, शत्रुघ्न के पुत्र सुबाहु को मथुरा, शत्रघाती को विदिश, लक्ष्मण के पुत्र अंग को अंगदीपा, चन्द्रकेतु को मल्ल तथा अपने पुत्र कुश को कुशावती तथा लव को श्रावस्ती प्रदत्त किया तथा वंशानुगत समृद्ध नगरी अयोध्या को विवाद से बचने का कारण अपने पास रखा। गोरखपुर चन्द्रकेतु के मल्ल देश के अन्तर्गत था। मल्ल की राजधानी कुशीनारा थी। इस प्रकार गोरखपुर का प्रदुर्भाव 1500 ई. पूर्व सम्भावित है।

महाभारत के उपरान्त (बौद्धकाल) गोरखपुर में (प्रबन्धतंत्र) इक्ष्वाकवंशी शाक्यों का राज्य स्थापित हो चुका था। इनका प्रारम्भिक राज्य रोहिणी के पश्चिम तथा पूर्वी भाग में था। काशी में नागवंशी राजा राम तथा शाक्य राजकुमारी के विवाह से कोलीय वंश का उदय हुआ। आधुनिक महराजगंज सीमा पर रामग्राम में इसकी राजधानी थी। गौतम बुद्ध की माता इसी वंश की राजकुमारी थी। वह देवदह की रहने वाली थी। श्रावस्ती नरेश विरूद्धक ने शाक्य वंश पर भीषण आक्रमण कर इसका अंत कर दिया। पलायित शाक्यों ने मोरीय नामक नवीन राज्य की स्थापना की। इनकी राजधानी रामगढ़ताल के पूर्व उपधौलिया में सम्मिलित है। राजधानी के

महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर

नाम से आज भी यहां तप्पा अपधौलिया विद्यमान है। ई.पू. 327 में मगध के राजा नन्द का विनाश कर भारत सीमा का यूनान तक विस्तृत करने वाला नरेश चंद्रगुप्त मौर्य गोरखपुर के मोरीय राज्य कुलज था। उसी समय यह नगर कपिलवस्तु के शाक्य, पिप्पलीवन के मोरीय, रामग्राम के कोलीय तथा पावा कुशीनारा के मल्ल द्वारा स्वशासित गणराज्य था। नेपाल राज्य के जयदेव की भगिनि समुद्र गुप्त से व्याही थी अतएव इस काल (320–550 ई.) में नगर तथा सन्निकट भूमि का तीव्र गति से विकास हुआ। इसके प्रतीक स्वरूप आज मोतीराम अड्डा, डीहघाट, उपध ौलिया, सोनबरसा बरही, सहनकोट, मीठाबेल, चौरी चौरा, भौवागांव, तरकुलवा क्षेत्रों के रूप में आज भी विद्यमान हैं। गुप्तवंश के नरसिंह गुप्त द्वारा बसाया गया नगर नरसिंहपुर तथा उत्तरवर्ती माधवगुप्त द्वारा बसाया गया माधवपुर रोहिणी तट पर विद्यमान है। मोखरियों के उपरान्त गोरखपुर में हर्ष (606–647 ई.) का साम्राज्य रहा तथा 725–752 ई. के मध्य गोरखपुर कन्नौज के पराक्रमी नरेश इशान वर्मा के राज्य का अभिन्न अंग रहा। आठवीं शताब्दी के अन्त में गोरखपुर एवं संलग्न भूमि पर आयुधवंश का शासन था। तदुपरान्त बंगाल के आठ नरेशों ने शासन किया।

बंगाल नरेश देवपाल (810–850 ई.) के समय योगी गोरक्षनाथ ने यहां योगाश्रम की स्थापना की। शूरपाल (1075–1077 ई.) ने विष्णु मन्दिर तथा शूर पोखरे का निर्माण कराया। लोकभाषा में शूर पोखरा आज असुरन पोखरा के नाम से विदित है। विष्णु मन्दिर की प्रतिमा 1914 में पोखरे के टीले से प्राप्त हुई जो रानी मझौली द्वारा नव निर्मित विष्णु मन्दिर में स्थापित है। भीमयश ने गोरखनाथ मन्दिर में एक जलाशय निर्मित कराया। कालान्तर में यह आख्यान महाभारत के भीम से जुड़ गया। गढ़वाल चन्द्र देव के उपरान्त उसका पुत्र मदन चन्द्र (1103–1163 ई.) राजा था। राप्ती तट पर मदनपुर इसी काल की स्थापना है। गोविन्द चन्द की रानी बसंता देवी पाल राजकुमारी थी। राप्ती रोहिणी संगम पर उन्होंने सराय निर्मित करायी जो आज बसन्तपुर सराय के नाम से प्रचलित है। सन् 1206 के लगभग गोरखपुर में तुर्कोंका प्रवेश हुआ। यहां उनकी बस्ती तुर्कमानपुर तथा तुर्क सेनापति इमामुद्दीन के पुत्र बख्तियार के नाम पर बख्तियारपुर बसा। बरहम मसऊद मुगल शासन ने 1240 में बहरामपुर बसाया। तुर्कों का प्रारम्भिक उद्देश्य यहां के मन्दिरों को ध्वस्त कर संचित धन को लूटना था। श्रावस्ती, कुशीनारा, पावा, कपिलवस्तु के अतिरिक्त, गोरखपुर का विष्णु मन्दिर व अन्य मठ उसी समय नष्ट कर लूटे गये। प्रभावी शासन हेतु तुर्क सैनिकों के संरक्षण में धर्मान्तरित हिन्दुओं को महत्वपूर्ण क्षेत्रों में बसाया गया।

मुगलों ने पन्द्रहवीं शताब्दी में गोरखपुर पर स्थाई शासन हेतु विशिष्ट तथा अकबर (1556–1605 ई.) ने विशेष प्रयास किये। 15वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में मुगलों द्वारा अलीनगर,

जाफरा बाजार, नियामत चक बसाया गया। उसी समय नेपाल का राजा राणा शाही वंश, घाघरा तट तक प्रभावी हो रहा था। अतः उनके प्रभावों को समाप्त करले हेतु मुगल बादशाह ने मुगलहा में स्थायी सेना की स्थापना की। चरगावां में उनकी घुड़साल थी। आज यह स्थान यथा नाम से ग्राम के रूप में नगर के उत्तर विद्यमान है। बादशाह ने मिर्जा कमरुद्दीन खां को यहां का फौजदार नियुक्त किया। इसके साथ ही नगर के मुगलकालीन वर्तमान सिविल लाइंस क्षेत्र का विकास हुआ। न्याय के लिये नगर में बड़े तथा छोटे दो काजी, एक मुफ्ती, जमीन के लेखा–जोखा के लिये दीवान, चुंगी वसूली के लिये बक्शी, सरकारी कोष रखने के लिये करोड़ी की नियुक्तियॉ हुई। ये सभी कार्यालय आज नगर के मुहल्ले या हाते के रूप में विद्यमान हैं। सतासी के राजा बसन्त सिंह ने राप्ती तट पर जेल का निर्माण कराया। खलीलाबाद के काजी खलीलुर्रहमान ने उर्दू बाजार में खुदाई जी मस्जिद तथा मकतब बनवाया। अकबर के सेनापति फिदाई खां तथा टोडरमल ने गोरखनाथ मन्दिर के पास एक मस्जिद तथा अकबर के पिता के नाम पर हुमायूंपर बसाया। औरंगजेब का पुत्र मोअज्जम बहादुरशाह प्रथम (1707–1712 ई.) गोरखपुर के जंगलों में शिकार हेतु आया। मोअज्जम गोरखपुर को दिल्ली भाँति बनाना चाहता था। इसीजिए दिल्ली के मुहल्लों के नाम पर यहां धम्माल, असकरगंज, शेखपुर तथा नखास मुहल्ला को बसाया। मुअज्जम के नाम पर इस नगर का नाम मुअज्ज्मबाद पड़ा लेकिन यह नाम प्रचलित नहीं हो सका।

आसफउद्दौला ने 1775 ई. में इमामबाड़ा का निर्माण कराया तथा सोने व चांदी के तीन विशाल ताजिये रखे। दाउद चक के इस भाग में इमामबाड़ा निर्मिति हो जाने के बाद इस क्षेत्र का नाम इमामबाड़ा पड़ज्ञ। वर्ष 1805 में पांच वर्ष की आयु में सैयद अहमद अलीशाह इमाम स्टेट के उत्तराधिकारी हुए। उन्हें मियां साहब कहा जाता था। मियां साहब ने पूरब फाटक पर बाजार लगवाया तभी से उस मुहल्ले का नाम इमामगंज से बदल कर मियां बाजार हो गया। विविध सामानों की आपूर्ति के लिये उसी समय उर्दू बाजार की स्थापना हुई। उस समय गोरखपुर भूखण्ड अवध के शासन में बना रहा। यहां बांसी, उनवल, रूद्रपुर, मझौली, तमकुही, सलेमपुर, पडरौना के पुराने रजवाड़े ही अवध के अधीन शासन करते रहे। इन्हीं रजवाड़ों में श्रीनेत्र राजा जगन्नाथ सिंह ने जगन्नाथपुर, राजा रामदत्त सिंह ने रामदत्तपुर तथा श्रीनेत कल्याण सिंह ने कल्याणपुर बसाया। श्रीनेत राजा बसन्त सिंह ने राप्ती रोहिणी संगम पर पाल राजकुमारी रानी बसन्ता द्वारा निर्मत सराय का विस्तार कराया। अंग्रेजों ने रूहेलों के विरुद्ध अवध के नवाब शुजाउद्दौला को सैनिक सहायता दी थी। अतः लार्ड बेलजली ने क्षतिपूर्ति स्वरूप नवाब से गोरखपुर व बहराईच जिले ले लिये। तत्कालीन गोरखपुर में देवरिया, बस्ती सम्मिलित था तथा गोण्डा जिला बहराईच की तहसील थी। इस प्रकार यह विस्तृत भूखण्ड ईस्ट इण्डिया कम्पनी के प्रभुत्व में हो गया।

ईस्ट इण्डिया कम्पनी के प्रारम्भिक काल में यहां पांच तहसीलें सदर हवेली, सलेमपुर, बांसी, भौवापार तथा पडरौना थी। वर्ष 1818 में तिलपुर व विनायकपुर को मिलाकर महराजगंज तहसील बनी। वर्ष 1840 में भव्वापार के स्थान पर बांसगांव तथा 1902 में सलेमपुर के स्थान पर देवरिया तहसील बनी। 1865 में बस्ती व बढ़यापार को मिलाकर बस्ती जिला घोषित हुआ। वर्ष 1947 में देवरिया जिला घोषित हुआ। मिस्टर राउलटेज यहां के प्रथम कलेक्टर नियुक्त हुए। कार्नवालिस ने 1806 में जिलाधीश, जिला जज व पुलिस अधीक्षक कार्यालय की स्थापना की। वेन्टिग ने (1828–1835) में प्रथम बन्दोवस्त कराया। केनिंग (1846–1862) ने पोस्ट आफिस तथा डफरिन (1884–1888) ने हास्पिटल स्थापित कराया। 1884 में रेलवे स्टेशन तथा 1899 में टाउन हाल का निर्माण हुआ। इसी अवधि में ब्रिटिश सिविल लाईन्स का विकास हुआ। सिविल लाईन्स का अर्थ है वह अधिसूचित क्षेत्र जिसके क्रय–विक्रय पर किसी विशेष आदेश धारा लगा दी गई हो।

पालिका अंग्रेजी म्युनिस्पेलटी का हिन्दी रूपान्तर है। इसकी उत्पत्ति लैटिन भाषा के म्यूनिस्पल से है जिसका अर्थ स्वशासित नगर से है। एक निश्चित आबादी तथा आय पर कर लेने पर इसे महापालिका की संज्ञा दी जाती है। ब्रिटेन का बरो इसके समतुल्य है। भारत में ऐसा शासन मेयो (1869–1875 ई.) की देन है। लिटन (1876–1880 ई.) ने इसी आधार पर जिला परिषद और नगर परिषद का गठन किया था। जिलाधीश दोनों परिषदों का चेयरमैन होता था। ह्यूम की पहल पर रिपन ने सन् 1882–1884 ई. तथा डफरिन सन् 1884–1888 ई. से पालिकाओं में भारतीयों को प्रतिनिधित्व प्रदत्त किया। उस समय पालिका में 20 सदस्य होते थे, जिनमें 15 चुनाव से तथा 5 नामित होते थे। पालिका के समस्त अधिकार व कर्त्तव्य शासन (ईस्ट इण्डिया कम्पनी) में निहित थे। कांग्रेस के दबाव पर प्रथम विश्वयुद्ध (1914–1918 ई.) के कुछ पूर्व चुनाव हुए।

15 जून 1916 में तत्कालीन गर्वनर जनरल द्वारा उत्तर प्रदेश म्यूनिसिपल एक्ट अनुमोदति किया गया। सन् 1910 में पालिका गोरखपुर के प्रथम अध्यक्ष मुहम्मद खलील थे। उस समय यह पालिका श्रेणी–3 थी जिसका कार्यालय रीड साहब धर्मशाला के समीप स्थित पशु चिकित्सालय भवन में था। इस पालिका का क्षेत्र 24 वर्ग किलोमीटर था। सन् 1929 में नगर के उत्तर एक अतिरिक्त पालिका का गठन हुआ जिसका क्षेत्र 12 वर्ग किमी. था। इसका कार्यालय गांधी आश्रम के पीछे वर्तमान मुख्य नगर अधिकारी आवास में था। उस काल में महेवा छोटा प्लाट तथा बड़ा प्लाट बिलन्दपुर खत्ता, हुमायूंपुर खत्ता, रामलीला मैदान में मैला को दफन करने व कास्तकारी करने हेतु किय गये नीलाम से प्राप्त आय नार्मल तिराहा, विष्णु मन्दिर के समीप, पैडलेगंज, तोपखाना चौराहा आदि स्थलों पर टैक्सी स्टैण्डों की नीलामी से आय,

साईकिल, रिक्शा तथा ठेला के लाइसेंस से आय, हैकनी कैरेज एक्ट के अन्तर्गत निर्धारित भैंसा गाड़ियों से लाइसेंस फीस से आय, फेरीज एक्ट के अन्तर्गत घाटों की नीलामी से आय, केटिल ट्रेस पास एक्ट के अन्तर्गत मवेशीखानों से आय व कूड़ा बिक्री तथा नगर में विक्रय हेतु आने वाली सामग्री पर चुंगी से आय मुख्य स्रोत थे जो नगर के विकास व प्रबन्ध के लिये बिलकुल ही अपर्याप्त थे। विदेशी नियंत्रकों/शासकों/बोर्ड द्वारा नगर के विकास एवं नागरिक सुविधाओं को उपलब्ध कराने की दिशा में कोई सार्थक प्रयास नहीं किया गया। वर्ष 1949 में भारत के स्वतंत्रता के फलस्वरूप विदेशी ताकतों से मुक्ति मिलते ही बोर्ड की अवक्रमित की नगर के सर्वांगीण विकास हेतु प्रथम चरण में हालसीगंज में आधुनिक व्यवसायिक प्रतिष्ठान तथा शिशुओं के मनोविद व प्रदूषण निवारण हेतु स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व. बन्धु सिंह की स्मृति में पार्क का निर्माण हुआ। वर्ष 1949 में नगर क्षेत्र 24 वर्ग किमी. को विस्तारित कर 36 वर्ग किमी. कर दिया गया। फलस्वरूप नगर के दक्षिणी क्षेत्र की नगर पालिका इसमें समाहित हो गयी। व्यवसायिक प्रतिष्ठानों के निर्माण की श्रृंख्ला में होम सिमसिम बाजार लाल डिग्गी पार्क में दुकान, जलकल परिसर (गोलघर) में दुकान, टाउनहाल पूर्वी गेट वर दुकानों का निर्माण कराया गया। नगर को पूर्ण रूप से विकसित कर नागरिकों को आवश्यक सूचनाएं उपलब्ध कराने की दृष्टि से शासन ने वर्ष 1949 में इस नगर को नगरपालिका श्रेणी–2 तथा वर्ष 1956 में नगरपालिका श्रेणी–1 के रूप मे संगठित किया।

इस क्षेत्र में पेयजल की आपूर्ति का मुख्य स्रोत राप्ती व रोहिणी नदी थी। सीमा विस्तार तथा जनसंख्या वृद्धि के कारण प्रमुख स्थलों पर कुआं, जलाशय का निर्माण तथा हैडपम्पों का अधिष्ठापन कराया गया। नगर में मानक के अनुसार 200 लीटर प्रतिदिन प्रति व्यक्ति को शुद्ध पेयजल उपलब्ध कराने की दृष्टि से वर्ष 1954–55 में जलकल प्रतिष्ठान की स्थापना, तत्समय की जनसंख्या 1.50 लाख की दृष्टिगत रखते हुए की गयी थी। वर्तमान में 53 नलकूपों द्वारा 67. 53 मिलियन लीटर पेयजल का उत्पादन कर जलापूर्ति की जाती रही है जो जनसंख्या की दृष्टि से अपर्याप्त है। 19वीं के प्रारम्भ में इस क्षेत्र में यातायात/आवागतम के साधन के रूप में तांगा, इक्का, बग्घी तथा टमटम का उपयोग किया जाता रहा। वर्ष 1945–46 में रिक्शा प्रचिलित हुआ। वर्ष्ज्ञ 1948 में रोडवेज बसों का संचालन हुआ। वर्तमान नगर में कार/जीप 2357, मोटर साइथ्कल/स्कूल 18928, बस 608, टैक्सी/आटो रिक्शा 1488, सार्वजनिक वाहन 2368, निजी वाहन 539, ट्रैक्टर 1411 तथा अन्य 702 वाहन यातायात/आवागमन के लिए हैं। इस क्षेत्र में झांसी इलेक्ट्रिक कम्पनी द्वारा 1929 में विद्युत आपूर्ति प्रारम्भ की गयी। पथ प्रकाश व्यवस्था स्थानीय निकाय द्वारा तेल लैम्प लगाकर की जाती रही। वर्तमान में लगभग 7000 (हजार) सोडियम लैम्प तथा 6 हजार राड लगाये गये हैं। वर्ष 1869 में इस क्षेत्र को स्थानीय निकाय के रूप में अधिसूचित होने के पश्चात् नागरिकों के शैक्षिक स्तर के स्तरोन्नयन के लिए सरकारी

एवं गैर सरकारी संगठनों के प्रयास से नगर के विभिन्न क्षेत्रों में प्रारम्भिक एवं माध्यमिक विद्यालय, सेण्ट एण्ड्रयूज कालेज एवं चर्च (1838), जिला स्कूल वर्तमान जुबली स्कूल (1875), महात्मा गांधी स्कूल (1901), नार्मल स्कूल (1905), जार्ज इस्लामियां स्कूल (1916), सिटी ऐंग्लो वैदिक प्राईमरी स्कूल वर्तमान डी.ए.वी. (1929), महाराणा प्रताप स्कूल (1932), डी.वी.प्रा. स्कूल (1932), टी.डी.एम. प्रा. स्कूल (1933) और मारवाड़ प्रा. स्कूल की सन् 1940 में स्थापना हुई। ये विद्यालय आज इण्टर कालेज तथा डिग्री कालेज के रूप में विद्यमान हैं। वर्ष 1956 में नगर पालिका श्रेणी–1 घोषित होने के पश्चात् विश्वविद्यालय एम.पी. पॉलीटेक्निक, मदन मोहन मालवीय इंजीनियरिंग कालेज तथा मेडिकल कालेज स्थापित हुआ। विगत तीस वर्षों मे जनसंख्या में अप्रत्याशित वृद्धि के सापेक्ष विद्यालयों की संख्या में वृद्धि न होने के कारण शिक्षा प्राप्त करने में छात्रों में कठिनाई आ रही है।

वर्ष 1956 में प्रथम श्रेणी नगरपालिका घोषित होने के पश्चात् पहला चुनाव वर्ष 1954 में हुआ। इस समय नगर 15 वार्डों में विभाजित था तथा 38 सदस्य होते थे। समाज के सभी वर्गों को प्रतिनिधित्व देने की व्यवस्था थी। अनुसूचित जाति एवं पिछड़ी जाति, महिला तथा स्वीपर की निर्णय में भागीदारी सुनिश्चित करने केलिए इन वर्गों का प्रतिनिधित्व अनिवार्य था। इन वर्गों के सदस्य चयनित न होने पर प्रदेश शासन द्वारा इन वर्गों के स्थानीय प्रतिनिधित्व को नामित करने का विधान था। प्रदेश शासन ने आय के श्रोतों में वृद्धि किये जाने में हो रहे व्यवधान को दूर करने की दृष्टि से 11 फरवरी 1969 में तत्कालीन निर्वाचित बोर्ड अवक्रमित कर दिया तथा वर्ष 1960 में भूमि भवन कर को समाप्त कर नगर पालिका को गृहकर जलकर निर्धारण का संवैधानिक अधिकार दे दिया। इसके कारण पहली अप्रैल 1969 से भूमि भवनकर के निर्धारण हेतु आगणित वार्षिक किराया मूल्य कस अधिग्रहण कर गृहकर जलकर का निर्धारण एवं संग्रह प्रारम्भ किया गया। जनसंख्या में अप्रत्याशित वृद्धि के कारण उत्तर प्रदेश शासन ने नगर के क्षेत्रफल 36 वर्ग किमी. को विस्तारित कर 147 वर्ग किमी. करते हुए 15 जून 1982 को नगर महापालिका के रूप में संगठित किया। सीमा विस्तार के फलस्वरूप 47 ग्राम नगर में सम्मिलित हुए।

जनसंख्या में वृद्धि के फलस्वरूप भीड़ को नियंत्रित कर यातायात को सुगम बनाने की दृष्टि से प्रदेश शासन ने यहां कार्यालयों को जोनल कार्यालयों में विभाजित कर कार्य करने तथा सिलिंग से प्राप्त भूमि को विद्यालयों, महाविद्यालयों की स्थापना कर संचालित करनेहेतु वर्ष 1984 में आदेश दिया परन्तु यह आदेश अब तब प्रभावी न करने के कारण आवागमन बाधित व अनियंत्रित है। कार्यालयों को जोनल कार्यालयों में बदलना, प्रत्येक प्रभाग में विद्यालयों, महाविद्यालयों व अस्पतालों की स्थापना करना तथा रेलवे स्टेशन के पीछे की ओर एक

अतिरिक्त द्वार बनाकर भीड़ को विभाजित करना यातायात को सुगम बनाने का एक मात्र विकल्प है। सीमा विस्तार तथा नगर के स्तरोन्नयन के फलस्वरूप क्षेत्र की जनसंख्या के अनुरूप महानगर को 30 वार्डों में विभाजित किया गया तथा प्रत्येक वार्ड के लिये 2 सभासदों की संख्या निश्चित हुई। महापालिका के गठन के पश्चात् जनवरी 1988 में चुनाए हुए। 74वें संविधान संशोधन अधिनियम 1992 की अपेक्षानुसार 30 मई 1994 को नगरमहापालिका का स्वरूप परिवर्तित कर नगर निगम के रूप में अधिसूचित किये जाने के फलस्वरूप नगर निगम को स्थानीय प्रबन्ध के समस्त संवैधानिक अधिकार प्राप्त हुए शासन ने इसके बाद नवम्बर 1995 में निगम का चुनाव कराया। इस बहुप्रतीक्षित संविधान संशोधन से यहां के नगर निगम ये नगरीय सुविधाएं मिलने तथा शासन–प्रशासन से की जा रही निरन्तर उपेक्षा व बरती जा रही उदासीनता से मुक्ति हेतु आशान्वित हैं। निगम घोषित होने के पश्चात् निर्वाचित निगम सभा ने संसाधनों का सृजन कर अपने अनिवार्य कर्त्तव्यों का प्रभावी निर्वहन किया है।

झील सरोवरों के प्राचुर्य के कारण अतीत में गोरखपुर की प्राकृतिक छटा लुभावनी थी। झील सुमेर सागर रेलवे लाईन बनने के पूर्व दक्षिण, पश्चिम में थवई नाले द्वारा राप्ती से तथा पूर्वोत्तर में बौलिया (अब कालोनी द्वारा) रामगढ़ताल से सम्बद्ध थी। इसी पर 1707–1712 ई. में औरंगजेब के पुत्र मुअज्जम ने राप्ती (अब रेती) के पुल का निर्माण कराया था। इसमें निर्मल जल प्रवाहित होता था। इसके आसपास यह क्षेत्र जलीय पक्षियों के किलोल से गुंजित रहता था। नगर के उत्तर पश्चिम सीमा पर झील चिलवा–महेसरा रोहिणी से सम्बद्ध थी। इसका सौन्दर्य मुम्बई के पवई झील की तरह था। पूर्वात्तर में रामगढ़ की स्मणीक झील (रामगढ़ताल) हैदराबाद के हुसेनसागर तथा कश्मीर के डल झील का दृश्य प्रदर्शित करती थी। मोरों के किलोल से गुंजित इस भूखण्ड के कुलज चन्द्रगुप्त (327 ई.) ने इन मोरों के सौन्दर्य से प्रभावित होकर मोरीय उपनाम धारण किया तथा विदेशी पर्यटक फाह्यान (399 ई.) व ह्वेनसांग (629 ई.) ने अपने यात्रा वृत्तान्त में इस क्षेत्र को न्यग्रोधवन व हंसक्षेत्र कहा है। वर्तमान हांसूपुर इसी का प्रतीक है।

छप्परफाड़ विकास के गवाह बने हम

अजय कुमार सिंह* एवं प्रदीप कुमार राव**

ईश्वर जब देता है तो छप्परफाड़ के देता है। यह कहावत है तो पुरानी लेकिन आजकल गोरखपुर पर बिल्कुल फिट बैठती है। पूर्वांचल का महत्वपूर्ण शहर होने के बावजूद गोरखपुर उत्तर प्रदेश के सर्वाधिक पिछड़े क्षेत्रों में हुआ करता था लेकिन 2016 के मार्च महीने में किस्मत ऐसी चमकी कि शहर का कायाकल्प शुरू हो गया। जैसे करोड़ों की लॉटरी लग जाने पर किसी गरीब की जीवनशैली अचानक से बदल जाती है, वैसे ही शहर भी बदल रहा है। अचानक से हर ओर काम, काम और काम नज़र आने लगा है। जमीनों पर गगनचुंबी इमारतें उगने लगी हैं। नई चमचमाती सड़कें चौड़ी होती चली जा रही हैं। असम्भव मान ली गई जाम की समस्या का समाधान नजर आने लगा है। मानसून में तालाब बन जाने वाली सड़कों के किनारे नई सीवर लाइन तैयार हो रही है। पिछले दशकों में अनियोजित निर्माण की भेंट चढ़ चुकी हरियाली नए पौधरोपण से लौट रही है। टीवी, अखबारों की सुर्खियों से लेकर सोशल मीडिया के प्लेटफार्मों तक उत्तर प्रदेश सहित गोरखपुर के विकास की ये गाथा देखी, पढ़ी और सुनी जा रही है। बुजुर्गों, युवाओं और बच्चों सबके लिए यह उत्साह और कौतुहल का विषय है। सब गोरखपुर के छप्परफाड़ विकास के गवाह बन रहे हैं।

आने वाली पीढ़ियां शहर को जब उसके विकसित स्वरूप में देखेंगी, तब हम कहानियों की शक्ल में इस विकास यात्रा की गवाहियां दे पाएंगे। बता पाएंगे कि धर्म की शिक्षाओं को वैज्ञानिक और समता मूलक समाज की स्थापना की कसौटियों पर कसते हुए मानव जीवन के लिए सुख–शांति का मार्ग दिखाने वाले इस क्षेत्र को वर्षों तक क्यों और कैसे विकास की धारा से दूर रखा गया। प्राकृतिक संसाधनों से परिपूर्ण होने के बावजूद क्षेत्रीय किसान बदहाल रहे।

*वरिष्ठ पत्रकार

**प्राचार्य महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर

गन्ना बेल्ट की शोहरत के पीछे भारी भरकम बकाए के नीचे दबकर किसान पस्तहिम्मती का शिकार होता रहा। खेत में खड़ी फसल को आग लगाकर पत्नी–बच्चों के सपनों को जला देना उसकी मजबूरी बनी हुई थी। सबसे दुःखद यह कि इन सब हालात पर शर्मिंदा होने की बजाए भ्रष्ट नौकरशाही और सत्ताधारी नेता बेशर्म अट्ठास करते रहे। जनता ने सत्ता के इस विद्रूप चेहरे के खिलाफ लम्बा संघर्ष किया लेकिन न्याय देने की बजाए उसे नीचा दिखाने की कोशिशें चलती रहीं। खाद कारखाने को वर्षों बंद रखा गया। 2014 में बनी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की सरकार ने इंसेफेलाइटिस और अन्य बीमारियों के इलाज के लिए सांसद के रूप में योगी आदित्यनाथ जी के संघर्षों को देखते हुए अपने पहले बजट में एम्स का एलान किया। गोरखपुर के ज्यादातर अफसरों ने तब भी इसे जमीन पर उतारने में सहयोगी बनने के बजाए रोड़े अटकाने की साजिशें कीं। सड़क, बिजली, पानी, स्वास्थ्य, अस्पताल हर मोर्चे पर हमारी हालत फिसड्डी बनाए रखने के लिए गोरखपुर की नौकरशाही से लेकर लखनऊ में सत्ता के गलियारों तक एक प्रकार की सहमति दिखती थी।

शिक्षा के क्षेत्र में भी प्राथमिक से लेकर विश्वविद्यालय तक शिक्षकों और आधारभूत सुविधाओं का अकाल पड़ा था। कुल मिलाकर स्थिति यह रही कि अच्छी पढ़ाई, दवाई और रोजी–रोजगार के लिए दिल्ली, मुंबई, चेन्नई, कोलकाता से लेकर देश के अन्य छोटे–बड़े शहरों में भटकते रहना गोरखपुर वालों की नियति बना हुआ था। इस जद्दोजहद में आम शहरी मुस्कुराना भूल चुका था। चेहरों पर मायूसी, परेशानी और अंजान डर का साया हर वक्त बना रहता था। खुश थे तो सिर्फ वे जो सत्ता की मलाई काट कर रहे थे या उनके करीब थे। नेता, अफसर, ठेकेदार का गठजोड़ आम इंसान की गर्दन को जकड़े रखने और दबा देने पर आतुर था।

यह कहना गलत नहीं होगा कि इस क्षेत्र के लोगों ने आजाद मुल्क की आसानियों को महसूस ही नहीं किया था। उनकी जिंदगी वैसी ही मकड़जालों में उलझी हुई थी। बानगी वनटांगियां गांवों में दिख जाती थी। ब्रिटिश राज में बेतहाशा जुल्मों के शिकार वनटांगियों ने खून–पसीने से सींचकर बेहतरीन जंगल उगाये थे। अफसरों–नेताओं–सरकारों की असंवेदनशील सोच ने आजादी के बाद उन्हें जंगलों से बेदखल कर दिया। अंग्रेजों ने अलग–अलग गांवों से पकड़कर उन्हें जंगल लगाने के काम में जबरन झोंका तो 'भारतीय अंग्रेजों' ने उन्हें उन्हीं के लगाए जंगलों से उजाड़कर उनका अस्तित्व मिटा डालने का उपाय कर डाला। जमीन और जीवन जीने का हक मांग रहे वनटांगियों पर गोलियां बरसाई गईं, मुकदमे लादे गए। उनके शिक्षा, जाति, आय, निवास प्रमाण पत्र और अन्य सरकारी दस्तावेजों से वंचित रहे तथा उनके बच्चों के लिए रोजगार और बेहतर इंसान बनने के रास्ते नहीं खुलने दिया गया। प्रतिकार में उठी हर आवाज को सख्ती से दबाया जाता रहा।

वनटांगिया गांवों को राजस्व ग्राम का दर्जा देने की लड़ाई कई दशकों से चल रही थी। 'टांगिया मजूरन के बूझे न कोई मनई में' शीर्षक की एक टांगिया मजदूर की कविता में आजाद देश में गुलामों सा जीवन जीने को मजबूर रहे परिवारों का दर्द छिपा हुआ है। भारत में रेलवे के विस्तार के साथ अंग्रेजों ने पेड़ों की अंधाधुंध कटान करवाई। इसकी भरपाई के लिए साखू, सागौन के जंगल उगाने की योजना के तहत अलग–अलग गांवों से लोगों को इक्ट्ठा करके जबरन टांगिया मजदूर बनाया गया। उन्हें निश्चित अवधि के लिए एक स्थान पर रखा जाता। एक अंग्रेज अफसर के नाम पर विकसित 'टांगिया पद्धति' से पौधे लगवाए जाते। उन पौधों को सींचने और रखवाली करने का जिम्मा भी उन्हीं मजदूरों पर होता। बदले में उन्हें कोई मजदूरी नहीं दी जाती। सिर्फ कुछ जमीन मिलती जिसपर वे अनाज और सब्जियां उगा सकते थे। बुजुर्ग बताते हैं कि उनके पूर्वजों से पौधे लगाने और रखवाली करने के काम में जरा भी चूक हो जाती तो अंग्रेज बेरहमी से सजा देते थे। जुल्म–अत्याचार का यह सिलसिला अंग्रेज के जाने के बाद भी बंद नहीं हुआ। वन निगम की स्थापना के बाद तो टांगियों को जंगल और जमीन से भी बेदखल कर दिया गया जो उनके जीवन का एकमात्र आधार था।

गोरखपुर में 80 के दशक में वन निगम के अधिकारियों से संघर्ष में दो टांगिया मजदूरों की जान भी गई। सैकड़ों घर आग के हवाले कर दिए गए। खुले आसमान के नीचे टांगिया परिवार ईश्वर के भरोसे वर्षो बरस रहे। वे अपने सिर पर पक्की छत तक नहीं डाल सकते थे। गांव को राजस्व ग्राम का दर्जा नहीं और बच्चों के लिए स्कूल नहीं। बीमारों के लिए अस्पताल नहीं। नौजवानों के लिए निवास, जाति, आय प्रमाण पत्र नहीं तो नौकरी–रोजगार नहीं। यहां तक कि लोकतांत्रिक देश के नागरिकों सबसे बड़ा अधिकार, मताधिकार भी नहीं।

नाइंसाफी और राजनैतिक बेइमानियों के उदाहरण इतने हैं कि उन्हें गिनाने में हजारों पन्ने काले किए जा सकते हैं। मामूली इंसेफेलाइटिस के 40 साला तांडव से काली हो गई हजारों परिवारों की जिन्दगियों पर एक नज़र डाल कर भी इन्हें महसूस किया जा सकता है। मच्छर और गंदे पानी से होने से वाली इस बीमारी की रोकथाम तो दूर इलाज तक की समुचित व्यवस्था नहीं थी। गोरखपुर–बस्ती मंडल, पश्चिमी बिहार और नेपाल के तराई क्षेत्र की सात से नौ करोड़ आबादी के लिए सीमित बेड, दवाई और डाक्टरों वाला बीआरडी मेडिकल कालेज ही एकमात्र उम्मीद की किरण बना हुआ था। प्राथमिक, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों से लेकर जिला अस्पतालों तक की दुर्दशा बीमार बच्चों के माता–पिता को डराकर या तो झोला छाप डाक्टरों के पास जाने पर मजबूर कर देती थी या फिर सीधे मेडिकल कालेज आने पर। यहां मरीज को भर्ती कराने से लेकर एक ही बेड पर दो–तीन दूसरे मरीजों के साथ स्थान दिलाने तक के लिए माता–पिता को भयानक संघर्ष करना पड़ता। धोखे के वेंटिलेटर, अम्बू बैग, चंद डाक्टरों और दवाइयों के बीच बेहतर इलाज की आस में हर घंटे कुछ मासूम, अपने माता–पिता को मायूस

कर जाते। मेडिकल कालेज परिसर ऐसे लोगों–परिवारों की चीख–पुकार और दिल दुःखी कर देने वाली रुलाइयों से हर वक्त गमगीन रहता था। राजनैतिक बेईमानियों का आलम यह था कि अक्सर नागरिकों की पूरी रात तत्कालीन सांसद योगी आदित्यनाथ जी की अगुवाई में बिजली के लिए जनांदोलन करते सड़कों पर कटती। इन सबके बीच गोरखपुर की एक छवि 70 से 90 के दशक तक छाये रहे माफियाराज ने भी बना रखी थी जिसकी कीमत पिछली तीन पीढ़ियों से नौजवानों को चुकानी पड़ रही थी।

बहरहाल, अतीत की इन दुश्वारियों की चर्चा से आगे आज हमें बात वर्तमान एक वर्ष में तेजी से बदले गोरखपुर और आने वाले कल की करनी चाहिए। समय बदल रहा है। हम इस बदलाव के साक्षी बन रहे हैं। गोरखपुर महोत्सव और मंथन के बहाने पूरे साक्षीभाव से वर्तमान के दस्तावेजीकरण का मौका है। लेकिन वर्तमान और भविष्य की बात से पहले जरूरी है कि हम अपने गौरवशाली अतीत पर भी एक नजर डाल लें।

दुनिया को योग से परिचित कराने वाले गुंरु गोरक्षनाथ के नाम पर गोरखपुर का मौजूदा नाम 217 साल पुराना है। इसके पहले नौवीं शताब्दी में भी इसे गुरु गोरक्षनाथ के नाम पर 'गोरक्षपुर' के नाम से जाना जाता था। बाद की सदियों में शासकों की हुकूमत के साथ इस क्षेत्र का नाम भी बार–बार बदलता रहा। कभी सूब–ए–सर्किया के नाम से जाना गया, कभी अख्तरनगर, कभी गोरखपुर सरकार तो कभी मोअज्जमाबाद के नाम से। बुद्ध से पहले इसे रामग्राम तो चन्द्रगुप्त मौर्य के शासनकाल में पिप्पलिवन के नाम से जाना गया। अंततः अंग्रेजों ने 1801 में इसका नाम 'गोरखपुर' कर दिया जो नौवीं शताब्दी के 'गोरक्षपुर' और गुरु गोरक्षनाथ पर आधारित है।

नाथ परम्परा के अनुसार भगवान शिव गुरु स्वरूप में गुरु गोरक्षनाथ के नाम से जाने जाते हैं। उन्हें भगवान शिव का योग स्वरूप भी कहा जाता है। गुरु गोरक्षनाथ हर युग में धरती पर ही रहते हैं। युगों–युगों में किसी के गुरु भी बनते हैं। उन्होंने नाथ पंथ का सबसे ज्यादा प्रचार किया। नव नाथों में उनका सर्वोच्च स्थान है। गोरक्ष यानि 'गोमाता के रक्षक'। यह अत्यन्त पवित्र नाम है। शास्त्रों में 'गोमाता' में 33 कोटि देवी–देवताओं का निवास माना गया है। गुरु गोरक्षनाथ का मार्ग परमसत्य की प्राप्ति के लिए साधना का है। उन्होंने मनुष्य के भीतर अन्तर–खोज के लिए जितने अविष्कार किए उतने किसी ने भी नहीं किए। मनुष्य की अन्तरात्मा में जाकर परम ब्रह्म से एकाकार का रास्ता सुझाया।

ऐसे महान योगी के नाम पर बसे गोरखपुर में गोरखनाथ मंदिर शुरू से शहर की पहचान होने के साथ–साथ सामाजिक और सांस्कृतिक गतिविधियों का केंद्र रहा है। यहां दुनिया भर से नाथ सम्प्रदाय और गोरखनाथ जी के भक्त आते हैं। गोरखनाथ ने नेपाल सीमा पर स्थित

इस स्थान पर तपस्या की थी। इस मंदिर को यवनों और मुगलों ने कई बार ध्वस्त किया। लेकिन हर बार इसका पुनर्निर्माण कराया गया। मौजूदा समय का सौभाग्य यह है कि गोरक्षपीठाधीश्वर ही प्रदेश के मुखिया भी हैं। बतौर गोरक्षपीठाधीश्वर उन्होंने महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की चार दर्जन से अधिक शिक्षण संस्थाओं, गोरखनाथ चिकित्सालय, नर्सिंग कालेज और सामाजिक–सांस्कृतिक क्षेत्र के अनगिनत प्रकल्पों का जिस अद्भुत प्रबंधकीय और प्रशासकीय कौशल से संचालन किया आज वही विशेषता प्रदेश के छोटे से बड़े काम में दिख रही है। बिना किसी भेदभाव के प्रदेश का हर जिला विकास के पायदानों पर बढ़ता चला जा रहा है। गोरखपुर भी आशातीत सफलता के उसी मार्ग पर है।

वर्ष 2017 से प्रारम्भ हुई इस विकास यात्रा में 2018 अत्यन्त महत्वपूर्ण रहा। मार्च 2017 में योगी सरकार बनने से लेकर 31 दिसम्बर 2017 तक की उपलब्धियों का जिक्र 'मन्थन' के पिछले अंक में किया जा चुका है। इस मन्थन में एक जनवरी 2018 से 31 दिसम्बर 2018 तक की बात हो रही है। इस अवधि में गोरखपुर ने महसूस किया कि सही सोच और संवेदनशीलता हो तो राजनीतिक नेतृत्व मानव जीवन के सभी पहलुओं पर सकारात्मक असर डालते हुए परिवर्तन ला सकता है। वर्ष के पहले दिन यानि एक जनवरी 2018 को शुरुआत पर्यटन पुलिस के उद्घाटन के साथ हुई। गुरु गोरक्षनाथ, गौतम बुद्ध, संतकबीर, योगानंद, बाबा राघव दास, हनुमान प्रसाद पोद्दार, पंडित रामप्रसाद बिस्मिल, प्रेमचंद, फिराक सहित अनगिनत महापुरुषों के कर्मक्षेत्र के रूप में यह धरती महत्वपूर्ण पर्यटन स्थल के रूप में विकसित होने की सारी खूबियां रखती थी लेकिन राजनीतिक उपेक्षा ने ऐसा होने नहीं दिया। गोरक्षपीठाधीश्वर योगी आदित्यनाथ जी के नेतृत्व की सरकार इस तस्वीर को बदल रही है। एक साथ सभी पर्यटक स्थलों के विकास का काम शुरू हुआ है। स्थलों के सुन्दरीकरण के साथ ही पर्यटकों के लिए बुनियादी सुविधाओं का विकास किया जा रहा है। पर्यटन पुलिस इसी क्रम में एक महत्वपूर्ण कदम है। पुलिस का यह विशेष दस्ता पर्यटकों की सुरक्षा तो सुनिश्चित करेगा ही, गाइड की भूमिका भी निभाएगा ताकि दर्शनीय स्थलों की जानकारी के लिए किसी को भटकना न पड़े।

वर्ष 2018 के पहले दिन ही अंग्रेजों के जमाने से बेतहाशा जुल्मोसितम के शिकार गोरखपुर और महराजगंज के वनटांगिया परिवारों को नई आजादी मिली। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी ने वनग्रामों को राजस्व ग्राम का दर्जा देते हुए बिजली, सड़क, शिक्षा, चिकित्सा जैसी मूलभूत सुविधाओं से जुड़ी 95 करोड़ की लागत वाली 18 परियोजनाओं का शिलान्यास किया। गोरक्षपीठाधीश्वर योगी आदित्यनाथ पहली बार वनटांगियों की लड़ाई के साथ खड़े हुए। वह उनके लिए लगातार प्रदर्शनों–आंदोलनों के साथ संसद में आवाज बुलंद करते रहे। पिछले कई वर्षों से उनकी हर दिवाली उन्हीं के बीच मनती है। तमाम अड़चनों के बावजूद उन्होंने वनटांगिया गांवों के बच्चों के लिए पहला स्कूल बनवाया। इस काम के लिए वन निगम ने तब

की सरकार के इशारे पर उन पर मुकदमा भी दर्ज कराया। हर सुख–दुख में वनटांगिया, योगी आदित्यनाथ जी को अधिकारपूर्वक बुलाते और वे पहुंचते रहे। मुख्यमंत्री बनने के बाद उन्होंने सबसे पहले वनटांगिया गांवों को राजस्व ग्राम का दर्जा देने की राह आसान की। वर्ष 2018 के पहले ही दिन इसकी घोषणा और वनटांगियों को उनके हक की जमीन देकर उन्होंने इतिहास रच दिया। आज इन गांवों में तेजी से विकास हो रहा है। सिर पर पक्की छत, बच्चों के लिए अच्छे स्कूल, पीने का साफ पानी, बिजली, अस्पताल, रसोई गैस सब कुछ मिल रहा है। वनटांगियों के चेहरे पर आई मुस्कान, समाज के आखिरी इंसान की खुशहाली का प्रतीक बन रही है।

वर्ष के पहले महीने की 19 तारीख को सामूहिक विवाह योजना का शुभारंभ हुआ। प्रदेश सरकार ने गरीब घरों की बेटियों के विवाह के साथ विधवाओं और तलाकशुदा महिलाओं के पुनर्विवाह के लिए 166.60 करोड़ रुपए का बजट निर्धारित किया। इसी महीने की 25 तारीख को गोरखपुर शहर का कायाकल्प करने के उद्देश्य से सड़कों के निर्माण, स्वच्छ जल, नाले, वार्डों की सफाई, पथ प्रकाश बिन्दुओं पर एलईडी लाइट आदि के लिए नगर निगम के 325 करोड़ रुपए के पुनरीक्षण बजट को प्रदेश सरकार ने मंजूरी दी। 29 जनवरी को गोरखपुर को 318 करोड़ की परियोजनाओं की सौगात मिली। इसके तहत गोरखपुर–सोनौली राजमार्ग पर महेसरा पुल के लिए 147 करोड़, मोहरीपुर–जंगल नंदलाल सिंह–रामपुर चक–शेरपुर–सिहोरवा सम्पर्क मार्ग के लिए 21 करोड़ और कालेसर–जंगल कौड़िया बाइपास सहित कुल 18 परियोजनाओं के लिए 150 करोड़ रुपए मिले। 30 जनवरी को 466.62 करोड़ लागत की कुल 68 परियोजनाओं का लोकार्पण हुआ। इनमें पिपराइच विधानसभा के लिए 100 करोड़ की परियोजनाएं, शहीद स्थली चौरीचौरा और डोहरिया को भव्यता प्रदान करने के लिए, दक्षिणांचल को कम्हरिया घाट पुल के जरिए एक्सप्रेस वे से जोड़ने से सम्बन्धित अनेक परियोजनाएं शामिल थीं।

फरवरी का महीना भी गोरखपुर के लोगों के लिए सौगातों भरा रहा। चार फरवरी को 4000 से अधिक दिव्यांगों को ट्राईसाइकिल, फोल्डिंग व्हील चेयर, स्मार्ट केन, कैलिपर्स जैसे उपकरण मिले तो बीआरडी मेडिकल कालेज में चहारदीवारी, मरम्मत, रंगाई, सड़क, नालियों, डिवाइडर आदि के लिए 13.66 करोड़ रुपए का बजट नगर निगम ने पारित किया। आठ फरवरी को सहजनवां के हरदी गांव में 6.45 करोड़ की लागत से बनने वाले राजकीय पालीटेक्निक का शिलान्यास हुआ। गीडा, नौसड़–कालेसर पथ प्रकाश व्यवस्था का लोकार्पण हुआ।

16 फरवरी को उत्तर प्रदेश सरकार ने वित्तीय वर्ष 2018–19 का बजट प्रस्तुत किया। इसमें पूर्वांचल एक्सप्रेस वे के लिए 1000 करोड़ रुपए और गोरखपुर लिंक एक्सप्रेस वे के लिए 550 करोड़ रुपए निर्धारित किए गए। योगी सरकार के इस दूसरे बजट ने पूर्वांचल को तरक्की के हाईवे पर फर्राटा भरने का ईंधन दे दिया।

पहला बजट पूर्वांचल और बुंदेलखंड पर केंद्रित था। दूसरे बजट में भी पूर्वांचल विशेषकर गोरखपुर–बस्ती मंडल पर जमकर तोहफों की बारिश की गई। गोरखपुर को पूर्वांचल एक्सप्रेस वे से लिंक करने के लिए 550 करोड़ का प्रावधान किया गया। इससे गोरखपुर जिले के सर्वाधिक पिछड़े क्षेत्र के विकास की नींव पड़ गई है। सम्भावनाओं के नए द्वार खुल रहे हैं। पूर्वांचल एक्सप्रेस वे से गोरखपुर जुड़ेगा तो प्रयागराज, सुल्तानपुर और मध्य प्रदेश के रीवा से आने वाले ट्रकों का काफी समय और ईंधन बचेगा। लिंक वे–नौसढ़, खजनी, सिकरीगंज, बेलघाट, शंकरपुर, कम्हरियाघाट और अम्बेडकरनगर होते हुए पूर्वांचल एक्सप्रेस वे से जुड़ेगा। इससे व्यापार को सीधा लाभ होगा। सरयू नहर परियोजना को 1614 करोड़ रुपए दिए गए। इससे गोरखपुर, संतकबीरनगर, महराजगंज, सिद्धार्थनगर, श्रावस्ती, बहराइच, बलरामपुर और गोंडा में सिंचाई के पानी के लिए 39 साल पुराना इंतजार खत्म होगा। कहीं जमीन की दिक्कत तो कहीं भ्रष्टाचार के चलते यह परियोजना लगभग 40 वर्षों से लटकी हुई थी। बजट में छह मेडिकल कालेजों के लिए 126 करोड़ रुपए का प्रावधान किया गया। इसके साथ ही 1055 करोड़ की नई योजनाओं के जरिए सेहत सुधारने का इंतजाम किया गया। 170 मोबाइल हेल्थ यूनिट, ग्रामीण क्षेत्रों में 100 नए आयुर्वेदिक अस्पताल के अलावा मातृ वंदना योजना के लिए 291 करोड़ रुपए का प्रावधान किया गया। बीआरडी मेडिकल कालेज गोरखपुर में सुपरस्पेशिलिटी और पूरे क्षेत्र में चिकित्सकीय सुविधाओं की बढ़ोत्तरी का इंतजाम किया गया। इसका लाभ पूर्वी उत्तर प्रदेश की सात करोड़ जनता को मिलेगा।

एक जनपद–एक उत्पाद योजना में 250 करोड़ रुपए रखे गए। इससे संतकबीरनगर के पीतल के बर्तनों, सिद्धार्थनगर के काला नमक चावल, कुशीनगर की काष्ठ कलाकृतियों और महराजगंज के साथ गोरखपुर के टेराकोटा को नई पहचान मिलेगी। गोरखपुर के पर्यटन स्थलों के विकास के लिए 12.43 करोड़, नए आधुनिक प्रेक्षागृह के लिए 29.50 करोड़, मुंडेरवा और पिपराइच चीनी मिलों के लिए क्रमशः 240 करोड़ और 300 करोड़ रुपए की व्यवस्था इस साल के बजट में की गई। यही नहीं कानून–व्यवस्था से लेकर पेयजल, बाल पुष्टाहार, ग्रामीण सड़कों, पुलों, नौजवानों के लिए स्टार्टअप, शिक्षा सहित जीवन के विभिन्न आयामों को बेहतर बनाने की कोशिश की गई है।

सरकार की कोशिशों से फैले उत्साह का आलम यह है कि शहर में भवन निर्माण शैली तक बदल रही है। 2018 में गोरखपुर विकास प्राधिकरण की एक टीम बंगलुरु, दिल्ली और रायपुर से रेडिमेड दीवारों और छतों से घर बनाने का तकनीकी अध्ययन कर लौटी। जैसे विभिन्न पार्ट्स को जोड़कर कम्प्यूटर तैयार किया जाता है वैसे ही इस तकनीक से दीवारें, छतों को जोड़कर घर बनाया जा सकता है। यह घर कम खर्चीला होने के साथ–साथ मजबूत और भूकम्परोधी भी होगा। भवन बनाने की इस नई तकनीक से गोरखपुर के गरीबी एवं निराक्षितों

को आवास मिल जाएगा। अगले एक वर्ष में इनके सर पर छत होगी।

इस साल के बजट में स्वास्थ्य, शिक्षा और सुरक्षा पर विशेष जोर दिया गया है। जनहित से जुड़े सभी क्षेत्रों के लिए सरकार ने धन का भरपूर इंतजाम किया। बिजली हो या महिला कल्याण, उद्योग हों या युवाओं के लिए रोजगारपरक योजनाएं। कृषि हो या मेट्रो। प्रदेश सरकार धार्मिक और हेरिटेज पर्यटन के साथ इको टूरिज्म को बढ़ावा देकर रोजगार की सम्भावनाओं को भी बढ़ावा दे रही है। महराजगंज की सोहगीबरवा अभ्यरिण्य सहित 38 पर्यटन स्थलों को सड़क और वायुमार्ग से आपस में जोड़ने की योजना है। वन एवं पर्यावरण विभाग को इन जगहों को विकसित करने का निर्देश दिया गया है। ईको टूरिज्म स्थलों पर वनों में निवास कर रही जनजातियों को इन योजनाओं से जोड़ा जा रहा है। वहां आश्रम पद्धति के विद्यालय और बिजली की सुविधाएं दी जाएंगी। 2018 फरवरी में इस योजना के साथ अन्य कई योजनाओं को मूर्त रूप दिया गया। मसलन, गोरखपुर एअरपोर्ट के विस्तार में तेजी लाते हुए इसे बड़ा और आधुनिक स्वरूप प्रदान किया गया। यहां से बोइंग विमान के साथ ही इंडिगो और निजी क्षेत्र की कई अन्य उड़ानें शुरू हुईं। दिल्ली–कोलकाता के लिए नई फ्लाइट शुरू होने से यात्रियों की संख्या में पांच गुना तक बढ़ोत्तरी हो गई। टर्मिनल के एक भाग की बिल्डिंग का लोकार्पण जून 2017 में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी ने किया था। एअरपोर्ट के विस्तार के लिए 22. 34 करोड़ रुपए मंजूर किए गए थे। 365 करोड़ रुपए से पिपराइच चीनी मिल के शुरू होने का रास्ता साफ हुआ। इस मिल में चीनी के साथ–साथ 18 मेगावाट बिजली का उत्पादन भी होगा। 035 हजार कुंतल प्रतिदिन पेराई क्षमता वाली इस मिल का काम तेजी से पूरा किया गया।

गोरखपुर के आसपास के किसानों एवं युवाओं की उम्मीद उर्वरक कारखाने के पुनर्निर्माण का काम भी तेजी जारी है। हिन्दुस्तान उर्वरक एवं रसायन लिमिटेड के मुताबिक नए प्लांट में सलाना 13 लाख मीट्रिक टन यूरिया का उत्पादन होगा। नया प्लांट आधुनिकतम तकनीक से लैस किया जा रहा है। यह छह सौ एकड़ में स्थापित होगा। इससे न्यूनतम मात्रा में सल्फर डाई आक्साइड का उत्सर्जन होगा जिसका आम लोगों की सेहत पर कोई असर नहीं पड़ेगा। सस्ती कीमत में किसानों को यूरिया उपलब्ध होगी। कारखाने के पास स्थित चिलुआताल को भी रामगढ़झील की तर्ज पर साफ किया जा रहा है। हिन्दुस्तान उर्वरक एवं रसायन लिमिटेड ने सिल्ट निकालने की जिम्मेदारी ड्रेजिंग कारपोरेशन ऑफ इंडिया को सौंपी है। 115 करोड़ की लागत से ताल की सफाई और सुन्दरीकरण का काम चल रहा है। इसके अलावा आईओसी ने वहां एथेनॉल प्लांट लगाने का बीड़ा उठाया है। एथेनॉल ईको फ्रैण्डली है। प्लांट के लिए हिन्दुस्तान उर्वरक एवं रसायन लिमिटेड आईओसी को 80 एकड़ जमीन दे रहा है।

इंवेस्टर्स समिट से गोरखपुर में 3463 करोड़ का निवेश

फरवरी 2018 में दो दिन की इंवेस्टर्स समिट में देश के चोटी के उद्योगपतियों ने जैसी रुचि दिखाई उससे स्पष्ट हो गया कि प्रदेश का माहौल बदल रहा है। यही नहीं, समिट के सफल आयोजन ने साफ कर दिया कि प्रदेश में औद्योगिक विकास के साथ युवाओं के लिए रोजगार और स्वरोजगार के मौके खुलेंगे।

आर्थिक जगत के विशेषज्ञों ने इसे बेहतर और संजीदा कोशिश के रूप में रेखांकित किया। सच यह है कि विकास एक सतत प्रक्रिया है लेकिन इसके लिए तकनीकी स्तर पर बेहद गम्भीरता से ध्यान दिए जाने की आवश्यकता होती है जो पहली बार उत्तर प्रदेश में होता दिख रहा है। इंवेस्टर्स समिट में गोरखपुर के लिए 27 उद्यमियों ने 2463 करोड़ रुपए के मेमोरंडम ऑफ अंडरस्टैंडिंग पर करार किया है। इसमें अडाणी समूह के 1000 करोड़ को शामिल कर दें तो गोरखपुर में 3463 करोड़ रुपए का निवेश होना तय है। अडाणी ग्रुप ने गोरखपुर में मेगा स्किल ट्रेनिंग एंड डेवलपमेंट सेंटर के लिए एमओयू किया है। उद्योगों की स्थापना से रोजगार की राह खुलने की सम्भावना बढ़ गई है। उद्यमी सी.पी. अग्रवाल और निखिल जालान की स्टील फैक्टरियों में प्रत्यक्ष रूप से 1200 और अप्रत्यक्ष रूप से 4000 से अधिक लोगों को रोजगार मिलेगा। इंवेस्टर्स समिट से सेवायोजन कार्यालय में पंजीकृत 82 हजार बेरोजगारों की उम्मीदें बढ़ गई हैं। पिछले एक साल में विभिन्न रोजगार मेलों में 2048 बेरोजगारों को रोजगार मिला। पंजीकृत बेरोजगारों में छह हजार से अधिक तकनीकी शिक्षा हासिल किए हुए हैं। गीडा और आसपास के इलाकों में उद्योग लगेंगे तो बड़ी संख्या में रोजगार का सृजन होगा।

औद्योगिक विकास के क्षेत्र में वर्ष 2018 मील का पत्थर बन गया। इंवेस्टर्स समिट के जरिए गीडा में अब तक 24.63 अरब रुपए के निवेश का आधार तैयार हो गया है। पिछले दशकों में उपयुक्त माहौल न होने के चलते पलायन कर गए उद्यमी वापस लौट रहे हैं। उनकी घर वापसी यहां तरक्की एक नई इबारत जरूर लिखेगी। इस साल गोरखपुर औद्योगिक विकास प्राधिकरण–गीडा का कार्यालय भी अपने भवन में पहुंच गया। आठ फरवरी को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने गीडा कार्यालय का उद्घाटन किया। इसके पहले तक गीडा कार्यालय शहर के सिविल लाइंस में किराए के भवन में संचालित होता था। अब गीडा क्षेत्र में ही कार्यालय होने से उद्यमियों की समस्याओं का समाधान तेजी से होने लगा है। नए उद्योगों के लिए आवश्यक जमीन जुटाने के काम में भी तेजी आई है। गीडा औद्योगिक क्षेत्र के विकास में अन्य आयाम भी जुड़े हैं। मसलन, कालेसर से नौसढ़ तक 3.50 करोड़ की लागत से एलईडी लाइट्स लगाई गईं। 80 करोड़ की लागत से 15 एमएलडी सीईटीपी प्लांट लगाने का प्रस्ताव है। यह प्लांट उद्योगों से निकलने वाले प्रदूषणकारी अपशिष्टों से आमी नदी की रक्षा करेगा। नमामि गंगे

परियोजना के तहत इसका निर्माण होना है। गीडा में 300 करोड़ की लागत से अंकुर उद्योग की स्थापना की जा रही है। गैलेंट फैक्ट्री का विस्तारीकरण भी किया जा रहा है। गीडा में 142 प्लाट की आवासीय योजना को भी मूर्त रूप दिया गया है। करीब चार एकड़ में विकसित हो रही इस आवासीय योजना के साथ ही उद्योगों के लिए भी प्लाट उपलब्ध कराए जा रहे हैं। गीडा के 30वें स्थापना दिवस पर आयोजित गीडा दिवस में आए उद्यमियों ने भी सरकार के प्रयासों की सराहना की। स्थापना दिवस पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी की मौजूदगी में औद्योगिक गोष्ठी, प्रदर्शनी सहित कई महत्वपूर्ण आयोजन हुए। बिना औद्योगिक विकास के उद्यमियों से ब्याज वसूलने का मामला भी इस साल खत्म हो गया। उद्यमियों की मांग पर प्रदेश सरकार ने 2.81 करोड़ का ब्याज माफ कर दिया।

उद्योगों के विकास के साथ गोरखपुर की पहचान टेराकोटा को वैश्विक बाजार उपलब्ध कराने की कोशिशें भी तेज हुई हैं।गुलरिहा के औरंगाबाद में मिट्टी से वर्ष 2014 में विजय प्रजापति ने इस कुम्हारी कला की शुरुआत की थी। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी ने एक जिला–एक उत्पाद योजना में टेराकोटा को शामिल कर हस्तशिल्पियों के लिए समृद्धि के द्वार खोल दिए हैं। शिल्पकारों को उनकी कलाकृतियों और मेहनत का उचित मूल्य मिल सके इसके लिए प्रदेश सरकार ने ऑनलाइन शापिंग कम्पनी अमेजन से करार किया है। टेराकोटा कलाकृतियों को अंतरराष्ट्रीय प्लेटफार्म मिला है।

गोरखपुर को स्वच्छ बनाने की कोशिशों में भी वर्ष 2018 में काफी सफलता मिली। सफाई कर्मचारियों की टोलियां रोज सुबह समय से निकलने लगी हैं। घर–घर से कूड़ा इक्ट्ठा किया जाने लगा है। मुख्यमंत्री जी और पूरे तंत्र की सक्रियता ने आम नागरिक को भी स्वच्छता के प्रति ज्यादा जागरूक और संवेदनशील बना दिया है।

हर क्षेत्र में बढ़ा उत्साह, डीडीयू–एमएमएमयूटी भी चमके

साल–2018 में हर क्षेत्र में उत्साह बढ़ा है। पूर्वी उत्तर प्रदेश, पश्चिमी बिहार और नेपाल के बीच शिक्षा के सबसे बड़े केंद्र के रूप में दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय डीडीयू और मदन मोहन मालवीय प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय एमएमएमयूटी भी चमके। डीडीयू में जहां शिक्षकों की कमी दूर हुई वहीं एमएमएमयूटी ने अमरीका, जापान, स्पेन, पोलैंड सहित सात विदेशी विश्वविद्यालयों से करार किया। करार के तहत स्थानीय विद्यार्थियों और शिक्षकों को विदेशों में पढ़ने और शोध करने का मौका मिलेगा। एमएमएमयूटी पांच वर्ष पूर्व 2013 में इंजीनियरिंग कालेज से विश्वविद्यालय के रूप में उच्चीकृत हुआ था। इसके लिए साल 2018 बेहद अहम रहा। शोध–अनुसंधान, शैक्षिक गुणवत्ता की अहमियत समझते हुए विश्वविद्यालय ने विभिन्न राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं के साथ करार करने का फैसला लिया।

इटली की सरकारी संस्था ईएनईए, जापान के राइक्यूस विश्वविद्यालय और एशियन इंस्टीच्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी बैंकाक के क्रम को आगे बढ़ाते हुए इस वर्ष विश्वविद्यालय ने विस्कांसिन यूनिवर्सिटी यूएसए, वारसा यूनिवसिर्टी पोलैंड, कार्लोस यूनिवर्सिटी स्पेन के साथ मिलकर शिक्षा और शोध अनुसंधान के लिए हाथ मिलाया। नेशनल साइबर सिक्योरिटी स्टैंडर्ड की ओर से विश्वविद्यालय में साइबर सिक्योरिटी सेंटर की स्थापना की राह बनी। आने वाले समय में मानवता के सामने सबसे बड़ा खतरा माने जा रहे साइबर क्राइम को रोकने में यह बड़ा कदम साबित होगा। नए सत्र में विप्रो, आईबीएम सहित एक दर्जन से अधिक बड़ी कंपनियां कैम्पस सलेक्शन के लिए एमएमएमयूटी में आने वाली हैं।

सरकार की कोशिश है कि उच्च शिक्षण संस्थान स्थानीय समस्याओं पर फोकस कर शोध करें और स्थानीय लोगों को समस्या से मुक्ति दिलाने का प्रयास करें। अमेरिका, जापान, स्पेन जैसे देशों के टॉप 100 विवि की गुणवत्ता, ज्ञान और तकनीकी का लाभ एमएमएमयूटी को भी मिलेगा जिससे यहां की समस्याओं का अध्ययन आसान होगा। समय तेजी से बदल रहा है और मुकाबला अब ग्लोबल है। इन आवश्यकता को समझते हुए सरकार तेजी से कदम बढ़ा रही है।

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय में कम से कम एक दशक बाद शिक्षकों की नियुक्ति प्रक्रिया चली और पूरी हुई। एक साथ लगभग 142 शिक्षकों की नियुक्ति विश्वविद्यालय के इतिहास में मील का पत्थर है। प्रदेश सरकार ने डीडीयू और राज्य के अन्य विश्वविद्यालय के लिए अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुसार शिक्षा व्यवस्था और दुनिया के टॉप के शिक्षण संस्थाओं में शामिल होने का लक्ष्य रखा है। इसके लिए विश्वविद्यालय की प्रयोगशालाओं और शोध–शिक्षण की व्यवस्थाओं पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। ग्रीन टेक्नोलॉजी की ओर भी कदम बढ़ाए गए हैं। विभागों में सौर उर्जा आधारित कामकाज को बढ़ावा दिया जा रहा है।

गुलजार हुआ तारामंडल, लाइट एंड साउंड शो की हुई शुरुआत

प्रदेश सरकार की कोशिशों से तारामंडल के दिन बहुरने लगे हैं। 2017 मार्च के पहले यह इलाका वीरान–उजाड़ था लेकिन अब देर रात तक गुलजार रहता है। नौकायन, व्यू प्वाइंट आदि की तुलना जुहू चौपाटी से की जाने लगी है। रामगढ़झील भोपाल के भोजताल और हैदराबाद की हुसैनसागर झील से टक्कर ले रही है। पहले 110 मीटर का व्यू प्वाइंट एक किलोमीटर से अधिक क्षेत्र में विकसित हो रहा है। झील को पहले राष्ट्रीय झील संरक्षण योजना के तहत 198 करोड़ रुपए मिले थे। इसका विकास भोजताल और हुसैनसागर झील की तर्ज पर किया जाना था लेकिन 130 करोड़ से अधिक खर्च होने के बावजूद झील को वह स्वरूप नहीं मिल पाया जिसका सपना देखा गया था। गोरक्षपीठाधीश्वर महंत योगी आदित्यनाथ जी के

मुख्यमंत्री बनने के बाद योजना की गति को पंख लग गए।

नए साल के पहले दिन लाइट एंड साउंड शो का उपहार

नए साल के पहले दिन गोरखनाथ मंदिर आने वाले पर्यटकों को लाइट एंड साउंड का उपहार मिला। प्रतिदिन सायंकाल 40 मिनट प्रदर्शित हो रहे इस शो में वॉटर स्क्रीन पर गुरु गोरखनाथ और नाथ पंथ के विभिन्न पहलुओं के बारे में जानने का अवसर मिल रहा है। सरकार प्रदेश के पर्यटन स्थलों का तेजी से विकास कर रही है। इसके तहत गोरखपुर के तीन प्रमुख शहीद स्मारकों और छह प्राचीन मंदिरों का कायाकल्प किया जा रहा है। गोरखनाथ मंदिर, कबीर मठ, रामगढ़ ताल और गोरख तलैया आदि की विश्व भर में पहचान है। पर्यटन के अंतरराष्ट्रीय मानचित्र पर अब और प्रभावी ढंग से पर्यटकों को आकर्षित कर रहे हैं।

साहित्य की दुनिया में मची धूम

योगी सरकार बनने के बाद साहित्य की दुनिया में भी गोरखपुर का परचम लहराने लगा है। गोरखपुर विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग के प्रो. सदानंद प्रसाद गुप्त उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान के अध्यक्ष नामित किए गए। मूलतः झारखंड के रहने वाले प्रो. गुप्त ने गोरखपुर विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में करीब 33 वर्षों तक अपनी सेवा दी। वह गीता प्रेस से निकलने वाली कल्याण पत्रिका से जुड़े रहे। साधारण सभा और कार्यकारणी में गोरखपुर के चार विद्वत जनों को शामिल किया गया है। राजभाषा हिन्दी के उन्नयन के लिए समर्पित इस संस्था की 42 सदस्यीय साधारण सभा में साहित्यकार वेद प्रकाश पांडेय, महाराणा प्रताप पीजी कालेज, जंगल धूसड़ के प्राचार्य डा. प्रदीप राव, पूर्व रेल अधिकारी और व्यंग्यकार रणविजय सिंह तथा गोरखपुर विश्वविद्यालय में प्राचीन इतिहास विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. ईश्वर शरण विश्वकर्मा को बतौर सदस्य शामिल किया गया है। उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा घोषित पुरस्कारों में प्रो. रामदेव शुक्ल को हिन्दी गौरव सम्मान, रवीन्द्र श्रीवास्तव उर्फ जुगानी भाई को लोकभूषण सम्मान तथा प्रो. बनारसी त्रिपाठी को संस्कृत सौहार्द पुरस्कार प्राप्त हुआ।

महायोगी गोरक्षनाथ शोधपीठ की हुई स्थापना

बेहतर शोध के लिए दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय में महायोगी गोरक्षनाथ शोधपीठ की स्थापना की जा रही है। पीठ में निदेशक के साथ करीब 28 पद सृजित हुए हैं। जर्जर हो चुके वाणिज्य विभाग के पुराने भवन को गिराकर भव्य गोरक्ष शोधपीठ की स्थापना की जानी है। शोधपीठ को कुलाधिपति की मंजूरी भी प्राप्त हो गयी है।

बीआरडी मेडिकल कालेज में सुपरस्पेशिलिटी सुविधाओं का हुआ विस्तार

जिन सुपर स्पेशलिटी सुविधाओं की कमी की वजह से यहां के मरीजों को लखनऊ और दिल्ली जैसे शहरों का रुख करना पड़ता है वे अब गोरखपुर भी ही मिलने लगेंगी। 2019 में यह सम्भव दिखाई दे रहा है। बीआरडी मेडिकल कालेज में सुपर स्पेशलिटी अस्पताल बनकर तैयार है। इसमें सिविल वर्क करीब–करीब पूरा हो चुका है। फर्नीचर और अन्दर की बची हुई कुछ फिनिशिंग और गैस पाइप लाइन लगाने का काम चल रहा है। जल्द ही यह अत्याधुनिक उपकरणों से लैस होगा। पूरी तैयारी है कि इसी महीने (जनवरी 2019) में अस्पताल का लाभ मरीजों को मिलने लगे। डाक्टरों और स्टाफ की तैनाती की प्रक्रिया शुरू कर दी गई है। तीन सौ नर्सों के पद सृजित हो गए हैं।

इसी तरह दस मंजिल वाले पांच सौ बेड के सुपर स्पेशलिटी बाल चिकित्सा संस्थान के निर्माण का काम भी तेजी से चल रहा है। इसमें सिविल वर्क लगभग पूरा हो चुका है। फिनिशिंग का काम जारी है। नर्सों के पद सृजित हो चुके हैं। डाक्टरों की तैनाती की प्रक्रिया भी चल रही है। अस्पताल में खोले जाने वाले आठ सुपर स्पेशलिटी विभागों में कार्डियोलॉजी, कोर्डियोथोरेसिक सर्जरी, न्यूरोलॉजी, न्यूरोसर्जरी, कैंसर के मरीजों के लिए आंकोसर्जरी, गैस्ट्रोलॉजी, यूरोलॉजी और ब्लड ट्रांसब्यूजन मेडिसिन शामिल हैं। इन सभी विभाग में 20–20 बेड होंगे। इनमें पांच–पांच बेड आइसीयू के होंगे। सिर्फ यूरोलॉजी विभाग में चार बेड का आइसीयू होगी। अस्पताल में सात आपरेशन थिएटर और एक कैथ लैब होगा।

गोरखपुर और आसपास के जिलों से बड़ी संख्या में हृदय रोगी इलाज के लिए बीआरडी मेडिकल कालेज आते हैं। इनमें से बहुतेरों को हार्ट सर्जरी की जरूरत पड़ती है। सुपरस्पेशिलिटी बन जाने के बाद हृदय रोगों की सभी जांचों के साथ ही गम्भीर हृदय रोगियों का इलाज और हार्ट सर्जरी यहां हो सकेगी। न्यूरोसर्जरी विभाग में सिर की गम्भीर चोट के मरीजों का आपरेशन हो सकेगा। गैस्ट्रोलॉजी विभाग में पेट के गम्भीर रोगों और पैंक्रियाटाइटिस के मरीजों का इलाज होगा। आंकोसर्जरी विभाग होने से कैंसर के मरीजों की सर्जरी हो पाएगी।

सुपर स्पेशलिटी बनने के बाद यहां डीएम और एमसीएच की पढ़ाई भी शुरू हो जाएगी। इन दोनों सुपर स्पेशलिटी पाठ्यक्रमों में कुल मिलाकर 16 सीटें होंगी। साल–2017 में बीआरडी आधुनिक सुविधाओं की राह पर काफी तेज चला। यहां ओपीडी और आइपीडी की सुविधाएं आनलाइन हो गई हैं। पैथालॉजी में भी यह सुविधा लागू की जा रही है। मेडिकल कालेज और नेहरू अस्पताल में फायर हाइड्रेंट सिस्टम तैयार हो गया है। छात्रावासों और सड़कों का काम भी तेजी से हुआ है। 50 बेड के मैरेड हॉस्टल सहित तीन छात्रावास बन कर तैयार हो गए हैं।

जिला अस्पताल में भी डायलिसिस की सुविधा

किडनी के मरीजों के लिए यह साल काफी राहत देने वाला रहा। सरकारी अस्पतालों की बात करें तो अब तक सिर्फ बीआरडी मेडिकल कालेज में ही डायलिसिस की सुविधा थी। इस साल जिला अस्पताल में भी डायलिसिस की सुविधा शुरू हो गयी।

बच्चों को मिलेगा बेहतर इलाज

500 बेड के बाल चिकित्सा संस्थान में बच्चों के इलाज के लिए हर तरह की सुपर स्पेशलिटी सेवाएं होंगी। इसमें रेडियोलॉजी, एनेस्थीसिया, पैथालॉजी, पीडियाट्रिक मेडिसिन, पीडियाट्रिक न्यूरोलॉजी, पीडियाट्रिक कार्डियोलॉजी, पीडियाट्रिक नेफ्रोलॉजी एंड डायलिसिस यूनिट, पीडियाट्रिक सर्जरी, पीडियाट्रिक कार्डियक सर्जरी, पीडियाट्रिक यूरो सर्जरी, पीडियाट्रिक न्यूरोसर्जरी, पीडियाट्रिक डेवलपमेंटल साइंस, कुपोषण एवं पुनर्वास केंद्र, पीडियाट्रिक गैस्ट्रोइंट्रोलॉजी, पीडियाट्रिक आर्थोपेडिक्स सर्जरी, पीडियाट्रिक इंडोक्राइन सर्जरी सहित कई अन्य विभाग शामिल होंगे।

एम्स का निर्माण तेज

2018 में गोरखपुर में एम्स के निर्माण ने भी तेजी पकड़ ली। मुख्य भवन का निर्माण तेजी से चल रहा है। साल–2019 में यहां ओपीडी शुरू कर दी जाएगी। तब सांसद रहे गोरक्षपीठाधीश्वर महंत योगी आदित्यनाथ जी के प्रयासों से एम्स की आधारशिला प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 22 जुलाई 2016 में रखी थी। भवन निर्माण के लिए केंद्रीय लोक निर्माण संगठन को कार्यदायी एजेंसी संस्था बनाया गया है। आधारभूत सुविधाओं की स्थापना के लिए जल निगम और लोक निर्माण विभाग को जिम्मेदारी दी गई है। जल निगम को नलकूपों की स्थापना करनी है। लोक निर्माण विभाग को वहां तक सड़क मार्ग की जिम्मेदारी दी है। उपकेंद्र की स्थापना और आपूर्ति के लिए बिजली विभाग को करनी है। एम्स में कुल 750 बेड और 150 आपरेशन थियेटर होंगे। इसके निर्माण पर कुल 1011 करोड़ खर्च होने हैं।

नंदानगर अंडरपास से बदली तस्वीर

नंदानगर क्रासिंग पर लगने वाले जाम से परेशान लोगों को राहत भी साल–2018 में ही मिली। यहां रेलवे के तय मानकों के हिसाब से अंडरपास वर्षों पहले बन जाना चाहिए था लेकिन एक–दूसरे पर जिम्मेदारी डालने के खेल ने वर्षों इसे लटकाए रखा। रेलवे मानक के हिसाब से ट्रेनों और सड़क का यातायात 18 गुना अधिक बढ़ चुका था। रेलवे के नियम के अनुसार किसी क्रॉसिंग का टीवीयू (ट्रेन वेहिकल यूनिट) एक लाख हो जाए तब 50–50 प्रतिशत

योगदान के आधार पर रेलवे और राज्य सरकार अंडरपास का प्रस्ताव बना सकती है। नंदानगर क्रॉसिंग का टीवीयू 18.24 लाख (18,24,680) हो गया था। इस क्षेत्र के लोगों के रोज घंटों जाम से जूझते गुजर रहे थे लेकिन व्यवस्था हाथ पर हाथ रखे बैठी थी। एयरपोर्ट, एयरफोर्स, कई कालोनियां होने के साथ ही अंतरराष्ट्रीय बौद्ध तीर्थ कुशीनगर का रास्ता भी है यही है। पर्यटकों को भी काफी तकलीफ होती थी। गोरक्षपीठाधीश्वर महंत योगी आदित्यनाथ भी इस मुद्दे को बार–बार संसद में उठाते रहते थे। प्रदेश में उनकी सरकार बनने के बाद आखिरकार नंदानगर क्रॉसिंग पर अंडरपास का रास्ता भी साफ हो गया। क्रासिंग के दोनों तरफ अंडरपास बनकर तैयार है। पीडब्ल्यूडी तेजी से अप्रोच मार्ग तैयार करने में जुटा है। जल्द ही इसे आम लोगों के लिए खोल दिए जाने की सम्भावना है।

एक वर्ष में ही विकास कार्यों की ये श्रृंख्ला इतनी लम्बी है कि हजारों पन्ने भी कम पड़ जाएंगे। इतने कम समय इतना विकास कार्य गोरखपुर के लोगों ने कभी सपने में भी नहीं सोचा था। किसी एक सड़क, किसी एक छोटे से पुल या कुछ बिजली के खम्भों–तार के लिए वर्षों आन्दोलन करने पर कुछ स्वीकृत हो जाना, कार्य प्रारम्भ होने में वर्षों लग जाने और उसे पूर्ण होने में वर्षों लग जाने के अभ्यस्त हम गोरखपुर वासियों को कभी–कभी तो लगता है कि हम सपना तो नहीं देख रहे। इस लेख में सिर्फ कुछ अत्यंत महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर ध्यान आकर्षित करने की कोशिश की गई है। यह स्पष्ट है कि प्रदेश सरकार समावेशी विकास की अवधारणा के साथ समाज के अंतिम व्यक्ति के जीवन को खुशहाल बनाने की राह पर चल रही है। विकास की यह गति बता रही है कि दो से तीन वर्ष में गोरखपुर विकास का इतिहास बनाने जा रहा है। आइए हम सब अपने छोटे–छोटे प्रयासों से इसमें सहभागी बनें।

मेट्रो बदलेगी शहर के यातायात की तस्वीर

गोरखपुर, खासकर पुराना गोरखपुर को संकरी गलियों का शहर माना जाता रहा है। सड़क पर वाहनों की तादाद लगातार बढ़ने के फलस्वरूप ट्रैफिक जाम की समस्या इतनी गम्भीर हो चुकी थी कि उसका कोई हल ही नजर नहीं आ रहा था। हालांकि मुख्यमंत्री का शहर बनने के बाद सड़कों के चौड़ीकरण, डिवाइडरों के निर्माण, रूट डायवर्जन और ट्रैफिक पुलिस की बुद्धिमत्तापूर्ण तैनाती ने इससे काफी राहत दिलाई है। लेकिन अब भी कहीं–कहीं जाम लगता है और महसूस होता है कि आबादी और वाहनों की बढ़ती भीड़ से सड़कें कम पड़ती जा रही हैं। ऐसे में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी की सक्रियता से आया मेट्रो का प्रस्ताव गोरखपुर की यातायात की तस्वीर बदल देने वाला साबित होगा।

मेट्रो मैन श्रीधरन शहर का दो दिवसीय दौरा कर चुके हैं। उनके निर्देशन में जिन दो कॉरीडोर की बात आई है उनमें से पहले का रूट श्याम नगर, बरगदवा, शास्त्रीनगर, नाथमलपुर,

गोरखनाथ मंदिर, हाजीपुर, धर्मशाला, रेलवे स्टेशन, डीडीयू, पैड़लेगंज, मोहद्दीपुर, रामगढ़ झील, एम्स, मालवीय नगर, एमएमयूटी, दिव्य नगर, सूबा बाजार तक होगा तो दूसरे का गुलरिहा, बीआरडी मेडिकल कॉलेज, मोगलहां, खजांची बाजार, बशारतपुर, अशोक नगर, असुरन चौक, गोलघर, कचहरी तक। कल्पना कीजिए कि इस परियोजना के धरातल पर उतर जाने के बाद गोरखपुर का यातायात कितना सुगम हो जाएगा। आप इन दोनों कॉरीडोर के किसी भी मेट्रो स्टेशन पर टिकट खरीदकर चमचमाती, साफ सुथरी मेट्रो में सवार होंगे और पलक झपकते अपने गंतत्व तक पहुंच जाएंगे। न अपनी बाइक, कार में ईंधन का खर्च न व्यस्त सड़कों पर ड्राइविंग का तनाव। आम आदमी का जीवन कितना सुगम और आसान होगा इसकी कल्पना करके भी मन प्रफुल्लित हो जाता है। शहर की सड़कों पर वाहनों का बोझ भी कम होगा। पर्यावरण को वाहनों के जहरीले धुएं से राहत मिले। मेट्रो के लिए दो यार्ड प्रस्तावित हैं। पहला यार्ड जंगल सिकरी में और दूसरा गोरखनाथ मंदिर से बरगदवा रोड पर पशु अस्पताल के पास प्रस्तावित है।

घर–घर पाइप से पहुंचेगी गैस, काम तेज

साल–2018, शहर में पीएनजी यानि पाइप्ड नेचुरल गैस के सपने को पूरा करने की दिशा में भी महत्वपूर्ण पड़ाव रहा। वाराणसी से गोरखपुर के फर्टिलाइजर कारखाने तक गैस पाइप लाइन पहुंचाने के लिए गैस अथॉरिटी आफ इंडिया लिमिटेड (गेल) ने पाइप लाइन की हाईड्रो टेस्टिंग शुरू कर दी है। सरयू और राप्ती नदी के नीचे पाइप लाइन डालने का काम तेजी से चल रहा है।

जल्द ही वाराणसी से आजमगढ़ और आजमगढ़ से गोरखपुर तक पाइप लाइन की हाइड्रो टेस्टिंग का काम पूरा कर लिए जाने की सम्भावना है। गोरखपुर के फर्टिलाइजर कारखाने को फिर से शुरू करने के लिए नया कारखाना बनाने का काम भी तेजी से चल रहा है। इस कारखाने में नीम कोटेड यूरिया बनेगी। कारखाना प्राकृतिक गैस से चलेगा। इसी के लिए वाराणसी से गोरखपुर के बीच 166 किलोमीटर लम्बी पाइप लाइन बिछाई जा रही है। गोरखपुर में यह पाइप लाइन संतकबीरनगर से सहजनवां, खजनी और सदर तहसील होते हुए फर्टिलाइजर कारखाने तक जाएगी। प्राकृतिक गैस कारखाने के लिए गोरखपुर आएगी तो घर–घर की रसोई में भी पहुंचेगी। सिलेंडरों की झंझट खत्म होगी। गैस की पाइप से चूल्हा जलेगा। जितनी गैस जलाएंगे उतनी का मूल्य भुगतान करेंगे। घटतौली की आशंका ही नहीं रहेगी। यह गैस सिलेंडर वाली गैस से सस्ती भी होगी, सुरक्षित भी।

बिजली कनेक्शन के लिए डॉयल करें–1912

बिजली के मामले में भी जिले का परिदृश्य बदल गया है। गरीबी रेखा से नीचे वाले परिवारों को सौभाग्य योजना के तहत मुफ्त बिजली कनेक्शन दिए जा रहे हैं। जो गरीब, जनगणना के आधार पर गरीबी रेखा में शामिल नहीं हो पाए उनके लिए भी टोकन राशि पर किश्तों में बिजली कनेक्शन दिए जा रहे हैं। गोरखपुर में 2.7 लाख लोगों को ऐसे कनेक्शन दिए जाने थे। 1.92 लाख को दिए जा चुके। कनेक्शन देने की प्रक्रिया में बदलाव इस कदर आया है कि पहले आप कनेक्शन के लिए दफ्तरों के चक्कर लगाते थे, अब दफ्तर आपके द्वार पर आकर कनेक्शन दे रहा है। आप सिर्फ अपने फोन से 1912 डॉयल कर दें। सौभाग्य योजना के तहत कनेक्शन लगाने के लिए विद्युत निगम के कर्मचारी पहुंच जाएंगे। विद्युत उपकेंद्र तक जाने की जरूरत नहीं पड़ेगी। इसके अलावा कटिया कनेक्शन खत्म करने और आम लोगों को बिजली बिल के भारी बोझ से मुक्ति दिलाने के लिए भी सरकार ने प्रभावी कदम उठाए हैं। एक जनवरी 2019 से एकमुश्त समाधान योजना (ओटीएस) के तहत बकाए बिल पर सरचार्ज (ब्याज) में शत प्रतिशत की छूट दी जा रही है। कटिया कनेक्शन से बिजली जलाने वाले गरीबों को दंड की बजाए स्थाई कनेक्शन तुरंत दिए जाने की योजना शुरू की गई है। सरकार की मंशा है कि राज्य में किसी का उत्पीड़न न हो। व्यक्ति से लेकर प्रशासन और सरकार तक कामकाज में पारदर्शिता और इमानदारी आए। गरीबों के प्रति पूरी संवेदनशीलता दिखाते हुए उनके जीवन स्तर को ऊंचा उठाने और उन्हें विकास की मुख्य धारा से जोड़ने के प्रयास हों। इसके लिए वह सब किया जाए जिसकी जरूरत समाज का अंतिम व्यक्ति मुस्कुराने के लिए महसूस करता है।

कटौती से मुक्त हुए शहर और गांव

प्रदेश वही, संसाधन वही, अफसर वही, कर्मचारी वही। लेकिन जहां पहले पूरे दिन छह से आठ घंटे निर्बाध बिजली के लिए लोग तरस जाते थे। गर्मी के दिनों में पूरी–पूरी रात सड़कों पर बिजली के लिए आंदोलन करते गुजरती थी वहीं अब 24 घंटे बिजली का सपना पूरा होता नजर आ रहा है। उत्तर प्रदेश के अन्य जिलों की तरह गोरखपुर शहर और गांवों को बिजली कटौती से बड़ी राहत मिली है। स्थानीय फाल्ट या बड़े पैमाने पर चल रहे निर्माण कार्यों की वजह से अब बिजली थोड़ी देर के लिए कभी जाती भी है तो लोगों को भरोसा रहता है कि दो–चार मिनट में आ जाएगी। अफसर, मंत्री बैठकों पर बैठकें कर रहे हैं। जर्जर–तार–खम्भे बड़े पैमाने पर बदले जा रहे हैं। मुख्यमंत्री का निर्देश है कि उत्तर प्रदेश में 24 घंटे बिजली का लक्ष्य बिना किसी इलाके से भेदभाव किए हासिल करना है। इसमें काफी हद तक कामयाबी भी मिली है। शत प्रतिशत कामयाबी के लिए मशीनरी पूरी तत्परता से जुटी हुई है।

नया गोरखपुरः सड़कें ही नही गोरखपुर वासियों की सोच में भी आ रहा है बदलाव

महेन्द्र कुमार सिंह

बजबजाती नालियां, कहीं भी कूड़े का विखराव, रात में अंधेरे की आगोश में सड़के, बारिश में जलभराव से परेशान लोग और सड़कों पर लगता घंटों का जाम। गोरखपुर को लेकर साल 2017 के पहले तक मेरे पास कुछ ऐसा ही अनुभव था। जब भी मैं दिल्ली से अपने शहर आता था मन को तो अपनी धरती पर आने का शकुन मिलता था लेकिन दिमाग को एक ही सवाल हमेशा परेशान करता था कि क्या गोरखपुर की तश्वीर कभी बदलेगी या नही? रुस्तमपुर चौराहा हो या फिर लाल डिग्गी पार्क चौराहा ज्यादातर इलाकों के निवासी इन समस्याओं से परेशान थे। लेकिन पिछले 20 महीने में स्थितियां तेजी से बदलीं हैं, गोरक्षपीठ के महंत और गोरखपुर के सांसद रहे योगी आदित्यनाथ ने जैसे ही उत्तर प्रदेश के मुखिया के तौर पर शपथ ली, शहर का कायाकल्प होना शुरू हो गया है। यद्यपि सांसद रहते योगी आदित्यनाथजी महाराज ने गोरखपुर की उक्त समस्यओं के लिए प्रबल प्रतिरोध और समस्या समाधान के लिए निरंतर प्रयास किया था। लेकिन तत्कालीन प्रदेश सरकार की अनदेखी से कोई प्रभावी समाधान नहीं मिल पाया।

योगी सरकार के कमान संभालने ही सड़के चौड़ी होने लगी, शहर साफ–सुथरा और सुंदर होने लगा। शहर में प्रवेश करते ही एहसास होने लगता कि काफी कुछ बदल रहा अच्छे केलिय।

एक दिन विश्वविद्यालय से छुट्टी के बाद शाम करीब 7.30 बजे बच्चों को लेकर गोलघर के लिए निकला तो विश्वास ही नही हुआ कि ये गोरखपुर ही है। ऐसा लगा जैसे की सफेद रोशनी में नहाई चौड़ी चौड़ी साफ सुथरी सड़के, सजे हुए चौराहे और चौराहों पर विराजमान

महापुरुषों की चमचमाती मूर्तियां हमारा स्वागत कर रही है।

एक वक्त था जब रुस्तमपुर मंडी चौराहे पर घंटों जाम लगा रहता था। यह चौराहा लखनऊ की तरफ से आने वाले लोगों के लिए गोरखपुर का प्रवेश द्वार है।

लेकिन आज शहर की तस्वीर बदली नजर आती है। रुस्तमपुर मंडी चौराहे की सड़कें चौड़ी हो गई है, जिससे वाहनों का आवागमन सामान्य से बेहतर हो गया है। यही नहीं जिस तेजी से कुशीनगर और देवरिया बाईपास का काम चल रहा है, उसको देखते हुए तो यही लग रहा है कि कुशीनगर और देवरिया जाने वाले लोगों का सफर भी अब काफी आरामदायक होने वाला है, क्योंकि यह बाईपास शहर के बाहर से होकर जाएगा, कुशीनगर और देवरिया जाने वाले लोगों को शहर के अंदर नहीं आना पड़ेगा। जिससे लोगों को जाम की समस्या से नहीं जूझना पड़ेगा।

परिवर्तन यही नहीं, गोरखनाथ मंदिर इलाके में भी देखने को मिला। एयरपोर्ट से मंदिर आने वाली सड़क अब फोर लेन हो रही है। इस सड़क के बन जाने से एयरपोर्ट से मंदिर की दूरी महज 30 मिनट की रह जायेगी, जो अपने आप में एक बड़ी उपलब्धि होगी। पहले एयरपोर्ट से बाबा गोरखनाथ के दर्शन करने आने वाले भक्तों को खराब सड़क के कारण एक से डेढ़ घंटे का समय लगता था, जो समाप्त हो रहा है।

पुराने गोरखपुर के गोलघर, धर्मशाला बाजार, अलीनगर, दाउदपुर, बेतियाहाता जैसे इलाकों में बहुत परिवर्तन नहीं किया जा सकता है, क्योंकि इन इलाकों में रहने वाले लोगों के घरो में ही उनके व्यवसायिक प्रतिष्ठान हैं। इन इलाकों के कुछ अवैध अतिक्रमण को प्रशासन ने चिन्हित भी किया है, जिन्हें भविष्य में ध्वस्त भी किया जाएगा। इससे कुछ हद तक समस्या के समाधान होने की उम्मीद है। इस सबके बीच मुझे सबसे रोचक बात यह लगी कि जिन अवैध अतिक्रमणों को प्रशासन ध्वस्त कर चुका है, उसको लेकर लोगों के मन में कोई गुस्सा नहीं है, बल्कि लोग इससे काफी खुश हैं। यह अपने आप में बदल रहे गोरखपुर की बदलती मानसिकता वाली बात है।

एक वक्त था कि गोरखपुर की सड़कों के बारे में कहा जाता था कि 'यहां सड़कों में गड्ढे नहीं है, बल्कि गड्ढे में ही सड़क है।' अब वैसी स्थिति नहीं रह गई है, प्रदेश सरकार ने सड़कों को गड्ढा मुक्त करने का अपना वायदा निभाया है। शहर के ज्यादातर डायवर्जन व्यवस्थित कर दिए गए हैं। असुरन, गोलघर काली मन्दिर, कैंट, गणेश, छात्रसंघ आदि जैसे चौराहों का चौड़ीकरण करने के साथ ही इनका सौंदर्यीकरण कर दिया गया है।

परिवर्तन यहीं नहीं स्वच्छता के क्षेत्र में भी देखने को मिला है। जहां पहले शहर के कई

इलाकों में गंदगी का अंबार लगा रहता था, वहीं अब साफ सुथरा गोरखपुर दिखने लगा है। नालियों से बराबर सिल्ट निकाली जा रही है और उन्हें हटाया भी जा रहा है। शहर के लोग भी अब बढ़ चढ़ कर सफाई अभियान में भाग ले रहे। मानों अब उन्हें गोरखपुरी होने का फक्र है। हां ये सच है कि सीवर का प्लान अभी जमीन पर पूरी तरह नहीं उतर पाया है, लेकिन नेतृत्व के अन्य कार्यों को देखते हुए लोगों में यह उम्मीद है कि जल्द ही इस पर भी काम पूरा हो जाएगा। हर साल बरसात में शहर में जलजमाव की समस्या से गोरखपुर वासियों को मुक्ति मिलेगी।

जब मैंने बदले हुए गोरखपुर की इस तस्वीर के बारे में अपने विश्वविद्यालय में पढाई के दौरान बने दोस्तों से बात हुई तो कइयों ने कहा 'मर्दे ई महाराज जी के छेत्र ह। जल्दिये ई लखनउओ के पाछे छोड़ दी।' (ये मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी का क्षेत्र है, बहुत जल्द ही विकास के मामले में यह लखनऊ को भी पीछे छोड़ देगा)।

पहले की अपेक्षा गोरखपुर की मूलभूत सुविधाओं में काफी परिवर्तन हुआ है। जिन मूलभूत मुद्दों को पिछला नेतृत्व नजरअंदाज करता रहा है, उन्हीं मुद्दों पर वर्तमान नेतृत्व काफी काम कर रहा है।

गोरखपुर की सड़कें ही नहीं, लोगों की सोच भी बदल रही है। अब लोग पुराने गोरखपुर को साथ में लेकर नए गोरखपुर के निर्माण में सरकार के साथ कदम से कदम मिला रहे हैं, जो विकास की दिशा में अच्छा संकेत है। गोरखपुर के विकास की गति को देखकर ऐसा लग रहा है कि आज गोरखपुर भारत की अग्रणी शहरों में अपना नाम सम्मिलित कराने के लिए मानो बेताब है।

जागरुकता, सक्रियता बढ़ी तो साफ दिखने लगा शहर

अजय श्रीवास्तव

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के स्वच्छता अभियान को आंदोलन की शक्ल देते हुए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने पूरे प्रदेश में अभियान चलाया। इसका असर गोरखपुर में काफी सकारात्मक रूप में दिखने लगा है। स्वच्छता सर्वेक्षण 2017 में गोरखपुर को देश में 314 वीं रैंकिंग मिली थी। स्वच्छ सर्वेक्षण 2018 में सुधार हुआ। देश के प्रमुख शहरों के बीच सफाई को लेकर तय रैंकिंग में गोरखपुर नगर निगम को 282वां स्थान मिला। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ सफाई व्यवस्था को सुधारने को लेकर हमेशा फिक्रमंद रहे। गोरखपुर आगमन पर रास्ते में गंदगी देखकर अधिकारियों को नसीहत देने, समीक्षा बैठकों में सफाई पर विशेष ध्यान, संसाधनों के लिए पर्याप्त बजट देने का नतीजा है कि सफाई को लेकर सभी का नजरिया बदला है। अच्छी बात यह है कि सफाई के मामले में गोरखपुर प्रदेश स्तर पर पुरस्कृत होने लगा है। स्वच्छता सर्वेक्षण 2019 में बेहतर रैकिंग को लेकर उम्मीदें बढ़ी हैं।

गोरखपुर के खाते में स्वच्छता के मोर्चे पर पिछले 25 दिसम्बर को एक उपलब्धि जुड़ी जब यह घोषणा हुई कि नगर निगम के सिविल लाइंस वार्ड ने स्वच्छता के मामले में प्रदेश में चौथा स्थान प्राप्त किया। मुख्यमंत्री ने इस समारोह में पार्षद के साथ अधिकारियों को शाबाशी देते हुए स्वच्छता सर्वेक्षण 2019 में गोरखपुर के लिए बेहतर प्रदर्शन का लक्ष्य रखा। दो जनवरी को महापौर और पार्षदों के साथ लखनऊ में हुई बैठक में भी मुख्यमंत्री ने 4 जनवरी से शुरू हो रहे स्वच्छता सर्वेक्षण को लेकर तैयार रहने का निर्देश दिया। इस बीच, प्रदेश स्तर पर आयोजित इंटर वार्ड प्रतियोगिता में चौथा स्थान हासिल करने से न सिर्फ सिविल लाइंस के पार्षद और नागरिकों की जिम्मेदारी बढ़ी बल्कि दूसरे वार्ड के पार्षदों में भी ये भावना जगी कि सिविल वार्ड को सम्मान मिल सकता है उनके वार्ड को क्यों नहीं? पिछले एक–दो वर्ष में सफाई को लेकर निगम के अफसरों से लेकर आम लोगों तक नजरिया बदला है। निगम, हाउस टैक्स

से हर साल करीब 22 करोड़ प्राप्त करता है। स्थाई, अस्थाई सफाई कर्मचारियों के वेतन, कूड़ा उठाने वाली गाड़ियों पर सालाना 25 करोड़ से अधिक की रकम खर्च हो रही है। अपने शहर में रोज 600 मिट्रिक टन कूड़ा निकलता है। कूड़ा निस्तारण के लिए वैश्विक स्तर पर तीन 'आर' का सिद्धांत चल रहा है। अमेरिका जैसा विकसित देश 15 नवम्बर के दिन को हर साल 'अमेरिका रिसाइकिल दिवस' के रूप में मना रहा है।

सेंट्रल पब्लिक हेल्थ और एन्वायरन्मेंटल इन्जीनियरिंग ऑर्गेनाइजेशन के अनुसार भारतीय शहरों व कस्बों में प्रति व्यक्ति कचरा उत्पादन की मात्रा 0.2 से 0.6 किग्रा प्रतिदिन है। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) के आंकड़ों के अनुसार 90 फीसदी कचरे का निस्तारण गलत व अवैज्ञानिक तरीकों से किया जाता है। कचरा प्रबंधन को लेकर दायर याचिका की सुनवाई के बाद वर्ष 1996 में सुप्रीम कोर्ट ने भारत सरकार को आवश्यक कदम उठाने के निर्देश दिए। फलस्वरूप, कचरा प्रबंधन के लिए नए नियम बने। भारत सरकार के पर्यावरण व वन मंत्रालय ने 'म्युनिसिपल सॉलिड वेस्ट' (मैनेजमेंट व हैंडलिंग) नियम–2000 पारित किया। वर्तमान में नगर निगम के साथ ही आम नागरिकों ने भी स्वीकारा है कि 'स्वच्छ भारत अभियान' सिर्फ एक नारा या सरकारी प्रयास भर नहीं है। शहरी जिंदगी के लिए मूलमंत्र हैं। बीमारी से बचने से लेकर आसपास के वातावरण को शुद्ध रखने के लिए हमें ऐसी ही तकनीकी व वैज्ञानिक अभियान की जरूरत है। इसमें धन, बुनियादी तंत्र, तकनीक व सामुदायिक सहयोग की आवश्यकता है। एक चरण में चूक हुई तो कचरे का ढेर काल बन जाएगा। रिसाइक्लिंग भी कचरा प्रबंधन का ही एक हिस्सा है। स्वच्छ वातावरण के लिए सभी को तीन 'आर' अपनाना होगा। पहले 'आर' का मतलब 'रिड्यूस' यानी रिसाइकल हो सकने वाले पदार्थों से बने उत्पादों का इस्तेमाल करें। दूसरे 'आर' का मतलब री–यूज यानी किसी भी उत्पाद का जितना हो सके उतना प्रयोग करें। तीसरे आर का मतलब रिसाइकल यानी कूड़े को रिसाइकिल कर दोबारा प्रयोग में लाया जा सके। कूड़े को लेकर एक और बदलाव दिख रहा है। कूड़ा पूरे विश्व में अब उर्जा का एक बड़ा स्रोत बन रहा है। नॉर्वे की राजधानी ओस्लो में तो 50 प्रतिशत से ज्यादा बिजली की पूर्ति व वातानुकूलन के लिए ऊर्जा कचरे को जलाकर उत्पन्न की जाती है। कूड़े को लेकर बदली सोच के साथ नगर निगम भी बदलाव करने को तैयार दिख रहा है। नगर आयुक्त का कार्यभार देख रहे जिलाधिकारी के प्रयास से सभी 70 वार्डों में मिनी कार्यालय खोला जा रहा है। जहां सफाई को लेकर शिकायतें 24 घंटे के अंदर दूर की जाएंगी। 40 वार्डों में डीएम ने जमीन भी चिन्हित कर ली है। मिनी कार्यालय में पार्षदों के बैठने की जगह होगी। इससे उनकी यह शिकायत भी दूर हो जाएगी कि जनता की समस्याएं कहां सुनी जाएं। शहर में कचरा नहीं दिखे इसके लिए प्रत्येक 50 मीटर की दूरी पर हरे और नीले डस्टबिन की व्यवस्था की जा रही है। इसके लिए नगर निगम ने 2000 डस्टविन मंगाए हैं। डोर–टू–डोर कूड़ा कलेक्शन भी धीरे–धीरे सभी वार्डों

में शुरू हो गया है। घरों से निकलने वाला कूड़ा सीधे ट्रेचिंग ग्राउंड तक पहुंचे इसकी व्यवस्था की जा रही है। डोर–टू–डोर कूड़ा उठाने वाले वाहनों का कूड़ा सीधे छोटी गाड़ियों से कूड़ा निस्तारण केन्द्र तक पहुंचे इसके इंतजाम भी किये जा रहे हैं। निगम के पास 60 मैजिक गाड़ियां हैं, 70 और नई गाड़ियां खरीदी जा चुकी हैं। प्रत्येक वार्ड में दो–दो मैजिक गाड़ियां दी जा रही हैं, ताकि सड़कों पर कूड़ा नहीं फेंका जा सके। कूड़ा उठाने में नगर निगम का खर्च न हो और लोगों को फायदा भी हो इसके इंतजाम भी किये गए हैं। डोर–टू–डोर कूड़ा कलेक्शन के लिए सामुदायिक एजेंसियों के साथ ही कूड़ा बीनने वालों को लगाया जा रहा है। घरों से मिल रहे 50 रुपये और दुकानों से मिल रहे 100 रुपये को कूड़ा बीनने वालों में बांटा जा रहा है, ताकि कूड़ा उनके लिए रोजगार का साधन बन सके। देश के सबसे स्वच्छ शहर इन्दौर की तर्ज पर गोरखपुर नगर निगम भी संसाधनों को बढ़ाने में जुटा हुआ है। गोरखपुर और इन्दौर से निकलने वाले कूड़े में सिर्फ 100 मिट्रिक टन का अंतर है, लेकिन इन्दौर के मुकाबले गोरखपुर में संसाधनों की काफी कमी है। निगम संसाधनों की खाई को पाटने पर लगा हुआ है। नगर निगम 38 लाख रुपये खर्च कर अत्याधुनिक मशीनों की खरीदारी कर रहा है। निगम ने ऐसी मशीन मंगाई है जो सूखे और गीले कूड़े को न सिर्फ अलग–अलग करेगी बल्कि कम्प्रेस कर ठोस गोला में बदल देगी। ऐसे में कूड़ा निस्तारण की समस्या काफी हद तक खत्म हो जाएगी। निगम, आने वाले दिनों में 4 से 6 ऐसी मशीनों का आर्डर देने की तैयारी में है। नाला सफाई को लेकर 10 पोकलेन मशीनें और 30 लोडर ट्रक मंगाए जा रहे हैं। प्रमुख सड़कों की सफाई के लिए 10 छोटी–बड़ी स्वीपिंग मशीन भी मंगाई जा रही है।

पॉलीथिन को लेकर बढ़ी है जागरूकता

शहर की संस्था 'गोरखपुर एन्वायर्मेंटल एक्शन ग्रुप' द्वारा पूर्व में किये गए सर्वे के मुताबिक गोरखपुर शहर में 22.08 करोड़ पॉलीथिन के थैले हर साल सड़कों पर कूड़े के साथ फेंके रहे हैं। शहर में होने वाली 1.40 कुंतल पॉलीथिन रोज यहीं की 80 प्रतिशत खुली नालियों में जाकर फंस जाती है। प्रदेश सरकार द्वारा जारी कड़े प्रावधानों के बाद पालीथिन पर काफी हद तक अंकुश दिख रहा है। इको फ्रैंडली बैग को लेकर दुकानदार जागरूक हुए हैं। थर्माकोल की जगह सुपारी के पत्ते और कागज के कप–प्लेट का चलन तेजी से बढ़ा है। प्रशासन की संयुक्त टीमों द्वारा बार–बार चलाए जा रहे अभियान का भी असर दिख रहा है। कूड़ा निस्तारण और पॉलीथिन के दुष्प्रभाव को लेकर सामाजिक संस्थाएं भी आगे आई हैं। पिछले दिनों स्वच्छता को जेकर जागरूकता के लिए एक संस्था के कलाकारों ने 14 घंटे में शहर के विभिन्न 53 स्थानों पर नुक्कड नाटक का मंचन कर विश्व रिकार्ड के लिए दावेदारी पेश कर दी।

सरकार की सख्ती के असर, भ्रष्टाचार मुक्त होने लगा नगर निगम

वर्तमान सरकार में निगम की कार्यप्रणाली और सोच में परिवर्तन साफ दिख रहा है। आकड़े तस्दीक करते हैं कि विभिन्न स्रोतों से 25 से 30 करोड़ रुपये जुटाने वाले नगर निगम की पूरी रकम सफाई की व्यवस्था को लेकर भी कम पड़ जाती थी। डीजल चोरी पर अंकुश जैसे कदमों से नगर निगम रोज 50 हजार यानी साल में करीब दो करोड़ रुपये की बचत कर रहा है। इसके साथ ही आउटसोर्सिंग के सफाई कर्मचारियों को होने वाले भुगतान में निगरानी और पारदर्शी तरीकों से हर महीने 50 लाख रुपये तक की बचत हो रही है। सफाई की व्यवस्था में लापरवाही को लेकर गोरखपुर के पूर्व नगर आयुक्त, संयुक्त नगर आयुक्त, मुख्य सफाई निरीक्षक से लेकर दर्जन भर से अधिक सुपरवाईजरों को निलंबित किया जा चुका है।

ओडीएफ प्लस श्रेणी में नगर निगम

शौचालय के निर्माण को लेकर निगम ओडीएफ प्लस की श्रेणी में आ चुका है। वर्ष 2011 की जनगणना के मुताबिक शहर के 10,640 परिवारों के पास व्यक्तिगत शौचालय नहीं थे। इसके उलट अभी तक 10,700 व्यक्तिगत शौचालय बन चुके हैं। शहर में 8000 प्रधानमंत्री आवासों के लिए रुपयों का आवंटन कर निर्माण पूरा करा दिया गया है। इसी के साथ शहर में 900 सीट के सामुदायिक शौचालय का निर्माण पूरा हो गया है। 428 सीट वाले पब्लिक टॉयलेट में 427 सीट का निर्माण पूरा हो गया है। इसी के साथ पब्लिक से जुड़े कार्यक्रमों में लोग खुले में शौच नहीं करें इसके लिए निगम ने 20 मोबाइल टॉयलेट की खरीद की है। गोरखनाथ मंदिर में श्रद्धालुओं की सहूलियत के लिए शहर के पहले 40 सीट वाले डबल स्टोरी शौचालय का निर्माण किया चुका है। इसके साथ ही 12 सीट वाले शौचालय का निर्माण भी मंदिर परिसर में किया गया है। 100 से अधिक पेट्रोल पंपों, मैरेज हालों के टॉयलेट्स को भी सार्वजनिक इस्तेमाल के लिए उपलब्ध कराने के आदेश जारी किये गए हैं।

गोरखपुर में पर्यटन की सम्भावनाएं एवं विकास

संदीप कुमार श्रीवास्तव

भारत विविधताओं का देश है। जहां कला संस्कृति, आस्था–अध्यात्म, योग दर्शन विज्ञान, वास्तु अलंकरणों से परिपूर्ण विरासत व धरोहर की सम्पूर्ण यश कीर्ति अपनी सम्पन्नता की यात्रा को समेटे हुए है। पूर्वांचल की सांस्कृतिक धर्म आस्था, शिक्षा पर्यटन एवं राजनीतिक धुरी के केन्द्र बिन्दु गोरखपुर में पर्यटन की दृष्टि से बढ़ते आयामों ने सम्भावनाओं के नये द्वारा खोल दिये हैं जिसका साक्षात्कार करके यात्री व दर्शक कोमलता से सुखद यात्रा का अनुभव कर आह्लादित होते हैं। यहां आस्था की गुंज और आध्यात्म की शान्ति भी है, एक बार अपनी माटी से जुड़ने के लिए दो कदम चलिए तो सही..... पूर्वांचल में गोरखपुर का इतिहास गौरवशाली है। इसके कण–कण अवलोकन में बढ़ते पग अपनी ओर आकर्षित करते हैं। पूर्वांचल की अविरल प्रवाह में प्रवाहित होने वाली राप्ती नदी, जिसे शास्त्रों में अचिरावती नाम से सम्बोधित किया गया है। इसके पावन तट पर अचिरा नगरी अर्थात गोरक्षनगरी, गोरखपुर के नाम से विख्यात है। लहलहाते फसलों का स्पर्श करती रोहणी, गण्डक, आमी, कुआनों नदियों का सुरम्य संगम जीवन दायनी एवं पतित पावनी निर्मलता का एहसास कराती है। पर्यटन की दृष्टि से पुरातन एवं नूतन को समेटे गोरखपुर यादों के सफर का पूरा दस्तावेज है। राप्ती और रोहणी नदी के संगम पर अवस्थित महायोगी गुरु गोरक्षनाथ के नाम पर गोरखपुर का नाम पड़ा। इतिहासी दस्तावेजों में मुगलिया सम्राज्य के शासक औरंगजेब के पुत्र मुअज्जम के नाम पर मुअज्जमाबाद हुआ जो समय की रफ्तार में इतिहास का हिस्सा बन गया और आज गुरु गोरक्षनाथ की प्रसिद्धि से गोरखपुर के नाम से विश्व पटल पर अंकित है। गोरखपुर $26^0 46'$ उत्तरी अक्षांश एवं $83^0 22'$ पूर्वी देशान्तर पर स्थित है। जहाँ रेल, सड़क एवं वायुमार्ग द्वारा सुगमता से पहुंचा जा सकता है।

गोरखपुर में दर्शकों के पयर्टन या घूमने फिरने की दृष्टि से पूरा टूरिस्ट पैकेज है।

जिसके लिए पर्यटन विभाग एवं टूरिस्ट गाइडों के माध्यम से यहां की पूरी यात्रा का आनन्द लिया जा सकता है। गोरखपुर अध्यात्मिक, सांस्कृतिक, एवु पुरातात्विक दर्शन स्थलों की विविधता को समेटे हुए है। जहां नाथ सम्प्रदाय के विशाल आंगन में तपस्या में लीन शिव अवतार गुरु गोरक्षनाथ का भव्य गोरखनाथ मन्दिर दर्शनीय है। जिसकी अखण्ड धुनी एवं लौ युगों युगों से प्रज्जवलित है। साथ ही तथागत भगवान बुद्ध की महापरिनिर्वाण स्थली कुशीनगर, संतकबीर दास के जीवन दर्शन सिद्धान्तों को पार लगाता निर्मल मगहर है। यहीं क्रान्तिकारी राम प्रसाद बिस्मिल की शहादत स्थली गोरखपुर की जेल एवं घंटाघर साक्षी है। स्वतंत्रता की दिशा बदलने वाले चौरीचौरा काण्ड का पुलिस स्टेशन एवं शहादत स्तम्भ इतिहास से जुड़ने का अवसर देता है। साहित्यिक छांव में मुंशी प्रेमचन्द, फिराक गोरखपुर, हनुमान प्रसाद पोद्दार (भाई जी) की साहित्यक सेवाओं की कर्मभूमि गोरखपुर रहा है। ऐतिहासक दृष्टिकोण से बंसतपुर सराय, रीढ़साहब का धर्मशाला, विष्णु मन्दिर के ब्लैक स्टोन में स्थापित विष्णु प्रतिमा, जगरनाथपुर के शीशमहल में भगवान जगन्नाथ की छवि मनुहारी है। इमामबाड़ा, गीताप्रेस, गीता वाटिका, जैन मन्दिर, मान सरोवर, गुरुद्वारा, प्राचीन सेन्ट जॉन चर्च, ईदगाह, नगर निगम, सूरजकुण्ड, राजकीय बौद्ध संग्राहलय, रेल म्यूजियम, पूर्वांचल संग्रहालय, रामगढ़ताल गोरखपुर के प्रमुख पर्यटन के रूप में सैलानियों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। यहां के प्रमुख दर्शनीय स्थलों के विषय में संक्षिप्त जानकारी पर्यटन की दिशा में एक संकेतक प्रस्तुति है।

गोरखनाथ मन्दिर :—गोरखपुर नगर के उत्तरी भाग में रेलवे स्टेशन से लगभग तीन किलोमीटर की दूरी पर नाथ सम्प्रदाय के प्रवर्तक महायोगी गुरु गोरक्षनाथ की साधना स्थली गोरखनाथ मन्दिर स्थित है। मान्यता एवं वास्तु संरचना की दृष्टि से गोरखनाथ मन्दिर उत्तर भारत का उत्कृष्ट मन्दिर है, मकर संक्रान्ती पर देश के कोने कोने से लाखों श्रृद्धालु खिचड़ी चढ़ाने आते हैं। गोरखनाथ मन्दिर के प्रांगण में शिव अवतार योगी गुरु गोरक्षनाथ की श्वेत संगमरमर की दिव्य मूर्ति ध्यान मुद्रा में प्रतिष्ठित है। परिक्रमा भाग में भगवान शिव की भव्य मांगलिक मूर्ति, विघ्न विनाशक गणेश, मन्दिर की पश्चिमी कोने में काली माता, उत्तरी दिशा में काल भैरव, और उत्तर की ओर पार्श्व में शीतला माता का मन्दिर है। पास ही भैरव, शिव मन्दिर, राधा कृष्णा, हट्ठी माई मन्दिर, संतोषी माता मन्दिर, राम दरबार, नवग्रह देवता, शनि देवता, भगवान विष्णु मन्दिर, अखण्ड धुना, विशाल हनुमान मन्दिर, एवं भीम सरोवर के पास में चिर निद्रा में लेटे विशालकाय महाबली भीम, योगीराज ब्रम्हनाथ, योगीराज गम्भीरनाथ, महंत दिग्विजयनाथ और महंत अवेद्यनाथ की समाधि स्थली है। मन्दिर की परिक्रमा के साथ साथ आस्था के जयघोष में रोम रोम रोमांचित हो उठता है। मकर संक्रान्ति की खिचड़ी मेले के साथ यहां वर्ष भर यात्री एवं भक्त दर्शन हेतु आते रहते हैं। यहां वर्ष भर मुंडन संस्कार एवं वैवाहिक

संस्कारों के गीत ढोल मजारों पर थिरकते, नांचते, गाते लोग दिखायी देते हैं।

लाइट एण्ड शो पर नाथ महिमा का दर्शन :– पर्यटन की संभावनाओं को देखते हुए उत्तर प्रदेश पर्यटन विभाग और उत्तर प्रदेश सरकार के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के सतत् प्रयासों से मन्दिर प्रांगण के भीम सरोवर में लेजर रंग बिरंगे लाइट एवं साउण्ड शो कार्यक्रम का विधिवत् शुभारम्भ नव वर्ष का शुभ संकेत है। जहां 33 फिट के विशाल वाटर स्क्रीन पर नाथ पंथ की महिमा का दर्शन महाभारत धारावाहिक के हरीश भिमानी की आवाज में रोमांचित करता है।

इमामबाड़ा :– शहर के मध्य में प्राचीन मुगल शैली की स्थापत्य वास्तु कला का उत्कृष्ट दर्शनीय स्थल है। इमामबाड़े के अन्दर एक मस्जिद एवं एक ईदगाह है जहां आसफुद्दौला द्वारा भेंट किये गये सोने एवं चांदी की तीन ताजिये रखे हुए हैं। ईद एवं मोहर्रम के समय मेले का आयोजन एवं ताजियों का दर्शन दर्शनीय होता है। गोरखपुर की जमीं पर कौमी एकता एवं आपसी सौहार्द का प्रतीक इमामबाड़ा है। इमामबाड़े के अन्दर सूफी संत रौशन अली शाह की धुनी आज भी प्रज्जवलित है।

गीताप्रेस :– यह स्थल गोरखपुर नगर के शेषपुर मुहल्ले में स्थित है। भारतीय संस्कृति व सनातन धर्म से सम्बन्धित धार्मिक पुस्तकों के प्रकाशन व प्रसार में गीता प्रेस का अमूल्य योगदान है। उपनिषद्, श्रीमद्भगवत गीता, वाल्मिकि रामायण, महाभारत, समस्त तुलसी साहित्य एवं बहुभाषाओं में मुद्रित पुस्तकों का विशाल संग्रह यहां है। अब तक 62 करोड़ से अधिक पुस्तकें गीताप्रेस के मुद्रालय से विभिन्न संस्करणों में प्रकाशित हो चुकी हैं। गीताप्रेस को भारत में घर–घर रामचरितमानस और भगवत् गीता को पहुँचाने का श्रेय जाता है। गीताप्रेस की पुस्तकों की बिक्री 21 निजी थोक दुकानों, 5 फुटकर दुकानों के अलावा हजारों पुस्तक विक्रेताओं और 52 प्रमुख रेलवे स्टेशनों पर बने प्रेस के बुक स्टालों के जरिए की जाती है। गीताप्रेस द्वारा कल्याण (हिन्दी मासिक) और कल्याण कल्पतरु (इंग्लिश मासिक) का प्रकाशन भी होता है।

गीताप्रेस लीला चित्र मन्दिर :– गीताप्रेस के प्रांगण में स्थित लीलाचित्र मन्दिर में अध्यात्मिक चित्रों की विशाल चित्रावली श्रृंखला है। यहां भगवान श्रीराम और भगवान श्रीकृष्ण की लीलाओं के रमणीय 684 चित्रों के अतिरिक्त श्री वी.के. मित्रा, भगवानदास, जगरनाथ, घासीराम, देवलालीकर, बृजेन्द्र मधुबन एवं पी. राव जैसे प्रतिभावान चित्रकारों द्वारा बनाए गए अनेक हस्तनिर्मित चित्रों का संग्रह है। चित्र मंदिर की दीवार पर संगमरमर के पत्थरों पर सम्पूर्ण श्रीमद्भगवत गीता एवं संतभक्तों के सात सौ से अधिक दोहे और वाणियाँ खुदी हुई हैं।

विष्णु मन्दिर :– असुरन चौराहे के पास स्थित विष्णु मन्दिर में स्थापित चर्तुभुजी श्री

विष्णु की ब्लैक स्टोन में निर्मित गुप्तकालीन प्रतिमा श्रद्धालुओं की आस्था का केन्द्र है। एतिहासिक दस्तावेजों के अनुसार सन् 1914 ई. में मन्दिर के पास के पोखरे से भगवान विष्णु की विशाल प्रतिमा प्राप्त हुई थी। प्रतिमा मन्दिर प्रांगण में स्थापित की गई। मन्दिर के वास्तु पर यूरोपियन शिल्प की छाप दिखती है।

गीता वाटिका :– गीता वाटिका साहित्यिक सेवा के मर्मज्ञ श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार (भाईजी) के अथक प्रयासों से श्री कृष्ण राधा को समर्पित एक विशाल अध्यात्मिक केन्द्र है। यहां परिसर में राधाष्टमी का त्योहार, धूमधाम से मनाए जाने के साथ ही निरन्तर संकीर्तन, श्रीकृष्ण लीला एवं श्री पाठ का आयोजन होता रहता है। मुख्य मन्दिर के प्रांगण में श्री कृष्ण राधा की विशाल मनुहारी प्रतिमा के साथ श्री राम सीता, भगवान श्री शंकर पार्वती, माता दुर्गा, मां लक्ष्मी, बजरंग बली हनुमान एवं अन्य देवी–देवताओं की प्रतिमाएं स्थापित हैं। परिसर में ही सुप्रसिद्ध पत्रिका कल्याण के प्रथम सम्पादक श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार जी की समाधि स्थल, कैंसर अस्पताल एवं राधा कृष्ण साधना केन्द्र भी है।

टेराकोटा को नई पहचान देता औरंगाबाद :– गोरखपुर के औरंगाबाद गांव की माटी से बनी मूर्तियों की विश्व भर के बाजारों में मांग है। पीढ़ियों की परम्परा से माटी में सने हाथों से बनी अद्भुत कलाकृतियां अप्रतिम हैं। हाथी–घोड़े, ढोलक–शहनाई बजाते श्री गणेश सहित लगभग 500 से भी अधिक प्रकार की मिट्टी की कलाकृतियां लोगों और बाजार को आकर्षित करती हैं। औरंगाबाद गांव में दर्जनों हस्तशिल्पी कलाकार राष्ट्रपति पुरस्कार, एवं राज्य पुरस्कारों से सम्मानित हैं। देशी–विदेशी पर्यटक अक्सर यहां आकर इस कला को कैमरे में कैद करते दिखते हैं।

राजकीय बौद्ध संग्रहालय :– राजकीय बौद्ध संग्रहालय 1986–87 में उ.प्र. शासन के संस्कृति विभाग द्वारा स्थापित किया गया। भारतीय इतिहास, कला, संस्कृति एवं पुरातत्त्व की जानकारी जनमानस को उपलब्ध कराने के उद्देश्य से संग्रहालय में निरन्तर शैक्षिक कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं। संग्रहालय में जैनविथिका, बौद्ध विथिका, प्रस्तर मूर्तियां, सिक्के, पाण्डुलिपियां, लघु चित्र एवं आभूषण आदि कलाकृतियाँ संगृहित हैं। प्रस्तर मूर्तियों में, अष्टभुजी नृत्य मुद्रा में गणेश, विष्णु, पाषाणकालीन कुबेर, गुप्तकालीन बुद्ध, शैव, वैष्णव धर्म से सम्बन्धित धातु काष्ठ, हाथी दांत एवं शीशे से बनी कलाकृतियां पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र हैं। कला एवं धरोहरों के प्रेमी वर्ष भर लगातार संग्रहालय में भ्रमण करके अपने ज्ञान की वृद्धि करते हैं।

रामगढ़ताल :– कुछ वर्ष पूर्व सुनसान सा दिखने वाला रामगढ़ताल, नौका विहार और उसके आसपास के क्षेत्र उ.प्र. सरकार एवं पर्यटन विभाग की ओर से किये जा रहे सौंदर्यीकरण

से गुलजार हो गए हैं। मार्निंग वाकर्स के ठहाकों व योग के साथ बतकही के बीच सांझ ढलते ढलते पूरा परिक्षेत्र लाइट से जगमगा उठता है। पिकनिक स्पॉट या यूं कह लें कि मैरीन ड्राइव में तब्दील हो चुकी इस प्राकृतिक झील में जहां प्रवासीय पक्षियों का बसेरा है वहीं पर्यटकों एवं आसपास के लोगों की चहल–पहल से रोजगार एवं पर्यटन की नई सम्भावनाएं दिख रहीं हैं। ठेले पर भुने हुए भुट्टों के चटकारे लेने और स्ट्रीट फूट की चाह में रोज बड़ी संख्या में शहरवासी यहां आते हैं। रामगढ़ताल के दक्षिणी–पूर्वी छोर पर बनाये जा रहे प्राणी एवं जन्तु उद्यान एवं आडोटोरियम से भी गोरखपुर को पर्यटन की एक नई सौगात नये वर्ष में मिलने जा रही है। पर्यटन की दृष्टि से विनोद वन, बुढ़िया माई मन्दिर, तरकुलहा देवी मन्दिर, गोलघर काली मन्दिर, हनुमान मन्दिर, मुंजेश्वर नाथ मन्दिर, कालीबाड़ी मन्दिर, विन्ध्यवासनी पार्क, इन्दिरा बाल विहार, मुंशी प्रेमचन्द्र पार्क, अम्बेडकर पार्क, वाटर स्पोर्ट, लालडिग्गी पार्क आदि का विकास किया जा रहा है। ये सभी स्थान आम जनमानस की आस्था, रुचि से जुड़े होने के साथ पर्यटन की सम्भावनाओं से परिपूर्ण हैं। कुशीनगर बौद्ध धर्मावलम्बियों का एक पावन तीर्थ स्थल है। यह गोरखपुर से 34 मील की दूरी पर है। महात्मा बुद्ध के महापरिनिर्वाण स्थान कुशीनगर में मुख्य महापरिनिर्वाण स्तूप, मन्दिर, निर्वाण चैत्य, रामाभार स्तूप, माथा कुंअर टीला, राजकीय बौद्ध संग्रहालय और भारत, जापान, श्रीलंका के मन्दिरों सहित कई दर्शनीय स्थल हैं। गोरखपुर शहर को राष्ट्रीय एवं अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर विमान सेवा से जोड़ने के उद्देश्य से गुरु गोरक्षनाथ हवाई अड्डा टर्मिनल' को भी विस्तारित किया गया है जिससे पर्यटन की नई संभावनाएं विकसित हो रही हैं। गोरखपुर पर्यटन क्षेत्र के विकास हेतु प्रदेश सरकार निरन्तर प्रयत्नशील है। पूर्वांचल का क्षेत्र विकास के विभिन्न क्षेत्रों में अपार सम्भावनाओं को समेटे हुए है। पूर्वांचल में पर्यटन आज एक बेहतर उद्योग के रूप में सैलानियों का स्वागत कर रहा है। आध्यात्म और साधना के प्राचीन मठों, विश्व प्रसिद्ध बौद्ध पर्यटन केन्द्रों की उपस्थिति से गोरखपुर क्षेत्र दुनिया भर के पर्यटकों को आकर्षित कर रहा है। पूर्वांचल की लोक संस्कृति, कला, कौशल, साहित्य व ज्ञान के संवर्धन व संरक्षण के उद्देश्य से आयोजित गोरखपुर महोत्सव यहां की प्रतिभाओं को तराशने का सराहनीय प्रयास भी है। यह सभी पर्यटक स्थलों और उनके आस–पास स्थित सम्भावनाओं को प्रबल बनाने का भी सार्थक प्रयास है।

1857 के महाविद्रोह में गोरखपुर

— प्रो. हरिशंकर श्रीवास्तव*

'गोरखपुर जनपद के इतिहास से बहुत कुछ सीखना है, क्योंकि गोरखपुर जनपद एक समय लोकतांत्रिक संस्थाओं और परम्परा का केन्द्र रह चुका है।' – डॉ. आनन्द सदाशिव अल्तेकर 1949

'मुझे प्रसन्नता है कि मेरे ऊपर गोरखपुर में मुकदमा चलाया जा रहा है। गोरखपुर के किसान मेरे प्रान्त (उत्तर प्रदेश) में सबसे अधिक गरीब एवं सबसे अधिक समय से पीड़ित एवं प्रताड़ित रहे हैं। यह डेढ़ सौ वर्षों के ब्रिटिश शासन का परिणाम है। उनकी दरिद्रता, कष्ट, पीड़ा, शक्तिशाली ब्रिटिश शासन के निन्दनीय अपराध का प्रमाण है।' – जवाहरलाल नेहरू द्वारा तीन नवम्बर 1940 को गोरखपुर जेल में उनके ऊपर चल रहे मुकदमे में दिया गया लिखित बयान।

गोरखपुर क्षेत्र भारत के उन जनपदों में से है जहाँ आर्य संस्कृति का विकास प्रारम्भ हुआ। इसका धर्मिक, दार्शनिक, साहित्यिक, प्रशासनिक इतिहास गौरवमय रहा है। यह क्षेत्र अनेक राज्यों के उत्थान तथा पतन का साक्षी रहा है। इसी क्षेत्र से छठीं सदी ईसा पूर्व, हिन्दू धर्म की कुरीतियों के विरुद्ध बौद्ध एवं जैन धर्म के रूप में विद्रोह की आवाज उठी जिसने पूरे विश्व को प्रभावित किया।

मध्ययुग में दिल्ली के सुल्तानों तथा मुगल सम्राटों के साम्राज्य का यह क्षेत्र प्रमुख अंग था। अकबर के काल में सोलहवीं शताब्दी में अबुल फजल द्वारा लिखित आइने–ए–अकबरी से हमें गोरखपुर सरकार (जनपद) का वृहद उल्लेख मिलता है। अवध प्रान्त का यह अंग था। मुगल साम्राज्य के विकेन्द्रीकरण के पश्चात यह नव स्थापित अवध के नवाबों द्वारा नवसृजित राज्य का महत्त्वपूर्ण अंग बन गया।

*पूर्व विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग, दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

1801 ई. में अंग्रेजों की साम्राज्यवादी शक्ति से पराजित अवध के नवाब को गोरखपुर का तत्कालीन जनपद ईस्ट इण्डिया कम्पनी को देना पड़ा। धीरे–धीरे अंग्रेजी कम्पनी की शक्ति और किसानों का शोषण बढ़ता गया। 1814 के आंग्ल–नेपाल युद्ध के पश्चात अंग्रेजों ने नेपाल के दक्षिणी तराई क्षेत्रों में बहराइच से गोरखपुर होते हुए रक्सौल तक अंग्रेजों को जमीन देकर बसाया, जिससे नेपाल तथा तिब्बत पर निगरानी रखी जा सके। गोरखपुर के उत्तर में इसी तरह अंग्रेजों के बड़े–बड़े फार्म बर्डपुर–सेवरही तक बनाये गये। ये लोग वहाँ खेती कराते थे तथा गोरखपुर नगर में बड़ी–बड़ी कोठियाँ बनाकर रहते थे। गोरखपुर नगर का याक्वी हाउस, पटेरा हाउस (गोरखपुर विश्वविद्यालय के कुलपति का निवास) तथा कई अन्य भवन इन्हीं के निवास स्थान थे। गोरखपुर क्लब पहले केवल अंग्रेजों के मनोरंजन के लिए बना था। किसी भारतीय को उसमें जाने की अनुमति नहीं थी। साम्राज्यवादी शोषण की नीति के परिणामस्वरूप गोरखपुर में अनेक विद्रोह हुए जिनमें 1799 ई. का अवध के पदच्युत नवाब वजीर अली का विद्रोह जिसे बनारस में निर्वासित कर रखा गया था तथा कर्नल हन्ने के शोषण के विरुद्ध 1781 में गोरखपुर किसानों का विद्रोह प्रमुख है। 1857 का महाविद्रोह आकस्मिक घटना नहीं थी। लगभग सौ वर्षों से अंग्रेजों के विरुद्ध उनके अत्याचार से पीड़ित शोषित जनता का यह सशस्त्र विद्रोह था जो उत्तर प्रदेश, दिल्ली, बिहार में अधिक किन्तु कमोवेश पूरे भारत में फैल गया था। यह मेरठ में सैनिक विद्रोह के रूप में प्रारम्भ अवश्य हुआ किन्तु इसका विस्तार जन आन्दोलन के रूप में पूरे भारत में हुआ।

इस महायज्ञ में गोरखपुर का भी गौरवमयी योगदान था। उस समय गोरखपुर के कलक्टर पेटर्सन, ज्वाइण्ट मजिस्ट्रेट बर्ड, जिला जज विनवार्ड और सेना के कप्तान स्टील थे (जो आजमगढ़ में रहते थे)। प्रारम्भ में स्थानीय जमींदारों के नेतृत्व में विद्रोह हुआ। उनमें सबसे पहले पैना (जिला देवरिया में बरहज के निकट) के समीप सरयू नदी के यातायात पर क्रान्तिकारियों ने अधिकार जमा लिया और सामानों से भरी अंग्रेजों की नावें लूट ली। गोरखपुर में मुहम्मद हसन उर्फ मुहम्मद सैयद हसन के नेतृत्व में स्वतंत्र शासन स्थापित हुआ। मुहम्मद हसन पहले अवध के नवाबों के अधीन गोरखपुर का नाजिम था। अवध के अंग्रेजी शासन में विलय के पश्चात वह पद से हटा दिया गया था। विद्रोह के प्रारम्भ होते ही उसने अवध के नवाबों के अधीन, अपने को गोरखपुर का गवर्नर घोषित कर दिया। 29 सितम्बर 1857 को स्थानीय अधिकारियों ने अंग्रेज अधिकारियों को सूचित किया कि मुहम्मद हसन ने गोरखपुर कलक्ट्री में जमा धन लूट लिया, फारसी एवं अंग्रेजी रिकार्ड नष्ट कर दिये, ब्रिटिश अधिकारियों के बंगलों को विध्वंस कर दिया और स्थानीय जमींदारों से राजस्व वसूल करने लगा है। तब अंग्रेज अधिकारी यहाँ से बड़हलगंज के मार्ग से भाग गये। कुछ अंग्रेजों को कुछ स्थानीय लोगों ने शरण दी जिसकी जानकारी मिलते ही मुहम्मद हसन ने उनको दण्डित किया। उसने डुग्गी

पिटवाकर घोषणा करा दी कि अंग्रेजों के अधीन काम करने वाले कर्मचारी तत्काल नगर छोड़ दें या उसके अधीन काम करें यदि ऐसा नहीं करेंगे तो उनकी सम्पत्ति जब्त कर ली जायेगी या उनका सिर काट डाला जायेगा। उसने जेल में बन्द कैदियों को आजाद करा दिया। लखनऊ से तोपें मंगवाईं और गोरखपुर में भी तोपों का निर्माण कराया। इस तरह हसन ने अपनी सेना को संगठित किया। उपर्युक्त विवरण से गोरखपुर में मुहम्मद हुसैन की जनप्रियता, जनाक्रोश का अनुमान लगाया जा सकता है।

अंग्रेजों ने अन्य स्थानों से सेना मंगाई। उस समय नेपाल के वास्तविक शासक जंग बहादुर राणा के नेतृत्व में गोरखा सेना ने अवध पर आक्रमण कर दिया। जुलाई के महीने में तीन हजार गोरखा सैनिकों ने गोरखपुर में प्रवेश किया। उनका सामना करना क्रान्तिकारी सैनिकों के लिए कठिन था। फिर भी अंग्रेज विद्रोह से इतने आतंकित थे कि उन्होंने गोरखपुर के डिप्टी मजिस्ट्रेट द्वारा मुहम्मद हसन से सन्धि वार्ता प्रारम्भ करायी। उन पत्रों की प्रतियाँ आज भी राजकीय संग्रहालय लखनऊ में उपलब्ध हैं। विवश होकर मुहम्मद हसन को बहराइच पलायन करना पड़ा। वहाँ उसने बालाराव तथा अन्य क्रान्तिकारियों से सम्पर्क किया।

राणा जंग बहादुर के सेनापतित्व में आई गोरखा सेना की सहायता से गोरखपुर में पुनः अंग्रेजों का राज्य स्थापित हुआ। उन्होंने क्रान्तिकारियों को पेड़ों पर लटकाकर फाँसी दी तथा कई दिनों तक अत्याचार का ताण्डव बना रहा। परम्परा के अनुसार अलीनगर का पुराना पाकड़ का पेड़ आज भी उन स्वतंत्रता सेनानियों के रक्त की याद दिलाता है। अंग्रेजों ने ऐसे अनेक लोगों को पुरस्कारस्वरूप धन, जमीन तथा सम्मान दिया जिन्होंने उस दौर में उनकी मदद की थी। उनके नाम राजसी प्रपत्रों में उपलब्ध हैं। गोरखपुर के दक्षिण जगदीशपुर के कुँवर सिंह एवं उनके भाई अमर सिंह अक्टूबर 1859 में गोरखा सेना द्वारा पकड़कर गोरखपुर जेल में बन्द कर दिये गये। राजसी पत्रों के अनुसार उन्हें पेचिश हो गयी। वह जेल अस्पताल में भर्ती किये गये जहाँ 3 जनवरी 1870 को उनकी मृत्यु हो गयी।

गोरखपुर के लोगों ने अन्य स्थानों में भी अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह का प्रचार किया। उनमें गोरखपुर के निवासी मौलवी सरफराज अली बरेली गये तथा शाहजहाँपुर तक उनके शिष्य जाकर क्रान्तिकारी भावना का प्रचार करते थे। अंग्रेजों के विरुद्ध 1857–58 के विद्रोह में गोरखपुर का महान योगदान है। आज भी वे गाथाएँ जनता के सम्मुख नहीं आ पायी हैं। उन महान क्रान्तिकारियों की वीरगाथाओं ने गोरखपुर का नाम तो उज्ज्वल किया ही है साथ ही वीरता, हिन्दू–मुस्लिम एकता का प्रमाण अपने कार्यों से उपस्थित किया है जो आज भी अनुकरणीय है।

पिपराइच चीनी मिल से गुलज़ार हो रहे बाज़ार, आबाद होंगे किसान-नौजवान

– वेद प्रकाश पाठक

85 वर्षीय श्यामलाल जी पिपराइच की पुरानी चीनी मिल के पास दशकों से चाय की दुकान चलाते हैं। उनकी दुकान हमेशा से चीनी मिल के लैंडमार्क के तौर पर जानी जाती रही है। वर्ष 2008 में जब बहुजन समाज पार्टी की सरकार में पुरानी चीनी मिल को बंद करने का फैसला हुआ तो श्यामलाल की तरह वर्षों से जमे जमाए व्यापारियों का व्यापार बर्बाद होना तय था और हुआ भी यही। सैकड़ों व्यापारी तबाह हो गए। हजारों किसानों ने गन्ने की खेती बंद कर दी। प्रत्यक्ष–परोक्ष रूप से हजारों लोगों का रोजगार छिन गया। पिपराइच चीनी मिल बंद हो गई। धीरे–धीरे किसानों, व्यापारियों सहित क्षेत्र के सैकड़ों कुनबे निर्धन होते चले गए। करीब 300 गांवों के किसानों ने गन्ने की खेती छोड़ दी। इस आत्मघाती कदम के अलावा उनके पास कोई रास्ता भी न था।

अब श्यामलाल की दुकान फिर गुलजार हो गई है। करीब 50 एकड़ में नई चीनी मिल, एथेनाल प्लांट और विद्युत टरबाइन का काम जोरों पर है। मिल के आसपास करीब 100 से ज्यादा दुकानों का धंधा अभी से बढ़ गया है। कुछ नये लोगों ने भी दुकानदारी शुरू कर दी। सौ से ज्यादा परिवारों के करीब एक हजार लोग चीनी मिल के निर्माण काल में ही जीवीकोपार्जन में समर्थ हो चुके हैं। स्थानीय लोग कह कर रहे हैं कि जब मिल और उसके सहयोगी प्लांट शुरू हो जाएंगे तो ऐसे ही व्यापार–धंधों से करीब 1000 लोगों को परोक्ष रोजगार मिलेगा।

पुरानी चीनी मिल बंद करने के खिलाफ सक्रिय आंदोलन में सहभागी रहे पिपराइच के पूर्व ब्लाक प्रमुख आनंद शाही का कहना है कि चीनी मिल का शुरू होना किसी समय में दिवास्वप्न लगता था। पुरानी मिल बंद करने के खिलाफ बतौर सांसद योगी आदित्यनाथ जी

की अगुआई में हम लोगों ने संघर्ष किया था। फिर भी मिल बंद कर दी गई। मुख्यमंत्री बनने के तुरंत बाद गोरक्षपीठाधीश्वर योगी आदित्यनाथ जी ने चीनी मिल को चालू करने की घोषणा करके हम सभी के संघर्षों का सुखद फल दिया है।

पिपराइच चीनी मिल से कुशीनगर और महराजगंज जिले के किसान भी लाभान्वित होते रहे हैं। कुशीनगर के लेहनी ग्रामसभा के किसान बागीशचंद्र मिश्र ने वर्ष 2008 में चीनी मिल बंद होते ही गन्ने की खेती बंद कर दी थी। बकौल बागीश–चीनी मिल बंद होने पर गन्ने का गिराना और भुगतान पाना, दोनों टेढ़ी खीर हो चुकी थी। लिहाजा, यह खेती बंद करने के अलावा कोई विकल्प नहीं था। दस वर्षों तक उन्होंने गन्ने की खेती नहीं की। बीते साल 16 अक्टूबर 2017 को जब मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी ने पिपराइच में नई चीनी मिल का शिलान्यास कर दिया तो बागीश जैसे हजारों किसानों का मनोबल बढ़ा। वे फिर गन्ने की खेती के लिये उत्साहित हो चुके हैं। स्वयं बागीश के दो बीघे खेत में गन्ने की फसल खड़ी है। मिल का निर्माण तेज गति से जारी है। बागीश का कहना है कि नई चीनी मिल के शुभारंभ के पहले गन्ने की खेती की छूट चुकी आदत को प्रैक्टिस में लाना हमने शुरू कर दिया है। अब हम फिर से गन्ने की खेती करेंगे।

16 अक्टूबर, 2017 को चीनी मिल का शिलान्यास करने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी रिठियां गांव में आए थे। उन्होंने चीनी मिल का निर्माण करने वाली संस्था को हिदायत दी थी कि काम तेजी से होना चाहिये। रिठियां के ग्राम प्रधान संजय पटेल का दावा है कि मिल के निर्माण का काम इतनी तेजी से होगा, जितना किसी ने कभी सोचा नहीं होगा। उनका कहना है कि मुख्यमंत्री जी की निगरानी में मिल के निर्माण का काम बहुत तेजी से चल रहा है। इलाके को फरवरी 2019 तक इसके शुभारंभ की सौगात मिल जाएगी। ग्राम प्रधान के अनुसार निर्माणाधीन चीनी मिल में स्थानीय गांवों से 500 से ज्यादा लोगों को रोजगार मिलेगा।

पिपराइच चीनी मिल के कर्मचारी रहे अनिल कुमार सिंह इस समय एक निजी एथेनाल प्लांट के एचआर विभाग में कर्मचारी हैं। उनका कहना है कि जब पिपराइच चीनी मिल बंद हुई थी तो उसमें करीब 650 कर्मचारी काम करते थे। इनमें अस्थायी कर्मचारी भी शामिल थे। उनका कहना है कि नई चीनी मिल और इसके सहयोगी प्लांट्स के नाते पहले से ज्यादा लोगों को प्रत्यक्ष रोजगार मिलेगा। तकनीकी ज्ञान रखने वाले नौजवानों की नई पीढ़ी को इस मिल से ज्यादा लाभ मिल सकेगा। पिपराइच कस्बे के निवासी सुधाकर मणि त्रिपाठी का छोटा भाई इस समय नोएडा में छोटा–मोटा काम करता है। उन्हें उम्मीद है कि जब मिल का संचालन यूपी स्टेट शुगर कार्पोरेशन के हाथों में आ जाएगा तो उनके भाई को रोजगार के लिये पलायन से मुक्ति मिल जाएगी और घर की आमदनी बढ़ेगी। जीवन स्तर में सुधार आएगा।

पिपराइच के युवा व्यापारी जितेंद्र गुप्ता का दावा है कि चीनी मिल के निर्माण से कस्बे में कारोबार बढ़ेगा। व्यापारियों को सीधा लाभ होगा। केन यूनियन के पास किराने की दुकान चलाने वाले शंभू का व्यापार किसी दौर में चीनी मिल के कर्मचारियों के कारण ही आबाद था। मिल बंद हो जाने के बाद धंधा काफी मंदा हो गया। उन्हें अब उम्मीद बंधी है कि चीनी मिल और सहयोगी प्लांटों के कर्मचारियों की बजट से उनकी दुकान फिर चल जाएगी।

बदल रही है तस्वीर

पिपराइच चीनी मिल के कारण इलाके की तस्वीर बदल रही है। गन्ना मंत्री सुरेश राणा ने अपने दौरे में निर्देश दिया था कि आसपास की सड़कें दुरुस्त होनी चाहिये। चीनी मिल को जोड़ने वाली सभी सड़कों को चमकाया जा चुका है। क्षेत्र के संभ्रांत किसान और नेता संघर्ष मणि उपाध्याय का कहना है कि चीनी मिल किसानों, नौजवानों और व्यापारियों के लिये सामूहिक खुशहाली का माध्यम है। कपड़ा व्यापारी पवन कुमार जोशी, स्वर्ण व्यापारी राजू विश्वकर्मा, कबाड़ व्यापारी विरेंद्र कुमार जायसवाल, उद्यमी जनार्दन जायसवाल और क्षेत्रीय किसान विरेंद्र कुमार पाठक का दावा है कि चीनी मिल के शुरू होने के बाद यह इलाका फिर से गुलजार हो जाएगा। इन लोगों का मानना है कि 300 गांवों में गन्ने का रकबा बढ़ेगा। किसान की कंगाली दूर होगी। बाजार गुलजार हो जाएगा।

6–7 गुना अधिक क्षमता है नई चीनी मिल की

पिपराइच की पुरानी चीनी मिल की क्षमता 800 टीसीपी थी। निर्माणाधीन चीनी मिल की क्षमता 5000 टीसीपी है। इसे 7500 टीसीपी तक विस्तारित किया जा सकता है। चीनी मिल के साथ एक एथेनाल प्लांट और बिजली की टरबाइन भी बनेगी। इससे करीब 28 मेगावाट बिजली का उत्पादन होगा। इस बिजली से चीनी मिल का संचालन भी होगा। करीब 15 मेगावाट से ज्यादा बिजली बेची जाएगी। गन्ने के सहप्रोडक्ट के उत्पादन से चीनी मिल मुनाफे में चलेगी। किसानों को अपनी फसल की बेहतर कीमत मिल सकेगी।

पूरा होगा 26 साल पुराना सपना

पिपराइच चीनी मिल के 26 साल पुराने सपने को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की सरकार पूरा करने जा रही है। वर्ष 1992 में तत्कालीन सरकार ने निर्माणाधीन स्थल पर ही करीब 49 एकड़ जमीन नई चीनी मिल बनाने के लिये किसानों से ली थी। निर्माण की प्रक्रिया शुरू ही हुई थी कि कुछ स्थानीय लोगों ने राजनीति शुरू कर दी। निर्माण लटक गया। इसके बाद सरकारें बदलती रहीं लेकिन चीनी मिल का निर्माण शुरू न हो सका। चूंकि पुरानी चीनी

मिल का संचालन हो रहा था लिहाजा निर्माणाधीन प्रोजेक्ट कभी मुड़ा भी नहीं बन सका। वर्ष 2008 में पुरानी चीनी मिल भी बसपा सरकार ने बंद कर दी। 16 साल से प्रोजेक्ट अटका पड़ा था लिहाजा इलाका पूरी तरह से नैराश्य में डूब गया। लोगों ने उम्मीद छोड़ दी कि इस इलाके में अब कभी गन्ने की खेती भी हो पाएगी। नई चीनी मिल 26 साल बाद उम्मीद की किरण साबित बन रही है। चीनी मिल से जुड़े आधिकारिक सूत्रों का दावा है कि फरवरी–मार्च 2019 में मिल का ट्रायल शुरू हो जाएगा। निर्माण करने वाली निजी संस्था तीन साल तक मिल का संलाचन करेगी। इसके बाद इसे कार्पोरेशन के हवाले कर दिया जाएगा।

76 साल गुलजार रहा पिपराइच

पिपराइच की पुरानी चीनी मिल 1932 में बनी थी। तब यह एक प्राइवेट चीनी मिल थी। 1972 में सरकार ने इसको कार्पोरेशन में बदल दिया। इस चीनी मिल ने तीन–तीन पीढ़ियां देखीं हैं। निर्माणाधीन चीनी मिल में कार्यरत अरूण कुमार श्रीवास्तव का कहना है कि जब पुरानी चीनी मिल बंद हुई तब उनकी सर्विस बची हुई थी। नये प्रोजेक्ट में भी उन्हें सेवा का मौका मिला है। उनका दावा है कि नई चीनी मिल पुरानी मिल की तुलना में कहीं अधिक तकनीकी विविधताओं से लैस है। इससे क्षेत्र को बहुत ज्यादा फायदा होगा। उन्हें उम्मीद है कि कार्पोरेशन को हस्तांतरण के बाद के पुरानी चीनी मिल के उन कर्मचारियों को भी फायदा होगा, जिन्हें समय से पहले वीआरएस लेना पड़ा था।

नगर पंचायत पिपराइच के चेयरमैन जितेंद्र कुमार जायसवाल उर्फ पप्पू भी काफी उत्साहित हैं। उनका कहना है कि मुख्यमंत्री जी की पहल से पिपराइच कस्बे और इसके आसपास के गांवों का भाग्य बदलना तय है। उनेका कहना है कि यह चीनी मिल मुख्यमंत्री जी के प्राइम प्रोजेक्ट में है। उन्होंने शिलान्यास के एक साल के अन्दर मिल के निर्माण कार्यों का निरीक्षण कर यह संकेत दे दिया है कि किसान, नौजवान और व्यापारी का हित उनके लिये सर्वोपरि है।

गोरखपुर का औद्योगिक विकास एवं सम्भावनाएं

एस.के. अग्रवाल

गोरखपुर जनपद कृषि प्रधान एवं बुनकर बाहुल्य जनपद है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व इस जनपद में कृषि पर आधारित चीनी मिलों एवं एक जूट मिल की स्थापना हुई थी। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद 40 वर्षों में यहाँ सार्वजनिक क्षेत्र के खाद कारखाने के अतिरिक्त औद्योगिक पूँजीनिवेश लगभग शून्य था। इसका मुख्य कारण इस जनपद में देश के अन्य जनपदों की भाँति उपादान, रियायती दर पर ऋण एवं करों में छूट आदि की सुविधाओं का न होना था। 1990 का दशक इस जनपद के लिए ऐतिहासिक था। इस दशक में 1983 में यहाँ के लघु उद्यमियों ने चैम्बर ऑफ इण्डस्ट्रीज नामक संगठन की स्थापना की। चैम्बर ऑफ इण्डस्ट्रीज ने इस जनपद को पिछड़े जनपदों की भाँति प्रोत्साहन पैकेज देने के लिए केन्द्र एवं राज्य स्तर पर प्रयास किया। इसी के फलस्वरूप यहाँ 1989 में नोएडा की तर्ज पर गीडा की स्थापना हुई। दशक के अन्त में अप्रैल 1990 में यहाँ का खाद कारखाना एक दुर्घटना के बाद बन्द हो गया। इसी अवधि में यहाँ का परम्परागत हथकरघा उद्योग भी मृतप्राय हो गया। लेकिन इसी समय यहाँ के उद्यमियों ने पावरलूम लगाकर पालिएस्टर कपड़े बनाना प्रारम्भ कर दिया।

सन् 2000 का दशक गोरखपुर जनपद के औद्योगिक विकास में मील का पत्थर साबित हुआ। इस दशक में गोरखपुर में कृषि पर आधारित फ्लॉर मिलें, टेक्सटाइल उद्योग पर आधारित प्रासेस हाउस, फार्मास्यूटिकल उद्योग, रोलिंग मिलें एवं अनेक लघु उद्योग गीडा में स्थापित हुए। गोरखपुर की स्कूल ड्रेस पूरे भारतवर्ष में प्रचलित हुई। वर्ष 1998 में आयी भीषण बाढ़ के कारण जनपद गोरखपुर के औद्योगिक विकास पर विपरीत प्रभाव पड़ा, जिससे बाहर के उद्योगपति यहाँ उद्योग लगाने के प्रति आशंकित हो गये। लेकिन इस विभीषिका पर प्रभावी ढंग से काबू पा लिया गया। वर्ष 2002 के बाद सामान्य स्थिति होने के बाद गोरखपुर में बड़े उद्योग जैसे

*पूर्व अध्यक्ष, चैम्बर ऑफ इण्डस्ट्रीज, गोरखपुर

इण्डिया ग्लाइकॉल की अलकोहल उत्पादन इकाई, गैलेण्ट इस्पात की इण्टीग्रेटेड स्टील प्लाण्ट, अंकुर उद्योग की पालिएस्टर यार्न इकाई, टेक्सराइजिंग इकाई, फुटवीयर इकाई आदि बड़े उद्योग, फ्लॉर मिलें, साल्वेंट प्लाण्ट, ऑक्सीजन प्लाण्ट, प्लास्टिक के बोरे बनाने की इकाइयों एवं अन्य मध्यम एवं लघु उद्योग स्थापित हुए, जिनका पूँजीनिवेश लगभग 1000 करोड़ रुपये था।

प्रदेश सरकार की नयी औद्योगिक नीति से प्रभावित होकर गोरखपुर जनपद में 15 उद्यमियों ने 1200 करोड़ रुपये का निवेश करने का प्रदेश सरकार से करार किया है। वर्ष 2018 में लगभग 100 करोड़ रुपये के निवेश से गोरखपुर जनपद में शुद्ध हाईजिन प्रोडक्ट, नारायणी लेमिनेट, एहसान एग्रो एवं बी.एन. डायर्स का सोलर प्लाण्ट प्रारम्भ हुए हैं। इसके अतिरिक्त गैलेण्ट इस्पात ने 300 करोड़ की लागत से अपनी उत्पादन क्षमता दुगुनी की है। गोरखपुर जनपद में गैस पर आधारित खाद के नये कारखाने का कार्य प्रगति पर है। अवस्थापना सुविधाओं की दृष्टि से भी गोरखपुर से दिल्ली, इन्दौर, सूरत की सीधी हवाई सेवा आरम्भ हो चुकी है। बंगलोर, मुम्बई, कलकत्ता की हवाई सेवा 2019 के प्रारम्भ में प्रस्तावित है। पूर्वांचल एक्सप्रेस वे, सड़कों का चौड़ीकरण, एम्स की स्थापना, पुलों के निर्माण से आवागमन सुगम होगा।

चीनी उद्योग गोरखपुर का महत्त्वपूर्ण उद्योग है। यहाँ की जनता इस उद्योग से सीधी जुड़ी है। सरकार द्वारा चीनी उद्योग के विकास के लिए चीनी मिलों के साथ–साथ अलकोहल उद्योग भी सम्बद्ध करके लगाया जाये। अलकोहल उत्पादन से विभिन्न केमिकल्स उत्पादित किये जा सकते हैं। गोरखपुर में पोल्ट्री एवं पशु आहार की अनेक इकाइयाँ स्थापित हैं। यहाँ इसकी खपत 400 टन प्रतिमाह है, जबकि गोरखपुर की इकाइयों द्वारा मात्र 25 प्रतिशत उत्पादन किया जाता है। इस उद्योग को कृषि का दर्जा देकर यहाँ इस उद्योग की स्थापना को प्रोत्साहन दिया जा सकता है। गोरखपुर की 80 प्रतिशत जनता कृषि कार्यों में लगी है। यहाँ कृषि यंत्रों के निर्माण, कोल्ड स्टोरेज, फ्रोजेन वेजीटेबुल, केले के चिप्स, आलू चिप्स, फलों के जूस एवं कृषि पर आधारित अनेक उद्योग स्थापित किये जा सकते हैं। फूड प्रोसेसिंग पार्क की स्थापना एवं इस उद्योग के विकास के लिए ट्रेनिंग एवं टेस्टिंग सेण्टर खोलकर रोजगार के अनेक अवसर उपलब्ध होंगे। चावल उद्योग एवं फ्लॉर मिल उद्योग में निर्यात के असीमित अवसर हैं। सरकार द्वारा इसके लिए रिसर्च सेण्टर स्थापित करने की आवश्यकता है जिससे यहाँ विभिन्न किस्म के उत्पाद विकसित किये जा सकते हैं।

गोरखपुर पूर्वोत्तर रेलवे का मुख्यालय है एवं एयर फोर्स का प्रमुख केन्द्र है। यहाँ रेल पर आधरित उद्योग जैसे वायर एण्ड केबुल, सिगनल से सम्बन्धित सामान, कोच एवं वैगन से

सम्बन्धित सामान, स्लीपर, पेण्ट, नट–बोल्ट, रेलवे पुल निर्माण सम्बन्धी सामान के उद्योगों की प्रबल सम्भावनाएँ हैं।

कृषि के बाद टेक्सटाइल सर्वाधिक रोजगार प्रदान करने वाला उद्योग है। हथकरघा यहाँ का परम्परागत उद्योग था। लेकिन पावरलूम के विकास के साथ हथकरघा वस्त्रों का प्रयोग कम होने से यह उद्योग लगभग बन्द हो गया है। गोरखपुर में 3 प्रासेस हाउस, 3 स्पिनिंग मिलें, 5000 पावरलूम और छोटी रेडिमेड गारमेण्ट की इकाइयाँ हैं। यहाँ श्रम–शक्ति प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है।

गोरखपुर जनपद एवं आस–पास के क्षेत्रों की आबादी देखते हुए यहाँ टेक्सटाइल उद्योग के विकास की प्रबल सम्भावनाएँ हैं। यहाँ की खपत को देखते हुए ऊनी वस्त्र उत्पादन, टेक्निकल टेक्सटाइल, यार्न डाइंग, कारपेट, फोम, रेडिमेड गारमेण्ट, एक्राइलिक यार्न की अनेक इकाइयाँ स्थापित की जा सकती हैं। सरकार द्वारा यहाँ रेडिमेड, क्लस्टर एवं पावरलूम क्लस्टर की स्थापना करके इस उद्योग को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।

गोरखपुर जनपद की महत्त्वपूर्ण औद्योगिक परियोजना गीडा 30 वर्ष पूर्व स्थापित हुई थी। गीडा विकास योजना के अन्तर्गत 13135 एकड़ भूमि गीडा के सुनियोजित विकास हेतु प्रस्तावित है। लेकिन 30 वर्षों में मात्र 1673 एकड़ भूमि का ही गीडा द्वारा अर्जन किया गया है। इसमें से भी 134 एकड़ विवादित भूमि है। औद्योगिक भूमि के अभाव के कारण यहाँ उद्योग स्थापित नहीं हो पा रहे हैं। 30 नवम्बर 2018 को गीडा दिवस पर तमिलनाडु, पश्चिमी बंगाल, हरियाणा, गुजरात, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र के उद्यमी यहाँ उद्योग लगाने के लिए इच्छुक थे, लेकिन गीडा का लैण्ड बैंक शून्य होने के कारण उनको निराशा हुई। जनपद के औद्योगिक विकास के लिए गीडा द्वारा तत्काल विकसित भूमि उपलब्ध करायी जानी चाहिए।

गोरखपुर जनपद पूर्वांचल का केन्द्र बिन्दु है। इसके विकास से सम्पूर्ण पूर्वांचल का विकास सम्भव हो सकेगा। अतः यहाँ के त्वरित विकास के लिए शासन द्वारा निम्नलिखित कदम उठाने की आवश्यकता है–

1. गीडा द्वारा तत्काल 4000 एकड़ भूमि उद्योगों को रियायती दर पर उपलब्ध करायी जाए। इसके लिए प्रदेश सरकार द्वारा 1000 करोड़ का रिवाल्विंग फण्ड गीडा को भूमि अधिग्रहण के लिए उपलब्ध कराया जाय।
2. केन्द्र सरकार द्वारा उत्तरांचल, हिमांचल, तेलंगाना, पूर्वोत्तर राज्यों के समान गोरखपुर जनपद में आर्थिक पैकेज दिया जाय।
3. पूर्वांचल एक्सप्रेस वे के आस–पास औद्योगिक गलियारे में समस्त सुविधाओं से युक्त

टेक्सटाइल, फार्मा एवं फूड प्रोसेसिंग जोन बनाया जाय।

4. गोरखपुर में सार्वजनिक क्षेत्र के रेल, भारत हैवी इलेक्ट्रिकल्स, डिफेंस के उद्योग लगाये जायें, जिनकी आधार पर अनुपूरक उद्योगों का जाल बिछाया जा सके।

5. सहजनवा रेलवे स्टेशन को उच्चीकृत किया जाए। राप्ती नदी के पार सिकन्दराबाद की तर्ज पर नया गोरखपुर औद्योगिक नगर विकसित किया जाय।

प्रदेश सरकार इधर गीडा के औद्योगिक विकास एवं गोरखपुर नगर को उद्योग फ्रेंडली बनाने के लिये प्रयत्नशील है। इसका असर भी दिखायी दे रहा है। गोरखपुर जनपद औद्योगिक विकास की ओर उन्मुख है। प्रदेश सरकार द्वारा पूर्वांचल विकास परिषद् की स्थापना करके पूर्वांचल के समग्र विकास का सपना सँजोया गया है। इसमें गोरखपुर जनपद की अहम भूमिका है। यहाँ की वन सम्पदा, प्रचुर श्रमशक्ति, कृषि का विकास एवं आध्यात्मिक पृष्ठभूमि पूरे देश में अनूठी है। आगामी वर्षों में यह जनपद विकास की दृष्टि से देश में अग्रणी स्थान प्राप्त करेगा।

बी.आर.डी. मेडिकल कॉलेज, गोरखपुर

डॉ. गणेश कुमार

विगत एक वर्ष की उपलब्धिया व नये वर्ष के संकल्प

वर्त्तमान राज्य सरकार के त्वरित व आशातीत सहयोग से बी.आर.डी. मेडिकल कालेज ने विगत एक वर्ष में अनेक अति महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ हासिल की है जिससे की इस कालखण्ड को बी आर डी का स्वर्ण युग के नाम से जाना जा रहा व प्रचारित भी हो रहा है। पूर्वांचल का एकमात्र रेफेरल चिकित्सा संस्थान एवं मेडिकल कालेज होने के नाते यह पूर्वांचल सहित उत्तरी बिहार व सीमावर्ती नेपाल के नागरिकों को उच्च स्तरीय गुणवत्तापूर्ण चिकित्सा सेवा उपलब्ध कराता आ रहा है। प्रदेश व देश के किसी भी अन्य चिकित्सा संस्थान की आपेक्षा एक बड़े भूभाग एवं जनसंख्या को सेवा प्रदान करने की जिम्मेवारी का निर्वहन यह संस्थान अपने स्थापना के समय से कर रहा है। इन्सेफ्लाइटीस एवं अन्य बहुतेरी महामारियों का भी सामना यह संस्थान 1978 से करता आ रहा है। आपने स्थापना के समय से ही उपर्युक्त अद्वीतीय भौगोलिक, जनसांखिकीय, सामाजिक, चिकित्सकीय व महामारियों (इन्सेफ्लाइटीस आदि) की चुनौतियों के सापेक्ष अत्यल्प वार्षिक बजट आवंटन के कारण यह संस्थान अतिशय दुस्वरियों से रूबरू होता रहा व विकास की दौड़ में पिछड़ता जा रहा था।

विगत वर्ष, वर्तमान राज्य सरकार की जन सम्वेदनशीलता व सामाजिक प्रतिबद्धता से इस संस्थान को अपेक्षित बजट आवंटन के साथ ही तीव्र विकास हेतु मार्गदर्शन मिलने के कारण आशातीत चतुर्दिक विकास हुआ। सम्यक चतुर्दिक विकास के हर आयाम का वर्णन करना संभव नहीं परन्तु कुछ रेखांकित करने योग्य उपलब्धियाँ निम्नवत है :–

1 इन्सेफ्लाइटीस की महामारी पर बहुप्रतीक्षित, आशातीत नियत्रण (विगत वर्ष 2017 में

*प्रधानाचार्य, बी.आर.डी. मेडिकल कालेज, गोरखपुर–273013, उत्तर प्रदेश

2248 मरीजों एवं 512 मृत्यु के सापेक्ष वर्ष 2018 में मात्र 1047 मरीज एवं सिर्फ 166 मृत्यु) वर्तमान सरकार के बहुआयामी, धरातलीय व त्वरित प्रयास एवं सतत निगरानी से संभव हुआ।

2 ई हॉस्पिटल की शुरुआत हुई।

3 इन्सेफेलाइटीस मरीजों हेतु 79 बेड वाले नये पीडियाट्रिक वार्ड का निर्माण न्यूनतम रिकार्ड समय में पूरा कर संचालित किया गया।

4 पी.एम.एस.एस.वाई. के तहत 200 बेड वाले सुपर स्पेसीलिटी हॉस्पिटल का निर्माण पूर्ण।

5 संस्थान के कुल 10 ऑपरेशन थीएटरों में से 6 का उच्चीकरण कर विश्वस्तरीय मोडुलर ओ.टी. बनाया गया।

6 वार्ड 1, 2, 8, 10 व 11 का जीर्णोद्धार किया गया।

7 एअरपोर्ट अथॉरिटी ऑफ इंडिया द्वारा 100 श्य्यायों वाले नवीन रैन बसेरा का निर्माण कर लोकार्पण व संचालित किया गया।

8 ओ.पी.डी. रजिस्ट्रेशन भवन, अमृत फार्मेसी (सस्ती दवाओं हेतु), कैंटीन एवं पुरुष तथा महिला प्रसाधन का निर्माण कार्य पूर्ण व लोकार्पित एवं संचालित हुआ।

9 फायर सेफ्टी, फायर अलार्म एवं फायर फाइटिंग सिस्टम का क्रय पूर्ण।

10 संस्थान के परिसर की जीर्ण शीर्ण सभी रोड का नया निर्माण एवं सभी रोड को चौड़ा कर बगल में नए नाले का निर्माण पूर्ण किया गया।

11 परिसर की बाउन्ड्री वाल का जीर्णोद्धार।

12 परिसर की सीवर लाइन का जीर्णोद्धार व नवीन सीवर लाइन का निर्माण कार्य।

13 परिसर में वाहन स्टैंड का निर्माण।

14 डिजिटल रेडियोलोजी का कार्य पूर्ण कर संचालित किया गया।

15 नवीन 50 सीटेड मैरिड पी.जी. छात्रावास का निर्माण।

16 नवीन 100 सीटेड गर्ल्स पी.जी. छात्रावास का निर्माण।

17 नवीन 100 सीटेड ब्यायज पी.जी. छात्रावास का निर्माण।

18 वार्ड संख्या 100 भूतल एवं प्रथम तल पर स्थित पीडियाट्रिक आई.सी.यू. को मानकानुसार सुदृढ़ किया गया एवं नये वेंटिलेटर, मॉनिटर, वार्मर आदि स्थापित किये गए।

19 राजेंद्र छात्रावास का जीर्णोद्धार।

20 प्रधानाचार्य निवास मय बाउन्ड्री वाल का निर्माण।

21 लेक्चर कच्छ संख्या 3 में स्मार्ट क्लास का कार्य।

22 अति अल्प संसाधनों के बाद भी सुपरस्पेसिलीटी इंडोक्राईन ओ.पी.डी. एवं नयूरोलोजी ओ.पी.डी. का सतत संचालन किया गया जा रहा है।

23 मेडिसिन वार्ड 14 में नवीन 8 बेड का अत्याधुनिक आई.सी.यू. का निर्माण कार्य पूर्ण।

नए वर्ष (2019) के लिए भी हमारा संकल्प सुस्पष्ट है जिनमे से निम्न उल्लेखनीय लक्ष्य पूर्ण होंगे :–

1 नवीन 500 बेड का विश्वस्तरीय बाल चिकित्सा संस्थान।

2 गेस्ट हाउस का निर्माण।

3 स्त्री प्रसूति रोग विभाग में नवीन प्रसूति / लेबर काम्प्लेक्स का निर्माण।

4 प्राइवेट वार्ड का जीर्णोद्धार।

5 आर.एम.आर.सी. (रीजनल मेडिकल रिसर्च सेंटर) का निर्माण।

6 दिव्यंगो हेतु सी.आर.सी. (कंपोजिट रीजनल सेंटर फॉर पर्सन विथ डिसेबिलीटीज) का निर्माण।

7 नवीन वाटर टैंक (15000 लीटर क्षमता) का निर्माण।

8 डी.एम.एल.टी. एवं लैब टेकनीसीयन पाठ्यक्रम का प्रारम्भं

9 फार्मेसी कालेज का प्रारम्भ।

10 अन्य सभी वार्डों का जीर्णोद्धार।

संक्षेप में कहें मात्र गत एक वर्ष (2018) में बी.आर.डी. मेडिकल कालेज ने जितनी उन्नति किया उतनी उन्नति अपने स्थापना कल से आज तक किसी एक वर्ष में नहीं किया। वर्ष 2018 अपने अप्रतिम उपलब्धियों के लिए स्वर्णकाल के रूप में जाना जायेगा। वर्तमान उत्तर प्रदेश सरकार के इस भागीरथ सदप्रयास में कार्य–सहभागी बनने का हमें सौभाग्य प्राप्त हुआ। हमें आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है की इस वर्ष (2019) में भी हम सरकार के बहुयामी सहयोग से तीव्र चतुर्दिक विकास करेंगे।

इन्सेफेलाईटीस पर विजय की ओर
योगी सरकार का वार, दिवा स्वप्न हुआ साकार

डॉ राज किशोर सिंह

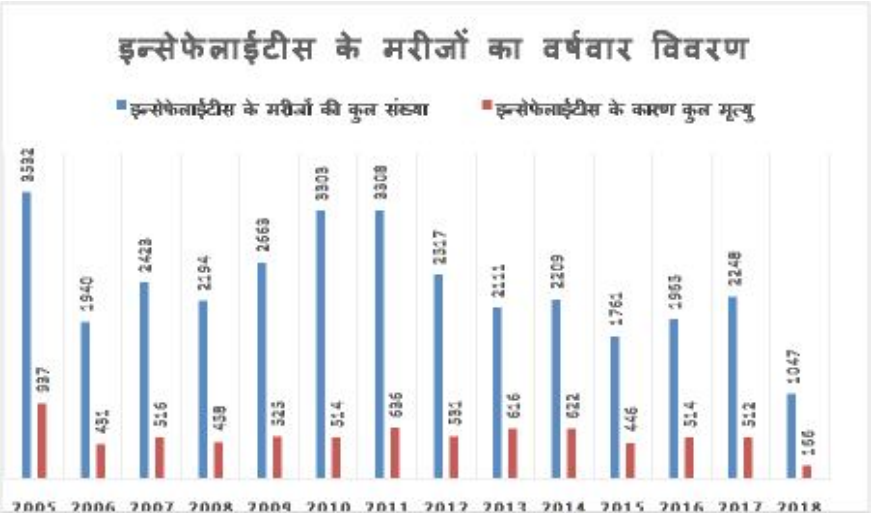

दशानन (रावण) का संहार त्रेतायुग में भगवान श्रीराम ने किया। कलियुग के सहस्त्रानन (इन्सेफेलाईटीस) की त्रासदी से कौन बचाए? समसामयिक एक यक्ष प्रश्न?

सन 1978 से इन्सेफेलाईटीस की शुरुआत पूर्वांचल से हुई व् 2005 में इस महामारी ने अति विकराल रूप धारण कर लिया। उक्त वर्ष इसकी चपेट में आये करीब 5000 मरीजों में से 1000 की मौत हो गयी। उस वर्ष अकेले बाबा राघव दास मेडिकल कालेज में कुल 3532

* एसोसिएट प्रोफेसर, मेडिसिन विभाग, बी आर डी मेडिकल कॉलेज, गोरखपुर

इन्सेफेलाईटीस के मरीज आये जिनमें से 937 मरीजों की मौत हो गयी। शुरूआती जांचों से पता चला कि ये महामारी धान के खेत, सुअर व मच्छर के दुरूह चक्र से फैले जापनीज इन्सेफेलाईटीस (जे ई) नामक वाइरस से फैल रही है। त्रासदी इतनी बड़ी एवं भयावह थी की सहस्त्रों बच्चों की जान लेने वाले नवकी बीमारी/मस्तिष्क ज्वर/इन्सेफेलाईटीस के भय व् संताप से पूरा विश्व संवेदनशील हो गया। राष्ट्रीय एवं वैश्विक स्तर पर चर्चायें, शोध व बचाव के प्रयास होने लगे। पूर्वांचल में शोक एवं भय की लहर बह चली। हर व्यक्ति बरसात आते ही एक अनजाने भय से ग्रस्त हो जाता है।

राष्ट्रीय वयारोलोजी शोध संस्थान पुणे एवं उसकी सहयोगी शाखा गोरखपुर तथा वैश्विक शोध संस्थानों ने शोध में पाया की ये महामारी अनेकानेक प्रकार के जीवाणु व मुख्यतः विषाणुओं से हो रही है। सहस्त्रो बच्चों की जान लेने वाली इस महामारी के अनेक कारण, व् अनेक रूप के कारण इसका नाम मैंने कलियुग का सहस्त्रानन रखा।

सन 2006 में इस कलियुगी सहस्त्रानन/इन्सेफेलाईटीस/नवकी बीमारी/मस्तिष्क ज्वर से बचाव के लिए व्यापक स्तर पर जे ई टीकाकरण किया गया परन्तु मरीजों व मौतों के आकड़ों में कोई खास अन्तर नहीं दिखा। सभी शोध व उपचार में लगी देशी व वैश्विक एजेंसियाँ तथा तत्कालीन सरकारें प्रयास करती रही पर इस महामारी की भयावहता में कोई उल्लेखनीय कमी नहीं आई। सन 2006 में ही जलजनित एंटेरो वाईरस की भूमिका का पता चला एवं यह माना गया की इस महामारी की भयावहता में मात्र जे ई टीकाकरण से उल्लेखनीय कमी नहीं लायी जा सकती है। सन 2006 में ही नेशनल वेक्टर वोर्न डिजीज कण्ट्रोल प्रोग्राम, नई दिल्ली ने रास्ट्रीय स्तर पर इस महामारी के सर्विलेंस/निगरानी व उपचार के लिए लिखित दिशानिर्देश जारी किया। इस महामारी के कारणों व उपचार का पता लगाने के लिए सन 2008 में नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ वाईरोलोजी की क्षेत्रीय शाखा बी आर डी मेडिकल परिसर में स्थापित की गयी। जल जनित कारणों की रोकथाम के लिए गाँव गाँव ज्यादा गहराई वाले हैण्ड पंप लगाये गए ताकि लोगों को साफ जल मिले व इस महामारी की रोकथाम हो सके। शोध व बचाव के प्रयास सतत चलते रहे पर उल्लेखनीय प्रगति नहीं हुई। निरंतर शोध से सन 2014 में पता चला की इस महामारी के अनेकानेक कारणों में एक नयी कड़ी, स्क्रब टाईफस का एक महत्वपूर्ण स्थान है। इस शोध के बाद इस महामारी से ग्रसित सभी मरीजों में स्क्रब टाईफस के दवा की खुराक देना अनिवार्य कर दिया गया। फिर भी इस महामारी की भयावहता में कोई उल्लेखनीय सुधार नहीं आया।

सहस्त्रानन इन्सेफेलाईटीस अपने अनेक जहरीले सर उठाये हजारों बच्चों की जिन्दगियाँ लीलता रहा और हम मजबूर, हैरान देखते रहे। सन 2017 में दशकों (2005 से अबतक) के

अथक प्रयास व शोध के बाद भी अकेले बी आर डी मेडिकल कॉलेज में इस महामारी से ग्रसित 2248 मरीज भर्ती हुए, जिनमे से लाख प्रयास के बाद भी 512 की मृत्यु हो गयी।

सन 2018 में नयी योगी सरकार ने बहुआयामी स्तर पर कार्यकारी योजना बनाकर **"दस्तक" प्रोग्राम की शुरुआत की।** "दस्तक" प्रोग्राम में इन्सेफेलाईटीस से ग्रसित क्षेत्रों में घर घर जाकर इस महामारी से बचाव हेतु महामारी की पहचान, सामूहिक व व्यक्तिगत स्वच्क्षता, मच्छरों से बचाव, टीकाकरण एवं महामारी से ग्रसित होने पर निकट के चिकित्सा केंद्र पर तत्काल जाँच व चिकित्सा का जोर शोर से प्रचार प्रसार किया गया।

योगी सरकार के नियोजित, व्यापक जनसहभागिता व वहुआयामी प्रयास के सामने सहस्त्रानन इन्सेफेलाईटीस मुर्छित हो मरणासन्न हो गया। आश्चर्यजनक, परन्तु सुखद परिणाम मिला एवं सन 2018 में इस महामारी से मात्र 828 बच्चे एवं 219 वयस्क ग्रसित हुए (कुल 1047 मरीज) हुए जिनमें से मात्र 166 मरीजों की मृत्यु हुई। पूर्व वर्ष के सापेक्ष आधे से भी कम मरीज एवं आधे से भी कम की मृत्यु योगी सरकार के धरातल पर किये गए सतत् प्रयास से संभव हो पाया।

निकट भविष्य में सरकार के सतत् प्रयास एवं जनसहभागिता से इस सहस्त्रानन इन्सेफेलाईटीस का उन्मूलन संभव हो पायेगा, ऐसा विश्वास करने में अब कोई व्यावधान नहीं है।

कलियुग में सहस्त्रानन का वध माननीय मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश सरकार, परमपूज्य गोरक्षपीठाधीश्वर योगी श्री आदित्यनाथ जी महाराज द्वारा होगा व हम सभी इस पावन शुभ घड़ी के साक्षी बनने का सौभाग्य प्राप्त करेंगें।

आधी सदी का कहर- एन्सेफ्लाइटिस

डॉ. आर.एन. सिंह

पूर्वांचल में दिमागी बुखार मासूमों की चालीस साल से 'सालाना सीरियल किलर' बनी हुई है। दक्षिण में महामारी ने साठ के दशक में ही कहर बरपाना शुरु कर दिया था। इतना ही नहीं, यह देश के उन्नीस अन्य प्रदेशों में भी व्याप्त है। कितने हजार मासूम हर साल इसके कारण काल कवलित होते हैं, इसका कोई सटीक आंकड़ा न तो सरकार के पास है न ही किसी और के । केवल गोरखपुर के एक अस्पताल, नेहरू चिकित्सालय के आंकड़े, ही सामने आते हैं। वह भी 2005 में काफी जद्दो–जहद के बाद से। केवल एक ही छत के नीचे प्रति वर्ष लगभग 500 से अधिक बच्चों की मृत्यु ए.ई.एस. के कारण हो जाती थी। नगर के बड़े, छोटे अस्पतालों, सात जिलों की सी एच सी, पी एच सी, सभी प्रभावित क्षेत्र के जिला अस्पतालों, प्राइवेट नर्सिंग होम, अन्य चिकित्सकों व झोला छाप के यहां होने वाली मौतों व विकलांगता का कोई आंकड़ा किसी के पास नहीं है। मौतों के साथ विकलांगता भी अलग से एक बड़ी समस्या है, हर साल की। वर्ष 2005 और कई अन्य साल इसके अपवाद हैं। कभी कभी तो मेडिकल कालेज में अकेले बारह सौ मौतें हो जातीं हैं। अन्य प्रदेशों में, बिहार,असम,पश्चिमी बंगाल खास तौर से प्रभावित हैं। कुल 17 प्रदेशों में महामारी व्याप्त है ।

इंसेफेलाइटिस के मुख्य लक्षण

1. तेज बुखार आना
2. शरीर व सिर दर्द
3. उल्टी होना
4. झटका आना

चीफ कैंपेनर, एंसेफलाइटिस उन्मूलन अभियान, गोरखपुर

5. बेहोशी

6. शरीर में सूजन (जल जनित एन्सेफेलाइटिस)

ए ई एस के तीन प्रमुख ज्ञात कारक हैं।

अ. मच्छरजनित जापानी एंसेफ्लाइटिस,

ब. जल जनित एंट्रो वायरल एंसेफलाइटिस,

स. नया ज्ञात कारक 'स्क्रब टायफस'

2006 तक केवल जापानी एंसेफ्लाइटिस ही कहर बरपाती थी। बाद में 2007 में शोध से पता चला कि एंट्रो वायरल मुख्य वजह है। जे ई 2006 में मास टीका करण से काफी नियंत्रित हुई। अभी भी इसका वजूद आठ से दस प्रतिशत तक कायम है। जिसकी मूल वजह है, अधोमानक टीका करण, केवल एक बार। कायदन एक साल के अंतर पर टीके दो बार जरूर लगने चाहिये थे। हालांकि 2012 में भारत सरकार ने नेशनल इमुनाइजेशन प्रोग्राम में दो बार टीका लगाने की अभियान की मांग को मान लिया। फिर भी जे ई के उन्मूलन के लिये मास टीकाकरण की जरूरत है, एक साल से पंद्रह साल तक के सभी बच्चों को। वैसे टीका तो वयस्कों को भी लगना चाहिये। असम में यह प्रविधान है भी। प्रभावी, घरेलू व सरकारी फागिंग के साथ सूअर बाड़ों का आबादी से दूर प्रबंधन भी जे ई पर अंकुश के लिये जरूरी है।

2007 मे जे ई के मास टीकाकरण के बाद भी मौतों के आंकड़ों में जब कमी नहीं आई तो गहन शोध से पता चला कि अब मुख्य कारक जल जनित एंट्रो वायरल एंसेफ्लाइटिस है। यह दूषित पेय जल के कारण – फीको ओरल रूट से होती है। दुखद यह है कि इस एंट्रो वायरल का न ही कोई टीका है, न ही कोई इलाज। इससे बचाव के लिये सुरक्षित पेय जल का सेवन, हाथ धोने की नियमित आदत व खुले में शौच पर रोक प्रमुख बिंदु हैं। इंडिया मार्क 2 हैंड पंप, स्वच्छ शौचालय, होलिया माडल आफ वाटर प्यूरिफिकेशन, क्लोरिनेशन आदि इसके बचाव के प्रमुख कारक हैं।

2017 में आइ सी एम आर व अन्य शोधकर्ताओं ने ए ई एस के नये कारक, 'स्क्रब टायफस' की पहचान की और कहा कि यह कुल एंसेफ्लाइटिस का साठ प्रतिशत कारक है। यह अकेला कारक है जो प्रिवेंटबल तो है ही इसका सटीक इलाज भी उपलब्ध है। अजिथ्रोमाइसि व डाक्सीसाइक्लीन इसमें असरदार दवायें हैं।

2017 में आइ सी एम आर, एन आइ वी पुने, पीडियाट्रिक्स डिपार्टमेट आदि ने संयुक्त रूप से यह दावा किया कि दो साल के गहन शोध के बाद अब पता चला है कि ए ई एस के

पैंसठ प्रतिशत मामले 'स्क्रब टायफस' के हैं। यह एंसेफ्लाइटिस अजिथ्रोमाइसिन व डाक्सीसाइक्लिन से ट्रीटेबल है। इस शोध के नतीजों को बाकायदा आई एम ए, गोरखपुर की एक सामान्य सभा बुला कर वैज्ञानिक संस्थाओं ने दावे के साथ सभी चिकित्सकों के बीच रखा भी था।

बात अभियान के गले से नीचे नहीं उतर पाई थी। अभियान ने असहमति जताई और प्रमाण की भी गुजारिश की गई। पूर्व विभागाध्यक्ष डा ए के राठी ने भी शोध के नतीजों पर आपत्ति जताई थी। पूर्व विभागाध्यक्ष डा के पी कुशवाहा व डा वाई डी सिंह भी इस रिपोर्ट से सहमत नहीं हुए थे।

एंसेफ्लाइटिस उनमूलन ने उसी समय यह आपत्ति जताई थी की अगर ए ई एस का 65 प्रतिशत कारक स्क्रब टायफस है तो फिर मौतों व विकलांगता में दो तिहाई (65) कमी स्वतः आ जानी चाहिये क्योंकि सारे केसेज में 2 वर्ष तक अजिथ्रोमाइसिन दी भी गई थी। ज्ञातव्य है कि स्क्रब टायफस एक ट्रीटेबल बीमारी है। जब कि जे ई व एंट्रो वायरल का कोई इलाज नहीं है।

आखिर दुश्मन को सही पहचाने बिना हम उससे लड़ेंगे कैसे?

एक प्रमुख हिंदी दैनिक मे हाल में छपी रिपोर्ट एन आई वी की ताजा रिपोर्ट में साफ बयान दिया है कि अब स्क्ब टायफस के केसेज 2017 मे ए ई एस मे मात्र 11 प्रतिशत ही पॉजिटिव पाये गये हैं। दूसरी रिपोर्ट जो 2018 में जो एनआई वी ने दी उसमें स्क्रब टायफस केवल 2.5 प्रतिशत ही मिला। इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि मुख्य कारक जल जनित एंट्रो वायरल व कुछ मामले (दस प्रतिशत तक) जापानी एंसेफ्लाइटिस के ही हैं। कुछ प्रतिशत कारक अभी भी अज्ञात हैं।

अगर हम आधी शताब्दी में ए ई एस के कारकों की पूरी तरह सही पहचान नहीं कर सकते, तो कौन से विश्व गुरु हैं हम। जापान, कोरिया, ताइवान आदि देशों ने दशकों पहले ही एंसेफ्लाइटिस का उन्मूलन कर लिया है।

मौजूदा स्थिति में मुख्य कारक एंट्रो वायरल, जे ई व आंशिक कारक स्क्रब टायफस के प्रिवेंशन पर वर्ष की शुरुआत से ही युद्ध स्तर पर काम हुआ। एंसेफ्लाइटिस उन्मूलन अभियान सूबे की सभी सम्मानित (आम व खास) जनता से निवेदन करता है कि उत्तर प्रदेश के 'दस्तक' अभियान को आत्मसात करें। पहली बार सरकार ने साल की शुरुआत से ही प्रिवेंशन के बिंदुओं को 'दस्तक के जरिये' लागू करके यह संदेश दे दिया है कि यह एक 'जन मित्र' सरकार है। लाइलाज एंसेफ्लाइटिस के जनवरी से ही प्रिवेंशन के लिये अभियान सात साल से संघर्ष कर रहा था। इस बार 2018 में सुनी गई बात। माननीय मुख्यमंत्री, योगी जी ने दस्तक के जरिये

वर्ष की शुरुआत से एंसेफलाइटिस प्रिवेंशन को गंभीरता से लिया। बधाई सबको व मुख्यमंत्री जी को सादर नमन सहित हार्दिक धन्यवाद। इसी के साथ अगर नेशनल प्रोग्राम लागू हो जाय व शोध के सही परिणाम सामने आ जांय तो एंसेफ्लाइटिस के अंत की शुरुआत हो जायेगी।

एंसेफ्लाइटिस उन्मूलन अभियान का तेरह साल का सफर, संक्षेप में –

एन्सेफ्लाइटिस उन्मूलन अभियान 2005 से अनवरत संघर्ष करता रहा है एंसेफ्लाइटिस मुक्त भारत के लिये। तमाम उपलब्धियां तो हुईं लेकिन महामारी से आजादी अभी तक नहीं मिली।

इसके प्रयास/उपलब्धियां संक्षेप में प्रमुख हैं.....

- 25 मई 2005 को इंसेफेलाइटिस उन्मूलन अभियान का गठन
- 2005 से सात जिलों मे चार साल तक रैलियां, ज्ञापन, मीटिंग आदि। जन याचना, जनादेश व जनाक्रोश रैलियां, 2005 से 2009 तक हर जिले व उनके गांव कस्बों तक।
- सबसे पहले जापानी एंसेफ्लाइटिस के मास स्केल पर टीके लगाने की मांग सातों जिलों से रैलियों के माध्यम से उठाई गई।
- शोध केंद्र, सूअर बाड़े आबादी से दूर करने, व जमीनी एवं एरियल फागिंग के लिये आवाज उठाई।
- नेशनल प्रोग्राम, नीप ड्राफ्ट करके, केंद्र सरकार को 2005 में ही प्रेषित कर दिया गया।
- नीप की मांग आज तक लगातार जारी है।
- एरियल फागिंग के लिये फघ्क्स पर मात्र तीन दिन में राहुल जी का 2005 में हेलीकाप्टर सहित गोरखपुर आगमन।
- महामहिम राज्यपाल का गोरखपुर आगमन, एंसेफ्लाइटिस मुद्दे पर। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री का आगमन 2005 में।
- अभियान का टीके के लिये दोनों विभूतियों से ठोस निवेदन। फलस्वरूप 2006 में मास स्केल पर 60 लाख जे ई के टीके पहली बार लगे।
- शोध केंद्र, जे ई के लिये मास स्केल टीकाकरण का होना, अभियान की मांग पर, एन आई वी, पुने की वायरालाजी लैब की शाखा का गोरखपुर में खोला जाना। भारत के पूरे एंसेफ्लाइटिस प्रभावित क्षेत्र में केवल गोरखपुर में ही इसकी वायरालाजी लैब स्थापित है।
- भारत सरकार से सी डी सी, अटलांटा को गहन शोध के लिये भारत बुलाने के लिये

अनुरोध। तमाम जद्दो जहद के बाद सी डी सी की स्वीकृति 2006 में आ तो गयी लेकिन कुछ कारण से टीम आ नहीं पायी। अभियान का माननीय उच्च न्यायालय, इलाहाबाद में याचिका दायर करना। इसपर न्यायलय ने आदेश दिया की सी डी सी की टीम को तत्काल बुलाया जाय। अंततः तमाम मुश्किलों के बाद सी डी सी का 2007 में भारत आगमन। शोध के बाद पता चला की टीके लगने के बाद चार से छः प्रतिशत पर जे ई कम हो गई, शोध से नये कारक एंट्रो वायरल का पता चला।

- सात जिलों व गाँवों से एक लाख पत्र भी लोगों ने केंद्र सरकार को भेजे, सीधे अपने अपने गांव कस्बों से। नीप की दस सूत्रीय मांग को लागू कराने के लिये यह सब 2008 तक चला।

- राजधानी, लखनऊ से हर साल मीडिया के जरिये नीप व अन्य मांगों को लेकर आवाज उठाता रहा अभियान और प्रति वर्ष कॉन्फ्रेन्स भी की गयी।

- इन सब के बावजूद नेशनल प्रोग्राम नहीं बना।

- 2008 से अभियान ने बजाय स्याह रोशनाई के 'खून से खत' का सिलसिला शुरु किया। गोरखपुर सहित सातों जिलों के मुख्यालयों व कस्बों में अभियान खुद जाकर वहां के लोगों समेत खून से खत लिखता रहा। राजधानी से भी चार बार ये खत तत्कालीन गद्दी नशीन सरकार व आला कमान को तीन साल तक भेजे जाते रहे। नीप फिर भी नहीं बना। हां, 2005 के बाद फिर स्वास्थ्य मंत्री व राहुल गाँधी जी समेत केंद्र से नेताओं का आने का सिलसिला जारी हो गया। श्री शशिधर रेड्डी एन.डी.एम.ए. के सदस्य तीन बार आये और मुद्दे को गंभीरता से लिया। केंद्र सरकार से विभीषिका का परिचय भी कराया, संवेदनशीलता से।

- एंसेफ्लाइटिस उन्मूलन का मुद्दा हर साल मौजूदा 'जनमित्र मुख्यमंत्री' श्री योगी जी ने संसद के हर सत्र में बहुत गंभीरता व संजीदगी से उठाया। सड़क पर भी तमाम आंदोलन अनवरत करते रहे। धरना प्रदर्शन भी हुआ व इसी मुद्दे पर कई बार पद यात्राएं भी की।

- अभियान ने 2009, 2012, 2014 के चुनाव में इसे चुनावी मुद्दा भी बनाने का हर बार संघर्ष किया। दो बार चुनाव से पहले अपना जनता का घोषणा पत्र भी जारी किया, सभी राजनैतिक दलों को और कुछ प्रत्याशियों को सौंपा भी। 2012 व 2014 में यह काफी हद तक चुनावी मुद्दा बना भी। लेकिन नीप नहीं बना और हर साल हजारों मासूम मरते रहे।

- हार कर एंसेफ्लाइटिस उन्मूलन अभियान ने नीप ग्राम होलिया में नीप के दस सूत्रों पर ठीक एक जनवरी से काम प्रारंभ किया जो ठीक 1 जनवरी से 31 दिसंबर तक चला,

रोज 365 दिन तक। प्रिवेंशन पर ही खास जोर रहा। इसका मूल उद्देश्य/टार्जेट, अभियान ने यह निर्धारित किया कि साल भर लगातार काम करके पांच हजार आबादी वाले इस गांव से न कोई मौत होने पाये न ही विकलांगता। ईश्वर की मदद से टार्गेट अचीव भी हुआ। होलिया चलो पूर्वांचल का डांडी मार्च कहलाया। व्यवस्था का सकारात्मक विरोध, मासूमों की सलामती के लिये। होलिया में अपनाये गये सभी बिंदुओं पर सरकार ने 2011 से काम शुरु भी किया, अलग अलग। तत्काल नीप नहीं बन सका तब भी।

- अभियान का संघर्ष अनवरत जारी रहा। सेव चाइलड सेव नेशन पथ यात्रा, कौड़ा बहस, खून से खत, चुनावी मुद्दा, चाय बहस, इलेक्शन मैनिफेस्टो जारी करना आदि अनेक संघर्ष अनवरत, जारी रहे। कौड़ा बहस का यह कार्यक्रम शीतकाल में कई वर्ष तक जारी रहा। उपलब्धि यह भी रही कि 2011 में एन डी एम ए के वी सी श्री शशिधर रेड्डी व केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री श्री गुलाम नबी आजाद गोरखपुर आये। अभियान की नेशनल प्रोग्राम को लेकर उनसे विस्तृत वार्ता हुई। अंततः 2012 में ग्रुप आफ मिनिस्टर ने नेशनल प्रोग्राम की घोषणा कर दी। चार हजार करोड़ रूपये भी एंसेफ्लाइटिस के लिये दिये गये।

- अभियान 2005 से आज तक रहे सभी चार केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रियों से स्वयं मिलकर नेशनल प्रोग्राम व अन्य मुद्दों पर विस्तृत वार्ता व सादर अनुरोध कर चुका है। 2005 में मा. अम्बूमणि रामदास, 2011 में मा. गुलाम नबी आजाद, 2015 में मा. हर्ष वर्धन जी व 2016 में मा जे पी नड्डा जी से। प्रोग्राम बन तो गया 2014 में लेकिन अभी तक इसके लोकार्पित होने, जमीनी हकीकत लेने का इंतजार है। आखिर बने हुए प्रोग्राम को, जिससे हजारों मासूमों की हिफाजत होगी हर साल, लागू होने में विलंब क्यो? अनुरोध है कि यह जल्द लागू हो।

- प्रोग्राम के अभाव में मासूम हर साल काल कवलित होते रहे। अभियान तब से आज तक इसे जमीनी स्तर पर लागू कराने के लिये निरंतर प्रयास रत है, विभिन्न तरीकों से। इस संदर्भ में माननीय मुख्य मंत्री जी से भी अनुरोध किया। उन्होंने इसे लागू कराने का हाल ही में मौखिक आश्वासन भी दिया। मुख्यमंत्री जी ने केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री श्री जे पी नड्डा से भी वार्ता कराई, इस प्रोग्राम के लिये। अब इंतजार है कि कब यह लागू होगा और एंसेफ्लाइटिस के अंत की शुरुआत होगी। उन्मूलन भी।

माननीय मुख्यमंत्री जी ने बीस साल से लगातार एंसेफ्लाइटिस पर लगाम लगाने हेतु संघर्ष किया है। हर सत्र में संसद में इसके उन्मूलन के लिये जोरदार आवाज उठाई है उन्होंने साथ ही 2009 के बाद सड़क पर भी कई आंदोलन, 2017 तक करते रहे हैं। दस किलो मीटर की दस हजार लोगों की पद यात्रा व दस दिन तक कई बार लगातार धरना, ज्ञापन भी

उल्लेखनीय हैं। मुख्यमंत्री बनने के बाद उन्होंनें अभियान की जनवरी से प्रिवेंशन शुरु करने की मांग पर 'दस्तक अभियान' जारी करके साबित कर दिया की वह 'जनमित्र मुख्यमंत्री' हैं । जब एंसेफ्लाइटिस के उन्मूलन का इतिहास लिखा जायेगा श्री योगी जी उसमें क्रुसेडर/महायोद्धा के रूप में जाने जायेंगे।

अभियान विगत सात वर्ष से एंसेफलाइटिस पर अंकुश लगाने के लिये दो मुद्दों पर जोर देता रहा है।

पहला, जनवरी/फरवरी से ही इसके प्रिवेंशन पर युद्धस्तर पर काम शुरु हो।

दूसरा, एंसेफ्लाइटिस का बना हुआ नेशनल प्रोग्राम जमीनी स्तर पर लागू हो जाय।

पहली मांग तो मा मुख्यमंत्री श्री योगी जी ने 2018 में 'दस्तक अभियान' के माध्यम से पूरी कर दी। मुख्यमंत्री जी ने दो फरवरी को ही 'दस्तक अभियान' की घोषणा कर दी, प्रिवेंशन के नौ बिंदुओं पर। एक करोड़ जे ई के टीके, ओ डी एफ, स्वच्छता अभियान, काफी हद तक सुरक्षित पेयजल, हाथ धोने की आदत, खाने से पहले व शौच के बाद, विद्यालयों में नो बैग डे, एंसेफ्लाइटिस पर जागरुकता के लिये, घर घर स्वास्थ्यकर्मियों द्वारा जन जागरण, स्वास्थ्य विभाग को कड़े निर्देश आदि प्रमुख बिंदु रहे। अनेक मासूमों की इस वर्ष व आगे भी एंसेफ्लाइटिस से हिफाजत हुई। मौतें, विकलांगता, महामारी सब बहुत कम हो गयी।

दूसरी मुख्य मांग बने हुए 'नेशनल प्रोग्राम फार कंट्रोल एंड प्रिवेंशन आफ एंसेफ्लाइटिस' को जमीनी स्तर पर लागू करने की है। यह पी एम व स्वास्थ्य मंत्री, भारत सरकार को करना है। यही आधी सदी की त्रासदी के उन्मूलन का अकेला उपाय भी है। फिर भी सतत निवेदन/आंदोलन, लोकसभा में बार बार इसके लिये शसक्त आवाज उठाये जाने व आश्वासन मिलने के बावजूद, बन जाने के चार साल बाद भी आज तक यह लागू नहीं हो पाया। आखिर क्यों? एक नहीं उन्नीस प्रदेशों में यह महामारी है। पोलिओ (2013 में) व स्मालपाक्स (1977 में) नेशनल प्रोग्राम के जरिये ही उन्मूलित हो पाई। फिर एंसेफलाइटिस का बना हुआ नेशनल प्रोग्राम लागू करने में इतना विलंब क्यों? अभियान केंद्र सरकार से अनुरोध करता है कि शीघ्रातिशीघ्र एंसेफ्लाइटिस का नेशनल प्रोग्राम लागू करे। इस साल व आगे भी मासूमों की एंसेफ्लाइटिस से हिफाजत तभी हो पायेगी। प्रदेश सरकार के दस्तक अभियान का पूरा लाभ नेशनल प्रोग्राम लागू होने पर ही मिलेगा।

गोरखपुर के वनटांगिया समुदाय : इतिहास, संघर्ष और सौगात

डॉ. अविनाश प्रताप सिंह

गोरखपुर एवं महराजगंज सहित वनटांगिया समुदाय के लोगों के लिए वर्ष 2018 बेहद सन्तोष और सौगातों से भरी उपलब्धियों वाला रहा। गोरखपुर के चरगाँवा ब्लाक में स्थित तिनकोनिया नं. 3, रजही में आजाद नगर, खाले टोला, आमबाग और पिपराइच ब्लाक में स्थित चिलबिलवा गाँव जिसमें बड़ी संख्या में वनटांगिया समुदाय के लोग रहते हैं, उन्हें राजस्व गाँव की मान्यता के साथ ही एक अन्धकार युग के अन्त और नये सवेरे की शुरुआत का उपहार मिला। 99 साल के लम्बे इंतजार के बाद इस सुखद अवसर का प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष साक्षी बनते हुए हर संवेदनशील नागरिक के लिए गौरव का क्षण था। अंग्रेजों के जमाने से बेतहाशा जुल्म झेलते आ रहे वनटांगियों के लिए यह मात्र राजस्व गाँव का प्रमाण–पत्र नहीं था, वरन् उनके वर्तमान तथा भविष्य, उनके बच्चों और परिवारों के लिए किसी जीवनदायिनी से कम नहीं था। वनटांगियों को मिले इन अधिकारों से न सिर्फ उनकी स्वास्थ्य, शिक्षा, सड़क, बिजली और पानी जैसी बुनियादी जरूरतें पूरी हुईं बल्कि भारतीय समाज की मुख्य धारा में उन्हें सम्मिलित होने का भी सुअवसर प्राप्त हुआ। यह सही है कि यह सौगात और उपलब्धि उन्हें खैरात में नहीं मिली। इन वनटांगिया समुदायों के लोगों के खानाबदोश जीवन से लेकर राजस्व गाँव तक की मान्यता की अविरल यात्रा का पड़ाव किसी अल्पकालिक घटना मात्र का परिणाम नहीं है बल्कि लम्बी जद्दोजहद, चुनौतीपूर्ण संघर्षों और अनवरत परिश्रम का परिणाम है। इसके साथ इतना यह भी सच है कि गोरखपुर के सांसद रहते उत्तर प्रदेश के वर्तमान माननीय मुख्यमंत्री महंत योगी आदित्यनाथ जी महाराज की इन वनटांगियों को उनका अधिकार दिलाने के लिए सड़क से लेकर संसद तक की लड़ाई और मुख्यमंत्री बनते ही दृढ़ इच्छाशक्ति के साथ अडिग निर्णय का

*असिस्टेंट प्रोफेसर, राजति शास्त्र, महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर

भी परिणाम है। उत्तर प्रदेश सरकार और उसका कुशल नेतृत्व कर रहे माननीय मुख्यमंत्री की संवेदनशीलता और सजगता के कारण ही समावेशी लोकतंत्र की यह वृहत्तर संकल्पना फलीभूत हुई है। यह लोकतांत्रिक मूल्य मात्र कागजी दिखावा नहीं बल्कि भौतिक रूप से भी परिलक्षित हो रहा है।

वर्ष 2017–18 में गोरखपुर के इन वनग्रामों की विकास की सौगात की लम्बी फेहरिस्त का उल्लेख करने से पूर्व वनटांगिया समुदाय का इतिहास और उनके अनवरत संघर्ष की रूह कँपा देने वाली कहानी जानना अत्यन्त समीचीन है। उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा राजस्व गांव की सैगात मिलने से पूर्व जब वनटांगिया लोग अपनी माँगों के लिए कहीं एकत्र होते थे या अपने अधिकार की मांग करते थे तब वहाँ की महिलाएँ अपनी पीड़ा, वेदना और दर्द को गीत के माध्यम से कुछ इस प्रकार गाती थीं –

सन् छः के बात रहले, अंगरेज राज रहले।
अरे लइके जंगल में बसउने उ विदेशिया।।
जंगल में बसाइ देहने, फरुआ थमाइ देहने।
नरखा नेवाइ लिहले, पौधा लगवाइ लेहलें।।
सन् छः के बात रहले, अंगरेज राज रहले।
अरे लइके जंगल में बसउने उ विदेशिया।।
खाये खातिर रोटी देहलें, पहिने के कपड़ा हो।
उत कुछ निक रहलें, राशन पानी देवत रहलें।।
जबसे स्वराज भइले धीरे–धीरे कम कइलें।
छीन लिहलें सब कुछ सुविधा हो सुलेसिया।।
सन् छः के बात रहले, अंगरेज राज रहले।
अरे लइके जंगल में बसउने उ विदेशिया।।
पहिले पहिल हम गइली गवनवा।
गवने क सुख नाहीं जानी हो कलट्टर साहब।।
सरवा पर खांची धइले कान्हें पर कुदारी धइले।
गोदिया में लेहले हो बलकवा हो कलट्टर साहब।।
सन् छः के बात रहले, अंगरेज राज रहले।
अरे लइके जंगल में बसउने उ विदेशिया।।

इस गीत की कुछ पंक्तियों में छिपा है तीन पुश्तों से अधिक का वनटांगियों का दर्द और

उनकी पीड़ा। ऐसे उन हजारों लोगों का दर्द जिन्होंने अपना घरबार छोड़कर अपना खून–पसीना लगाकर इन जंगलों को खड़ा किया था। बात 20वीं शताब्दी की शुरुआत की है। अंग्रेजों ने अपने उपनिवेशों में भौतिक और मानवीय संसाधनों का खूब दोहन किया। यह बात भारत के लिए भी एकदम सटीक है। इन संसाधनों के दोहन के लिए बड़ी संख्या में रेलवे का विस्तार करने के लिए रेल की पटरियाँ बिछायी गयीं। गोरखपुर भी रेलवे का एक बड़ा केन्द्र था, रेल पटरियों को बिछाने के लिए गोरखपुर के आस–पास के जंगलों में अन्धाधुन्ध कटाई के कारण वन समाप्त होने लगे। इनकी भरपाई के लिए अंग्रेजों ने इन क्षेत्रों में वन लगाने का निर्णय लिया और टांगिया पद्धति से वन लगाने के लिए अलग–अलग स्थानों और गाँवों से भोले–भाले ग्रामीणों को बसाया गया जहाँ वन लगने थे। अंग्रेजों ने यह माना कि यदि लोग वहाँ पर रहकर दिन–रात की मेहनत करेंगे तभी वन बचाये जा सकेंगे। अलग–अलग जगहों से आये इन लोगों को उनके काम ने एक नयी पहचान दी, नया नाम मिला 'वनटांगिया मजदूर'। क्योंकि ये टांगिया पद्धति से वन लगाने का कार्य करते थे जो पहले वर्मा में इस पद्धति से वन लगाये गये थे। इसलिए इन्हें वनटांगिया कहा जाने लगा।

टांगिया पद्धति से इन मजदूरों द्वारा शाल (साखू) के पौधे लगाने के लिए एक जत्थे को 30 हेक्टेयर जमीन दी जाती थी। उस जमीन की सफाई, गुढाई करके उसे एकदम भुरभुरी करके साखू के बीज लगाने होते थे। बीज की व्यवस्था भी इन्हीं जत्थों को अपने–अपने लिए करने पड़ते थे। साखू के पेड़ों से यह बीज तोड़ते तथा उनके परिवार की महिलाएँ और बच्चे उस बीज को पेड़ के नीचे से इकट्ठा करते। कई लोग इन बीजों को तोड़ते समय पेड़ों से गिर भी जाते थे लेकिन इसकी कोई जवाबदेही जंगल लगवाने वाले अधिकारियों की नहीं होती थी। यहाँ तक कि उपचार की भी कोई व्यवस्था नहीं होती थी। इन्हीं पंक्तिबद्ध साखू के पौधे के पंक्तियों के बीच जमीन पर अपना पेट भरने के लिए इन्हें खेती करने की छूट थी। यही इनकी मजदूरी थी। यही आजीविका का एक मात्र साधन पौधरोपण और उनकी सुरक्षा करने की टांगिया पद्धति का पालन अंग्रेज अधिकारी बड़ी सख्ती और निर्दयता से कराते थे। इन वनटांगिया मजदूरों को तपती दुपहरिया, बारिश और ठण्ड के दिनों में समान रूप से काम करना पड़ता था। मिट्टी बनाने, पंक्ति को सीधा करने आदि जैसी छोटी–मोटी गलती पर भी इन मजदूरों को कठोर सजा दी जाती थी। यहाँ तक कि कार्य के दिनों में यदि किसी की मृत्यु हो जाये तब भी कार्य समाप्त करके ही अन्तिम संस्कार करना होता था। नवविवाहित महिलाओं को भी पहले दिन से ही जंगल लगाने में अपने समूह के लोगों के साथ सहयोग करना पड़ता था।

अन्याय और अपमान को सहते हुए वर्षों तक यह वनटांगिया समुदाय अपने खून–पसीने और कठोर परिश्रम से वनों को सींचता रहा, हरा–भरा करता रहा। पिछले सौ साल से इन्हीं

साखू के पेड़ों के बीच इन वनटांगियों की जिन्दगी अटकी रही। इन गरीब, मेहनतकश, कर्तव्य के प्रति निष्ठावान मजदूरों को यह नहीं पता था कि अभी कितने और सालों तक उन्हें बंधुआ मजदूर बनकर जंगलों में कार्य करना पड़ेगा। पाँच साल में जब साखू के पौधे तैयार हो जाते थे तब वनटांगियों को नई जमीनों पर इसी काम के लिए अन्यत्र भेज दिया जाता था।

यानि हर पाँच वर्ष बाद एक नयी जगह, नया बसेरा और नये सिरे से संघर्ष के साथ काम शुरू करना पड़ता था। इसी बीच देश आजाद हुआ लेकिन आजादी की रोशनी इन घने जंगलों में छाये अन्धेरे तक नहीं पहुँच सकी। साल–दर–साल बीतते गये, हालात जस–के–तस रहे। इस दौरान वनटांगिया मजदूरों ने अपने कठिन परिश्रम के बूते देहरादून से लेकर गोरखपुर तक के इलाके में साखू के शानदार जंगल खड़े कर दिये। इन्हीं जंगलों से इनकी रोजी चलती थी, इन्हीं के बीच बसेरा था, सो इनकी हिफाजत में ये लोग कोई कोर कसर नहीं छोड़ते। आजादी के बाद भी गोरखपुर और महराजगंज सहित उत्तर प्रदेश के कुछ हिस्सों में 80 के दशक की शुरुआत तक टांगिया मजदूरों से काम लिया जाता रहा। लेकिन धीरे–धीरे वन विभाग के अन्याय का प्रतिकार की सुगबुगाहट वनटांगियों के बीच होने लगी। वन विभाग तथा वनटांगियों के बीच संघर्ष होने लगा। वन विभाग वनटांगियों को अतिक्रमणकारी मानते हुए जंगल से बाहर करने पर तुल गया। 1984 में वन विभाग ने इन वनटांगिया मजदूरों को उनकी जमीन से बेदखल करने का आदेश पारित कर दिया। यह आदेश उनकी आजीविका पर प्रबल कुठाराघात था क्योंकि उन लोगों ने जंगल लगाने के लिए न केवल अपना सम्पूर्ण जीवन लगा दिया बल्कि अपनी कई पीढ़ियों को इन्हीं जंगलों में अर्पित कर दिया। प्रश्न सीधा था कि अपना मतलब साध लेने के बाद सरकार उनसे कहे कि आप यहाँ से जा सकते हैं। आखिर टांगिया जाते तो कहाँ? जंगल के अलावा उनके पास कुछ था ही नहीं और जंगल के बाहर उनकी आवाज भी सुनने वाला कोई नहीं था। अतः टांगियों के लिए जंगल छोड़कर जाने का कोई प्रश्न ही नहीं था। दूसरी ओर उन स्थानों पर रहने का कोई अधिकार पत्र भी नहीं था। था तो सिर्फ नैतिक शक्ति और अपनी मेहनत के प्रति निष्ठा। इसी तना–तनी के बीच 1985 में तिनकोनिया में वनाधिकारियों की फायरिंग में दो वनटांगिया मजदूरों की मृत्यु हो गयी और 27 से अधिक घायल भी हो गये। बाद में इलाहाबाद उच्च न्यायालय द्वारा इस घटना के आरोपी सात वनाधिकारियों को उम्रकैद की सजा भी दी गयी। 1997 में इलाहाबाद उच्च न्यायालय द्वारा वनटांगिया मजदूरों को वन विभाग द्वारा जमीन से बेदखल करने की प्रक्रिया पर रोक इनकी आशा की पहली किरण के रूप में प्रज्वलित हुयी। तब से वनटांगिया अपने गाँव तो रह रहे थे लेकिन सभी अधिकारों और सुविधाओं से वंचित होकर किसी प्रकार जीवन–यापन कर रहे थे। यद्यपि इससे पूर्व 1990 में कुछ वनटांगियों को लोकसभा चुनाव में दूसरे गाँव से जोड़कर मतदाता बनने का अवसर अवश्य मिला लेकिन यह अधिकार बहुत सीमित था।

अपने अधिकारों और आवश्यकताओं की पूर्ति की मांग करने के अलावा टांगियों के पास कोई दूसरा विकल्प था ही नहीं। अतएव वे धीरे–धीरे संगठित रूप से प्रतिरोध करने लगे। इसी बीच उनकी पीड़ा और दर्द की आवाज गोरखपुर से लोकसभा के तत्कालीन सांसद योगी आदित्यनाथ जी महाराज तक पहुँची। अब क्या था, क्योंकि उनके पुरुषार्थ और कर्मयोगी व्यक्तित्व से हम सभी परिचित हैं। उन्होंने वनटांगियों को उनका हक और अधिकार दिलाने का बीडा उठाया। गोरखपुर कमिश्नरी से लेकर दिल्ली स्थित भारतीय संसद तक वनटांगियों के अधिकारों के लिए पुरजोर आवाज लगातार उठानी शुरू कर दी। पूज्य महाराज जी के नेतृत्व और समर्थन से गोरखपुर सहित महाराजगंज के वनटांगिया समुदाय और भी संगठित होने लगे। उनको अब यह विश्वास हो गया कि वर्षों से शोषित युग का अब अन्त हो सकता है। पूज्य महाराज जी ने इन बेसहारा वनटांगियों के अधिकारियों के लिए अनेक बार संसद में अनेक नियमों के अन्तर्गत जोरदार तरीके से तथ्यों के साथ अपनी बात रखी। अन्ततः 2006 में केन्द्र सरकार ने अनुसूचित जाति और अन्य परम्परागत वन निवासी के रूप में वनटांगियों को मान्यता देने वाला कानून बनाया। इस कानून के अनुसार उन्हें यह साबित करना था कि वे इस भूमि पर पिछले पचहत्तर साल से रह रहे हैं, यद्यपि यह कठिन था। फिर भी उन लोगों ने अपना दावा दाखिल कर दिया। लम्बा समय बीत जाने और लगातार संघर्ष के बाद भी परिणाम मिलना अभी भी बाकी था। इस बीच वनटांगियों के प्रत्येक धरना–प्रदर्शन एवं आन्दोलन में पूज्य महाराज जी का भौतिक रूप से समर्थन और नेतृत्व मिलता रहा। इसका परिणाम आंशिक रूप से मिला भी। शासन स्तर पर धीरे–धीरे ही सही वनटांगियों के अधिकारों के मिलने का रास्ता तो थोड़ा साफ अवश्य होता गया।

वनटांगियों को सरकारी सुविधा तो नहीं मिल पा रही थी। उनके बच्चे भारत में रहते हुए भी शिक्षा से वंचित थे। अतः पूज्य महाराज जी ने 2007 में गोरक्षपीठ द्वारा संचालित महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के अन्तर्गत 'हिन्दू विद्यापीठ' के नाम से एक प्राथमिक विद्यालय की स्थापना कर उन बेसहारा और सरकारी उदासीनता के मारे बच्चों के भविष्य को सँवारने का सफल प्रयास किया। चूँकि वनभूमि पर पक्का निर्माण नहीं कराया जा सकता अतः टिन–शेड डालकर दो शिक्षकों द्वारा पढ़ाई प्रारम्भ हुई। महाराज जी के ही प्रयास से एक अस्थायी सरकारी स्कूल भी उन्हीं पेड़ों के बीच प्रारम्भ हुआ। अभी भी यह कितना दुर्भाग्य था कि ऐसे भारतीय जिन्होंन वर्षों पहले अपने बसे–बसाये गाँवों को इसलिए छोड़ दिया कि उन्हें आने वाली पीढ़ी के लिए वन लगाने थे और उन्हीं जंगलों के बीच आकर बस गये थे, कई पीढ़ियाँ गुजरने के बाद भी उन्हें एक नागरिक के रूप में कोई अधिकार प्राप्त नहीं था। यह पूरी तरह से राजकीय व्यवस्था पर प्रश्नचिह्न तो था ही, भारतीय सामाजिक संरचना पर भी बड़ा सवाल था। 2011 में इन वनटांगियों को जमीन का अधिकार–पत्र तो मिल गया लेकिन राजस्व गाँव न होने के कारण

कोई अधिकार और सरकारी योजनाओं के लाभ ये प्राप्त नहीं कर पा रहे थे। अब लड़ाई विशेष रूप से राजस्व गाँव की मान्यता मिलने को लेकर प्रारम्भ हो गयी। पूरे जोर–शोर से वनटांगिया विकास समिति ने अपनी इन उचित मांग को लेकर आन्दोलन प्रारम्भ किया। इस पुनीत आन्दोलन का प्रबल समर्थन पूज्य महाराज जी द्वारा किया जाता रहा।

वर्षों की पीड़ा, चुनौतियों और कठिनाइयों का सामना कर रहे वनटांगिया समुदाय के लोगों के भाग्य ने करवट बदला। सौभाग्य से उत्तर प्रदेश में 2017 में भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनी और मुख्यमंत्री बने गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त योगी आदित्यनाथ जी महाराज। ये वही महन्त योगी आदित्यनाथ जी महाराज थे जिन्होंने सांसद रहते हुए इन वनटांगियों की सभी छोटी–बड़ी लड़ाइयों तथा आन्दोलनों का हर स्तर पर सहयोग किया, समर्थन दिया तथा समय–समय पर नेतृत्व भी प्रदान किया। वनटांगियों के भाग्यविधाता के रूप में प्रदेश के मुख्यमंत्री बनते ही उन्होंने घोषणा की कि वन क्षेत्र में रह रहे वर्षों से उपेक्षित वनटांगियों को वे सभी अधिकार तत्काल प्रदान किये जायें जो उत्तर प्रदेश के अन्य नागरिकों को प्राप्त हैं। और देखते ही देखते सभी वनटांगिया समुदाय वाले गाँवों को राजस्व गाँव की मान्यता मिल गयी। और शुरू हुई उनके नये जीवन की कहानी।

गोरखपुर के चरगाँवा ब्लाक में चारों गाँव तिनकोनिया नं. 3, रजही में आजाद नगर, खाले टोला, आमबाग और पिपराइच ब्लाक के चिलबिलवा में रह रहे वनटांगियों को आज वे समस्त अधिकार मिल गये हैं जो उत्तर प्रदेश के सभी नागरिकों को प्राप्त हैं। यह उल्लेख यहाँ इसलिए किया जाना महत्त्वपूर्ण है कि कई पीढ़ियों से ये यहाँ रह रहे थे लेकिन इन्हें किसी प्रकार का न तो कोई अधिकार प्राप्त था और न ही इन्हें किसी प्रकार की सरकारी योजनाओं का लाभ मिल रहा था। आज उन्हें राजस्व गाँव के साथ ही सभी सरकारी योजनाओं, कार्यक्रमों के लाभ मिल रहे हैं, उनके बच्चों को पढ़ाई की बेहतर सुविधा मिलने जा रही है, इन्हें काम मिलने जा रहा है। इनके यहाँ उत्तर प्रदेश के अन्य स्थानों की भाँति पर्याप्त बिजली भी मिल रही है। ऐसे तमाम उपक्रमों के माध्यम से इन पाँचों वनटांगिया गाँवों में विकास की धारा बह निकली है। इन सभी गाँवों में किये गये महत्त्वपूर्ण कार्यों का उल्लेख इस प्रकार है–

तिनकोनिया नं. 3 में 450 परिवार रहते हैं जिन्हें प्रधानमंत्री आवास योजना के अन्तर्गत प्रत्येक परिवार को आवास के लिए 1,20,000 रुपये, मनरेगा मजदूरी के लिए 15,000 रु. तथा शौचालय के लिए 12,000 रु. सरकार द्वारा उपलब्ध हुआ है। एक परिवार को इस प्रकार से केवल आवास मद में 1,47,000 रु. प्राप्त हुआ। इसी प्रकार सभी घरों में निःशुल्क विद्युत कनेक्शन की सुविधा उपलब्ध कराया जाना उ.प्र. सरकार की संवेदनशीलता का परिचायक है। इन गाँवों में सौर–ऊर्जा से चलने वाली स्ट्रीट लाइट भी लगायी गयी है। वहाँ के बच्चों के लिए

प्राइमरी एवं जूनियर सेक्शन तक की शिक्षा के लिए स्थायी स्कूल का भवन बन रहा है। अभी तक ये बच्चे गोरखनाथ मन्दिर द्वारा संचालित महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के अन्तर्गत स्थापित 'हिन्दू विद्यापीठ' में निःशुल्क शिक्षा प्राप्त कर रहे थे। अभी भी यह विद्यालय सुचारू रूप से चल भी रहा है। इतना ही नहीं जबसे तत्कालीन गोरखपुर के सांसद महन्त योगी आदित्यनाथ जी महाराज इन वनटांगियों की वेदना से अवगत हुए तभी से इस विद्यापीठ में प्रत्येक वर्ष दीपावली के दिन बच्चों को निःशुल्क स्कूल ड्रेस, जूता, किताब–कापी की सम्पूर्ण व्यवस्था कराते रहे हैं। दीपावली के दिन उन बच्चों के साथ उन्हीं के गाँव में दीपावली मनाने की परम्परा मुख्यमंत्री बनने के बाद भी अनवरत जारी है। वास्तव में यह एक बड़ा कदम है जो एक महान सहृदय वाले व्यक्तित्व से ही सम्भव है। अब जब सरकार द्वारा इस तिनकोनिया नं. 3 में विद्यालय बनकर तैयार हो जायेगा तो वहाँ के बच्चों को अच्छी स्कूली शिक्षा भी मिलने लगेगी और फिर उनके आगे की पढ़ाई की राह भी आसान हो जाएगी। स्कूल के साथ ही आँगनबाड़ी केन्द्र की स्थापना भी एक महत्त्वपूर्ण कदम है, सरकार का गाँव और गरीब के बच्चों और महिलाओं के विकास के लिए। जंगल के बीच बसे इस गाँव में बरसात के समय एक घर से दूसरे घर जाना इतना कठिन था कि उसका अन्दाजा दूर से नहीं लगाया जा सकता। राजस्व गाँव होने के बाद वहाँ पर खड़ंजा लगाया गया है। जल्द ही गाँव के अन्दर पक्की सड़कें बनाने की योजना प्रस्तावित है। आवागमन की सुविधा से आज प्रत्येक भारतीय परिचित है। ऐसे में ऐसा गाँव जहाँ सम्पर्क मार्ग तो छोड़ दीजिए गाँव के अन्दर भी मार्ग की तंगहाली हो, कैसे जीवन यापन हो रहा होगा, कल्पना का विषय है। राजस्व गाँव हो जाने के बाद इस गाँव में स्वच्छ भारत अभियान के अन्तर्गत सम्पूर्ण गाँव की सफाई हेतु सफाईकर्मी की नियुक्ति, सम्पूर्ण स्थानों पर सरकारी डस्टबिन और इनकी नियमित सफाई अगला महत्त्वपूर्ण कार्य है। स्वच्छ जल यानि पीने हेतु सरकारी हैण्डपम्प के अतिरिक्त टी.टी.एस. पद्धति से 7 पानी की टंकी का व्यवस्था उन गरीब और वर्षों से निरीह वनटांगियों के प्रति नैतिकता और संवेदना का अगला कदम है उत्तर प्रदेश सरकार का। बैंकों में सभी के खाते खोले गये हैं, मनरेगा में गाँव के सभी लोगों को रोजगार की गारण्टी से आर्थिक स्थिति को थोड़ा ठीक करने में अवश्य ही सहायता मिली। बैंकों से कर्ज प्राप्त कर कार्य करने का भी अवसर अब इन्हें मिलने लगा है। वनक्षेत्र के लोग जो अभी तक बुनियादी सुविधाओं से वंचित थे, उनके लिए वर्ष 2018 उस दिवास्वप्न का पूरा होने के समान है जो भौतिक रूप से फलीभूत होते वे लोग स्वयं देख रहे हैं। तिनकोनिया के मुखिया **श्री राम गणेश** कहते हैं कि वनटांगिया सहित दबे–कुचले और सरकारी सुविधाओं से वंचित हम सब लोगों जैसे अनेक लोगों के लिए उत्तर प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री महन्त योगी आदित्यनाथ जी जीवनदाता के समान हैं। जब सांसद थे तो उस संघर्ष को दिशा प्रदान की और आज मुख्यमंत्री बनते ही वनटांगियों के लिए विकास का द्वार खोल दिया। अन्तोदय राशन कार्ड के माध्यम से

सभी गरीब का पेट भर रहा है। उन्होंने कहा कि अभी तक कुछ लोगों को जमीन का अधिकार पत्र नहीं मिल पाया है उन्हें मिल जाय, मुख्य मार्ग से गाँव तक सम्पर्क मार्ग जल्दी बन जाय ताकि सुचारु रूप से रात–बिरात सरकारी एम्बुलेंस गाँव तक पहुँच सके। जमीन की खतौनी मिलने से हमलोगों की सभी मांगें पूरी हो जायेंगी।

रजही के आजादनगर वनटांगिया गाँव में 142 परिवार हैं जिनको प्रधानमंत्री आवास योजना के अन्तर्गत प्रत्येक परिवार को 147000 रु. प्राप्त हुआ है। एक वर्ष पूर्व इस गाँव में टूटी–फूटी झोपड़ी देखकर वनटांगियों की जीवनदशा पर अत्यन्त पीड़ा होती थी लेकिन आज इन गाँवों में पक्के आवास का कार्य देखकर मन में बड़ा सन्तोष होता है कि देर से ही सही, लेकिन इनको बुनियादी सुविधा तो मिली। सड़क, पानी, स्वच्छता, बिजली, शौचालय सहित अन्य गाँवों की भाँति वन क्षेत्र के गाँवों को राजस्व गाँव की मान्यता मिलने से सभी सरकारी योजनाओं का लाभ तीव्रगति से मिल रहा है। आज इन गाँवों के लोगों के चेहरों पर सन्तोष और खुशहाली का भाव सहज ही दिखाई देता है। गाँव के अधिकतर पात्र लोगों को वृद्धा, विधवा और विकलांग पेंशन मिल रही है। अन्य प्रक्रियाएँ भी द्रुतगति से चल रही हैं। गाँव के लोगों के शुद्ध पेय जल के लिए टी.टी.एस. जी. पद्धति से 3 स्थानों पर पानी की टंकी लगायी गयी है। स्वयं सहायता समूह और मनरेगा के माध्यम से आर्थिक तंगी को कम करने के भी प्रयास सुचारु रूप से चल रहा है। सरकार की ओर से घर–घर में बिजली के कनेक्शन निःशुल्क उपलब्ध कराया गया है। राशन कार्ड से प्रति महिने सभी को अनाज उपलब्ध हो रहा है। गाँव का प्रत्येक वयस्क व्यक्ति आज मतदाता के रूप में पंजीकृत होकर लोकतंत्र में सहभागी बनने को तैयार है। वास्तव में यह लोकतंत्र की ही जीत है। रजही आजादनगर वनटांगिया गाँव के **श्री रामनेवास** कहते हैं कि वनटांगिया समुदाय के लोगों का लम्बा संघर्ष और योगी जी महाराज की कृपा और आशीर्वाद से हम सब लोगों के जीवन में भारी बदलाव हुआ है। सभी जल्दी ही अपने पक्के मकानों में रहने लगेंगे। अपना छत होगा, अपना मत होगा। किसी की दया पर अब जिंदगी नहीं होगी। पक्की सड़क का अभी हम लोगों को इन्तजार है।

रजही खालेटोला में 88 परिवारों को प्रधानमंत्री आवास योजना के अन्तर्गत उत्तर प्रदेश सरकार की ओर से धन आवंटित किया गया है। द्रुतगति से अन्य वनटांगिया गाँवों की तरह वहाँ भी आवास निर्माण का कार्य चल रहा है। सभी घरों के लिए बिजली कनेक्शन चालू हो गया है। गाँव की सड़कों पर सौर–ऊर्जा से संचालित सोलर लाइट 15 स्थानों पर जल रही है। गाँव में 5 स्वयं सहायता समूह और मनरेगा के माध्यम आर्थिक सम्बल देने का प्रयास सरकार की ओर से किया जाना महत्त्वपूर्ण है। इस गाँव में सभी पात्र विधवाओं, वृद्धा व विकलांग जनों को पेंशन सुगमतापूर्वक उपलब्ध हो रहा है। स्वच्छ भारत मिशन की ओर से गाँव की

स्वच्छता हेतु बड़े आकार के डस्टबिन कई स्थानों पर लगाये गये हैं। सरकार की ओर से नियुक्त सफाईकर्मी द्वारा गाँव को स्वच्छ बनाने का प्रयास चल रहा है। शुद्ध पेयजल की व्यवस्था हेतु दो स्थानों पर टी.टी.एस.पी. पद्धति से पानी की सप्लाई की जा रही है। जल्द ही गाँव में बच्चों के लिए स्कूल और आंगनबाड़ी केन्द्र भी बनकर तैयार हो जायेंगे। अब गाँव में स्वास्थ्य विभाग की ओर से नियमित रूप से टीकाकरण किय जा रहा है। सभी वयस्क नागरिकों का नाम मतदाता सूची में अंकित किया गया है। इस गाँव के एक बुजुर्ग निवासी **श्री नान्हू प्रसाद** कहते हैं कि उत्तर प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री जी के आशीर्वाद से आज वनटांगियों को सारी सुविधाएँ मिल रही हैं। कमी सिर्फ पक्की सड़क एवं नाली की है। बिजली, पानी, आवास की सुविधा बहुत जल्दी मिल गयी। मुख्यमंत्री जी के कारण हमलोगों के जीवन में भारी बदलाव आया है।

रजही ग्रामसभा में ही **आमबाग वनटांगिया समुदाय** का गाँव है। इसे भी राजस्व गाँ की मान्यता मिली है। इस गाँव में 145 परिवार हैं। प्रत्येक परिवार को आवास के लिये 147000 रु. मिल रहा है। यहाँ पर आवास निर्माण का कार्य त्वरित गति से चल रहा है। सभी वनटांगिये उत्साह के साथ आवास निर्माण में लगे हैं। बच्चों का भविष्य संवारने के लिए स्कूल और आंगनबाड़ी केन्द्र के निर्माण का कार्य चल रहा है। गाँव के सभी पात्र लोगों को वृद्धावस्था, विधवा एवं विकलांग पेंशन समय पर मिल रही है। सभी घरों के लिए विद्युत कनेक्शन मिल गया है। गाँव के अन्दर रास्तों पर सौर–ऊर्जा द्वारा संचालित सोलर लाइट लगी है। स्वच्छता हेतु बड़े–बड़े डस्टबिन लगे हैं तथा सफाईकर्मी भी नियुक्त हैं। शुद्ध पेयजल के लिए टी.टी.एस.पी. पद्धति से तीन स्थानों पर पानी की टंकी लगी है। टीकाकरण नियमित रूप से किया जा रहा है। गाँव में विकास के सभी कार्य त्वरित एवं सुचारु रूप से चल रहे हैं। इस गाँव के विकास और सरकारी सुविधाओं के विषय में बतलाते हुए श्री विश्वम्भर निषाद कहते हैं कि 99 साल का इंतजार बाबा के राज में अब समाप्त हुआ है। उत्तर प्रदेश सरकार की कृपा से आज हम सबको अपने खून–पसीने से किये गये परिश्रम का फल यानि हमारा अपना अधिकार मिल गया है। राजस्व गाँव की मान्यता और उसके बाद से गाँव में हो रहा लगातार विकास कार्य इस बात का प्रमाण है कि यह सरकार 'सबका सबका विकास' के लिए काम कर रही है। वहीं रजही के प्रधान श्री रणविजय सिंह कहते हैं कि रजही में वनटांगियों के 427 परिवार हैं जिनके लिए आवास का निर्माण कार्य हो रहा है। स्कूल और आंगनबाड़ी केन्द्र का निर्माण जल्द पूरा हो जाएगा। हमने पहली बार ऐसी सरकार देखी है और ऐसा मुख्यमंत्री भी। सरकार बनते ही राजस्व गाँव की मान्यता और एक वर्ष के अन्दर सभी सरकारी योजनाओं को त्वरित गति से गाँव तक पहुँचना आसान काम नहीं था।

पिपराइच ब्लाक के **चिलबिलवा गाँव** में वनटांगियों के 89 परिवार हैं जिन्हें आज अपना छत नसीब होने जा रहा है। उ.प्र. सरकार द्वारा प्रधानमंत्री आवास योजना के अन्तर्गत धन आवंटित कर निर्गत किया गया है। इस आवास निर्माण के साथ ही इनको वर्षों की अपनी इच्छा 'अपना छत' का सपना पूरा होने जा रहा है। सभी परिवारों को अन्त्योदय का राशनकार्ड मिला है जिससे सरकारी अनाज और अन्य सुविधाएँ मिलने लगी हैं। गाँव में बिजली के कनेक्शन से हर घर में उजाला एवं सौर–ऊर्जा द्वारा संचालित सोलर–लाइट लगने से मार्गों पर भी प्रकाश फैल रहा है। गाँव के बुजुर्गों को वृद्धावस्था पेंशन, विधवाओं एवं विकलांगों को पेंशन की सुविधा सभी पात्रों को उपलब्ध हो रही है। समाज की मुख्य धारा से वर्षों से कटे इन वनटांगियों के परिवारों के भविष्य को संवारने के लिए स्कूल और आंगनबाड़ी केन्द्र का निर्माण कार्य प्रारम्भ हो गया है। बच्चों को नियमित टीकाकरण के साथ ही ए.एन.एम. की नियुक्ति से स्वास्थ्य सुरक्षा के उपाय किये गये हैं। स्वच्छता हेतु गाँव में जगह–जगह बड़े–बड़े डस्टबिन लगाये गये हैं। सफाईकर्मी भी सरकार की ओर से नियुक्त किये गये हैं। शुद्ध पेयजल की उपलब्धता के लिए दो स्थानों पर टी.टी.एस.पी. पद्धति से युक्त टंकी लगायी गयी है। स्वयंसहायता समूह और मनरेगा द्वारा आर्थिक विकास का प्रयास महत्त्वपूर्ण है। चिलबिलवा में हो रहे विकास के बारे में वहाँ के मुखिया **श्री परमात्मा निषाद** बताते हैं कि उ.प्र. सरकार की नेकनीयती का ही परिणाम है कि आज गाँ अन्य लोगों के समान अपने को बराबरी का मानते हैं। उनके अन्दर राष्ट्र और समाज के प्रति सन्तोष और सदिच्छा बढ़ी है। आवास हो, सड़क हो, विद्युतीकरण हो, शुद्ध पानी की व्यवस्था हो, सभी सुविधाएँ हमें मिलने लगी हैं। गाँव में सरकारी नलकूप लग जाय तो बहुत सुविधा हो जायेगी।

गोरखपुर के इन पाँचों वनटांगिया गाँवों में जो पीढ़ियों से सरकारी उपेक्षा के कारण लम्बे समय तक मुफलिसी का जीवन जीने को मजबूर थी, लम्बे संघर्ष और लम्बे इंतजार के बाद अन्ततः राजस्व गाँव की मान्यता मिलने के साथ ही सभी सरकारी सुविधाएँ प्रदान कर राष्ट्र की मुख्य धारा में जोड़ने का जो सद्कार्य उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा किया गया, उससे इन वनटांगियों के जीवन में काफी बदलाव आया है। इसका एहसास उनके बीच जाकर देखने से ही स्पष्ट हो सकता है। सरकार ने इनके विकास के लिए जो कुछ भी किया है, उससे इन वनटांगियों को मिली संतुष्टि का प्रमाण वनटांगियों के चेहरों पर स्पष्ट परिलक्षित होता है। आज इन गाँवों में जाने पर दिखाई देता है कि लगभग सभी के मकान एक साथ बन रहे हैं, सड़क के किनारे स्ट्रीट लाईट लग गये है। इन गांवों में उत्सव का माहौल है। बच्चों का भविष्य संवर रहा है। वास्तव में इन वनटांगियों के लिए वर्ष 2018 समृद्धि, संतोष और सौगात का वर्ष बन गया।

सँवरते गोरखपुर का पर्यावरण

प्रो. विनय कुमार सिंह*

समाज के शैशवकाल में मानव तथा प्रकृति के मध्य एकात्मता थी। मानव पूर्ण रूप से प्रकृति पर निर्भर था तथा अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति प्रकृति से करता था। प्रकृति तब मानव की मित्र थी। जैसे–जैसे मनुष्य अपने तथा अपने परिवार की आवश्यकताओं की पूर्ति को अपना दायित्व समझने लगा, उसने स्वयं के अस्तित्व के लिए दूसरे अन्य उपयोगी अवयवों की उपेक्षा करना प्रारम्भ किया। परिणामतः मानव जीवन में एक दुसरे के प्रति वैमनस्य, प्रलोभन एवं ईर्ष्या का भाव प्रविष्ट कर गया। कालान्तर में मनुष्य भूख एवं आत्मरक्षा के अतिरिक्त सुख–सुविधा तथा आमोद–प्रमोद के लिए येनकेन प्रयास करने लगा। साथ ही साथ इसी प्रक्रिया में वह प्रकृति एवं पर्यावरण की उपेक्षा करने लगा। मानव अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए पर्यावरण को लगातार हानि पहुँचाने से भी नही झिझक रहा है और जैसे जैसे मानव–सभ्यता का विकास हुआ उसने आस–पास के वातावरण को दूषित करने में कोई कमी नही छोड़ रखा है। मनुष्य के क्रियाकलापों द्वारा पारिस्थितिकी तंत्र की स्थिरता और इसमें अव्यवस्था से पर्यावरण की गुणवत्ता में ह्रास होता है। जब यही पर्यावरण अवनयन सीमा से अधिक हो जाता है तो उसे पर्यावरण प्रदूषण कहते है। पर्यावरण–प्रदूषण स्थानीय या प्रादेशिक स्तर पर ज्यादा प्रभाव रखता है।

पृथ्वी के सभी जीवधारी अपनी वृद्धि तथा विकास के लिए एवं सुव्यवस्थित रूप से अपना जीवन चक्र चलाने के लिए, संतुलित पर्यावरण पर निर्भर करते हैं। संतुलित पर्यावरण में प्रत्येक घटक एक निश्चित मात्रा व अनुपात में मिश्रित होते हैं फिर भी कभी–कभी पर्यावरण में एक या अनेक प्रकार के घटकों के मिलन से हानिकारक घटकों का प्रवेश हमारे पर्यावरण में हो जाता है। यही असंतुलन उस परिस्थिकीय जीवधारियों के लिए हानिकारक सिद्ध होता है। प्रकृति और पृथ्वी–जीवधारियों का सहजीवन जितना सहज होगा दुनिया में उतनी ही खुशहाली

*आचार्य, प्राणि विज्ञान विभाग एवं प्रभारी, पर्यावरण–विज्ञान विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

रहेगी।

परम पूज्य गोरक्षपीठाधीश्वर महन्तश्री योगी आदित्यनाथ जी महाराज एवं मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश ने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि "**मानव व प्रकृति एक दूसरे के पूरक हैं। हम प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से प्रकृति पर आश्रित हैं। प्रकृति के बिना हमारा अस्तित्व संभव नही है। प्रकृति–संरक्षण हिन्दू संस्कृति का महत्वपूर्ण अंग है। इसमें वृक्ष को पुत्र, नदी को माँ तथा वायु को देवता माना जाता है। प्रकृति को क्षति पहुँचेगी तो इसका सीधा प्रभाव मानव–जीवन पर पड़ेगा। भावी पीढ़ी को पर्यावरण के संरक्षण और महत्व के प्रति जागरूक करना आवश्यक है।**" पृथ्वी के जलवायु–संतुलन का कार्य एकमात्र पेड़–पौधे ही कर सकते हैं। वनस्पतियाँ पर्यावरण को शुद्ध करने के साथ–साथ जलवायु–परिवर्तन के बीच आवश्यक संतुलन को भी सुनिश्चित करते हैं। पेड़–पौधे के कटने से पृथ्वी का प्राकृतिक संतुलन सबसे अधिक प्रभावित हुआ। इसी तथ्य को अखिल भारतीय रेडियो पर **'मन की बात'** कार्यक्रम में साझा करते हुए देश के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने दिनांक 29.07.2018 को कहा कि– **"भारत एक विशाल देश है और यहां तक कि कई बार भारी तबाही भी लोगों के लिए मुसीबत बन जाती है। लेकिन यह प्रकृति के साथ हमारे संघर्ष का परिणाम है। इसलिए हमारा यह कर्तव्य होना चाहिए कि हम प्रकृति की देखभाल करें, अपने पर्यावरण की रक्षा करें और अपने प्राकृतिक संसाधनों का संतुलन बनाए रखें"**

बीसवीं शदी के महान–भौतिक वैज्ञानिक स्टीफन हॉकिंग ने पृथ्वी पर हो रहे असंतुलन को देखते हुए ये भविष्यवाणी की कि छः सौ साल के अन्दर पृथ्वी अत्यधिक गर्म हो जायेगी। अत्यधिक जनसंख्या होने की वजह से पृथ्वी पर उर्जा की खपत लगातार बढ़ रही है, इससे पृथ्वी का तापमान असीमित रूप से बढ़ेगा। यही नही उन्होंने मत व्यक्त किया कि यदि हम अपनी जरूरतों एवं आदतों में कमी नही लायेगें एवं पर्यावरण को संतुलित होने में मदद नही करेगें तो जलवायु परिवर्तन, अत्यधिक जनसंख्या, तापमान में वृद्धि और हमारे विनाशकारी कृत्य मानव सभ्यता का अन्त होने से रोक नही पायेंगे। तब **हमारे पास दो ही विकल्प होगें या तो हम दूसरे ग्रहों पर चले जाय या अपनी आवश्यकता को पर्यावरणीय संतुलन के साथ रखें।**

पूर्व में लगभग ढाई दशकों से शहर का राजनीतिक प्रतिनिधित्व प्रतिपक्ष में होने के कारण सत्ताधारी राजनीतिक पार्टियों द्वारा उपेक्षित पूर्वांचल का गौरव गोरखपुर शहर अब विकास के पथ पर चल पड़ा है। नयी सड़कों का बनना, सड़कों का फोरलेन होना, शहर को पूर्वांचल एक्सप्रेस वे से जोड़ना, एम्स का निर्माण, फर्टिलाइजर कारखाना का पुनः प्रारम्भ होना,

नये–नये आवासीय कालोनियों का निर्माण, दलितों, वंचितों एवं शोषितों के लिए प्रधानमंत्री आवास योजना, बहुमंजिली इमारतें, उद्योगों एवं स्थानीक पर्यटन को बढ़ाने के लिए गीडा में निवेश, नवनिर्मित चिड़ियाघर का शीघ्रशुरू होना, सांस्कृतिक संरक्षण के लिए प्रेक्षागृह का निर्माण, मेट्रो मैप पर गोरखपुर के लिए सहमति, दो अंडरपास, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय में महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ का निर्माण, महायोगी श्रीगोरक्षनाथ इन्स्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज विकास के नित्य नये सोपान गढ़ रहे हैं। माननीय मुख्यमंत्री जी ने उत्तर प्रदेश को उत्तम प्रदेश के रूप में विकास के रूप में विकसित करने हेतु पूर्वांचल विकास बोर्ड एवं बुदेंलखण्ड विकास बोर्ड की स्थापना 28 दिसम्बर, 2018 को दी है। अब यह पूर्ण विश्वास हो गया है कि पर्यावरण को संरक्षित करते हुए विकास की नयी दिशा उत्तर प्रदेश में संचरित होगी। मुख्यमंत्री जी के शब्दों में 'प्रकृति और परमात्मा ने उत्तर प्रदेश को अपार प्राकृतिक सम्प्रदाय प्रदान की है क्योंकि भारत वर्ष के दो प्रमुख नदियां गंगा और यमुना जो जन–जन की आस्था का आधार हैं। इसी क्षेत्र से होकर संचरित होता है।' राष्ट्रीय ताल संरक्षण योजना के अन्तर्गत नैसर्गिक रामगढ़ ताल का संरक्षण हो रहा है, अब अत्यंत मनोरम एवं पर्यटक केन्द्र के रूप में विकसित हो चुका है। सर्किटहाउस, राजकीय बौद्ध संग्रहालय एवं तारामण्डल, अम्बेडकर पार्क नये कलेवर में पर्यटकों को अपनी तरफ आकर्षित कर रहे हैं। **नयी पर्यावरण नीति को अपनाते हुए उर्जा के नये एवं सुरक्षित स्रोतों** पर ध्यान देते हुए दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर के कुलपति प्रो. विजय कृष्ण सिंह जी के अगुवाई में ''ग्रीन इनिसियेटिव्स'' की शुरूआत हुई है। दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर में **सोलर पॉवर प्लांट (01 मेगावाट का उत्पादन)** के द्वारा बिजली का निर्माण हो रहा है, जिससे पूरे विश्वविद्यालय परिसर में बिजली की सप्लाई हो रही है। इससे लगभग 15–18 लाख रूपये प्रत्येक माह में बिजली के मद में बचत है। इसी वर्ष **माननीय मुख्यमंत्री जी, उत्तर प्रदेश का 46वां जन्म दिन पर्यावरण संरक्षण के रूप में मनाया गया।** सामाजिक संगठन (हिन्दू युवा वाहिनी) द्वारा गोरखपुर एवं आस–पास के जनपदों में 05 लाख पौधें लगाने का कार्य किया गया। मुख्यमंत्री जी के आह्वान पर स्वतंत्रता दिवस के सुअवसर पर **पूरे प्रदेश में 09 करोड़ पेड़ लगाने का लक्ष्य रखा गया था**। गोरखपुर में ही विश्व पर्यावरण दिवस 05 जून को वन विभाग, गैर सरकारी संगठन एवं विश्वविद्यालय के रोवर्स एवं रेंजर्स प्रभाग द्वारा पौध रोपण का कार्य किया गया। यह संकल्प भी लिया गया कि **पर्यावरण का संरक्षण करना हमारा दायित्व** है। पौधे कार्बन को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं **यही कार्बन ग्लोबलवार्मिंग का कारक बनता है** जिसकी वजह से पृथ्वी का तापमान बढ़ रहा है। पेड़–पौधे वायु में मौजूद हानिकारक तत्वों को कम करने में सक्षम होते हैं। पेड़–पौधों की जड़ें मिट्टी के स्थिरीकरण के द्वारा क्षरण को रोकती हैं। संचेतना का प्रसार करने के

लिए अन्तर्राष्ट्रीय ओजोन–परत संरक्षण दिवस पर गोरखपुर क्षेत्रीय प्रदूषण बोर्ड एवं चैम्बर्स ऑफ इण्डस्ट्रीज के संयुक्त तत्वाधान में गीडा में एक गोष्ठी का आयोजन हुआ। इस गोष्ठी में प्लास्टिक के विकल्प पर चर्चा की गयी। प्रदूषण बोर्ड के अधिकारियों ने बताया कि पर्यावरण में उद्योगों का महत्वपूर्ण योगदान है चूंकि उत्तर प्रदेश सरकार ने प्लास्टिक को बैन कर दिया है एवं इसकी विक्री पर पूर्णतः प्रतिबन्ध है। इसलिए प्लास्टिक उद्योगों को इस संगोष्ठी ने बन्द करने का सुझाव दिया। साथ ही प्लास्टिक को न जलाने के लिए जागरूक करने पर बल दिया गया।

किसी भी देश के विकास में परिवहन का महत्वपूर्ण योगदान है। गोरखपुर शहर का उल्लेख करें तो ट्रैफिक की समस्या लगातार बढ़ रही है हालाँकि गोरखपुर के सभी चौराहों का सौन्दर्यीकरण किया जा रहा है एवं प्रत्येक चौराहे चौड़े हो रहे हैं लेकिन गाड़ियों की बढ़ती संख्या जाम की वजह बन रही है। शहर की सड़कों पर लगाने वाला जाम अर्थ व्यवस्था व जीवन दोनों की गति पर प्रतिकूल प्रभाव डाल रहा है स्कूल खुलने के साथ ही गाड़ियों की रफ्तार सुबह से ही धीमी होने लगती है। मुख्य मार्गों पर जाम की स्थिति लगातार बनी रहती है क्योंकि इन सड़कों पर समान बेचने वाले ठेले, दुकानों के बाहर खड़ी गाड़ियॉ, पैदल चलने वाले यात्रियों की वजह से वाहनों को धीमा रखना जाम का कारण बनता है। इसमें सुधार कर हम आर्थिक विकास को गति प्रदान कर सकते हैं।

जल संकट वर्तमान समय की गंभीर समस्या है। ऐसा देखा जा रहा है कि जो क्षेत्र जितना विकसित एवं समृद्ध हुआ उतना जल समष्द्ध से वंचित है। वैसे तो गोरखपुर में अभी पानी की उतनी समस्या नही है लेकिन जिस प्रकार से हम पानी के प्रति लापरवाह हैं, आने वाले दो दशकों में यह समस्या विकराल रूप धारण करेगी। क्योंकि नदियों, नालों एवं तालों में पानी का संचय कम होगा। इससे निपटने के लिए सबसे अच्छा तरीका है वर्षा जल–संचयन। रेनहार्वेस्टिंग द्वारा हम जल को संचित कर भूगर्भ जल को रिचार्ज कर पानी के लेवल को ठीक कर सकते हैं। गोरखपुर में रेनहार्वेस्टिंग अभी नही के बराबर है इस पर जोर देना चाहिए। इस दिशा में गोरखपुर विकास प्राधिकरण मुख्य भूमिका निभा सकता है। वह बड़े भवनों का मानचित्र तभी पास करे या नयी आवासीय कालोनियों की मान्यता दे जब उस भूखण्ड पर रेनहार्वेस्टिंग की तकनीक द्वारा वारिश के पानी का संचयन किया जा रहा हो। विकास के नाम पर जिस प्रकार से जल, जंगल, जमीन का दोहन पिछले पांच दशकों में हुआ जलवायु–परिवर्तन, भूजल स्तर में गिरावट के साथ प्रदूषण हवा में लगातार बढ़ रहे धूल के कण एवं कार्बन में बढ़ोत्तरी भविष्य की पीढ़ियों के लिए चिंतित करने वाली हैं।

शहरीकरण एवं खेतों में रसायनिक उर्वरकों तथा कीटनाशकों के अंधाधुंध प्रयोग से

पंक्षियों की प्रजातियों एवं मछलियों की प्रजातियों में कमी आयी है क्योंकि इन रसायनों का प्रयोग करने वाले सभी किसान अकुशल के रूप में हैं। पर्यावरण विज्ञान की छात्रों ने 2016–2017 में अपने रिपोर्ट में बताया कि तालों के किनारें पाये जाने वाले पक्षियों की प्रजातियों में कमी आयी है पहली बार विश्वविद्यालय के इन छात्राओं द्वारा पक्षियों के प्रजातियों के ऊपर प्रोजेक्ट के रूप में कार्य किया गया। विश्वविद्यालय में परिसर में कुल 45 प्रकार की पक्षियों की प्रजाति पायी गयी है। 2013 की एबीआई वर्ड काउन्ट के रिपोर्ट के मुताबिक पूरे गोरखपुर में (लगभग 5484 किलोमीटर भूभाग) 345 पक्षियों की प्रजातियाँ मौजूद हैं इस प्रकार हम कह सकते है कि विश्वविद्यालय परिसर में पक्षियों का प्रतिशत 12.05 है।

इसी क्रम में जुलाई, 2016 से लेकर फरवरी, 2017 लगभग आठ माह तक पर्यावरण विज्ञान के छात्रों द्वारा ध्वनि प्रदूषण पर गोरखपुर के विभिन्न चौराहों पर प्रोजेक्ट वर्क किया गया। इसमें शहर के तारामण्डल क्षेत्र में अपर लिमिट 100 डेसिबल से कम थी लेकिन यह भी विश्व स्वास्थ्य संगठन के मानक से अधिक था जबकि गोरखपुर के अन्य क्षेत्रों में गोलघर, बसस्टैण्ड, रूस्तमपुर, ट्रांसपोर्टनगर, पैडलेगंज, मोहद्दीपुर, असुरन, गोरखनाथ में अपर लिमिट (100 डेसिबल से अधिक) और लोवर लिमिट (90 डेसिबल से अधिक) में बहुत कम का अन्तर रहा है जो पर्यावरण एवं स्वास्थ्य की दृष्टि से अच्छा नहीं है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के मानकों के अनुसार ध्वनि का स्तर 45 से 55 डेसिबल होना चाहिए। अधिक तीव्रता के कारण कान के पर्दे व आंतरिक काल के हेयर फालिकिल्स जो एटीपी संकेतांक द्वारा नियंत्रित होते हैं में अत्यधिक उत्तेजना से मस्तिष्क तंत्रिका के क्षतिग्रस्त होने की सम्भावना बन रही है। प्रजनन क्षमता पर ध्वनि प्रदूषण का प्रतिकूल प्रभाव रहता है। 120 से 190 डेसिबल तक की ध्वनि से गर्भपात एवं मृत्यु तक हो सकती है। पर्यावरण विज्ञान विभाग के छात्रों द्वारा एक दशक पूर्व में किए गए सर्वे से वर्तमान में ध्वनि प्रदूषक का लेवल डेढ़ गुना बढ़ गया। तब अधिकतम 70 से 90 डेसिबल तक पाया गया है। ध्वनि की तीव्रता जब 90 डेसिबल से अधिक होती है तो जो प्रभाव देखने को मिलते हैं उनमें चिड़चिड़ापन, नींद न आना, उच्च रक्तचाप, उत्तेजना, आंख की पुतलियों में खिंचाव, मानसिक तनाव, अलसर आदि प्रमुख हैं। शहर में इन बीमारियों की संख्या लगातार बढ़ रही है।

पर्यावरण विज्ञान विभाग दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर के विद्यार्थियों ने प्रो. डी.के. सिंह, पूर्व विभागाध्यक्ष, प्राणि विज्ञान विभाग एवं लेखक के कुशल निर्देशन में पर्यावरण–संरक्षण के लिए कुछ महत्वपूर्ण निष्कर्ष प्रतिपादित किये हैं।

- पर्यावरण अवनयन में जनसंख्या व विकास मुख्य रूप से जिम्मेदार हैं सभी विकास कार्य प्रकृति एवं पर्यावरण के मूल्यों पर ही नहीं किये जायें।

- प्राख्यापित नियम (जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, वन्यजीव संरक्षण, वन संरक्षण आदि) का पालन प्रत्येक व्यक्ति एवं समाज को करना ही होगा तभी हम प्राकृतिक सम्पदा का संवर्धन कर पायेगें।
- ऐसी नीति बनायी जाय कि विकास कार्यों में भ्रष्टाचार एवं प्राकषतिक संसाधनों के बचाने का प्रयास हो सके।
- कार्बन उत्सर्जनों में कमी करने के लिए नवीकरणीय उर्जा की तरफ लोगों आकर्षित करना होगा जिसमें सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, बायोगैस प्लांट मुख्य हैं।
- सभी सरकारी पार्कों एवं भवनों को सौर ऊर्जा से संचालित करने के लिए सौर रूफ टाप के लिए तैयार करना होगा।
- जल संरक्षण एवं जल शुद्धीकरण के लिए विविध प्रयास होने चाहिए। इसके लिए अनियंत्रित रूप से गाड़ी धुलाई करने वाले स्टेशन जो जल का दुरूपयोग करते हैं उनको बन्द करना चाहिए।
- घरों एवं फैक्ट्रियों से निकलने वाले दूषित जल को सीवेज ट्रीटमेण्ट प्लाट द्वारा शुद्ध कर ही नदी, तलाब एवं पोखरे में जाने दिया जाय। तभी जलीय जीवन का पारिस्थितिकी तंत्र संतुलित होगा।
- सड़कों के किनारे बड़े पौधें जैसे नीम और अशोक को लगाना चाहिए जो ध्वनि को कम करते हैं एवं रिहायसी इलाकों में प्रेसर हार्न वाली गाड़ियों का प्रयोग नही करना चाहिए।
- शहर के व्यस्त इलाकों को साइलेंस जोन में परिवर्तित करना होगा। साथ ही जनसामान्य को ध्वनि प्रदूषण के दुष्प्रभावों के प्रति जागरूक करना होगा।

आजादी के बाद का सबसे बड़ा उपहार है गोरखपुर एम्स

प्रो. हर्ष कुमार सिन्हा

इस साल की दूसरी सुबह महायोगी गुरु गोरक्षनाथ एअरपोर्ट के नए टर्मिनल में जाते समय मार्टिन ग्रूट ने मुस्कुराते हुए कहा– 'हर साल सर्दियों में साईबेरिया से उड़कर आने वाले पक्षी इस बार आगे उड़ जायेंगे क्योंकि उन्हें अब बदले हुए गोरखपुर को पहचानना ही मुश्किल होगा'। हम दोनों इस बात पर देर तक और खुलकर हँसते रहे।

पेशे से फोटो जर्नलिस्ट मार्टिन सात वर्षों में गोरखपुर की पांच यात्राएँ कर चुके हैं जिनमें से ज्यादातर इंसेफेलाइटिस के कहर की रिपोर्टिंग के सिलसिले में हुयी हैं। इस बार मेडिकल कालेज जाते हुए वे अचानक चौड़ी दिख रही सड़क को देख हैरान थे। चमकदार चौराहों और सफाई ने भी उनकी निगाहों में जगह बनाई थी मगर उन्हें सबसे ज्यादा खुशी एयरपोर्ट जाते हुए एम्स के विशाल अहाते में आकार ले रही इमारतों को देखकर हुयी। 'दिस इस दि मोस्ट प्रेशस गिफ्ट यू पीपुल गाट।' मैं उनकी समझ पर मुग्ध था। बदहाल स्वास्थ्य ढांचों के चलते बीते कई सालों से भारी बदनामी हासिल करते इस सूबे और खासकर सूबे के इस हिस्से के लिए एम्स सचमुच सबसे कीमती उपहार है।

कभी 'इंडियास्पेंड' में ओमेन सी कुरियन ने बेहद दिलचस्प अंदाज में इस बदहाली को कुछ यों लिखा था– '20 करोड़ लोगों की संख्या के साथ उत्तर प्रदेश की आबादी ब्राजील देश के बराबर है। अर्थव्यवस्था की बात करें तो उत्तर प्रदेश की अर्थव्यवस्था कतर के बराबर है। जबकि कतर की आबादी उत्तर प्रदेश के छोटे से शहर बिजनौर के बराबर है। करीब 24 लाख। यहां प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) केन्या के लोगों की तरह है। और इस राज्य का शिशु मृत्यु दर गाम्बिया के बाराबर है। यहां यह जान लेना भी जरूरी है कि गाम्बिया गरीबी से त्रस्त एक पश्चिम अफ्रीकी देश है। 75 जिलों में 814 ब्लॉक और 97607 गांवों के साथ, आबादी

लेखक दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के रक्षा एवं स्त्रातिजिक अध्ययन विभाग में प्रोफेसर है।

की दृष्टि से उत्तर प्रदेश इन सभी पांच देशों से बड़ा है। भारत के राजनीतिक प्रभुत्व की कुंजी इस राज्य के पास है, लेकिन स्वास्थ्य, पोशण परिणाम, बुनियादी ढांचे और सुरक्षा संकेतक की दृष्टि में यह बेहद सुस्त है।'

और वे कहीं से गलत नही कह रहे। उत्तर प्रदेश (बिहार के साथ) पर अक्सर जन्म पंजीकरण पर राष्ट्रीय औसत को नीचे खीचने का आरोप लगता रहा है। वर्ष 2016 तक के नागरिक पंजीकरण प्रणाली (सीआरएस) की रिपोर्ट में एक अलग ही विश्लेशण है, जिसमें भारत की प्रगति को देखने के लिए "उत्तर प्रदेश और बिहार को छोड़कर" जैसे षब्द का इस्तेमाल हुआ है।

कुछ साल पहले एक महिला ईंट भठ्ठा मजदूर की याचिका पर सुनवाई करते समय इलाहाबाद हाईकोर्ट के न्यायाधीश न्यायमूर्ति सुधीर अग्रवाल और न्यायमूर्ति अजीत कुमार ने कहा था, 'यदि एक शब्द में हमें राज्य चिकित्सा सेवाओं का वर्णन करना है, तो यहां भाग्य और सुविधा 'राम भरोसे' है।

उत्तर प्रदेश देश के हर क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। लेकिन चिकित्सा के मामले में यहां कई सवाल उठते रहे हैं। उत्तर प्रदेश की आवाम के पास अरसे से सिर्फ दो रास्ते रहे हैं– पहला एक अपर्याप्त, अक्षम सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवा प्रणाली और दूसरा कम गुणवत्ता और महंगी सेवाओं वाली निजी स्वास्थ्य सेवा प्रणाली। यहां राज्य के द्वारा सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवा पर अपेक्षाकृत कम होते रहे खर्च और निजी स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र की दमदार मौजूदगी की वजह से 80 फीसदी स्वास्थ्य खर्च परिवारों द्वारा स्वयं किया जाता है। 'ब्रुकिंग्स' द्वारा कराये गए एक शोध के अनुसार, यह केवल केरल, पष्चिम बंगाल और ओडिशा की तुलना में कम है।

अगर मौजूदा चिकित्सा के ढांचे की ओर देखा जाए तो राज्य में सार्वजनिक चिकित्सा प्रणाली का इंफ्रास्ट्राकर दो दशक पुराना है। देश की आबादी का पांचवां हिस्सा लम्बे समय से बेहतर स्वास्थ्य देखभाल से वंचित रहा है जिस कारण वह देश के सामाजिक या आर्थिक विकास में वैसा योगदान नहीं दे सका जैसा दे सकता था।

पूर्वी उत्तर प्रदेश में हालात और भी बुरे रहे हैं, आर्थिक रूप से कमजोर लोगों की बड़ी तादाद और इलाके में गन्दगी और लापरवाह सरकारी ढांचे की मिली जुली साजिशों के चलते रोगों और दावा कंपनियों के लिए यह स्वर्णिम आखेट स्थली रहा है। खराब सरकारी स्वास्थ्य सुविधाओं के चलते इस इलाके और इसके समीपवर्ती इलाकों में महंगे निजी अस्पतालों के अलावा जनता के पास कोई खास विकल्प नही होता और शायद यही वजह है कि इन्सेफेलाईटिस जैसी महामारियों ने यहाँ अपने सालाना मृत्योत्सव के जरिये अब तक हजारों मासूमों की जान

ले ली है।

हालांकि मौजूदा प्रदेश सरकार, जिसने पिछली सरकारों पर आरोप लगाते हुए कहा था कि उसे 'स्वास्थ्य प्रणाली पूरी तरह से खराब हालत में मिली', अब राज्य के हेल्थकेयर नेटवर्क को अपग्रेड करने का प्रयास कर रही है। हेल्थकेयर में पीएचसी से बहुउद्देष्यीय अस्पतालों तक सभी को तकनीक के आधार पर विकसित करने का प्रयास किया जा रहा है। जाहिर है कि इससे सूरत–ए–हाल में बदलाव आएगा लेकिन अकेले उसके बूते भी इस बड़े इलाके के स्वास्थ्य ढाँचे को भरोसेमंद संजीवनी दे पाना मुश्किल ही होता।

और इसीलिए जब केंद्र सरकार ने 2016 में गोरखपुर में एम्स यानी अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान बनाने का अहम् फैसला किया तो पूर्वांचल से लेकर सीमावर्ती बिहार और नेपाल तक के नागरिकों में खुशी की लहर दौड़ गयी। रोगों की बहुतायत और प्रभावी सरकारी स्वास्थ्य तंत्र न होने से गंभीर रोगों के लिए दिल्ली और मुम्बई की दौड़ लगाते लोगों के लिए यह वरदान से कम नहीं था।

कहना जरुरी होगा कि इसे मूर्त रूप प्रदान करने के लिए यहाँ के सांसद योगी आदित्यनाथ, अन्य जनप्रतिनिधियों के साथ–साथ समाचार माध्यमों की भी बड़ी भूमिका रही जिन्होंने उसी समय से इसे मुहीम के रूप में संयोजित कर दिया जब सरकार ने 6 नए एम्स खोलने का एलान करते हुए पूर्वांचल में भी एक एम्स खोलने की बात कही थी। शुरुआत में ऐसा लगा था कि यह वाराणसी या अन्यत्र भी जा सकता है लेकिन योगी आदित्यनाथ द्वारा संसद के भीतर और बाहर की गयी परिश्रमपूर्ण कोशिशों से यह गोरखपुर में स्थापित होना तय हुआ।

तब सरकार की ओर से जारी बयान में कहा गया था कि, 'प्रधानमंत्री स्वास्थ्य सुरक्षा योजना (पीएमएसएसवाई) के तहत 1011 करोड़ रुपये की लागत से गोरखपुर में एम्स बनाया जाएगा। नए एम्स की स्थापना आबादी को सुपर स्पेशिएलिटी स्वास्थ्य देखभाल प्रदान करने के उद्देश्य को पूरा करेगी और इससे डॉक्टरों और स्वास्थ्यकर्मियों का बड़ा पूल तैयार होगा जो राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के तहत तैयार की जा रही प्राथमिक और द्वितीयक स्तर की सुविधाओं के लिए उपलब्ध हो सकते हैं।'

22 जुलाई 2016 को स्वयं प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने गोरखपुर की एक जनसभा में इस योजना का एलान करते हुए कहा था कि भारत में एम्सत को एक मानदंड माना गया है। अभी यहां के लोगों को इलाज के लिए दिल्ली जाना पड़ता था। इस इलाके में होने वाली गंभीर बीमारी दिमागी बुखार (इसेफ्लाइटिस) से बहुत से बच्चेइ दिव्यांवग हो गए। अब उन्हें मरने नहीं दिया जाएगा. यहां के एम्सइ के डॉक्टर दिमागी बुखार और यहां की बीमारियों से मुक्ति दिलाने

में सहायक होंगे।'

बाद में केंद्र और राज्य सरकार के बीच सहमति पत्र पर हस्ताक्षर के दौरान राज्य सरकार की ओर से घोषणा की गयी की केंद्र द्वारा दी जा रही इस धनराशि के अलावा राज्य सरकार भी लगभग छः सौ करोड़ की राशि नियोजित करेगी. मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने उस समय कहा था कि रोगों से जूझते इस अंचल के लोगों के लिए यह वरदान साबित होगा। राज्य सरकार द्वारा घोषणा की गयी थी कि यह एम्स 1750 करोड़ रुपये से तैयार होगा जिसमें 750 बेड का अस्पताल होगा। यह एम्स गोरखपुर जिले के महादेव झारखण्डी गांव में 45.326 हेक्टेयर क्षेत्रफल में बनने जा रहा है। प्रदेश सरकार ने चिह्नित जमीन 90 वर्ष की लीज पर केन्द्र सरकार को उपलब्ध करवाई है। इसके लिए 112 एकड़ जमीन गन्ना शोध संस्थान से एम्स को हस्तांतरित की गई है।

परियोजना के शुरूआती ब्योरों के मुताबिक गोरखपुर में बन रहे एम्स में 750 बेड होंगे। एक एकेडमिक ब्लाक और मरीजों के तीमारदारों के ठहरने के लिए रैन बसेरे होंगे। एक ऑडिटोरियम, गेस्ट हाउस का भी निर्माण किया जाएगा। इसके अलावा 172 आवासों के साथ 120 छात्रों तथा 240 छात्राओं (कुल 360) के लिए यूजी हॉस्टल की स्थापना की जाएगी। 599 विद्यार्थियों के लिए पीजी हॉस्टल तथा 432 नर्सिंग स्टूडेंट के लिए भी हॉस्टल बनाया जाएगा।

ओपीडी में तीन संकाय होंगे, जिनमें सर्जिकल, मेडिसिन तथा स्त्री एवं प्रसूति रोग विभाग सहित 29 विभाग प्रस्तावित हैं। ओपीडी ब्लॉक में ओपीडी के साथ ही एक्सरे, अल्ट्रासाउंड, सीटी स्कैन, एमआरआई और पैथोलॉजी जांच की सुविधा होगी। इसके लिए ओपीडी ब्लॉक को बेहद मजबूत बनाया जा रहा है। ओपीडी भवन में 118 पिलर बनाए जा रहे हैं जिसके कारण यह साढ़े आठ से नौ रिक्टर स्केल तक के भूकंप के झटके को बर्दाष्त कर सकेगा।

ऐसा बहुत कम बार हो पाता है कि महत्वाकांक्षी जनकल्याणकारी योजनायें नियत समय में जमीन पर मूर्त रूप ले सकें लेकिन मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को इस बात का श्रेय दिया जाना चाहिए कि उन्होंने लगातार दौरों और सतत निगरानी से इस योजना को मूर्त रूप दिलाने का काम किया है। निर्माण कार्य तेज गति से चल रहा है और योजना के मुताबिक इस साल मार्च तक एम्स की ओपीडी प्रारम्भ होने की पूरी आशा है। आजादी के बाद किसी भी सरकार द्वारा इस पिछड़े अंचल को मिलने वाला संभवतः सबसे बड़ा उपहार होगा।

गो-रक्षा में गोरखपुर का योगदान

प्रसून कुमार मल्ल

"धर्मो रक्षति रक्षितः" अर्थात् रक्षित हुआ धर्म हमारी रक्षा करता है। आज पाश्चात्य संस्कृति के रंग में डूबे हुए भारतीय समाज के बहुत से आधुनिक लोग भारत की पराधीनता, पिछड़ेपन और गरीबी के लिए धर्म को जिम्मेदार ठहराते हैं। किन्तु यहाँ यह विचारणीय है कि हमारा संविधान या कानून भी हमारी सुरक्षा तभी कर सकता है जब हम उसके प्रति सम्मान एवं आदर का भाव रखें। संविधान की पुस्तक या दण्ड संहिताएं हमारी रक्षा नहीं कर सकतीं। ठीक यही बात धर्म के विषय में भी समझनी चाहिए। आज समाज में धर्म का जो अनुशासन समाप्त होता जा रहा है उसने सामाजिक व्यवस्था को बड़ी क्षति पहुँचायी है। हमें यह कहने में संकोच नहीं है कि पूर्ववर्ती सरकारों ने विकास के नाम पर धर्म की जो अवहेलना की है आज का समाज उसकी कीमत भी चुका रहा है।

भारतीय समाज में गो–सेवा को भी एक धार्मिक कृत्य माना जाता था तथा प्रत्येक हिन्दू परिवार में गो–ग्रास की परम्परा प्रचलित थी। मानव के लिए गाय की उपयोगिता का ध्यान रखते हुए हमारे ऋषियों–मनीषियों ने ऐसी धार्मिक व्यवस्था दी जिसमें गाय को माता के समाना माना जाता है और हमारे शास्त्रों ने 'गावो विश्वस्य मातरः' कहकर गाय को एक पशु नहीं बल्कि परिवार में माँ के पद पर स्थापित किया था।

पाश्चात्य शिक्षा और संस्कृति में पले हमारे कुछ राजनीतिक पुरोधाओं ने गाय को एक पशु मानकर उसका व्यापार प्रारम्भ कर दिया। गाय को व्यापार की वस्तु मानने से हम गाय से होने वाले नफा–नुकसान का हिसाब रखने लगे और दूध का उत्पादन करने वाली विदेशी गायों की ओर उन्मुख हो गये। ये गायें भारतीय जलवायु के उपयुक्त न होने के कारण दूध भले ही अधिक देती हों, किन्तु न तो उनके दूध में गुणवत्ता थी और न ही उनमें रोगप्रतिरोधक क्षमता।

प्रवक्ता–संस्कृत, महाराणा प्रताप इण्टर कॉलेज, गोरखपुर

परिणाम यह हुआ कि गो–पालकों के लिए वे सफेद हाथी सिद्ध हुईं। रही–सही कसर तब पूरी हो गयी जब न्यूजीलैण्ड के वैज्ञानिक 'कीथ वुड फोर्ड' की पुस्तक 'डेविल्स इन द मिल्क' प्रकाशित हुई जिसमें यह सिद्ध किया गया कि यूरोपीय नस्ल की सभी गायों और विशेषतः 'हास्टीन फ्रीजियन' नाम की नस्ल में एक विशेष प्रकार का तत्त्व बम्टा कैसीन A_1 पाया जाता है जो आटिज्म, अल्जाइमर परफोरेशन, टाइप–2 डायबिटीज तथा अन्य तमाम रोगों का कारण है।

परिणाम यह हुआ कि एक ओर तो भारतीय मूल की गायों की माँग विदेशों में बहुत बढ़ गयी दूसरी ओर अपनी अदूरदर्शिता के कारण हमारे तथाकथित विकासवादी विचारकों ने हमारी धार्मिक भावनाओं को आहत करते हुए गोमांस के निर्यात को खूब बढ़ाया। अमृत जैसा दूध देने वाली हमारी देशी प्रजाति के बदले हानिकारक दूध देने वाली विदेशी प्रजातियों ने ली और कृषि कार्य के लिए सर्वथा अनुपयुक्त बछड़ों ने कृषि के विकास के स्थान पर कृषि का विनाश करना प्रारम्भ कर दिया।

वैज्ञानिक सोच रखने का दम्भ भरने वाले नेताओं ने एक ओर धार्मिक अनुशासन को समाप्त कर अर्थ–आधारित व्यापारिक सोच को इतना बढ़ावा दिया कि शिक्षित होने का पर्याय हो गया अधार्मिक होना। जो गाय किसान के घर में परिवार के सदस्य की तरह समादृत थी तथा अपनी स्नेह–सुधा (गो–दुग्ध) से कृषक परिवारों का सिंचन करती थी वह निर्वासित हो चुकी थी क्योंकि अब गो–पालक की व्यावसायिक बुद्धि यह जान चुकी थी कि गाय को पालने का खर्च उसके दूध से अधिक पड़ता है। फिर गो–पालकों ने यदि यह सीख लिया कि कृत्रिम दूध का व्यापार कर धन कैसे कमाया जाता है तो इसमें उनका दोष भी क्या है।

आश्चर्य की बात है कि धर्म की राह छोड़कर नेताओं ने जिस वैज्ञानिक राह को अपनाने की बात कही उसे भी ठीक से अपना नहीं पाये। कृषि के क्षेत्र में गोवंश आधारित कृषि के महत्त्व का पूर्वानुमान करते हुए महान् वैज्ञानिक अल्बर्ट आइन्स्टीन ने 'डॉ. अमरनाथ झा' के माध्यम से महात्मा गाँधी के पास जो सन्देश भेजा था वह विचारणीय एवं अनुकरणीय था किन्तु तात्कालिक लाभ को देखते हुए उनके सुझाव पर ध्यान नहीं दिया गया, जिसके अनेक दुष्परिणाम आज देखने को मिल रहे हैं। आइन्स्टीन ने सन्देश भेजा था कि "भारत ट्रैक्टर, उर्वरक, कीटनाशक और यन्त्रीकृत कृषि–पद्धति को न अपनाए, क्योंकि इनसे चार सौ वर्षों की खेती में ही अमेरिका के जमीन की उर्वराशक्ति काफी हद तक समाप्त हो चुकी है जबकि भारत का उपजाऊपन कायम है, जहाँ कि दस हजार साल से खेती हो रही है।"

तर्कसहित प्रमाण देने पर भी महान वैज्ञानिक आइन्स्टीन के इस सुझाव को न मानकर भारत ने गोवंश आधारित कृषि के स्थान पर यंत्रों, उर्वरकों और कीटनाशकों का जो

अन्धाधुन्ध प्रयोग किया उसी का दुष्परिणाम है कि भूमि में जहाँ 0.8 प्रतिशत से कम जीवांश कार्बन नहीं होना चाहिए वहाँ इसका स्तर 0.5 प्रतिशत और कहीं–कहीं 0.2 प्रतिशत से भी कम हो गया है। जैव तथा पशुजनित अवशेष के विघटन से निर्मित होने वाला जीवांश (ह्यूमस) ही पौधों का आहार होता है। इसके अभाव में उत्पादन गिर रहा है जो वैज्ञानिकों की चिन्ता का कारण बना हुआ है। धर्म का अनुशासन समाप्त होने और व्यावसायिक बुद्धि का विकास होने के कारण सम्पूर्ण समाज में अर्थ और काम का नग्न ताण्डव देखने को मिल रहा है। किसान और गो–पालक भी अधिकाधिक धन प्राप्ति की आशा में सारी मर्यादाओं का अतिक्रमण करते हुए कृत्रिम दुग्ध एवं दुग्ध पदार्थों तथा विषाक्त फल–सब्जियों और खाद्यान्नों की आपूर्ति कर रहे हैं। किन्तु तरह–तरह के उत्पादों के प्रयोग से बढ़ती हुई लागत और न समाप्त होने वाले ऋण के कुचक्र में फँसा किसान आत्महत्या की ओर अग्रसर हो रहा है। 1997 से 2006 के बीच 1,66,304 किसानों ने आत्महत्या की वहीं 2014 से 2016 के तीन वर्षों में 36000 किसानों को आत्महत्या के लिए विवश होना पड़ा।

क्रूरतापूर्वक मारी जा रही गायें, आत्महत्या के लिए विवश किसान, कृत्रिम उत्पादों से पटे बाजार तथा विखण्डित होते समाज के लिए जिम्मेदार यदि कोई है तो वह हम स्वयं हैं जिसने धर्म की मर्यादाओं को तार–तार किया और सारे दोष की जड़ धर्म को मान लिया। उदाहरण के लिए हम गो–सेवा का ही प्रकरण लें तो यह पायेंगे कि गाय जो हमारे धर्म से जुड़कर माता के समान सम्मानित थी जिसके बछड़ों और गोबर, गोमूत्र से हमारी कृषि प्राणमय अन्न का उत्पादन करती थी किन्तु आज अपना धर्म भूल जाने के कारण किसानों से गाय दुःखी और गायों या गोवंशों के कारण किसान दुःखी है। गो–रक्षा के प्रकरण में गोरखपुर सदैव अग्रणी रहा है।

सन् 1966 के नवम्बर मास में गो–रक्षा आन्दोलन प्रारम्भ हुआ। 7 नवम्बर 1966 को जो विराट सभा हुई उसके सूत्रधार भाईजी (पूज्य हनुमानप्रसाद पोद्दार जी) रहे। गोरखनाथ मन्दिर के तत्कालीन महन्त ब्रह्मलीन पूज्य दिग्विजयनाथ जी महाराज ने स्वास्थ्य ठीक न होते हुए भी दल–बल के साथ दिल्ली जाकर गो–रक्षा आन्दोलन के इस यज्ञ में अपनी आहुति दी। तत्कालीन सरकार की हठधर्मिता कहें, उसका गुरुर कहें या समय का फेर कहें उस समय गो–भक्तों का वह प्रयास सफल नहीं हो सका। किन्तु गोरखपुर की धरती से दो सिद्ध विभूतियों के द्वारा इस आन्दोलन की जो लौ जलायी गयी वो बुझी नहीं। इन महापुरुषों द्वारा दिये गये संस्कारों के परिणामस्वरूप गोरखनाथ मन्दिर की गोशाला, गीताप्रेस द्वारा स्थापित गोविन्द गोशाला, भाईजी के अनुगत श्री विजय जालान द्वारा स्थापित गोशाला, पूज्य राधा बाबा की चरणाश्रिता श्रीमती कृष्णा देवी जी द्वारा स्थापित 'श्रीराधा बाबा गो–सेवा संस्थान' एवं अन्य

गो–भक्तों के द्वारा गोरखपुर में गो–सेवा का प्रयास न्यूनाधिक मात्रा में चलता रहा किन्तु गो–भक्तों में नवीन उत्साह का संचार उस दिन हुआ जिस दिन भारत के प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेन्द्र मोदी जी बने और जब उत्तर प्रदेश पूर्वांचल से मुख्यमंत्री के रूप में पूज्य योगी आदित्यनाथ जी महाराज ने शपथ ली तो ऐसा लगा कि गैरिक वस्त्रों में कोई साधारण संन्यासी नहीं अपनी अरुणिम आभा से पूर्वांचल के क्षितिज को आलोकित करते साक्षात् आदित्यदेव ही प्रकट हो रहे हैं।

आशा के अनुरूप ही गोरखपुर के गौरव, माननीय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी ने अपने गुरुजनों के गो–रक्षा रूपी स्वप्न को पूर्ण करने के लिए एक के बाद एक अनेक ऐसी योजनाओं की घोषणा की जिनसे सन्तों, गो–भक्तों और किसानों में खुशी की लहर दौड़ गयी।

गोरखपुर नगर में अनाश्रित गोवंशों के सड़कों पर घूमने के कारण आये दिन दुर्घटनाएं होती रहती हैं जिसके कारण अधिकारियों और नेताओं को जनाक्रोश का सामना करना पड़ता था। माननीय मुख्यमंत्री जी की पहल से गोरखपुर में मछली मण्डी के पीछे 9 एकड़ भूमि पर 8 करोड़ 20 लाख की लागत से 'कान्हा गोशाला एवं बेसहारा पशु आश्रय योजना' का कार्य तेजी से चल रहा है। मुख्यमंत्री की ड्रीम प्रोजेक्ट के रूप में बन रहे कान्हा उपवन में धूप और वर्षा से निजात के लिए शेड, पानी के टैंक तथा बीमारी से निजात के लिए एक अस्पताल, एक पशु चिकित्सक तथा ड्रेसिंग कर्मी मौजूद रहेंगे। यहाँ से निकलने वाला पानी सीधे मुख्य नाले से जोड़ा जायेगा। इस योजना के कारण जहाँ नगर में अनाश्रित घूम रहे गोवंश सुरक्षित होंगे वहीं आये दिन जाम और दुर्घटना से नगरवासियों को भी राहत मिलेगी।

एक अन्य महत्त्वाकांक्षी योजना के रूप में वेटेनरी मेडिकल कॉलेज की स्थापना हेतु कृषि विभाग की चरगाँवा स्थित 30 एकड़ भूमि का प्रस्ताव शासन के अनुमोदन हेतु भेजा गया है। इण्डियन वेटेनरी रिसर्च इन्स्टीट्यूट बरेली की तर्ज पर यहाँ भी विभिन्न बीमारियों को लेकर शोध कार्य हो सकेंगे।

प्रत्येक नगर निगमों को अनाश्रित गोवंशों की व्यवस्था के लिए 10 करोड़ रुपये दिये जाने की घोषणा की गयी है। नगरों के अतिरिक्त ग्रामीण क्षेत्रों में भी अनाश्रित गोवंशों के लिए तहसील स्तर पर अस्थायी गो–संरक्षण केन्द्र खोले जायेंगे। 'गौ कल्याण सेस' के माध्यम से प्रत्येक जिले में अनाश्रित गोवंशों के लिए आश्रयस्थल की योजना की जितनी भी सराहना की जाय वो कम है। कहा गया है 'इष्टं धर्मेण योजयेत्' अर्थात् अपने इष्ट मित्रों को धर्म से जोड़ना चाहिए और गो–सेवा रूपी धर्म से जनता को जोड़कर योगी सरकार ने न केवल धर्म के प्रति अपनी निष्ठा और प्रतिबद्धता को प्रदर्शित किया है अपितु कृषकों के प्रति भी संवेदनशीलता दिखाई है।

यह संवेदना सरकार और जनता दोनों के स्तर पर होनी चाहिए क्योंकि गो–सेवा आज की आवश्यकता, हमारा दायित्व और हमारा धर्म भी है। धर्म हमारी रक्षा तभी कर सकता है जब हम धर्म की रक्षा करें, 'धर्मो रक्षति रक्षितः।' अतः गो–सेवा रूपी इस धर्म की रक्षा करने के लिए हमें ऐसे कृषकों को चिह्नित एवं प्रोत्साहित करना चाहिए जो गोवंश आधारित कृषि को आज भी जीवित रखे हैं दूसरी ओर कुछ ऐसे संगठन भी हैं, जो निःस्वार्थ भाव से अपना सामाजिक उत्तरदायित्व समझकर गो–सेवा के कार्य में लगे हैं। ऐसी संस्थाओं में ही एक संस्था गीता वाटिका स्थित 'श्रीकृष्ण गोशाला' है जिसकी स्थापना स्वनामधन्य पूज्य भाईजी (श्री हनुमानप्रसाद पोद्दार जी) ने की थी। यहाँ लगभग 70 गोवंश हैं। इसका संचालन इस समय श्री मनमोहन जाजोदिया जी कर रहे हैं। पूज्य अवेद्यनाथ जी महाराज द्वारा स्थापित गोरखपुर मन्दिर की गोशाला में लगभग 400 देशी गोवंश हैं तथा इनकी सेवा केवल सेवा भावना से की जाती है।

'कृषि गोरक्षण एवं पर्यावरण संस्थान' नाम की एक पंजीकृत संस्था जिसका संचालन श्री विजय जालान जी के द्वारा किया जाता है, की स्थापना सन् 2005–06 में 4 गायों से हुई तथा 2011 में पुलिस द्वारा पकड़ी गयी 14 गायों और 14 बछड़ों को अपनी सुपुर्दगी में लेकर 'गो–वत्स गोशाला' नाम की पृथक संस्था स्थापित की गयी। यहाँ 76 गोवंश हैं किन्तु संस्थान ने कभी कोई सरकारी सहयोग नहीं लिया।

'श्री राधा बाबा गो–सेवा संस्थान' के नाम से 21 नवम्बर 2012 (गोपाष्टमी) को कृषकों के द्वारा परित्यक्त और उन्हीं की फसल को नष्ट करने के कारण किसानों के द्वारा ही प्रताडित छः बछड़ों की सेवा से श्रीमती कृष्णा देवी ने इस कार्य को अपने संसाधनों से प्रारम्भ किया। संस्था के अध्यक्ष श्री प्रवीर कुमार मल्ल ने बताया कि छोटे अनाश्रित बछड़ों और बूढ़ी गायों की सेवा की जाती है तथा प्रतिवर्ष गो–सेवा करने वाले किसानों को कम्बल इत्यादि देकर सम्मानित किया जाता है तथा वर्ष में एक बार शून्य बजट कृषि या गोवंश आधारित कृषि से सम्बन्धित कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं। खेती करने योग्य बछड़े इच्छुक कृषकों को निःशुल्क दिये जाते हैं।

इसी प्रकार से व्यक्तिगत स्तर पर भी विभिन्न सेवाकार्यों में लोग कार्य कर रहे हैं। स्वामी डॉ. विनय जी 'विवेकानन्द सेवा मिशन' के माध्यम से गो–दुग्ध एवं गो–मूत्र के द्वारा ही अपने क्लीनिक में अधिकांश लोगों का उपचार भी करते हैं तथा घर–घर, गाँव–गाँव में जाकर गो–सेवा के प्रति लोगों को जागरूक करते हैं। इसके साथ ही गो–दुग्ध एवं गो–मूत्र पर आपके द्वारा रासायनिक विश्लेषण सम्बन्धी शोध भी चल रहे हैं।

'श्रीनाथ जी गो–सेवा समिति' के माध्यम से श्री कमलेश अग्रवाल जी अपने सहयोगियों के साथ गो–सेवा के कार्य को कर रहे हैं। श्रीमती अपराजिता माथुर एक ऐसी ममतामयी महिला

हैं जो पूरे दिन शहर में घूमती रहती हैं तथा जहाँ भी घायल या बीमार बछड़े मिलते हैं, उनकी सेवा में जुट जाती हैं। श्री महिपाल वर्मा जी बरगदवा के पास के रहने वाले हैं तथा अपनी पेंशन के पैसों से सड़क पर घूमने वाले बछड़ों के लिए प्लास्टिक से छाया करने, उनके भोजन आदि की व्यवस्था में लगे रहते हैं। और भी बहुत से नाम हैं जिनमें सब्जी बेचने वाली बहन सारंगा, पारसनाथ जी, गोपाल यादव, गीता वर्मा आदि प्रमुख हैं जो बिना किसी स्वार्थ के गो–सेवा के पुनीत कार्य को कर रहे हैं।

यह सच है कि ऐसे तमाम सेवा कार्य में लगे लोगों के अलग–अलग विचार और अलग प्राथमिकताएं हैं, सबको साथ लाना कठिन है किन्तु यह भी सच है कि गोरखपुर में गो–सेवा क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य हो रहे हैं। इसलिए इस क्षेत्र में लगे हुए लोगों के विचारों, प्रयासों एवं परिणामों को सचित्र एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया जाय। ऐसे किसानों को भी सम्मानित किया जाय जो गोवंश आधारित कृषि अभी भी अपनाए हों।

सरकार के द्वारा गो–सेवा के क्षेत्र में जो कदम उठाये गये हैं, वे अत्यन्त सराहनीय हैं किन्तु गोबर और गो–मूत्र का उपयोग कर यदि जैविक उर्वरक एवं कीटनाशक आदि का निर्माण होने लगे और कृषकों को उसका उचित मूल्य दिया जा सके तथा उत्पादित सामग्री प्रभावी हो। जनता उसे अपनाए तो यह गो–रक्षा की दिशा में क्रान्तिकारी कदम होगा और हम गोरखपुरवासी गर्व से कह सकेंगे–

भुक्त्वा तृणानि शुष्कानि, पीत्वा तोयं जलाशयात्।
दुग्धं ददाति लोकेभ्यो गावो विश्वस्य मातरः।।

जय गो–माता, जय गोपाल।

गोरखपुर- साहित्य, कला और संस्कृति में गढ़ते नये सोपान

शैवाल शंकर श्रीवास्तव

दिन प्रतिदिन समृद्ध होती गोरखपुर की सांस्कृतिक विरासत अब नित नये सोपान गढ़ रही है। आध्यात्म, साहित्य और संस्कृति की यह 'कुम्भ नगरी' अपने अतीत से एक गौरवशाली विरासत संजोए हुए है। अतीत के सुनहले पन्ने पर लिखती नई इबादत इस शहर के लिये बहुत ही सुकून देने वाली है। इस शहर की 'गलत पहचान' को इस शहर के लोगों ने मिलकर मिटा दिया है। आईये इस शहर की कुछ गतिविधियों और उपलब्धियों पर नजर डालते हैं।

रंगमंच :

रंगमंच साल दर साल उपलब्धि हासिल करता जा रहा है। कुछ सालों से रंगमंच के ठहरे तालाब में कुछ लोगो ने निरूस्वार्थ भाव से कंकण मारा और इस तालाब में लहरें उठने लगी। इन लहरों ने दिखाया की यह तालब नही समुद्र है जिसकी गहराई अनंत है।

समृद्ध विरासत से लबरेज गोरखपुर का रंगमंच एक समय में राष्ट्रीय स्तर पर अपनी धमक देता रहा है। संक्रमणकाल के एक छोटे अंतराल के बाद दूसरी पीढ़ी के रंगकर्मियों के साथ नई पीढ़ी नित नये कीर्तिमान स्थापित करती जा रही है। एक अदद प्रेक्षाग्रह के अभाव के बावजूद यहाँ के रंगकर्मियों ने रंगकर्म की जो अलाव जलाए रखी है वो काबिले तारीफ है। शहर में हर महीने प्रस्तुति होने के साथ ही साथ शहर की संस्थायें अन्य शहरों में भी प्रस्तुतियां कर रही हैं और लोगो की प्रशस्ति पा रही हैं। इसमें सबसे प्रमुख मुंबई में आयोजित "अंतराष्ट्रीय थियेटर ओलम्पिक" में शहर की संस्था 'दर्पण' द्वारा 'रश्मी–रथी' नाटक का मंचन रहा। गोरखपुर के नाट्यकर्मियों की इस प्रस्तुति को "थियेटर ओलम्पिक" में लोगों की खूब सराहना

मीडिया कर्मी

मिली। यह पल गोरखपुर के लिये गर्व का रहा। इसी तरह भारत भवन, भोपाल में इसी संस्था द्वारा 'सम्राट अशोक' के मंचन के साथ ही साथ लखनऊ, झांसी, चंडीगढ, कुरुक्षेत्र, गुवाहाटी, बेगूसराय और इलाहाबाद (अब प्रयागराज) में रश्मी–रथी, अंधायुग इत्यादी नाटकों का मंचन किया गया। 'युवा संगम' की चंडीगढ़ में मुंशी प्रेमचंद द्वारा लिखित कहानी 'कफन' के भोजपुरी भाषा में मंचन ने पंजाबी भाषी लोगों को खूब भाई और सराहना मिली। विभिन्न शहरों में गोरखपुर की नाट्य प्रतिभा के प्रदर्शन के साथ ही साथ शहर में भी निरंतर कई नाटकों के मंचन हो रहे हैं। लेख लिखे जाने तक गोरखपुर थियेटर एसोसियेशन की मासिक नाट्य श्रृंखला की 31वीं प्रस्तुति हो चुकी है। इसके अलावा अन्य नाटकों के मंचन में अजीत प्रताप सिंह द्वारा निर्देशित 'ममता','साहिब कहाँ हैं', 'बापू की हत्या हजारवीं बार', पीयूषकांत अलग द्वारा निर्देशित 'प्रमोशन', 'कफन', रविंद्र रंगधर द्वारा निर्देशित 'मोटेराम का निमंत्रण', विवेक श्रीवास्तव निर्देशित 'तेरी गठरी में लागा चोर', सनरोज संस्था से विवेक अस्थाना निर्देशित 'जईयो कहाँ हो हूजूर', रंगाश्रम की प्रस्तुति और धर्मेंद्र भारती द्वारा निर्देशित 'जाति ही पूछो साधू की', एकल नाटक 'भेड़िया', सम्भव की प्रस्तुति 'हवालात' जिसे विकास विंध्य ने निर्देशित किया, पियूषकांत अलग निर्देशित 'रसप्रिया',एमेच्योर थियेटर ग्रुप की प्रस्तुति और आसिफ जहीर द्वारा निर्देशित 'बड़े घर की बेटी', 'मास्टर जी', 'महमूद', 'बेटियाँ, 'रिश्ते' और 'पंचलाईट' प्रमुख रहे।

नाट्य प्रस्तुतियों के इस क्रम में सांस्कृतिक संगम सलेमपुर द्वारा वाई. शंकरमूर्ती की प्रस्तुति और मानवेंद्र त्रिपाठी द्वारा निर्देशित रामायण के मंचन की विशेष प्रशंसा करनी होगी। 'रामायण', 'हरिश्चंद्र तारामती' का मंचन सूरीनाम, गुआना, त्रिनीदाद जैसे विदेशी मंच से लेकर विश्व प्रसिद्ध सोनपुर मेला किया गया। इनके रामायण के मंचन की खास बात अत्याधुनिक तकनीक का प्रयोग है जो इन नाटकों को एकदम जीवंत और रोचक बना देते हैं। मानवेंद्र त्रिपाठी द्वारा निर्देशित और अमित सिंह पटेल द्वारा प्रस्तुत कॉमेडी नाटक 'सैंया भये कोतवाल' ने लोगों को खुलकर हंसने पर मजबूर कर दिया। इस संस्था द्वारा अपनी विदेश यात्राओं में नाट्य मंचन के साथ ही थियेटर वर्कशाप भी किया गया। इसी कड़ी में अभियान थियेटर ग्रुप की नाट्य प्रस्तुति में गोरखपुर महोत्सव के मंच पर 'विवेकानंद कालिंग–शिकागो लाईव' के अलावा भोजपुरी नाटक 'अलगा–बिलगी', 'सुभागी' के साथ 'अंधेर नगरी', 'शबरी', 'आत्मियता' का मंचन श्रीनारायण पांडेय के निर्देशन में हुआ इसके अलावा , भूमिकेश्वर सिह निर्देशित 'प्रतिज्ञा योगेंद्रायण' और 'गुरु मंत्र' भी मंचित हुए। नरेंद्र देव पांडेय द्वारा लिखित व श्रीनारायण पांडेय द्वारा निर्देशित 'राष्ट्रीय स्वय सेवक संघ' पर आधारित नाटक 'संघम शरणम गच्छामी' ने काफी चर्चा बटोरी और इसके बारे में मिथ्या प्रचार को झूठा साबित किया। इप्टा की प्रस्तुतियों में मुमताज खान द्वारा निर्देशित और नाट्य रुपांतरित 'रंगीले बाबू', 'महातीर्थ' का मंचन हुआ

जिसमें 'रंगीले बाबू' का मंचन बरेली में भी हुआ।

यह साल रंगकर्म के लिये बहुत ही उत्साहजनक रहा। बढ़ते नाट्य मंचन के साथ दर्शकों की रुचि भी बढती गयी। इस अंचल में नाटकों के जरिये सांस्कृतिक अलख जगाने वाली संस्था 'रुपांतर' का स्वर्ण जयंती वर्ष रहा। अपनी 50वीं वर्षगांठ पर रुपांतर द्वारा विविध आयोजन किये गये जिसमें प्रख्यात रंगकर्मी श्रीमती उषा गांगुली द्वारा निर्देशित नाटक 'आत्मज' का मंचन कोलकाता के कलाकारों द्वारा किया गया। रुपांतर द्वारा संगीत नाटक अकादमी,लखनऊ में अपर्णेश मिश्र द्वारा निर्देशित नाटक 'विमुक्ता' के मंचन ने बहुत ही वाह–वाही पायी। इसी कड़ी में निशिकांत पांडेय के निर्देशन में 'सादर' आपका नाटक का मंचन शहर में तीन बार किया गया। स्व. गिरीश रस्तोगी की पुण्य तिथि पर गोष्ठी का आयोजन भी रुपांतर द्वारा किया गया।

थियेटर वर्कशाप :

मनोरंजन के बदलते माध्यम के बीच नये जमाने के हिसाब से नई पौध को अभिनय में दक्ष करने के लिये शहर में समय समय पर थियेटर वर्कशाप आयोजित हुएं। इन कार्यशालाओ में प्रतिभागियों ने अभिनय के साथ ही साथ नाट्य कला से जुड़े सभी विधाओं की बारीकियों को विशेषज्ञो से समझते हुए प्रशिक्षण प्राप्त किया। ऐसे वर्कशाप में रंगमंडल, अजीत प्रताप सिंह और अभियान संस्था द्वारा आयोजित थियेटर वर्कशाप उल्लेखनीय हैं। अभियान सिनेमा स्कूल द्वारा थियेटर और उसकी अन्य विधाओं से सम्बंधित कोर्स भी चलाये जाते हैं और यहाँ से प्रशिक्षण प्राप्त विद्यार्थी नामी नाट्य संस्थाओ जैसे एन.एस.डी., से लेकर मुम्बई की मायानगरी में अपनी पहचान बना रहे हैं। अभियान द्वारा 45 दिन का थियेटर वर्कशाप आयोजित हुआ जिसमें राष्ट्रीय स्तर के संस्कृतिकर्मी श्री भूमिकेशवर सिंह ने प्रशिक्षुओं को नाटक के साथ ही अन्य विधाओं पर प्रशिक्षण दिया। विगत वर्ष में एन.एस.डी. की भी कार्यशाला गोरखपुर में एक महीने तक चली जिसमें राष्ट्रीय स्तर के प्रशिक्षकों से प्रतिभागियों को प्रशिक्षण प्राप्त हुआ। क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र गोरखपुर द्वारा आयोजित नाट्य कार्यशाला में अजीत प्रताप सिंह द्वारा राजकीय बौद्ध संग्रहालय में प्रशिक्षण दिया गया।

युवा हस्ताक्षर :

पढ़ाई और कॅरियर के दबाव के बीच आज का युवा अपनी पसंद और हुनर के लिये भी कुछ समय निकाल ही ले रहा है और अपने सपनो को पंख लगाने की सफल कोशिश भी कर रहा है। रंगोली से विविध आकृतियां बनानी हो या बैंड की धुन पर लोगों को थिरकने पर मजबूर करना हो से लेकर भोजपुरिया जमीन की सोंधी मिट्टी को लोकगीतों से सराबोर। शहर के युवा साहित्य, संस्कृति, कला के हर सोपान में अपनी पहचान बना रहे हैं। दी.द.उ. गोरखपुर

विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में परिसर के विद्यार्थीयो द्वारा संचालित 'कवि सम्मेलन' ने यहाँ के युवा कवियों को न सिर्फ एक मंच दिया बल्कि एक नई दिशा प्रदान कर दिया। अब इस कवि सम्मेलन के अधिकांश छात्र और छात्राएं कविता और शायरी को विभिन्न मंचो पर पढ़ रहे हैं। इसी कड़ी में शहर के कविता और शायरी में शौक रखने वाले कुछ युवाओं ने 'ओपेन माईक इवेंट' के जरिये कविता और शायरी की प्रतियोगिता भी रख चुके हैं। युवाओ के सपनों को सोशल मीडिया ने एक नया मंच दिया है और इसका इस्तेमाल कर गोरखपुर के कुछ युवाओं द्वारा ' गोरखपुर सांग्स' शहर की जुबा पर चढ़ भी गया था। शहर के कई युवाओं ने अपने बैंड भी बनाये हैं और इनकी प्रस्तुतियां लोगों को झूमने पर मजबूर कर रही हैं।

लोकगीत एवम् संस्कृति :

लोक संस्कृति को बढ़ावा देने के लिये भी इस वर्ष काफी प्रयास हुए। भोजपुरी एसोसियेशन आफ इंडिया (भाई) द्वारा 'के बनी माटी के लाल' लोकगीतों पर आधारित गायन प्रतियोगिता का आयोजन बड़े स्तर पर हुआ। इसमे पूर्वांचल के विभिन्न शहरों में आडीशन आयोजित किये गये और विभिन्न चरणों से होते हुए 10 प्रतिभागी फाईनल में पहुचे जिसमे ब्जेश विश्वकर्मा 'के बनी माटी के लाल' के विजयी प्रतिभागी बने। संस्था द्वारा नवरात्र में लोकगीतों पर आधारित 'पचरा' का भी आयोजन किया। इसी तरह संस्कृति विभाग द्वारा मुक्ताकाशी मंच पर मलेशिया के कलाकारों द्वारा रामायण पर आधारित 'बैले–गंजाम' का भव्य मंचन हुआ।

टैलेंट हंट :

शहर में डांस, सिंगिंग और एक्टिंग को लेकर विभिन्न टैलेंट हंट के कार्यक्रम भी आयोजित हो रहे हैं। इन टैलेंट हंट के जरिये प्रतिभाओ को मंच मिला साथ ही हुनर भी दिखा। इन टैलेंट हंट से निकले विजेताओं में एक आत्मविश्वास जगा और उनकी उम्मीदो को पंख लग गये। इन युवाओं ने अपनी जगह भी बनानी शुरु कर दी है। गोरखपुर महोत्सव में हर साल होने वाले टैलेंट हंट में हर विधा के प्रतिभाशाली प्रतिभागियों को अपना हुनर दिखाने का अवसर मिलता है। शहर की बहुत सी संस्थाए टैलेंट हंट शो का आयोजन समय समय पर कर रही हैं। इनमें 'भाई' संस्था द्वारा 'के बनी माटी के लाल' 'रंगमंडल' द्वारा 'बेस्ट ड्रामेबाज' और सनरोज संस्था द्वारा 'पूर्वांचल स्टार' रहा। इन टैलेंट हंट प्रतियोगिताओ में सिंगिंग, डांसिंग, कामेडी और एक्टिंग के जरिये प्रतिभागियों के हुनर को परखा गया।

सुगम संगीत :

कभी तानसेन की धुनों पर मेघ घिर आते थे, ऐसी ही आध्यात्मिक शक्तियों से पगी धुनों

के जरिये सुगम संगीत ने भी अपनी धमक, विभिन्न कार्यक्रमों के जरिये शहर में बरकरार रखी।। वरिष्ठ गुरुओं के संगत में युवा पीढ़ी भारत की प्राचीन संगीत विरासत को आत्मसात कर चुकी है और इसे उसी उंचाईयो पर ले जाने को तत्पर है। इन्ही उद्देश्यो को लेकर आयोजित हुए 'सरसरंग संगीत समारोह' में कानपुर से प्रसिद्ध ध्रुपद गायक श्री विनोद कुमार द्विवेदी, पखावज में अयोध्या से श्री विजय रामदास, शिबदास चक्रवर्ती का सरोद वादन के साथ पं. शरद मणि त्रिपाठी के सुगम संगीत के कार्यक्रम हुए। इसी कड़ी में संस्कृति विभाग द्वारा शहर में दो दिवसीय 'मेघ मल्हार' कार्यक्रम ने सुगम संगीत की अप्रीतम लहरी बहाई और लोककला संवधन हेतु लोकरंग का आयोजन हुआ। शहर के गायकों और वादकों ने स्व.राहत अली को संगीतमयी प्रस्तुति देकर अपनी थाती को याद भी किया। संस्कार भारती द्वारा शहर में हिंदू नववर्ष पर हर साल किये जाने वाले कार्यक्रम में शरद मणि त्रिपाठी, श्रीमती मिथिलेश तिवारी, कन्हैया श्रीवास्तव और प्रतिमा श्रीवास्तव के निर्देशन में शास्त्रीय संगीतों से पगी प्रस्तुतियाँ शहर के नवोदितो ने दी। इसी तरह की प्रस्तुतियाँ शहर की पहचान बन चुकी दीपोत्सव में भी हुई।

साहित्यिक गतिविधियाँ :

समृद्ध साहित्यिक विरासत वाले शहर गोरखपुर में साहित्यिक उपलब्धियों वाला यह साल रहा।विभिन्न साहित्यिक व काव्य गोष्ठियाँ, पुस्तक विमोचन और साहित्यिक आयोजन हुए जिनके माध्यम से शहर ने साहित्यिक गतिविधियों और उपलब्धियों को जाना। वरिष्ठ साहित्यकार श्री रामदेव शुक्ल का उपन्यास 'अनाम छात्रा की डायरी', प्रो. के.सी. लाल की एकांकी नाट्य पर 'मेरी नाट्य रचनाए', श्री रविंद्र श्रीवास्तव 'जुगानी भाई' की भोजपुरी कविता संग्रह 'अबहिन कुछ बाकी बा', प्रो. सदानंद शाही की काव्य कृति 'माटी–पानी', आई.एच. सिद्दिकी की आत्मकथा 'मेरी दुनिया, मेरे लोग', श्री आद्या प्रसाद द्विवेदी की 'नेह का नाता', प्रो. आर.डी. राय की 'काव्य पुरुष', डा. प्रदीप राव की 'नाथ पंथ', बृजभूषण राय बृज का काव्य संग्रह 'आजादी के बाद', नरसिंह बहादुर चंद का काव्य संग्रह 'वीर भोग्या वसुन्धरा', 'हर सिंगार', डा. फूलचंद प्रसाद गुप्त का निबंध संग्रह 'लोकगंध', डा. वेद प्रकाश पांडेय का निबंध संग्रह 'सृजन', 'चिंतन और अनुशीलन', कविता संग्रह 'अलाव के आसपास', डा. शरद मणि त्रिपाठी की 'सरसरंग रचनांजलि', सृजन गोरखपुरी का काव्य संग्रह 'तिरगी दूर हो जिसे पढ़कर', नरेंद्र देव पांडेय की 'शस्त्र उठाओ अम्बा', डा. रंजना जायसवाल का काव्य संग्रह 'स्त्री ही प्रकृति', कैसे कहूं उजली कहानी, अति सूधो सनेह को मारत है, 'तुम करो तो पुण्य हम करें तो पाप' आदि का विमोचन हुआ। साहित्यिक आयोजनों में कुटुम्ब संस्था द्वारा 'दो शायर, एक शाम' का आयोजन किया गया जिसमें प्रसिद्ध शायर वसीम बरेलवी और आलोक श्रीवास्तव की कविता और शायरी की देर शाम तक प्रस्तुतियाँ होती रहीं। इसी तरह कुमार विश्वास, दिनेश बावरा और बालीवुड गीतकार

तनवीर गाजी की एक शाम भी 'कुटुम्ब' संस्था द्वारा आयोजित की गयी। चेतना माया संस्था द्वारा हर साल होने वाले कवि सम्मेलन और गोष्ठी में देश के ख्यातिलब्ध हस्तियाँ जुटी और काव्य पाठ के साथ चर्चा हुई। कवित्री चेतना पांडेय का काव्य संग्रह 'दुर्गम पंथ चुनेगा कौन' भी लेख लिखे जाने के समय प्रिंटिंग प्रेस में है। नयी पीढ़ी का जुड़ाव भी साहित्य की ओर तेजी से हो रहा है जो कि बहुत ही सुखद है। नयी पीढ़ी के ये लोग कविता, शायरी से लेकर साहित्य की अन्य विधाओं में बहुत ही शौक से भाग ले रहे हैं।

गोरखपुर लिटरेरी फेस्ट –शब्द संवाद का आयोजन :

दो दिवसीय 'गोरखपुर लिटरेरी फेस्ट– शब्द संवाद' का आयोजन इंडिया फर्स्ट, ए.पी. पी.एल. और कुटुम्ब संस्था द्वारा संयुक्त रूप से किया गया।इस आयोजन में देश के ख्यातिलब्ध साहित्यकारों, पत्रकारों से लेकर बॉलीवुड हस्तियों का जमावड़ा रहा। शहर के हर उम्र के साहित्यिक पसंद लोगों खासकर युवाओं के सहयोग से आयोजित इस कार्यक्रम ने शहर को राष्ट्रीय फलक पर स्थापित करने की दिशा में एक सफल प्रयास किया। इस आयोजन में साहित्य चर्चा, नाट्य विमर्श, समसामयिक चर्चा, स्त्री–विमर्श से लेकर विभिन्न हस्तियों से बातचीत ने विचारों के आदान प्रदान को एक नई उंचाई दी। इस कार्यक्रम का उद्घाटन राज्यसभा सभापति श्री हरिवंश, साहित्य अकादमी के पूर्व अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, हिंदी विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. चितरंजन मिश्र, वरिष्ठ लेखिका नासिरा शर्मा की उपस्थिति में हुआ। गोरखपुर लिटरेरी फेस्टिवल में राष्ट्रीय स्तर की वरिष्ठ लेखिका नासिरा शर्मा, गीता श्री, प्रभात रंजन, मालविका हरिओम, राजकुमार सिंह, वरिष्ठ पत्रकार राणा यशवंत, रंजीत कुमार, ब्रजेश कुमार सिंह, चित्रा त्रिपाठी, अमृता चौरसिया, शिवकेश, राजनेता अमर सिंह, विचारक सुशील पण्डित, संजय सिंह, राजशेखर, सोनाली मिश्र, रंजना जैसवाल, उत्कर्ष सिन्हा, शायर वसीम बरेलवी, कुंवर बेचौन, आलोक श्रीवास्तव, कलीम कैसर, गजेन्द्र प्रियांशू, दास्तानगो महमूद फारूकी की उपस्थिति रही और सभी ने अपनी बेबाक राय रखी। बॉलीवुड हस्तियों मनोज मुंतशिर, विनय पाठक, अखिलेंद्र मिश्र और सुशील राजपाल ने अपनी बातों से बताया की साहित्य का दखल हर जगह है। इस लिट फेस्ट के दौरान विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान के लिए शहर की विभूतियों को सम्मानित भी किया गया। लिट फेस्ट के हर सत्रो में लोगो की उपस्थिति लगातर बनी रही खास कर युवाओं ने इन चर्चाओ में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया।

ललित कला :

ललित कला में इधर बहुत सक्रियता आयी है। दी.द.उ.गोरखपुर विश्वविद्यालय से

निकले तमाम छात्र–छात्राएँ इस क्षेत्र में गोरखपुर से लेकर अन्य शहरों में अपनी कला का प्रदर्शन कर इसे एक नयी उंचाई पर ले जा रहे हैं। इन्ही प्रयासों की कड़ी में राज्य ललित कला अकादमी द्वारा कला आचार्य प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस प्रदर्शनी में गोरखपुर व बस्ती मंडल के विद्यालयों मे कार्यक्रत कला शिक्षकों की कलाकृतियों की प्रदर्शनी लगाई गयी। इसके साथ ही साथ विश्वविद्यालय स्तर से लेकर विद्यार्थियों के लिये भी यह प्रदर्शनी आयोजित हुई। इन प्रदर्शनियों से चयनित चुनिंदा लोगो की कलाकृतियाँ राज्य स्तरीय प्रदर्शनी में शामिल होंगी और उसमे से विजयी प्रतिभागियों को नगद पुरस्कार से सम्मानित किया जायेगा। इस साल कुम्भ में भी यहाँ के कलाकारों की तैयारी अपने हुनर को दिखाने की हो रही है। इस साल आयोध्या में दीपावली भव्य रूप में मनाई गयी। इस अवसर पर रंगोली की भी प्रतियोगिता हुई जिसमें गोरखपुर सहित विभिन्न शहरों के प्रतिभागियों ने भाग लिया और गोरखपुर प्रथम स्थान पर रहा। दी.द.उ.गोरखपुर विश्वविद्यालय के ललित कला विभाग के संयोजन में राज्य ललित कला अकादमी द्वारा 'क्षेत्रीय कला प्रदर्शनी' अमृताकला विथिका में आयोजित हुई। विभाग द्वारा दीक्षांत समारोह के अवसर विभिन्न आयोजन करने के साथ ही साथ विश्व फोटोग्राफी दिवस पर फोटो प्रदर्शनी का भी आयोजन हुआ। छायाकार संदीप श्रीवास्तव द्वारा विश्व फोटोग्राफी दिवस, पूर्वांचल संग्राहालय के उद्घाटन और विश्व धरोहर दिवस के अवसर पर चित्र प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। फोटो जर्नलिस्ट संगम दूबे की संस्था क्लिकर्स द्वारा 'बदलता गोरखपुर' फोटो प्रदर्शनी के माध्यम से गोरखपुर की बदलती तस्वीर दिखाई गयी। शहर के कलाकार विभिन्न आयोजनो में अपने हुनर को दिखा रहे हैं और गोरखपुर का नाम बढा रहे हैं।

मनोनयन एवम पुरस्कार :

शहर के संस्कृतिकर्मीयो का महत्वपूर्ण पदों पर मनोनयन भी गर्व का विषय रहा। श्री सदानंद गुप्त–अध्यक्ष उ.प्र. हिंदी संस्थान, डा. फूलचंद प्रसाद गुप्त, श्री चितरंजन मिश्र सदस्य–साहित्य अकादमी, श्री रवि शंकर खरे अध्यक्ष, भारतेंदू नाट्य अकादमी, श्री शरद मणि त्रिपाठी, सदस्य संगीत नाटक अकादमी, डा. भारत भूषण, सदस्य ललित कला अकादमी, राकेश श्रीवास्तव, सदस्य, संगीत नाटक अकादमी के पद पर मनोनयन शहर के लिये न सिर्फ गर्व का विषय है बल्कि यहाँ की सांस्कृतिक गतिविधियों को बल भी प्रदान करने वाला है। साहित्य के क्षेत्र में हिंदी गौरव सम्मान प्रो. रामदेव शुक्ल, संस्कृत भाषा सम्मान प्रो. बनारसी प्रसाद त्रिपाठी, लोकभूषण सम्मान श्री रविंद्र श्रीवास्तव 'जुगानी' के साथ नेहा पत्रिका को सरस्वती सम्मान मिलना शहर की रचनाधर्मिता को दर्शाता है।

सांस्कृतिक केंद्रों का निर्माण :

पूज्य योगी जी के मुख्यमंत्री बनते ही संस्कृति कर्मियों का एक प्रतिनिधि मंडल शहर में वर्षो पुरानी मांग एक अदद प्रेक्षागृह को पूरा करने पर उन्हे बधाई देने के लिये मिला। इस अवसर पर उन्होने मुक्ताकाशी मंच और राजकीय पुस्तकालय के जीर्णोद्धार के लिये भी धन देने का वादा किया। यह लेख लिखे जाने तक इन सभी सांस्कृतिक और साहित्यिक केंदो का तेजी से गुणवत्तापरक काम हो रहा है। इन केंद्रों के निर्माण से इस शहर की सांस्कृतिक गतिविधियों को एक गति मिल जायेगी।

गोरखपुर में साहित्यिक, सांस्कृतिक गतिविधियों के गतिमान रहने के लिये सुझाव :

शहर की तमाम सांस्कृतिक गतिविधियों के रुके रहने और धीमी गति से बढ़ने के लिये जिम्मेदार एक सांस्कृतिक केंद्र का न होना रहा। इन सांस्कृतिक गतिविधियों का आयोजन लोगों के सहयोग से ही सम्भव हो पा रहा है। माननीय योगी जी के मुख्यमंत्री बनने के बाद प्रेक्षागृह, ओपेन थियेटर के साथ राजकीय पुस्तकालय के निर्माण और जीर्णोद्धार से यह कमी पूरी हो रही है। अब जरूरत है इसे यहाँ की संस्थाओं को निरूशुल्क या रियायती दर पर उपलब्ध कराना। इसके साथ ही सांस्कृतिक और साहित्यिक कार्यक्रमो के लिये मिलने वाले सरकारी अनुदान की भी जानकारी देने वाली कार्यशाला का आयोजन किया जाना चाहिये। इसकी पहल विभिन्न साहित्यिक और सांस्कृतिक अकादमियों में मनोनीत पदाधिकारियों को करनी चाहिये।

गोरखपुर नगर में स्थापित नया ज्ञान केन्द्र : श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ

प्रो. रविशंकर सिंह

भारत वर्ष का प्राणतत्व हिन्दुधर्म में सन्निहित है और इसीलिए भारतीय लोकचित आध्यात्मिक है। प्राचीन भारतीय चिन्तन प्रणाली दार्शनिक होने के साथ–साथ पूर्णतः वैज्ञानिक है। प्राचीन भारतीय ऋषि एवं अध्येताओं के चिन्तन में मुख्यतः प्रकृति और पुरुष है। ब्रह्मांड की उत्पत्ति से प्रारम्भ कर सूक्ष्मातिसूक्ष्म अवयवों के प्रति संवेदनशील विश्लेषण भारतीय चिन्तन की अमूल्य थाती है। भारतीय दर्शन का उद्देश्य ब्रह्मांड की मूलसत्ता का विवेचन करना है। प्राचीन भारतीय मनीषियों ने इस सत्ता की खोज में अपना जीवनदान दिया है। **भारतीय दर्शन के अनेकानेक दर्शनों में–अद्वैतवाद–सर्वाधिक प्रभावकारी रहा है** क्योंकि यह दर्शन, विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न **आचार्य शंकर (आठवीं शती में प्रादूर्भूत) के भाष्यों से विकसित एवं स्थापित हुआ है।** आचार्य शंकर ने अद्वैतवाद के तीनों प्रस्थानों– **उपनिषद, ब्रह्मसूत्र और गीता**– पर भाष्य लिखा है। ब्रह्मसूत्र पर आचार्य शंकर का शारीरिक भाष्य सर्वप्रसिद्ध प्रमाणिक ग्रन्थ माना जाता है। आचार्य शंकर ने अद्वैतवाद–दर्शन की प्रतिष्ठा स्थापित करने में सम्पूर्ण जीवन न्यौछावार कर दिया। जब बौद्धधर्म के अनुशीलक तांत्रिकों और सिद्धों के चमत्कार एवं आचार–व्यवहार बदनाम होने लगे तब दक्षिण भारत से आचार्य शंकर ने वैदिक सनातन धर्म की पुर्नस्थापना हेतु **भारत वर्ष के चारों कोनों पर चार पुनरूद्धोरक पीठों (पूर्व में गोवर्धनमठ, पश्चिम में शारदामठ, उत्तर में बदरिकाश्रम, दक्षिण में श्रृंगेरीमठ)** का निर्माण कर हिन्दू धर्म व संस्कृति की अभूतपूर्व सेवा की है। उसी प्रकार से **उत्तर भारत में महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ** ने (आज के श्रीगोरक्षनाथ मंदिर से) वैदिक सनातन

* **विशेष कार्याधिकारी**, महायोगी गुरु श्री गोरक्षनाथ शोधपीठ, **अधिष्ठाता, छात्र–कल्याण** एवं **आचार्य**, भौतिकी विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर।

धर्म व संस्कृति को बाह्य आडंबरों, तर्कहीन कर्मकाण्डों के भँवर–जाल से मुक्त कराने के लिए जाति–पात, ऊँच–नीच छुआछूत जैसी अमानवीय घृणित विकृतियों के विरूद्ध तनकर खड़े हुए। **ऐतिहासिक दृष्टि से लगभग दसवीं शती विक्रमी में उद्‌भूत महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ के लोकोपयोगी उपदेशों के प्रभाव से समाज में समरसता का बीजारोपण हुआ।** इन उपदेशों का ही **मध्यकालीन संस्करण भारत वर्ष में भक्ति–आंदोलन** है। लगभग सभी संत–महात्माओं (कबीर, गुरु नानक, जायसी, मलूकदास, संतरविदास**, संत ज्ञानेश्वर** आदि) के चिन्तन में गुरु **श्रीगोरक्षनाथ का स्पष्ट प्रभाव दीखता है।** हालाँकि **आध्यात्मिक दृष्टि से नाथ पंथिक योगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ को शिवावतारी मानते हैं।** नाथ परम्परा में गुरु श्रीगोरक्षनाथ सत्ययुग में पंजाब के पेशावर में, त्रेता में गोरखपुर में, द्वापर में द्वारका के हरमुज में तथा कलिकाल में काठियावाढ़ की गोरखमढ़ी में अवतरित हुए। यह भी **लोक–विश्रुत है कि** गोरक्षनाथ कलियुग में शेषनाग के स्वरूप में प्रकट हुए, ऐसी मान्यता है। **नाथ–पंथ या नाथ सम्प्रदाय का प्रार्दुभाव यौगिक क्रियाओं के** पुनरूद्धार के लिए हुआ। इस सम्प्रदाय के परम्परागत संस्थापक स्वयं आदिनाथ (भगवान शंकर) माने जाते है तथा इस पंथ के प्रथम मानव–गुरु श्रीमत्स्येन्द्रनाथ हैं। **हठयोग प्रदीपिका** के अनुसार–

हठविद्यां हि मत्स्येन्द्रनाथगोरक्षाद्या विजानते।।

नाथ–पंथ में नव–नाथ मुख्य कहे जाते है – गोरक्षनाथ, ज्वालेन्द्रनाथ, कारिणनाथ, गहिनीनाथ, चर्पटनाथ, रेवणनाथ, नागनाथ, भर्तृनाथ और गोपीचन्द्रनाथ। **नाथपंथ की योगशास्त्र** साधना, हठयोग, महर्षि **पतंजलि द्वारा प्रवर्तित योग के प्रयोगात्मक** निरूपण के रूप में विकसित स्वरूप है–

इसीलिए **हठयोग को अभ्यासिक दर्शन (Practicing Philosophy) भी कहा जाता है। हठयोग प्रदीपिका** में गुरु श्रीगोरक्षनाथ की गणना सिद्ध योगियों में की गयी है –

श्री आदिनाथ–मत्स्येन्द्र–शावरानन्द–भैरवाः।
चौरंगी–मीन–गोरक्ष–विरूपाक्ष–विलेशयाः।।

नाथ पंथियों में उर्ध्वरेता या अखंड ब्रह्मचारी होना सबसे उत्कृष्ट अवस्था होती है। इनका तात्विक सिद्धान्त है कि परमात्मा 'केवल' है तथा उसी परमात्मा तक पहुँचना ही मोक्ष या कैवल्य प्राप्त करना है। **वर्तमान मानव–जीवन में ही यह अनुभूति हो जाय नाथ–पंथ का यही लक्ष्य है क्योंकि जीवन में ही जीवन–मुक्ति की राह ढूढ़ने में सहायता करना नाथ–गुरुओं का उपदेशामृत हैं। नाथपंथी दैहिक काया को परमात्मा का घर–सदृभय मानते है इसीलिए काया को वर्तमान जीवन में ही मोक्षानुभूति कराने वाले यन्त्र के रूप**

में प्रतिष्ठित करते है। कैवल्य की **प्राप्ति के लिए नाथपंथी कायाशोधन की प्रक्रिया को अपनाते है। कायाशोधन में नाथपंथी यम,** नियम के साथ **हठयोग के शटकर्म (नेति, धौति, वस्ति, नौलि, कपालभाति और त्राटक) को अपनाते है।**

काशी की नागरी प्रचारिणी सभा की खोज में महायोगी **गुरु श्रीगोरक्षनाथ द्वारा लिखित निम्न पुस्तकें वर्णित है** – हठयोग, गोरक्षज्ञानामृत, गोरक्षकल्प, गोरक्षसहस्रनाम, योगबीज (संस्कृत में), महाथमंजरी (संस्कृति में), गोरक्षशतक (संस्कृत में), चतुरशीत्यासन (संस्कृत में), योगचिन्तामणि (संस्कृत में), योग महिमा (संस्कृत में), योगमार्तण्ड (संस्कृत में), योगसिद्धान्त पद्वति (संस्कृत में), विवेकमार्तण्ड (संस्कृत में), सिद्ध–सिद्धान्त पद्धति (संस्कृत में), गोरखबोध, दत्तगोरखसंवाद, गोरखनाथजी रापद, गोरखनाथ के स्फुटग्रन्थ, ज्ञान सिद्धान्त योग, ज्ञान विक्रम, योगेश्वरी साखी, नरवैबोध, बिरह–पुराण गोरखसार तथा ज्ञान तिलक।

महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ का अभिमत है कि निरंजन का ध्यान ही सर्वोपरि समर्पण है। अपनी रचना 'ग्यान **तिलक'** में **निरंजन के साक्षात्कार** पर प्रकाश डाला है –

अंजन माहिं निरंजन भट्या, तिलमुख भट्या तेलं।
मूरति माहिं अमूरत परस्या, भरा निरंतरि शेलं।।

श्रीगोरक्षनाथ ने योग–विद्या को अपनी साधना से न केवल समृद्ध किया बल्कि नाथ पंथ को भारतीय प्रायदीप के आध्यात्मिक–सामाजिक पुनर्जागरण का आधार भी बनाया। **नाथपंथ को सिद्धमत, सिद्धमार्ग, योगमार्ग, योग–सम्प्रदाय, अवधूत–मत, अवधूत सम्प्रदाय आदि नाम से भी जाना जाता है।** नाथ पंथियों ने योग को अनुभवजन्य धरातल दिया। श्रीगोरक्षनाथ जी द्वारा जलायी गयी अखंड धूनी आज भी प्रज्वलित है और इस अखंडदीप का प्रकाश क्रियायोग के महत्व वैश्विक आयाम दिया।

गुरु श्रीगोरक्षनाथ में अद्भूत एवं अपूर्व संगठनात्मक प्रज्ञा थी। साधु रहे या गृहस्थ रहे राजा महायोगी के निर्मम हथौड़े की चोट ने दोनों की कुरीतियों को चूर्ण कर डाला। ऊँच–नीच, छुआ–छूत, जात–पात जैसी प्रत्येक रूढ़ि पर चोट की। **श्रीगोरक्षनाथ ने अपने समय में ऐसे वैचारिकी का लोक भाषा में संदेश दिया जो मध्ययुगीन भक्ति आंदोलन जैसे प्रभावशाली धार्मिक–सामाजिक क्रान्ति की नींव साबित हुई।** हिन्दू–मुस्लिम एकता की प्रबलधारा के रूप में सूफी मत के नए संस्करण का भी उदय हुआ महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ के उपदेशामृत से।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने मत व्यक्त किया है कि आदि शंकराचार्य के बाद इतना प्रभावशाली और इतना महिमान्वित महापुरुष भारत वर्ष में नही हुआ। **भक्ति आन्दोलन**

के पूर्व सबसे शक्तिशाली धार्मिक आन्दोलन गोरखनाथ का योग–मार्ग ही था। भारत वर्ष की ऐसी कोई भाषा नहीं जिसमें गोरखनाथ से सम्बन्धित कहानियाँ न पायी जाती हो.... गोरखनाथ अपने युग के महान धर्म–नेता थे.... उन्होंने जिस धातु को छुआ वही सोना हो गया।

नाथपंथ में अनूठी परम्परा है– यहाँ शिष्य भी गुरु को राह दिखाते है– जाग मछन्दर गोरख आया– का निहितार्थ आज भी जन–मन में गुंजायमान है। **श्रीगोरक्षपीठ की महंत–परम्परा गुरु–शिष्य की ऐसी परम्परा है जिसमें पिता–पुत्र जैसी महक है।**

निष्कर्षतः **हम यह कह सकते है कि साधकों के कब्जे वाले योग को आम जन तक पहुँचा दिया महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ ने।** नर–नारी, अमीर–गरीब, सभी वर्गो, सभी जातियों, महलों एवं झोपड़ियों तक योग सर्वसमावेशी, सार्वभौमिक एवं सर्वोपयोगी ग्रहण गया। 'योग' अब सामाजिक जनांदोलन सदृश्य प्रतिष्ठित है। **नाथपंथ योगियों का राजनीति में प्रवेश भी राजनीति के शुद्धीकरण के लिए हुआ। हिन्दू चेतना के पुनरूद्धोर में वर्तमान गोरक्षपीठाधीश्वर परम पूज्य योगी आदित्यनाथ जी महाराज एवं माननीय मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश का अवदान कालजयी है।**

महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ की स्थापना का उद्देश्य यत्र–तत्र विकीर्ण मन्तव्यों एवं उपदेशों को समेकित कर विश्व के सम्मुख प्रस्तुत करना है। गोरखपुर विश्वविद्यालय में स्थापित यह शोध–संस्थान जिज्ञासुओं की नाथ–पंथ में निहित तात्विक–चिन्तन में अभिवृद्धि के साथ–साथ सामाजिक समरसता का संदेश भी संचरित करेगा।

संक्षेपतः **महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ के उद्देश्य एवं कार्य** निम्नवत है–

शोध सम्बन्धी एवं लोकाभिमुख उद्देश्य एवं कार्य

- **नाथ–पंथ के दर्शन एवं उसके अवदानों पर शोध करना।**
- महायोगी श्रीगोरक्षनाथ **प्रवर्तित योग के दार्शनिक एवं आयुर्विज्ञान सम्बन्धी पक्षों** का विश्लेषण करना।
- नाथ–पंथ की **दार्शनिक पृष्ठभूमि एवं व्यावहारिकता का आकलन** करना।
- नाथ परम्परा के **सामाजिक अवदान का आकलन एवं अनुप्रयोग** करना।
- **राष्ट्रीय पुनर्जागरण में नाथ–पंथ की भूमिका का अध्ययन** करना।

- **राष्ट्रीय आंदोलन में नाथ–पंथ की भूमिका का अध्ययन** करना।
- **वर्तमान युग में सांस्कृतिक, सामाजिक एवं राजनीतिक नवजागरण में नाथ–पंथ की भूमिका** का अध्ययन करना।
- **नाथ–पंथ के विश्वकोष का निर्माण** करना।
- **नाथ–पंथ से सम्बन्धित साहित्य का प्रामाणिक विवरण** तैयार करना।
- **नाथ–पंथ से सम्बन्धित बाह्य शोध–अध्येताओं के प्रबन्धों का प्रकाशन** करना।
- **शड्मासिक पत्रिका का प्रकाशन** करना।
- **भक्ति आन्दोलन एवं नाथ–पंथ के अन्तःसम्बन्धों का समीक्षात्मक अध्ययन** करना।
- भारत सहित **विश्व भर में स्थापित नाथ–पीठों का अध्ययन** एवं उनके अवदान का आकलन करना।
- **भक्ति आंदोलन में नाथ–पंथ के योगदान का आकलन** करना।
- **नाथ–पंथ के योगियों की परम्परा के विकास** को रेखांकित करना।
- **नाथ–पंथ के अन्य दार्शनिक प्रस्थानों के साथ अन्तःसम्बन्धों का अध्ययन** करना।
- **वर्तमान वैश्विक समस्याओं के समाधान में नाथ–पंथ की भूमिका** का अन्वेषण करना।
- **मासिक, त्रैमासिक, शड्मासिक तथा वार्षिक संगोष्ठियों एवं कार्यशालाओं का आयोजन करना** एवं शोध–कार्यो एवं निष्कर्षों का प्रकाशन करना।
- **नाथ–पंथ पर आधारित Add-on डिप्लोमा पाठ्यक्रम** आदि का संचालन करना।
- **पी–एच.डी. उपाधि हेतु शोधार्थियों का प्रवेश प्रारम्भ करना।**
- नाथ–पंथ से सम्बन्धित शैक्षिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा राजनीतिक कार्यानुरूप **महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ द्वारा वार्षिक–राज्यस्तरीय तथा राष्ट्रीय पुरस्कारों की स्थापना** करना।
- **नाथ–पंथ से जुड़ी सामग्रियों के लिए संग्रहालय की स्थापना** करना।

- **महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ** के उद्देश्यों की सम्पूर्ति के लिए **सरकारी तथा स्वैच्छिक बाह्य संगठनों से आर्थिक** सहयोग प्राप्त करना।
- भारत एवं विश्व में सहयोगार्थ महायोगी **गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोध–पीठों की स्थापना तथा संचालन करना।**

अद्यतन स्थिति –

- उच्च शिक्षा अनुभाग–4, उ.प्र. शासन के **शासनादेश संख्या–1090/सत्तर–4–2018–106(4–शोधपीठ)/2018 दिनांक 06.08.2018 द्वारा श्री राज्यपाल ने महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ भाोधपीठ, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर की स्थापना** हेतु **शैक्षिक एवं शिक्षणेत्तर पदों को सृजित करने** हेतु स्वीकृति प्रदान की। **इस शासनादेश द्वारा महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ में आचार्य (निदेशक), सह–आचार्य (उपनिदेशक), सहयुक्त आचार्य (सहायक निदेशक), सहयुक्त शोधअध्येता, वरिष्ठ शोध–अध्येता, कनिष्ठ शोध अध्येता, सहायक पुस्तकालयाक्षय, कैटलागर, तकनीकज्ञ, डाटा इंट्री आपरेटर, प्रशासनिक अधिकारी, कनिष्ठ सहायक, चतुर्थ श्रेणी कुल 28 पदों का सृजन किया गया है।**
- महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ को संचालित करने हेतु प्रस्तावित **अध्यादेश, नियम व विनियमन को श्री राज्यपाल के अनुमोदनार्थ दिनांक 06 अक्टूबर, 2018 को प्रेषित किया गया।**
- संस्कृति विभाग, उत्तर प्रदेश शासन के संस्कृति अनुभाग का शासनादेश संख्या–3844/चार–2018– 11(बजट)/2018 दिनांक 26 नवम्बर, 2018 के अनुसार **महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ हेतु चार मंजिला भवन निर्माण के लिए उत्तर प्रदेश राज्य निर्माण निगम (UPRNN)** को अधिकृत किया गया है।
- **महामहिम श्री राज्यपाल की** अध्यादेश, नियम व विनियमन पर **संस्तुति प्राप्ति के पश्चात्** महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ में शैक्षिक एवं शिक्षणेत्तर पदों के **विज्ञापन करने की योजना है।** महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ में **शैक्षिक एवं शिक्षणेत्तर पदों पर चयन–प्रक्रिया को शीघ्रातिशीघ्र प्रारम्भ किया जाना है।**

आंतरिक सुरक्षा चुनौतियां : गोरखपुर परिक्षेत्र की भूमिका तथा संभावनाएं

प्रोफेसर विनोद कुमार सिंह
डॉ प्रवीण कुमार सिंह
सुमित गुप्ता

'आंतरिक सुरक्षा चुनौतियां फन फैलाए सर्प की भाँति है।'

– कौटिल्य

21 वी सदी का विकासशील से विकसित की ओर अग्रसर होता भारत राजनैतिक, स्त्रातेजिक व कूटनीति के क्षेत्र में विश्व पटल पर अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज करा चुका है। आज भारत यू एन से लेकर एस सी ओ तक तथा वैसेनर अरेंजमेंट से लेकर ऑस्ट्रेलियन ग्रुप तक का स्थाई सदस्य बन चुका है। ब्रुकिंग इंस्टीट्यूट के विद्वान प्रोफेसर स्टीफन पी. कोहन की बात चरितार्थ होती दिखाई देती है कि अगर विश्व बहुध्रुवीय है तो इसमें कम से कम 6 ध्रुव होंगे, जहां भारत, जापान व चीन अपने–अपने में एक – एक ध्रुव होंगे। इन सब विशेषताओं व अलंकरणों की उपस्थिति के बावजूद सुकमा (3 मार्च 2018) की घटना देश की सुरक्षा व्यवस्था पर प्रश्न चिन्ह लगाती है। आज नक्सलवाद, माओवाद, मानव तस्करी, मादक द्रव्यों की तस्करी, नृजातीय विषमता, छोटे हथियारों की कालाबाजारी आदि आंतरिक सुरक्षा के लिए बड़ी चुनौती है।

राप्ती–रोहिणी के संगम में बसा कटोरेनुमा भौगोलिक संरचना को धारण किए हुए सिद्धयोगी गोरक्षनाथ की तपस्थली गोरखपुर का आध्यात्मिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक महत्व के साथ साथ स्त्रातेजिक महत्व भी है। पौराणिक काल में इक्ष्वाकु वंश द्वारा शासित गोरखपुर

परिक्षेत्र निरंतर राजनीतिक व स्त्रातेजिक आकांक्षाओं का केंद्र रहा है। चाहे वह मध्यकाल के गुर्जर प्रतिहारों का शासन हो या स्वतंत्रता संग्राम काल की चौरी–चौरा की घटना हो।

गोरखपुर परिक्षेत्र जिसमें उत्तर प्रदेश बिहार और नेपाल सीमा से लगा हुआ है, जिसे पूर्वी उत्तर प्रदेश का हृदय स्थल माना जाता है। यह परिक्षेत्र त्रि–संधि जैसी व्यवस्था को धारण किए हैं। यह परी क्षेत्र भारत नेपाल सीमांत व उत्तर प्रदेश तथा बिहार के जिलों को समाहित किए हुए हैं। इसमें मुख्यतः उत्तर प्रदेश के 3 मंडलों बस्ती, देवीपाटन व गोरखपुर के क्षेत्र तथा बिहार के सारण व चंपारण जिलों के क्षेत्र समाहित हैं। भौगोलिक दृष्टि से यह परिक्षेत्र मध्य हिमालय की धौलागिरी शिखर की तलहटी में बसा सरयू (घाघरा) व गंडक नदियों द्वारा घिरा हुआ है। इस परिक्षेत्र में औसत से अधिक वर्षा बाहर की भी परिस्थितियां रहती हैं। सूक्ष्म लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय की रिपोर्ट ब्रीफ इंडस्ट्रियल प्रोफाइल ऑफ गवर्नमेंट गोरखपुर डिस्ट्रिक के अनुसार इस क्षेत्र में संसाधनों में बालू है जो इस क्षेत्र में बहने वाली सतत वाहिनी नदियों से प्राप्त होती है।

संभावित आंतरिक सुरक्षा चुनौतियों की बात की जाए तो यह क्षेत्र कई सुरक्षा व्यवस्थाओं की उपस्थिति के बावजूद संवेदनशील व महत्वपूर्ण है। भारत नेपाल शांति व मित्रता संधि 1950 के तहत दोनों तरफ के नागरिकों को अबाध्य आवागमन (खुली सीमा) की सुविधा प्राप्त है तथा बिहार राज्य से इस क्षेत्र की सीमा मिलती है। वर्तमान परिस्थितियों पर नजर डालें तो विराटनगर, जोगबनी, बीरगंज–रक्सौल, नेपालगंज, रूपैदिहा व भैरहवा–नौतनवा में खुली सीमा पारगमन व्यवस्था है। इन सब क्षेत्रों से आवागमन से गोरखपुर परिक्षेत्र को अत्यधिक संवेदनशील बनाता है। इस परिक्षेत्र में कई संभावित आंतरिक सुरक्षा चुनौतियां है।

प्रथम आंतरिक सुरक्षा चुनौती मानव तस्करी की है। इंडिया टुडे न्यूज के अनुसार 2015 की भूकंप के पश्चात हर दिन 50 नेपाली महिलाओं की तस्करी भारत में हो रही है जो संभवता आगे जाकर अन्य राष्ट्रों को की जाती है। इन तस्करों को संभावित प्रवेश मार्ग इन क्षेत्रों से भी हो सकता है। **सरकार ने इस परिपेक्ष्य में विस्तृत प्रति तस्करी बिल 2018 को 18 जुलाई 2018 को लोकसभा में लाया।** दूसरी चुनौती मादक द्रव्यों की तस्करी है। नार्कोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो के वार्षिक प्रतिवेदनों पर यदि ध्यान दिया जाए तो भारत नेपाल सीमा से एक बड़ी मात्रा में मादक द्रव्यों की तस्करी होती है। 9 मार्च 2017 को 38 किलोग्राम चरस के साथ दो लोगों को बरेली में, 16 जून 2017 को 24 किलोग्राम अफीम व 53 किलोग्राम चरस के साथ गोरखपुर में 3 व्यक्तियों को तथा 16 सितंबर को 102 किलोग्राम चरस के साथ नरकटियागंज में पकड़ा गया। ये सभी अपराधी नेपाल से जुड़े थे या इन्हें सप्लाई करने वाले लोग नेपाल में थे। नार्कोटिक्स कंट्रोल व्यूरो अपने वार्षिक प्रतिवेदन में इस बार का दावा करता है कि इन मादक

द्रव्यों की तस्करी से प्राप्त धन का लाभ आतंकवादी व नक्सलवादी संगठनों को दिया जाता है। तीसरी चुनौती माओवाद की है। बिहार सीमा से लगे होने के कारण इस परिक्षेत्र में माओवाद की भी समस्या है। कथित माओवादी कार्यकर्ता आशा मुंडा को फरवरी 2010 में गोरखपुर से ही गिरफ्तार किया गया था। चौथी चुनौती नक्सलवाद की है। इस परिक्षेत्र में ही नहीं वरन संपूर्ण भारत में के लिए यह एक बहुत बड़ी चुनौती है। हिंदुस्तान टाइम्स 28 फरवरी 2006 की रिपोर्ट के अनुसार एक सर्वे में 680 भारतीय गांव को नक्सल प्रभावित बताया गया है। इसमें गोरखपुर मंडल के 26 गाँवो के नक्सल प्रभावित होने की संभावना जताई गई थीं। सोसाइटी ऑफ द स्टडी ऑफ पीस एंड कनफ्लिक्ट के एक अध्ययन " फाइंडिंग ए न्यू हेवन ग्रोइंग ऑफ नक्सलिज्म इन इंडिया" में भी गोरखपुर परिक्षेत्र को संभावित रूप से नक्सलवाद प्रभावित माना है। पाँचवीं चुनौती नृजातीय विषमांगता की समस्या है। नेपाल और बिहार की सीमा से लगे होने के कारण इस क्षेत्र में दो तरह की जातीयता पाई जाती है। ऑस्ट्रेलियड् मिश्रित जो मूलत गंगा के मैदानी भाग की ओर से दूसरी मंगोलियाइड् मिश्रित जिसमें पहाड़ी व बिहार क्षेत्र के लोग आते हैं। दोनों जातियों नृजातीयताओं के मध्य समन्वय अपने में एक चुनौती है। अवैध हथियारों की तस्करी भी इस क्षेत्र की प्रमुख चुनौती है। लघु हथियारों की कालाबाजारी की अधिकता इसलिए भी है क्योंकि इन छोटे हथियारों को ले जाने, लाने व रखने में आसानी होती है। साथ ही इनकी कीमत कम होने के कारण इनके क्रय–विक्रय भी सरल होता है। भैरहवा बाजार, नेपालगंज बाजार आदि इन कालाबाजारिओं के संभावित क्षेत्र है। काठमांडू पोस्ट के अनुसार नेपाल में 3,30,000 से अधिक अवैध असलाहधारी व्यक्ति हैं जिनमें कई तस्कर भी शामिल है।

उपर्युक्त वर्णित सभी आंतरिक सुरक्षा चुनौतियों के बावजूद इस परिक्षेत्र में कई ऐसी व्यवस्थाएं व कानून सरकार द्वारा स्थापित किए गए हैं जिनसे इस क्षेत्र की गरिमा शांति व समृद्धि को बनाए रखा जा सकता है। इसमें भारतीय वायु सेना की "फलेमिंग एरो" कूट नाम वाली 27 स्क्वाड्रन, जिसकी स्थापना 15 फरवरी 1957 को की गई है, है। इस स्क्वाड्रन ने वर्ष 1965 के भारत–पाक युद्ध व 1971 की भारत–पाक युद्ध में सफल व ओजस्वी भूमिका निभाई है।

इस परिक्षेत्र में वर्ष 2011 से सशस्त्र सीमा बल रिक्रूटमेंट ट्रेनिंग सेंटर स्थापित है जो 1 फरवरी 2005 से अस्थाई रूप में बनाया गया था । सशस्त्र सीमा बल भारत नेपाल सीमा की निगरानी में अग्रसर है।

इस परिक्षेत्र में पर्यावरण और वन मंत्रालय के अधीन वन जीव अपराध नियंत्रण ब्यूरो की पांच में से एक बॉर्डर इकाई गोरखपुर में स्थित है। इस परिक्षेत्र के कुल 1710 वर्ग किलोमीटर

वनाच्छादित क्षेत्र है जिसके वन्य संसाधनों के संरक्षण का उत्तर दायित्व इस इकाई द्वारा निभाया जा रहा है। वन्य जीवों तथा वन संसाधनों की तस्करी को भी यह इकाई रोकने का कार्य करती है।

इसके अलावा भारत सरकार द्वारा लाए गए कानून जैसे प्रिवेंशन आफ मनी लॉन्ड्रिंग एक्ट 2002, अनलॉफुल एक्टिविटीज प्रीवेंशन एक्ट 1967, नेशनल सिक्योरिटी एक्ट तथा उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा लाया गया कानून उत्तर प्रदेश कंट्रोल आफ ऑर्गेनाइज्ड क्राइम एक्ट इस क्षेत्र को सजग व सुरक्षित बनाते हैं।

गोरखपुर परिक्षेत्र की भू–अवस्थिति तथा सांस्कृतिक राजनैतिक ढांचे के फलस्वरूप यह क्षेत्र उत्तर प्रदेश ही नहीं वरन संपूर्ण राष्ट्र के लिए संभावनाएं धारण किए हैं जिनमें से कुछ संभावनाएं निम्न प्रकार हैं –

- भू–अवस्थिति के कारण इस क्षेत्र में सैनिक और अर्धसैनिक बलों की प्रशिक्षण केंद्रों की स्थापना की जा सकती है जिनमें जंगल यूनिट विशेष हैं,
- सैनिक प्रयाण केंद्र के रूप में भी इस परिक्षेत्र को स्थापित किया जा सकता है जिसमें उत्तर–पूर्वी सिरे से आने वाली चीनी खतरों को भविष्य में रोका जा सकेगा,
- इस परिक्षेत्र में पार – राष्ट्रीय क्रियाकलापों जैसे अवैध प्रवास, सीमा पार आतंकवाद आदि को नियंत्रित करने के लिए विशेष इकाई दल को स्थापित किया जा सकता है,
- नेपाल और चीन के साथ संबंध सुदृढ़ करने तथा आपसी गतिविधियों को सकारात्मक दिशा देने में यह परिक्षेत्र महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकता है।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि गोरखपुर परिक्षेत्र का आध्यात्मिक सांस्कृतिक राजनीतिक महत्त्व के साथ–साथ स्त्रातेजिक व सुरक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान होगा। यह परिक्षेत्र भविष्य में कई सारी स्त्रातेजिक, सैन्य व राष्ट्रीय सुरक्षा संबंधी क्षेत्रों में आधारभूत भूमिका अदा कर सकता है। इस परिक्षेत्र में सुरक्षा व्यवस्था के सुदृढ़ीकरण हेतु कई संभावनाएं हैं।

खेल

चन्द्रविजय सिंह

गोरखपुर शहर का खेल का इतिहास बहुत ही गौरवशाली रहा है। विशेष रूप से कुश्ती, हाकी, बैडमिन्टन जैसे खेलों में इस शहर ने अनेकों दिग्गज खिलाड़ी दिये हैं जिन्होंने राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय और ओलम्पिक तक जाकर शहर, प्रदेश और देश का नाम रोशन किया। बैडमिन्टन में स्व. सैय्यद मोदी (अर्जुन एवार्डी), हाकी में अली सईद, श्रीमती प्रेममाया, डा. आर.पी. सिंह, रंजना गुप्ता, दिवाकर राम, प्रीती दुबे, मुक्ता वारला तथा कुश्ती में स्व. ब्रह्मदेव मिश्रा, स्व. जनार्दन सिंह, स्व. तालुकदार यादव, पन्नेलाल यादव, दिनेश सिंह, रामाश्रय यादव, जनार्दन सिंह यादव, चन्द्र विजय सिंह, अमरनाथ यादव, यशपाल जैसे खिलाड़ियों ने राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर कीर्तिमान स्थापित किए। इनके अलावा स्वीमिंग, कबड्डी, एथेलेटिक्स, वालीबाल जैसे खेलों में भी राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर शहर के खिलाड़ियों ने एक अलग पहचान बनाई। विगत वर्षों से खेल को प्रोत्साहन देने के लिए सरकार द्वारा अनेक सरकारी योजनाएं चलाई जा रही हैं जिसमें 1989 से संचालित बीर बहादुर सिंह स्पोर्ट्स कालेज है। इस कालेज में कुश्ती, वालीबाल जिम्नास्टिक एवं महिला हाकी जैसे खेलों का संचालन होता है। उसी प्रकार स्पोर्ट्स हास्टल 1988 से रिजनल स्टेडियम में कुश्ती एवं बास्केटबाल का संचालन होता हैं जिससे अनेकों राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय खिलाड़ी निकले हैं।

विगत एक वर्षों में वर्तमान सरकार ने गोरखपुर में खेलो को बढ़ाने के लिए अत्यंत सराहनीय कार्य किया है। जिसमें स्पोर्टस कालेज में एस्ट्रोटर्फ (हाकी) ग्राउण्ड, कुश्ती हाल का निर्माण, रिजनल स्टेडियम में कबड्डी इण्डोर एवं कबड्डी मैट, वेट लिफ्टिंग हाल का निर्माण एवं राष्ट्रीय कबड्डी प्रतियोगिता का आयोजन जंगल कौड़ीराम के पास राष्ट्रीय स्तर के स्टेडियम का निर्माण प्रमुख हैं। ये सभी गोरखपुर एवं पूर्वी यू.पी. के खिलाड़ियों और खेल को

कोच, भारतीय कुश्ती टीम एवं सहायक खेल अधिकारी पूर्वोत्तर रेलवे गोरखपुर

बढ़ावा देने में सरकार का एक बहुत ही सराहनीय कदम रहे हैं। इनके अलावा प्रदेश सरकार ने खिलाड़ियों को राजपत्रित अधिकारी की नौकरी देने का सराहनीय प्रयास किया। प्रदेश के उदयीमान एवं प्रदेश का नाम राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर रोशन करने वाले खिलाड़ियों को लक्ष्मण पुरस्कार एवं रानी लक्ष्मीबाई पुरस्कार से सम्मानित करने का कार्य भी किया गया है।

एक खिलाड़ी एवं कोच होने के नाते सरकार से मेरा एक सुझाव और आग्रह है कि गोरखपुर और इसके आसपास के इलाकों में ग्रामीण खेलों जैसे कुश्ती, कबड्डी, हॉकी, वालीबाल, एथलेटिक्स में बहुत ही प्रतिभाशाली खिलाड़ी हैं। इनकी प्रतिभा को निखारने के लिए ब्लाक स्तर पर हर ब्लाक में एक मिनी स्टेडियम का निर्माण या जो भी पुराने अखाड़े या क्लब चलते हो उनको विकसित करके अत्याधुनिक खेल उपकरण और कोच की व्यवस्था की जाय तो ग्रामीण अंचल से बहुत ही अच्छे खिलाड़ी निकल सकते हैं क्योंकि दूर गांव से शहर में आकर ट्रेनिंग करके वापस जाना ग्रामीण खिलाड़ियों के लिए सम्भव नहीं है। मैं एक और आग्रह करना चाहता हूँ कि गोरखपुर में सरकार द्वारा संचालित किये जाने वाले खेल छात्रावास एवं स्पोर्ट्स कालेज में जिन खेलों का प्रशिक्षण बन्द कर दिया गया है उन्हें फिर से शुरू कर दिया जाए तथा कुछ नए खेलों को भी शामिल किया जाय। जैसे छात्रावास गोरखपुर में शुरू से हो पुरूष हाकी खेल का संचालन होता था लेकिन इसको बन्द कर दिया गया उसको पुनः शामिल किया जाय एवं स्पोर्टस कालेज गोरखपुर में कबड्डी एवं बैडमिन्टन जैसे खेलों को भी शामिल किया जाये क्योंकि इन खेलों में प्रदेश एवं खासकर पूर्वांचल गें बहुत ही प्रतिभाशाली बच्चे हैं। इन खेलों ने यहाँ के खिलाड़ियों ने हमेशा से राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर शानदार प्रदर्शन किया है।

राष्ट्रीय सेवा योजना
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

डॉ. केशव सिंह

राष्ट्रीय सेवा योजना का बोध वाक्य 'मुझे नहीं आपके लिए' (Not Me But You) स्वयं इस बात का उद्घोष करता है कि राष्ट्र का नागरिक समाज के उन्नति और प्रगति के लिए कार्य करे। शिक्षा के साथ उनमें संस्कार का विकास हो। कुशल एवं उत्तरदायित्व पूर्ण नागरिक समाज का निर्माण करने का उद्देश्य इस ध्येय वाक्य में समाहित है। समाज के गरीब, संसाधन विहीन और हासिये के लोगों के विषय में संवेदनशील बने, सहयोग की भावना का विकास युवा पीढ़ी में हो। इस दृष्टि से राष्ट्रीय सेवा योजना दो क्षेत्रों में विशेष रुप से कार्य करता है। पहला कि वह अपने स्वयं सेवक एवं स्वयं सेविकाओं के अन्दर समाज और मानव के प्रति प्रेम, सद्भाव और सेवा के प्रति विशेष दृष्टिकोण का विकास करता है। दूसरा इन स्वयं सेवकों और स्वयं सेविकाओं द्वारा विभिन्न कार्यक्रम, योजनाओं और प्रक्रियाओं के माध्यम से न केवल समाज के ऐसे लोग जो मुख्य धारा से वंचित हैं, गरीब हैं, संसाधन विहीन हैं, के बीच जाकर उनकी आवश्यकताओं और अपेक्षाओं को समझते हैं, उसको पूरा कराने का प्रयास करते हैं। इससे पढ़े–लिखे युवा संवेदनषील बनते हैं एवं सकारात्मक दृष्टि का विकास होता है। इस प्रकार राष्ट्रीय सेवा योजना युवकों के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करता है। इसी को दृष्टि में रखकर राष्ट्रीय सेवा योजना के तत्वावधान में वर्ष 2018 में विभिन्न कार्यक्रम सम्पन्न हुए।

- भारतीय परम्परा में राष्ट्र को सर्वोपरि स्थान प्राप्त है। राष्ट्रीय सेवा योजना भी मूल मंत्र के साथ कार्य करता है। प्रतिवर्ष दिल्ली में गणतंत्र दिवस परेड में राष्ट्रीय सेवा योजना की ओर से चयनित स्वयं सेवक/स्वयं सेविका सम्मानित होकर गोरखपुर का नाम रोशन करते रहे हैं। इस वर्ष भी परेड हेतु चयन करने के लिए 29 सितम्बर को विश्वविद्यालय के ग्राउण्ड में विभिन्न महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालय से आये हुए बड़ी

*कार्यक्रम समन्वयक, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर, विश्वविद्यालय, गोरखपुर

संख्या में स्वयं सेवक/स्वयं सेविका सम्मानित हुयी। इस प्रकार के आयोजन से न केवल इसमें भाग लेने वाले युवाओं में राष्ट्र प्रेम की भावना विकसित होती है बल्कि महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों के अन्य युवा छात्र–छात्राओं में भी राष्ट्रीयता, अनुशासन का भाव उत्पन्न होता है। इस कार्यक्रम में चयनित स्वयं सेवक/स्वयं सेविकाओं को रांची में आयोजित शिविर में प्रशिक्षित किया गया।

- हम सब जानते हैं कि मन की मजबूती ही कार्य की मजबूती का परिचायक होता है। बिम्ब मानसिक स्वास्थ्य दिवस पर 15 अक्टूबर को व्याख्यान कार्यक्रम के माध्यम से स्वयं सेवकों एवं स्वयं सेविकाओं को मानसिक परिवेश, पर्यावरण एवं उसकी जटिलताओं के विषय में विश्वविद्यालय के मनोविज्ञान विभाग के प्रो. धनन्जय कुमार ने सम्बोधित किया।

- भारत में जनसंख्या वृद्धि स्वाभाविक रूप में एक जटिल समस्या रही है। दिनो–दिन बढ़ती जनसंख्या और कम होते प्राकृतिक संसाधन भविष्य के लिए एक बड़े खतरे का संकेत है। राष्ट्रीय सेवा योजना इससे लगातार चिंतित होता रहा है। इसी क्रम में गोरखपुर और उसके आस–पास के क्षेत्रों में जनजागरण के माध्यम से जनसंख्या नियन्त्रण के प्रयास हेतु सिफ्सा नामक एजेन्सी के साथ मिलकर दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया।

- स्वच्छ भारत मिषन के अन्तर्गत राष्ट्रीय सेवा योजना वृहत्तर स्वच्छता अभियान चला कर गांव–गांव, शहर–शहर, गली–गली जनजागरण करने का कार्य अनवरत करता रहा है। 22 अक्टूबर को विश्वविद्यालय परिसर में आयोजित शपथ ग्रहण कार्यक्रम के माध्यम से 700 वालेन्टियर स्वयं स्वच्छ रहने, अपने परिवार को स्वच्छ रहने, अपने गांव, शहर को स्वच्छ रखने हेतु प्रेरित करने का शपथ दिलाया गया। स्वच्छता के साथ–साथ पर्यावरण संरक्षण का संदेश, पौधारोपण के माध्यम से दिया गया। स्वच्छता अभियान के अन्तर्गत विश्वविद्यालय परिसर में कुलपति, शिक्षक, कर्मचारी एवं स्वयं सेवक/स्वयं सेविकाओं ने साफ–सफाई किया।

- सामाजिक समरसता का संदेश वाल्मिकी जयंती के माध्यम से स्वयं सेवकों/स्वयं सेविकाओं को देने के उद्देश्य से 24 अक्टूबर को विश्वविद्यालय परिसर में कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के सभी इकाईयों के स्वयं सेवक/सेविकाएं उपस्थित रहे।

- जनजागरण अभियान के अन्तर्गत राष्ट्रीय सेवा योजना के वालेन्टियर्स से 24 अक्टूबर को यातायात जागरूकता नियन्त्रण दिवस कार्यक्रम के अन्तर्गत गोलघर चेतना तिराहे पर पंक्तिबद्ध खड़े होकर वैनर पोस्टर एवं यातायात के समय सावधानियों से सम्बन्धित पर्चे बांटे। हेलमेट पहनने वालों को गुलाब का फूल देकर प्रोत्साहित करने का प्रयास

किया गया। जो लोग बगैर हेलमेट एवं सीट बेल्ट के थे उन्हें उससे होने वाले नुकसान के विषय में जानकारी दी गयी और भविष्य में यातायात नियमों का पालन करने का आग्रह किया गया।

- भारत की राष्ट्रीय एकता अखण्डता के महानायक सरदार बल्लभ भाई पटेल की जयंती पर 31 अक्टूबर को विश्वविद्यालय परिसर में आयोजित कार्यक्रम के माध्यम से युवा में सरदार पटेल का राष्ट्र के लिए किये गये योगदान का उल्लेख करते हुए यह बताने का प्रयास किया गया कि प्रत्येक भारतीय को अपने राष्ट्र और समाज के प्रति अनुराग का भाव रखना चाहिए। राष्ट्र की अखण्डता अक्षुण्ण बनी रहे इसके लिए निरंतर प्रयासरत रहना चाहिए। इस अवसर पर इस अवसर पर वालेन्टियर्स को राष्ट्रीय एकता के लिए कार्य करने की शपथ भी दिलाई गयी। इसी दिन 'इन फॉर यूनिटी' कार्यक्रम के माध्यम से राष्ट्र की एकता को अक्षुण्ण बनाये रखने का संदेश गोरखपुर के लोगों के बीच वालेन्टियर्स द्वारा शहर में दौड़ लगाकर दिया गया। 'इन फॉर यूनिटी', छात्रसंघ, कुलपति आवास, मण्डलायुक्त कार्यालय, अम्बेडकर चौक, हरिओम नगर, जिलाधिकारी आवास होते हुए विश्वविद्यालय के मुख्य द्वार पर सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम में सैकड़ों युवा–युवतियों ने सहभागिता किया। सरदार पटेल की जयंती पर ही सायं काल राष्ट्रीय सेवा योजना के तत्वावधान में सरदार पटेल का भारत की एकता अखण्डता में योगदान विषयपर संगोष्ठी का आयोजन संवाद भवन में किया गया। कार्यक्रम में युवा वैचारिक कुंभ के संयोजक तथा यूथ इन एक्शन के राष्ट्रीय संयोजक री शतरूद्र जी मुख्य अतिथि के रुप में उपस्थित होकर ''स्वयं सेवक/सेविकाओं को राष्ट्र और एकता में युवाओं की भूमिका'' विषय पर विस्तार से चर्चा किया।
- स्वास्थ्य जागरूकता के अन्तर्गत मधुमेह दिवस पर 14 नवम्बर को राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के साथ मिलकर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में वालेन्टियर्स को विशेषज्ञ चिकित्सकों द्वारा यह बताया गया कि कैसे आज के इस प्रतिकूल परिवेश में हम स्वयं मधुमेह जैसे बिमारियों से बचें और समाज के अन्य लोगों को बचाएं। इस कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के 500 वालेन्टियर्स उपस्थित रहे।
- बेटी बचाओ और बेटी पढ़ाओ कार्यक्रम के अन्तर्गत 20 नवम्बर को विश्वविद्यालय परिसर में संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में उपस्थित वालेन्टियर्स में कइयों ने अपना विचार व्यक्त किया। अन्त में सभी उपस्थित लोगों ने यह संकल्प लिया कि अपने परिवार और अपने समाज में बेटियों को सम्मान देना, उन्हें आगे बढ़ने में मदद करना, आज राष्ट्र की एक बड़ी जरूरत है और इसे सभी पूरा करेंगे।
- योग व्यक्ति के जीवन का अनमोल हिस्सा है। योग द्वारा न केवल शरीर वरन् मस्तिष्क भी स्वस्थ रहता है। राष्ट्रीय सेवा योजना के प्रमुख कार्यक्रमों में योग पर विशेष फोकस

रहता है। उसी क्रम मं 30 नवम्बर को विश्वविद्यालय परिसर में 'योग संगम' नाम से व्यापक स्तर पर योग के आध्यात्मिक एवं सैद्धान्तिक पक्ष पर योग के विषयमें प्रतिष्ठित व्याख्याताओं का उद्‌बोधन का कार्यक्रम एवं योग के व्यावहारिक पक्ष पर योग की विभिन्न क्रियाओं का अभ्यास कराया गया। योग संगम के इस महत्वाकांक्षी कार्यक्रम में उत्तर प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री महंत योगी आदित्यनाथ जी महाराज तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के चेयरमैन डॉ. डी.पी. सिंह ने योगाभ्यासी वालेन्टियर्स को सम्बोधित किया। योग संगम का यह कार्यक्रम अपने आप में अभी तक के राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्यक्रम में सबसे वृहद था। इस कार्यक्रम में विश्वविद्यालय सहित सभी सम्बद्ध महाविद्यालयों, इण्टरमीडिएट कालेजों के लगभग 25000 वालेन्टियर्स ने सहभागिता किया। वास्तव में गोरखपुर में इस प्रकार का योग पर यह कार्यक्रम अब तक व्यापक उद्‌देश्य से आयोजित किया गया सबसे बड़ा कार्यक्रम था। एक साथ 25000 वालेन्टियर्स और सैकड़ो कार्यक्रम अधिकारी, प्राचार्यों तथा शिक्षकों के बीच योग की प्रतिष्ठा अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

- स्वच्छता जनजागरण रैली 01 दिसम्बर को सम्पूर्ण गोरखपुर में स्वच्छता जनजागरण के उद्‌देश्य से विभिन्न विद्यालयों के बच्चों द्वारा निकाली गयी। राष्ट्रीय सेवा योजना के 1000 वालेन्टियर्स से इस जनजागरण रैली में सहभाग कर लोगों का स्वच्छता का संदेश दिया। रैली कार्यक्रम का शुभारम्भ उ.प्र. के माननीय मुख्यमंत्री जी द्वारा हरी झण्डी दिखाकर किया गया।

- राष्ट्रीय सेवा योजना और मानव सेवा एक दूसरे के पर्याय हैं। 06 दिसम्बर को विश्वविद्यालय परिसर में राष्ट्रीय सेवा योजना के तत्वावधान में रक्तदान षिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में वालेन्टियर्स सहित कुल 81 लोगों ने रक्तदान किया। 100 से अधिक लोगों ने रक्तदान के लिए अपना पंजीकरण भी कराया। रक्तदान के द्वारा यह संदेश दिया कि युवा इस बात के लिए प्रेरित हों कि समाज में उनके सहयोग और सहभागिता की महती आवश्यकता है। दूसरे की सेवा में ही राष्ट्र की सेवा निहित है।

- स्वच्छता और श्रमदान के प्रति जागरूकता हेतु 08 दिसम्बर को विश्वविद्यालय परिसर में स्वैच्छिक श्रमदान कार्यक्रम का आयोजन कर स्वच्छता के जागरूकता बढ़ाने की बड़ी पहल की शुरूआत राष्ट्रीय सेवा योजना के तत्वावधान में किया गया। स्वैच्छिक श्रमदान कार्यक्रम में विभिन्न विषयों के प्राध्यापक, कर्मचारीगण एवं बड़ी संख्या में वालेन्टियर्स ने हिस्सेदारी की। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलपति जी ने श्रम के महत्व और स्वच्छता की आवश्यकता पर उपस्थित वालेन्टियर्स के बीच अपना उद्‌बोधन भी दिया।

- गोरखपुर शहर को स्वच्छ एवं सुन्दर बनाने के क्रम में राष्ट्रीय सेवा योजना के तत्वावध

ाान में 12 दिसम्बर को नगर निगम के सहयोग से दिवाल पेन्टिंग कार्यक्रम के द्वारा बड़ी संख्या में वालेन्टियर्स को कला और पेन्टिंग के प्रति प्रेरित किया गया।

- युवा में बौद्धिक और क्रियात्मक गुण की अपार सम्भावनाएं होती है। भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री स्व. अटलबिहारी बाजपेयी के जन्मदिवस के अवसर पर 24 एवं 25 दिसम्बर को राष्ट्रीय सेवा योजना के तत्वावधान में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। जिसमें प्रमुख रुप से भाषण, काव्य पाठ और निबन्ध लेखन आदि प्रतियोगिताएं आयोजित हुयी।
- स्वच्छता और पर्यावरण सुरक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण अभियान के अन्तर्गत कुलपति आवास से छात्रसंघ चौराहे के रास्ते पर सड़क के किनारे खाली जमीन पर फूलों एवं अन्य प्रकार के हरे–भरे पौधों का रोपड़ कर स्वच्छ एवं सुन्दर गोरखपुर के निर्माण में एक कदम और चलने का प्रयास वालेन्टियर्स द्वारा करना सराहनीय रहा।
- राज्य व्यवस्था और राजनीतिक गतिविधियों में जो देश और समाज जितना अधिक रूचि लेता है उसके यहां लोकतंत्र की कुशलता उतनी अधिक निखरने की सम्भावना रहती है। इसी क्रम में राष्ट्रीय सेवा योजना के तत्वावधान में 'यूथ पार्लियामेन्ट' का आयोजन युवा वर्ग के अन्दर संसदीय पद्धतियों की जानकारी।

इस प्रकार के अनेक कार्यक्रमों, योजनाओं, अभियानों एवं प्रकल्पों के द्वारा प्रतिवर्ष की भांति वर्ष 2018 में गोरखपुर में राष्ट्रीय सेवा योजना द्वारा रचनात्मक एवं बौद्धिक गतिविधियों के माध्यम से हजारों युवाओं में स्वच्छता, रक्तदान, राष्ट्रप्रेम, राष्ट्रीय एकता, भारतीय परम्परा, योग इत्यादि के प्रति प्रेरित करते हुए एक सचेत, गम्भीर और जवाबदेह नागरिक बनने के गुण विकसित हो, इसका प्रभावी प्रयास किया गया। गोरखपुर विश्वविद्यालय के राष्ट्रीय सेवा योजना के इकाईयों तथा सम्बद्ध महाविद्यालयों के राष्ट्रीय सेवा योजना के विभिन्न इकाईयों के माध्यम से गोरखपुर सहित पूर्वी उत्तर प्रदेश के हजारों छात्र–छात्राओं में राष्ट्रीयता, सामाजिकता, नैतिकता एवं रचनात्मकता का विकास सम्भव हुआ है।

गोरखपुर का सांस्कृतिक परिदृश्य

(वर्ष 2018 के परिप्रेक्ष्य में)

डॉ. वेदप्रकाश पाण्डेय*

वर्ष 2018 जैसे दुनिया में अपनी कुछ खास उपलब्धियों या घटनाओं (उत्तर और दक्षिण कोरिया के सम्बन्धों में सुधार, अमरीकी राष्ट्रपति और उत्तर कोरिया के तानाशाह की सिंगापुर में हुई बैठक, मालदीव और श्रीलंका में घटित राजनीतिक हलचल, क्रिकेटर से पाकिस्तान के प्रधानमंत्री बने इमरान खान, थाइलैण्ड की पानी से भरी एक गुफा में 18 दिनों तक जूनियर फुटबाल टीम का फँसा रहना और दस हजार लोगों द्वारा चलाये गये बचाव–अभियान में पूरी टीम का जिन्दा बच निकलना, भारत के मंगल–यान की सफलता, भारतीय सुप्रीम कोर्ट के कुछ अहम निर्णय और संसार में बढ़ती भारत की साख) के लिए स्मरण किया जाता रहेगा वैसे ही हमारे गोरखपुर में भी अपनी कुछ विशिष्ट साहित्यिक–सांस्कृतिक उपलब्धियों के लिए लम्बे समय तक यादगार बना रहेगा। यह वर्ष हमारे नगर–जनपद की साहित्यिक गतिविधियों, साहित्यिक पुस्तकों के प्रकाशन, सम्पन्न महोत्सवों, साहित्यकारों–कलाकारों को प्राप्त सम्मान–पुरस्कारों, साहित्य–कला और संगीत के क्षेत्र में हुए मानद मनोनयन, अकादमिक क्षेत्र में हुई नियुक्तियों, प्राप्त फेलोशिप आदि के कारण लोकमानस में चिरकाल तक स्मरणीय रहेगा।

यों तो साहित्यिक हलचल की दृष्टि से अपना गोरखपुर हमेशा चर्चा में रहता है किन्तु 2018 में सम्पन्न हुए जिन विशिष्ट उत्सवों के लिए इसे खास तरीके से याद किया जायेगा उनमें प्रथम स्थान है 'गोरखपुर महोत्सव' का। यह 11, 12 और 13 जनवरी 2018 की तिथियों में दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के क्रीड़ा–परिसर में आयोजित था। पूर्वांचल की जनता, साहित्यकारों, कलाकारों, उद्यमियों, बड़े व्यापारियों के सामूहिक सहयोग से सम्पन्न यह एक अत्यन्त भव्य एवं विशिष्ट कार्यक्रम था। इसका आयोजन गोरखपुर के लोगों और जिला प्रशासन ने बड़े परिश्रम, सुरुचि, कलात्मकता के साथ–साथ गहरी आत्मीयता से किया था।

मो. 7897442728

यद्यपि इसे प्रदेश की सरकार का स्नेह–संरक्षण प्राप्त था तथापि यह था जनता का ही महोत्सव। त्रिदिवसीय इस गरिमापूर्ण समारोह का समापन करते हुए उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी ने अपने साहित्यिक लहजे में इसे सपा सरकार द्वारा सरकारी धन से आयोजित होने वाले 'सैफई महोत्सव' जैसे पारिवारिक उत्सव से भिन्न 'जनता का महोत्सव' कहा था। सचमुच यह जन–महोत्सव ही था। पूर्वांचल, विशेषकर गोरखपुर के आम व खास लोगों ने जिस उत्साह से इसे अंजाम तक पहुँचाया था उसकी जितनी भी प्रशंसा की जाय कम ही होगी। मण्डल के छोटे–छोटे स्कूली बच्चे, शिक्षक, लोक कलाकार, रंगकर्मी, विद्वान, कवि, शायर, पत्रकार, छायाकार, जन प्रतिनिधि, प्रशासक, समाजसेवी, शिल्पकार और कलाप्रेमी जनता ने मिलकर इस समारोह में जो बहुआयामी छवियाँ उकेरी थीं वे सहृदय समाज की स्मृति–मंजूषा में कैद है।

इस अवसर पर जनपद के विभिन्न क्षेत्रों के अनेक प्रतिष्ठित लोगों को मुख्यमंत्री जी के हाथों सम्मानित किया गया था। प्रो. राजवन्त राव और डॉ. प्रदीप राव के सम्पादन में 'मंथन' नामक एक ऐसी पुस्तकाकार पत्रिका का प्रकाशन हुआ जो स्वयं में एक नजीर है। तीन दिनों तक चलने वाले इस महोत्सव से सम्बद्ध एक अत्यन्त समृद्ध एवं विकास तथा तकनीकी प्रगति को दर्शाने वाली प्रदर्शनी भी लगी थी जो करीब एक सप्ताह तक चलती रही। इसमें स्थानीय संस्थाओं के अतिरिक्त देश के दूसरे भागों की संस्थाओं ने भी उत्साहपूर्वक भाग लिया था।

यों तो हमारा जिला प्रशासन पहले भी 'गोरखपुर महोत्सव' नाम से अनियतकालीन समारोह आयोजित करता रहा है किन्तु वर्ष 2018 का उत्सव एक इतिहास रच गया। ऐसा शायद सामूहिक सद्प्रयास और आत्मीय समर्पण से ही सम्भव हो पाया। 'गोरखपुर महोत्सव–2018' अपनी जिन तमाम खूबियों के लिए जाना जायेगा उनमें सबसे बड़ी खूबी थी इसकी भव्यता, गरिमा, सुरुचि और किसी भी प्रकार की फूहड़ता से सर्वथा मुक्ति।

दूसरा महत्वपूर्ण कार्यक्रम विश्वविद्यालय के 'संवाद भवन' में 'हर्षवर्धन फाउण्डेशन' द्वारा आयोजित हुआ 'लिटरेरी फेस्ट' नाम से। इसमें एकमात्र जीवित परमवीर चक्र विजेता श्री योगेन्द्र सिंह यादव सहित कई नामचीन हस्तियों ने भाग लिया। शहर में अपने ढंग के एक आकर्षक साहित्यिक समारोह (समागम) के रूप में इसकी सराहना हुई।

तीसरा विशिष्ट आयोजन था 'शब्द–संवाद' (गोरखपुर लिटरेरी फेस्ट) जो 6–7 अक्टूबर 2018 को सेण्ट एण्ड्रयूज कॉलेज के नवनी एवं भव्य सभागार में सम्पन्न हुआ। इसका आयोजन 'एप्पल', 'कुटुम्ब' और 'इण्डिया फर्स्ट' नामक संस्थाओं के संयुक्त सहकार से हुआ था। इसकी आयोजन–समिति के प्रमुख थे डॉ. रजनीकान्त श्रीवास्तव, श्री संजय श्रीवास्तव और श्री शैवाल शंकर श्रीवास्तव। सहयोग कर रहे थे नगर के विभिन्न क्षेत्रों के प्रतिष्ठित समृद्ध एवं सुयोग्य नागरिक।

इसकी मंच–सज्जा प्रसिद्ध छायाकार डॉ. राजीव केतन ने की थी। यह इतनी सुन्दर, गरिमापूर्ण एवं आकर्षक थी कि इसकी चर्चा सुदूर तक हुई। कार्यक्रम का उद्घाटन किया था राज्यसभा के उपसभापति माननीय हरिवंश जी ने। विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी एवं प्रो. सदानन्द प्रसाद गुप्त। इसके कुल सात सत्रों में जीवन के विविध क्षेत्रों से समागत अतिथियों में प्रमुख थे– श्री प्रभात रंजन, श्रीमती नासिरा शर्मा, श्री राजकुमार सिंह, प्रो. चित्तरंजन मिश्र, श्री अमर सिंह, श्री सुशील पण्डित, श्री राणा यशवन्त, श्री रंजीत कुमार, श्री ब्रजेश कुमार सिंह, जनाब महमूद फारुकी, श्री सुशील राजपाल, श्री संजय सिंह, श्रीमती चित्रा त्रिपाठी, श्रीमती अमृता चौरसिया, श्री मनोज मुन्तशिर, श्री अखिलेन्द्र मिश्र, श्री शिवकेश मिश्र, श्री विनय पाठक, श्री राजशेखर, श्रीमती गीता श्री., मालविका हरिओम, निकिताशा कौर, रंजना जायसवाल, प्रो. वसीम बरेलवी, आलोक श्रीवास्तव, डॉ. कलीम कैसर और गजेन्द्र प्रियांशु। यादगार संचालन किया था प्रो. कुमार हर्ष ने।

इस कार्यक्रम में नगर के साहित्य–संगीत और कला में रुचि रखने वाले हजारों लोग प्रायः प्रत्येक सत्र में अपनी उपस्थिति से उत्सव को जीवन्त बनाये हुए थे। इसमें नगर के विभिन्न क्षेत्रों में विशिष्ट कार्य करने वाले नौ लोगों का सम्मान किया गया था। पूरा कार्यक्रम अपनी सादगी में सौन्दर्यमण्डित, भव्य, विचारपूर्ण, मनोरंजक, शिक्षाप्रद, प्रेरक, खोजपूर्ण एवं गरिमा से युक्त था। इसमें भी किसी प्रकार की स्तरहीनता या फूहड़ता नहीं थी।

वर्ष 2018 का अक्टूबर महीना गोरखपुर के निजी सन्दर्भ में अपनी साहित्यिकता के लिए स्मरणीय बन गया। 'गोरखपुर लिट फेस्ट' के बाद उसी महीने की 27–28 तिथियों में नगर की प्रख्यात नाट्य–संस्था 'रूपान्तर' की 'स्वर्ण जयन्ती' (1968–2018) अत्यन्त उल्लास एवं सुरुचि के साथ मनायी गयी। 'रूपान्तर' की संस्थापिका और प्रसिद्ध रंगकर्मी प्रो. (श्रीमती) गिरीश रस्तोगी का श्रद्धापूर्ण स्मरण करते हुए उनके आत्मीय जनों ने दो दिवसीय कार्यक्रम को अपनी नाट्य प्रस्तुतियों, विमर्श और 'स्मारिका' के प्रकाशन से बीते पचास वर्षों को मूर्तिमान कर दिया। श्रीमती डॉ. अमृता जयपुरियार, निशिकान्त पाण्डेय, रवि प्रताप सिंह, आनन्द पाण्डेय द्वारा प्रायोजित इस समारोह में उषा गांगुली द्वारा निर्देशित नाटक 'आत्मज' और युवा निर्देशक अपर्णेश मिश्र द्वारा निर्देशित नाटक 'विमुक्ता' काफी चर्चित हुए।

साहित्यिक पुस्तकों के प्रकाशन की दृष्टि से भी यह वर्ष महत्त्वपूर्ण बना। इस वर्ष बृजभूषण राय 'बृज' का महाकाव्य 'आजादी के बाद', रंगकर्मी आई.एच. सिद्दीकी की आत्मकथा 'मेरी दुनिया मेरे लोग'; डॉ. आद्या प्रसाद द्विवेदी का भोजपुरी कहानी–संग्रह 'नेह कऽ नाता'; डॉ. रवीन्द्र श्रीवास्तव 'जुगानी' का भोजपुरी काव्य–संग्रह 'अबहिन कुछ बाकी बा'; नरसिंह बहादुर चन्द का भोजपुरी काव्य–संग्रह 'हरसिंगार' एवं खड़ी बोली काव्य संग्रह 'वीर भोग्या वसुन्धरा', डॉ. फूलचन्द प्रसाद गुप्त का भोजपुरी निबन्ध–संग्रह 'लोकगन्ध', डॉ. के.सी. लाल का नाट्य–संकलन

'मेरी नाट्य रचनाएँ', श्रीमती रौशन एहतेशाम की आत्मकथा 'अपनी रोशनी में रौशन', ब्रजेश राय का काव्य–संकलन 'गुरु दक्षिणा', स्व. पी.के. लाहिड़ी एवं डॉ. के.के. पाण्डेय लिखित 'आईने गोरखपुर', श्रीमती रंजना जायसवाल का काव्य–संग्रह 'स्त्री ही प्रकृति', जगदीश खेतान का काव्य–संग्रह 'दूना बाबा', मोतीलाल गुप्त का काव्य–संग्रह 'नीलकण्ठी', कपिलदेव द्वारा क्यूबा की मूल कहानियों का हिन्दी अनुवाद 'हँसने की चाह में', रमाकान्त कुशवाहा 'कुशाग्र' का कविता–संकलन 'किसको ढूँढ़े बंजारा', अरविन्द यादव का काव्य–संग्रह 'गोरख तलइया', डॉ. सदानन्द शाही की पुस्तक 'माटी पानी', रामअवध शर्मा का गद्य–ग्रन्थ 'राम का ब्रह्मत्व और रावण का भ्रम', देवेन्द्र आर्य का गजल–संग्रह 'जो पीवे नीर नैना का', डॉ. कलीम कैसर के दो गद्य–ग्रन्थ 'लफ्जों का पुल ऐरात' तथा 'कहती है तुझको खुलके खुदा क्या', डॉ. रामदेव शुक्ल की कथाकृति 'बेघर बादशाह' का तीसरा संस्करण, डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी का आलोचना ग्रन्थ 'साहित्य का स्वधर्म' तथा संस्मरणात्मक यात्रा–वृत्तान्त 'पतझर में मोरप' और डॉ. वेदप्रकाश पाण्डेय का निबन्ध–संग्रह 'सृजन, चिन्तन एवं अनुशीलन' तथा काव्य–संग्रह 'अलाव के आस–पास' प्रकाशित हुए।

साहित्यकारों को प्राप्त सम्मान–पुरस्कार की दृष्टि से भी यह वर्ष रेखांकनीय बन गया। उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ ने – प्रसिद्ध कथाकार डॉ. रामदेव शुक्ल को 'हिन्दी गौरव', भोजपुरी कवि डॉ. रवीन्द्र श्रीवास्तव 'जुगानी' को 'लोकभूषण', डॉ. बनारसी दास त्रिपाठी को संस्कृति सौहार्द, डॉ. मुन्ना तिवारी को लोकसाहित्य पर दिया जाने वाला 'पं. रामनरेश त्रिपाठी' पुरस्कार और डॉ. महेन्द्र अग्रवाल द्वारा सम्पादित एवं स्वास्थ्य को समर्पित पत्रिका 'नेहा' को 'सरस्वती–सम्मान' प्रदान किया।

नगर के प्रतिष्ठित लोककला मर्मज्ञ एवं संस्कृतिकर्मी श्री हरिप्रसाद सिंह एवं लोकप्रसिद्ध गायक श्री राकेश श्रीवास्तव भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय की अनुदान–योजना के विशेषज्ञ सदस्य नामित हुए। श्री राकेश श्रीवास्तव 'प्रसार भारती' के स्वर–परीक्षक एवं उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी के भी सदस्य मनोनीत हुए। सुप्रसिद्ध रंगकर्मी श्री रविशंकर खरे 'मध्यप्रदेश स्कूल ऑफ ड्रामा' के पर्यवेक्षक एवं 'भारतेन्दु नाट्य अकादमी' उत्तर प्रदेश, लखनऊ के अध्यक्ष, डॉ. भारत भूषण 'ललित कला अकादमी, उत्तर प्रदेश लखनऊ' के सदस्य, शास्त्रीय गायन कलाकार डॉ. शरदमणि त्रिपाठी 'उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी' लखनऊ के सदस्य मनोनीत हुए। नगर की प्रसिद्ध नाट्य–संस्था 'अभियान थियेटर ग्रुप' का सम्भागीय नाट्य समारोह में चयन हुआ और उसके दो प्रशिक्षु कलाकारों को 'केन्द्रीय सांस्कृतिक प्रशिक्षण एवं शोध केन्द्र' (सी.सी.आर.सी.) नई दिल्ली की स्कॉलरशिप प्राप्त हुई।

गोरखपुर की अकादमिक दुनिया में इस वर्ष कई उपलब्धियाँ दर्ज हुईं। विश्वविद्यालय के वनस्पति विज्ञान विभाग के प्रो. वी.एन. पाण्डेय को 'बॉटैनिकल सोसाइटी ऑफ अमेरिका' की

आजीवन सदस्यता प्राप्त हुई। प्रो. पाण्डेय को मिला यह विरल सम्मान विश्वविद्यालय के शैक्षिक जीवन की एक उल्लेखनीय उपलब्धि है। मदन मोहन मालवीय प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, गोरखपुर की अनेक उपलब्धियों ने वर्ष 2018 का स्मरणीय बना दिया है। अमेरिका, जापान, स्पेन, पोलैण्ड सहित विदेश के सात विश्वविद्यालयों से हुए अध्ययन एवं शोध सम्बन्धी करार से इसकी गरिमा को चार चाँद लग गया है।

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर के पुराने एम.पी. परिसर में 'गोरक्षनाथ शोध पीठ' की स्थापना ने नाथपंथ से सम्बन्धित विपुल साहित्य के अध्ययन–मनन–शोध एवं प्रकाशन का मार्ग प्रशस्त कर दिया है।

सम्प्रति उत्तर प्रदेश का शासन–सूत्र गोरखपुर के हाथ में होने से अनेक उत्तरदायी पदों पर गोरखपुर के लब्धप्रतिष्ठ विद्वानों–आचार्यों की नियुक्तियाँ सम्भव हो सकी हैं। वर्ष 2018 में 'उत्तर प्रदेश उच्चतर शिक्षा सेवा आयोग' इलाहाबाद के अध्यक्ष पद पर प्रो. ईश्वरशरण विश्वकर्मा, 'राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद' के कुलपति पद पर प्रो. के.एन. सिंह की नियुक्ति हुई। एम.पी.पी.जी. कॉलेज जंगल धूसड़ के प्राचार्य डॉ. प्रदीप राव 'उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ' की कार्यकारिणी तथा आमसभा के सदस्य, प्रो. ईश्वरशरण विश्वकर्मा, श्री रणविजय सिंह और डॉ. वेदप्रकाश पाण्डेय आमसभा के सदस्य नामित हुए।

अनुसन्धान और साहित्य के विशिष्ट केन्द्रीय संस्थानों में इस वर्ष गोरखपुर के कई विद्वान नियुक्त–नामित–चयनित हुए। 'भारतीय इतिहास अनुसन्धान परिषद्' (आई.सी.एच.आर.) नई दिल्ली में डॉ. ओमजी उपाध्याय की नियुक्ति निदेशक के पद पर एवं प्रो. हिमांशु चतुर्वेदी की सदस्य के पद पर हुई। साहित्य अकादमी, नई दिल्ली के संयोजक (निर्विरोध) प्रो. चित्तरंजन मिश्र बने, साथ ही वे और कुलपति प्रो. सुरेन्द्र दुबे अकादमी की आमसभा के सदस्य चयनित हुए। डॉ. दिनेश मणि त्रिपाठी (प्रधानाचार्य) उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन आयोग, इलाहाबाद के सदस्य मनोनीत हुए।

सांस्कृतिक दृष्टि से गोरखपुर वर्ष 2018 में पूर्वापेक्षा अधिक सम्पन्न–समृद्ध हुआ है। गुरु गोरक्षनाथ मन्दिर के 'भीम–सरोवर' में निर्मित जलाधारित 'साउण्ड एण्ड लाइट' कार्यक्रम, वर्षों से धीमी गति से निर्माणाधीन 'प्राणि उद्यान' एवं 'इण्टरनेशनल वाटर स्पोर्ट कॉम्प्लेक्स' उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी की विशेष सक्रियता, सदिच्छा और मुक्तहस्त अनुदान से गति पकड़ चुका है। इनके शीघ्र निर्माण से गोरखपुर को अन्तर्राष्ट्रीय पहचान की सौगात मिलेगी। रामगढ़ ताल के समीप निर्माणाधीन 'प्रेक्षागृह' तो गोरखपुर की संस्कृतिप्रेमी जनता एवं रंगकर्मियों के लिए वरदान जैसा सिद्ध होने वाला है।

हम गोरखपुर के लोग, महाकाल के अखण्ड प्रवाह में एक पल के सदृश–वर्ष 2018 के प्रति कृतज्ञ हैं जिसने एक साथ इतनी सौगातें देकर सांस्कृतिक दृष्टि से हमें सम्पन्नतर बनाया है।

गोरखपुर की अमूल्य धरोहर है - दीक्षा एवं दीक्षान्त

रामप्यारे मिश्र

पुण्यसलिला अचिरावती के तीर पर रची–बसी गोरखपुर की सांस्कृतिक नगरी नाना ध र्मों का केन्द्र रही है। यहाँ शैव, वैष्णव, शाक्त सौर, गाणपत्य, जैन एवं बौद्ध धर्म के सन्तों, ऋषियों, मुनियों, तपस्वियों, यतियों, योगियों, साधकों चिन्तकों एवं तत्ववेत्ताओं द्वारा उपदिष्ट यह भूमि सदा–सर्वदा से आप्लावित रही है।

यहाँ के संत आचार्यों ने अपने–अपने मतों, सिद्धान्तों के प्रतिपादन के लिए योग्य शिष्यों को दीक्षित कर दीक्षा संस्कार को महिमान्वित किया।

उल्लेखनीय है कि दीक्षा शब्द यौगिक है अर्थात् दो अक्षरों के योग से बना है। प्रथम अक्षर 'दी' है जिसका अर्थ है देना, स्वीकृति देना, प्रतिपादित करना, प्रदान करना आदि। इसमें दूसरा अक्षर 'क्षी' का अर्थ है नाश करना, समाप्त करना या अन्त करना। अतः दीक्षा शब्द का अर्थ होता है शिव एवं शिवभाव जो जागतिक प्रपंचों को नष्ट कर देती है –

दीयते दिव्य सद्ज्ञानं क्षीयते पशुवासना।
दानक्षपण संयुक्ता दीक्षा तेनेह कीर्तिता।।

तात्पर्य यह है कि जिससे दिव्य ज्ञान की प्राप्ति होती है और पाशविक वासनाओं का क्षपण यानी नाश होता है ऐसे दान एवं क्षपण युक्त क्रिया को दीक्षा कहते हैं।

ध्यातव्य है कि 'आचार्य विना न दीक्षा, दीक्षा विना न मोक्षः'। अर्थात् आचार्य के विना दीक्षा नहीं हो सकती और दीक्षा के विना मोक्ष नहीं मिल सकता।

दीक्षा निर्वाणदा होती है, कैवल्यदा होती है तथा मुक्तिदा होती है। दीक्षा प्राप्ति के बाद

असिस्टेंट प्रोफेसर, प्राचीन इतिहास, पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग, दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

दीक्षित भक्त जीवन्मुक्त हो जाता है। यह भी कहा गया है कि 'आचार्यों मन्त्र सम्पूर्णः क्रिया पूर्णस्तु शिल्पिभिः' मन्त्र की पूर्णता योग्य आचार्य से होती है। दीक्षा के लिए आचार्य के लक्षणों को बतलाते हुए कहा गया है कि गुरु अन्य सद्गुणों के साथ योग स्वाध्याय तत्पर, तन्त्रान्तर विचक्षण, मन्त्रज्ञ एवं तन्त्रज्ञ होना चाहिए।

शैवी दीक्षा के प्रसंग में उल्लेख्य है कि शैव आचार्य पति, पशु एवं पाश के सिद्धान्त को मानते हैं। पति शिव है, पशु जीव है तथा पाश को बन्धन कहा गया। पशु (जीव) सांसारिक पाशों (बन्धनों) में आबद्ध है। जब पति की कृपा होती है तो पशु, पाशों से मुक्त हो जाता है। जब शैवाचार्य अपने शिष्य को दीक्षा देता है तो दीक्षा से ज्ञान की प्राप्ति हो जाती है तदनन्तर शिष्य मलपंकिल से छुटकारा पा जाता है। इसीकारण तत्त्व चिंतकों ने इसे दीक्षा शब्द से अभिहित किया है।

वैष्णव आगमों में वैष्णवी दीक्षा, दीक्षा शब्द की उत्पत्ति अर्थवत्ता, प्रकार, परिभाषा का अत्यन्त सुन्दर विवेचन किया है। प्रपंचसार, कुलार्णव तन्त्र, शारदा तिलक, नित्योत्सव, ज्ञानार्णव, विष्णु संहिता, महानिर्वाण तन्त्र एवं लिंग पुराण आदि में दीक्षा–विधान का रोचक वर्णन उल्लिखित है। दीक्षा के लिए उपदेश, गुरु, पंचसंस्कार पुत्रक, प्रार्थना, शिष्य, समयिन, साधक, वर्ण एवं तत्त्व दीक्षा भी वैष्णवागमों में वर्णित है। दीक्षा एक कार्य विशेष न होकर विशिष्ट क्रियाकलापों का समूह है। दीक्षा सर्वप्रथम दिव्य ज्ञान प्रदान करती है तदनन्दर पापक्षय करती है।

पुरश्चरण सोल्लास में कहा गया है कि दीक्षा से बढ़कर न कोई ज्ञान है, न तप है और ना ही समय है। इसीकारण दीक्षा सर्वश्रेष्ठ है। सृष्टि कर्ता ब्रह्मा ने पूर्वकाल में दीक्षा को सर्वश्रेष्ठ बतलाया है यथा – क्रियावती, कलावती, वर्णमयी एवं बोधमयी। वैष्णव आचार्यों द्वारा प्रतिपादित दीक्षा एक धार्मिक संकल्प है जो कर्मकाण्डीय रीति करने के लिए योग्य बना देती है।

वैष्णव धर्मावलम्बियों की दृष्टि में दीक्षा गुरु के अन्य सभी गुणों के साथ योगस्वाध्याय तत्पर तन्त्रान्तर विचक्षण, तन्त्र अन्तरज्ञ, मन्त्रज्ञ एवं यन्त्रविचक्षण भी कहा गया है। स्पष्ट है वैष्णव गुरु कोरा भक्त नहीं अपितु वह योगी एवं मन्त्र, यन्त्र विशेषज्ञ भी होता है। यही नहीं गुरु की योग्यताओं और शिष्य के गुणों का सुन्दर विश्लेषण तन्त्रसार में वर्णित है।

प्रसंगात् उल्लेख्य है कि दीक्षा परम्परा की उत्पत्ति वैदिकी है। तांत्रिक उपासना एवं साधना में दीक्षा एक रहस्यमयी क्रिया है। अहिर्बुध्न्य संहिता जो वैष्णव आगम का ग्रन्थ है में कहा गया है कि आदर्श आचार्य वह है जो अन्य बातों के अतिरिक्त दूसरों के सुख, दुःख दोनों में समान रूप से भागी हो तथा अल्प बुद्धि वाले पुरुषों के प्रति कृपालु हो। वेद वेदान्त का ज्ञानी

हो, अध्यात्म में कुशल हो, कर्मकाण्डीय ज्ञान में निपुण एवं जितेन्द्रिय हो।

दीक्षा–विधान में सर्वप्रथम न्यास होता है। न्यास तांत्रिक पूजा का कृत्य है जिसका तात्पर्य है शरीर के कुछ अंगों पर अवस्थित होने के लिए किसी देवता या देवताओं, मन्त्रों का मानसिक रूप से आह्वान करना जिससें शरीर पवित्र हो जाय और पूजा तथा ध्यान के योग्य हो जाय तथा शरीर में देवता का निवास हो।

मन्त्र दीक्षा के समय इस बात पर ध्यान दिया गया है कि मन्त्र का प्रयोग क्षुद्र कार्यों के लिए न किया जाय। मन्त्र का प्रयोग लोकमंगल, लोक रक्षा, राज्य तथा राष्ट्र की रक्षा के लिए ही किया जाय। श्रौतसूत्र आदि ग्रन्थों में सोमयाग के पूर्व यजमान द्वारा सम्पादन विविध कर्म समुच्चय को दीक्षा कहा गया। भारतीय विद्वानों के अतिरिक्त पाश्चात्य विद्वानों में ओल्डेनवर्ग, कीथ आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। इसीकारण वैदिक संहिताओं, श्रौतसूत्रों एवं ब्राह्मण ग्रन्थों में इसके महत्व का प्रतिपादन किया गया है। वैष्णव आगमों के अनुसार दीक्षा को गुह्यात् हितकारक कहा गया है। विष्णुमण्डल में दीक्षा प्राप्ति के बाद महापातकी एवं उपपातकी भी शीघ्र मुक्त हो जाता ळै।

दीक्षा निर्वाणदा होती है। पशुपति के लिए दीक्षा का न्यासकर चंचल चित्त का शोधन किया जाता है। इस प्रकार बन्धन से मुक्त होने का एक मात्र उपाय दीक्षा है। यह भी कहा गया है कि अदीक्षित जनों का विष्णु की आराधना में कोई अधिकार नहीं है। अर्थात् दीक्षा के उपरान्त ही वह विष्णु–पूजा के लिए योग्य होता है। दीक्षा प्राप्त कर मनुष्य मरणोपरान्त अभिमत पद को प्राप्त करता है। एक दीक्षा कैवल्य फलदा, दूसरी भोग तथा कैवल्यदा तथा तीसरी केवल भोगदा बतलायी गयी है। ये सभी दीक्षायें आचार्यानुमत एवं फललाभ के लिए अनुष्ठेय है। इसी कारण नारदीय संहिता ने विष्णुहस्त प्रदत्त शिष्य को जीवनमुक्त होना कहा है – जीवनमुक्तः स विज्ञेयः विष्णुहस्ते समर्पिते'।

दीक्षा प्राप्त करने के क्रम में गुरु भगवान के प्रति विज्ञापन करता है। उस विज्ञापन से दीक्षा के उद्देश्य तथा दीक्षा की विशेषता पर कुछ प्रकाश पड़ता है। आचार्य हाथ में देव को ग्रहण कर कहता है 'हे देव! यह संसार–पाशवद्ध पशुओं के पाशमोक्ष एकमात्र तुम्हीं शरण हो दूसरी की कोई गति नहीं है। तुम्हारी आराधना ही इसमें हेतु है। अतः जन्मपाश में आवद्ध पशुजन्म वाले इस शिष्य को पाशमुक्त करने के लिए हे आदिदेव अनुज्ञा प्रदान करो। वैष्णव आगमों में वर्णित विधि–विधानों का वर्णन करते हुए कहा गया है कि दीक्षा के समापन पर आचार्य शिष्य को विष्णुहस्त प्रदान करता है इससे पुरुष वासुदेव के समान हो जाता है। इसमें करन्यास तदनन्तर देहन्यास करने का विधान है। इसके उपरान्त दीक्षा निर्वतन होता है। इस प्रकार प्रदत्त शिष्य जीवन्मुक्त कहा गया है।

इसी तरह शाक्ती दीक्षा की परम्परा शाक्त ग्रन्थों में विस्तृत रूप से उल्लिखित है। तांत्रिक उपासना में शाक्ती दीक्षा भोग एवं मोक्ष दोनों की प्रदात्री है। गाणपत्य सम्प्रदाय में गणपति के उपासक आचार्य से मनोवांक्षित फलों की प्राप्ति के लिए दीक्षा प्राप्त करते हैं। सौर सम्प्रदाय में सूर्य की कृपा प्राप्त करने, जीवन्मुक्त होने, मनोकामनाओं की पूर्ति हेतु दीक्षा प्रणाली का उल्लेख है।

जैन धर्मावलम्बियों में दीक्षा का विशद विवेचन हुआ है। जैन साधुओं, मुनियों की लम्बी परम्परा इस बात को द्योतित करती है कि जैन आचार्यों ने लोक कल्याण के लिए अहिंसा का शंखनाद किया। मुक्ति के लिए तप और साधना की चिरंतन भावना से अभिभूत होकर मानव कल्याण के लिए दीक्षा परम्परा द्वारा कैवल्य पद की प्राप्ति के लिए सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह एवं ब्रह्मचर्य की उपदेश दिया।

शांति, करुणा, दया, मैत्री एवं विश्व बन्धुत्व के अमर साधक भगवान तथागत ने दुःख एवं दुःख से निवृत्ति हेतु श्रेष्ठ आर्यसत्यों एवं अष्टांगिक मार्गों का उपदेश दिया। बौद्ध दीक्षा की परम्परा आज भी जीवन्त है।

गोरखपुर नगर चूँकि नाना धर्मों, पन्थों, सम्प्रदायों का सम्मिलित केन्द्र है अस्तु नाथपंथ के महान योगी गोरखनाथ (10वीं – 11वीं सदी) ने मत्स्येन्द्रनाथ के पन्थ का अनुगमन किया। नाथपथ के प्रसार में उनका अवदान अत्यन्त सराहनीय रहा है। उन्होंने सामाजिक और धार्मिक जीवन को नवीन प्रवाह दिया। इन्द्रिय निग्रह एवं सदाचार की व्याख्या कर नवीन जीवन दर्शन से योगमार्ग एवं शिव ही परमतत्त्व हैं के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। उनके सिद्धान्तों में प्राचीन शैवों, आजीविकों, वज्रयानी बौद्धों आदि के मतों एवं सिद्धान्तों का अनुपम समन्वय है।

उल्लेखनीय है कि गोरखनाथ ने बुद्ध की तरह मध्यम मार्ग का अनुगमन किया। उन्होंने बौद्ध एवं हिन्दू तान्त्रिकों के अनैतिक आचारों, व्यवहारों तथा यौगिक क्रियाओं की अतिरंजना का विरोध कर संयम एवं सत्य आचरण को अपना प्रमुख आधार माना। साथ ही सहज जीवन–पद्धति को अपनाने का उपदेश दिया। निश्चय ही यह दीक्षा आत्यन्तिक दुःख से निवृति देती है। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि शैवी दीक्षा, वैष्णवी दीक्षा, शाक्ती दीक्षा, गाणपत्य सम्प्रदाय में दीक्षा, सौर सम्प्रदाय में दीक्षा, जैन धर्म में दीक्षा, बौद्ध धर्म में दीक्षा एवं नाथपंथ में दीक्षा की परम्परा आज भी जीवन्त है प्राणवन्त है।

गुरु गोरक्षनाथजी के नाम पर रखा गया गोरखपुर विश्वविद्यालय प्रत्येक वर्ष दीक्षान्त समारोह की परम्परा अक्षुण्ण बनाये हुए है जो गोरखपुर की सांस्कृतिक विरासत को उद्घाटित करता है।

सरयूपार-क्षेत्र के प्राचीन कलावशेष

माता प्रसाद त्रिपाठी

सरयू नदी के उत्तर में बहराइच से बलिया जनपदों तक विस्तृत विशाल क्षेत्र प्राचीन भारत के सांस्कृतिक इतिहास की दृष्टि से अत्यन्त गौरवशाली समझा जाता है। यह क्षेत्र ग्यारहवीं शताब्दी से सरयूपार कहा जाने लगा तो आज लोक–भाषा में सरुआर कहा जाता है। रोचक बात यह है कि महर्षि पाणिनी के काल (पांचवा श.ई.पू.) में यह क्षेत्र 'सारवावार' कहा जाता था। नेपाल की सीमारेखा से जुड़े इस परिक्षेत्र का महत्व जैनधर्म के 24वें तीर्थंकर महावीर स्वामी और सद्धर्म के उद्घोषकर्त्ता गौतम बुद्ध के कारण अर्थात् श्रमण–परम्परा के धार्मिक इतिहास के कारण तो विशिष्ट है ही इस क्षेत्र की कला का पुरातात्त्विक इतिहास भी कम महत्वपूर्ण नहीं।

ध्यातव्य है कि वर्ममान शताब्दी में, स्वदेश के अन्य भागों की तरह, इस परिक्षेत्र में भी पुरातात्त्विक सर्वेक्षण व उत्खनन के कार्य सम्पन्न हुए, कुछ महत्वपूर्ण प्रयास तो पिछली शताब्दी में ही हो चुके थे, फलतः श्रावस्ती (सहेटमहेट), कुशीनारा (कुशीनगर), कपिलवस्तु (पिपरहवा), सोहगौरा, फाजिलनगर, सठियांव (श्रेष्ठिग्राम), नरहन और खैराडीह के टीलों के विस्तृत उत्खनन किये गए। इनके अतिरिक्त सम्बद्ध जनपदों के अनेक स्थलों के पुरातात्त्विक सर्वेक्षण के विवरण भी हमें उपलब्ध हैं साथ ही यथा समय ज्ञात यहां के प्राचीन कला–सदर्भों पर कुछ शोध लेख भी प्रकाश में आये हैं। उपलब्ध साक्ष्यों से विदित है कि यहां युग–युगों में कला का विकास हुआ।

ज्ञातव्य है कि उपर्युक्त निर्दिष्ट विशिष्ट प्राचीन स्थलों के अतिरिक्त ऐसे अनेक टीलें हैं जो पुरातत्त्वविदों का ध्यान आकृष्ट करते रहे हैं। जिनमें अनेक स्थल अभी भी ऐसे हैं जिनकी पहचान होना शेष है।

विभागाध्यक्ष (अ.प्रा.), प्राचीन इतिहास पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग, दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

सरयूपार क्षेत्र हिमालय की तराई का परिक्षेत्र है जो नेपाल देश की सीमा रेखा से जुड़ा है और इस महत्वपूर्ण पौराणिक–ऐतिहासिक अंचल में आजकल कई जनपद (बहराइच, गोण्डा, बस्ती, सिद्धार्थनगर, गोरखपुर, महाराजगंज, देवरिया और बलिया) अस्तित्व में हैं। कहने की आवश्यकता नहीं एक तरफ यहां मख–क्षेत्र (मखौड़ा, निकट अयोध्या, जनपद बस्ती) से लेकर भृगु–क्षेत्र (जनपद बलिया) तक श्रौत–स्मार्त–परम्परा के कई स्मरणीय स्थल हैं और ब्राह्मण परम्परा के अन्तर्गत वैष्णव, शैव, शाक्त सौर मतों को प्रतिबिम्बित करने वाले स्थान हैं तो श्रमण परम्परा (जैन व बौद्ध धर्म) सगुण एवं निर्गुण भक्ति–धारा से जुड़े यहां अनेक बिन्दु देखे जा सकते हैं। गोरक्षनाथ की भूमि गोरखपुर के चतुर्दिक प्रायः सभी जनपदों में शैव परम्परा के पवित्र पूजा स्थल और देवालय विद्यमान हैं। इसी क्षेत्र में स्थित है रूढ़िवादी प्रवृत्ति के मुखर एवं प्रखर विद्रोही संत कबीर की समाधि भी। सिद्धार्थ की जन्म स्थली यद्यपि आज कल नेपाल की सीमा में है पर उनकी क्रीड़ा भूमि कपिलवस्तु (अब सिद्धार्थनगर) सद्धर्म–प्राप्ति के अनन्तर उनका सर्वप्रिय वर्षावास–स्थल (श्रावस्ती) और उनकी चारिका–देशना से जुड़े तमाम स्थल इसी क्षेत्र में हैं। यद्यपि आश्चर्य की बात है और विचारणीय भी कि यहां से बुद्ध–मूर्तियां बहुत कम उपलब्ध हैं। इसी तरह जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर महावीर स्वामी की कैवल्य भूमि पावा की पहचान अब तक नहीं हो सकी है। इस धर्म के कई तीर्थंकर सरयू–राप्ती के बीच ही उत्पन्न हुये थे।

बहराइच–गोण्डा जनपदों के बीच पुरातात्त्विक सर्वेक्षण के आधार पर कई स्थल प्रकाश में आ सकते हैं जिनके कलावशेषों का अध्ययन अत्यन्त उपयोगी होगा। कोटरखास (गोण्डा) के अवशेष ध्यान देने योग्य हैं। बलिया में खैराडीह, इमलीडीह, लखनेसर डीह तथा कुछ अन्य पुरा स्थल महत्वपूर्ण हैं तो मध्यवर्ती जनपदों में प्राचीन स्थलों की भरमार है। बस्ती–सिद्धार्थनगर जनपदों में उजुञ्ञ, चतुर्भुजी, मखौड़ा, भुइला, इटवा–कुनगाई, कोपिया, लहुरा देवा, देवकली, पिपरहवा, गनवरिया, बर्डपुर, भारत भारी आदि स्थानों के अवशेष विभिन्न कालों के साक्षी हैं तो गोरखपुर, महराजगंज एवं देवरिया जनपदों में सोहगौरा, नरहन, सरया, भौवापार, डोमिनगढ़, राजधानी, बनर्सिहा कला, गगहा, पाली, सहनकोट, सोहनाग, कुशीनगर, दोनबुजुर्ग, देवकली, तुरपटटी, फाजिलनगर–सठिआंव, छहूं, धारमठिया, पडरौना, रूद्रपुर, लार, खुखुन्दू, कहांव, चन्द्रौटा, शिवसरया, सपही, भेलया, उजारनाथ, घोड़टप जैसे अनेक प्राचीन स्थलों के कलावशेष इस विशाल क्षेत्र के कला–वैभव को रूपायित करते हैं। मूर्तियाँ इस क्षेत्र की उल्लेखनीय महत्व की हैं। साधारणतया मिट्टी, पत्थर और धातु की प्रतिमाएं उपलब्ध हैं। हड्डी और काष्ठ निर्मित प्रतिमायें अन्वेषणीय हैं। रोचक बात यह है कि जैन व बौद्ध धर्म परम्परा की प्रतिमाओं के अतिरिक्त ब्राह्मण धर्म के सभी सम्प्रदायों की मूर्तियां यहां मिली हैं।

हिन्दू धर्म के प्रथम उपास्य देवता गणेश की कतिपय विलक्षण नृत्य मूर्तियां (छःभुजी, अष्टभुजी व षोडसभुजी प्रतिमायें) कुशीनगर से प्राप्त हुई थी। शैव मूर्तियों में शिव व पार्वती की मूर्तियों के अलावा शिव की उमा–महेश्वर, सद्योजात, कल्याण–सुन्दर, अर्द्धनारीश्वर व हरिहर प्रतिमायें भी उपलब्ध हैं। शिव की लिंग–प्रतिमायें भी प्राप्त हैं। इसके अलावा शैव परिवार के सदस्य गणेश, कार्त्तिकेय व नन्दी की मूर्तियां इस परम्परा की याद दिलाती हैं तो पूरे सरयूपार क्षेत्र 'नाथांत' स्थल–नामों (यथा भद्रेश्वर नाथ, ताम्रेश्वर नाथ, दुग्धेश्वर नाथ, कुबेर नाथ आदि) की भरमार है। वैष्णव परम्परा के अन्तर्गत द्विभुज व चतुर्भुज विष्णु, अवतार (दशावतार), विश्वरूप, गोपाल कृष्ण–लीलांकन आदि की मूर्ति–शिल्प कौशल क्षेत्र की वैष्णवता को प्रतिबिम्बित करते हैं। इसके अतिरिक्त सौर–परम्परा यहां गुप्त काल से ही लोकप्रिय रही है क्योंकि यहां बहराइच से बलिया तक उदीच्य शैली में निर्मित सूर्य व सूर्य–कुल की प्रतिमाओं की प्राप्ति होती है। सूर्य स्थासीन, सारथि अरुण, उषा–प्रत्यूषा, संज्ञा–छाया, दण्ड–पिंगल के साथ शिल्पांकित हैं। शाक्य परम्परा की मातृदेवी–प्रतिमाओं में महिषासुर मर्दिनी, सिंह वाहिनी दुर्गा, सरस्वती, लक्ष्मी, पार्वती के अतिरिक्त अनेक लोक–देवियों की प्रतिमायें भी उपलब्ध हैं। सम्प्रदायेतर कलावशेषों में अग्नि, इन्द्र, यक्ष, नवग्रह, चन्द्रप्रभु, कुबेर, हारीति, कार्तिकेय, शालभंजिका, मातृशिशु आदि की मूर्तियों, अनेक प्रकार के मनके व शीशे की वस्तुएं, कोपिया से ज्ञात ग्लास–उद्योग के प्रमाण, मृण्पात्र–कला, पत्थर व धातु निर्मितअन्यानेक अवशेष उल्लेखनीय महत्व के हैं। कोपिया (संभवतः प्राचीन अनूपिया) के टीले पर एक सर्वेक्षण में मैंने सन् 1971 में कांच की कम से कम चौदह भठ्ठियों के अवशेष देखा था जो बात में खेती–किसानी के नाम पर नष्ट कर दी गई। वहां के और इस पूरे क्षेत्र में कांच के बने तमाम उपकरण मिलते हैं, अतः उल्लेख्य हैं।

क्षेत्र के लोक–धर्म के अनेक प्रमाण हैं। अनेक पशु–पक्षी प्रतीकों की महत्ता पशु–पक्षी मूर्ति शिल्प से प्रकट होती है। इसके अतिरिक्त मिट्टी की मुद्रा–छापों और अभिलिखित अथवा अनभिलिखित मुद्राओं के प्रतीकों का अध्ययन भी कला के इतिहास की दृष्टि से उपयोगी हो सकता है। इस तरह यहां का मूर्ति–शिल्प धर्म–सम्प्रदाय और लोक–विश्वास, दोनों ही दृष्टियों से उल्लेखनीय महत्व रखता है। अध्ययन की व्यापक दृष्टि से सरयूपार की संस्कृति के अनेक पक्ष देश के अन्य भागों से प्रकाश में आये कलावशेषों द्वारा उद्घाटित होते हैं, यथा श्रावस्ती का शिल्प–सौन्दर्य मध्य–देश की कला–परंपरा में निरखा जा सकता है। इस संदर्भ में भरहुत की कला स्मरणीय है। सबसे महत्वपूर्ण बात तो यह है कि इस क्षेत्र की विभूतियों–गौतम बुद्ध और महावीर स्वामी, विशाल भारत के मूर्ति–शिल्पियों के आकर्षण के केन्द्र रहे ही हैं। यह क्षेत्र इन दोनों की निर्वाण–भूमि हैं, सिद्धार्थ गौतम की तो यह क्रीड़ा–भूमि भी है। कहने की आवश्यकता नहीं कि सरयूपार की कला के इतिहास विवेचन द्वारा भारत के प्रायः समस्त धर्म–सम्प्रदायों और

यहां प्रचलित लौकिक धर्म–विश्वासों का इतिवृत्त, दृश्य साक्ष्य के रूप में परिलक्षित है।

स्थापत्य की दृष्टि से विभिन्न स्थलों के उत्खनित व अनुत्खनित भग्नावशेषों का अध्ययन उपयोगी है। सरयूपार–क्षेत्र की स्थापत्यवाची शब्दावली यदि श्रमण–साहित्य से ली जाय तो स्थापत्य के विविध स्वरूपों का बोध होता है, यथा–संथागार (संस्थागार), परिवेण (विश्रामगृह), कोट्ठक (कोष्ठक या कोठार अथवा कोठागलनि), उद्यान (कूप), पोखरिणी (पुष्करिणी, पोखरा), वस्तु (कपिलवस्तु) वास्तु, देवगह (देवगृह), आराम, न्यगोधाराम, भिक्षुसंघ, भिक्षुणीविहार कुटी, कोसम्बकुटी, महागेह इत्यादि। श्रमणेतर साहित्य के अध्ययन से भी यहां के अनेक नगरों, प्रासादों, ग्रामों और अनेक वास्तु का परिचय मिल सकता है।

प्राचीन उत्तर कोसल का यह पौराणिक क्षेत्र बुद्ध व बुद्धोत्तर कालों में अपनी ऐतिहासिक छवियां प्रस्तुत करता है। एतदर्थ यहां की कला का अध्ययन और भी महत्वपूर्ण कहा जा सकता है। इस परिक्षेत्र का लोक–शिल्प भी कम महत्वपूर्ण नहीं–अनेकशः गाथाओं–मिथकों तथा पशु–पक्षियों के भित्तिचित्र और मूर्ति शिल्प यहां आज भी कला–परम्परा में विद्यमान हैं। इस क्षेत्र के ब्राह्मणों, विशेषकर पंक्तिपावन समाज में आज भी विवाह के अवसर पर तथा श्रावणी नाग–पंचमी के अवसर पर स्त्रियाँ बड़े ही सुन्दर भित्ति–चित्र रचती हैं जिसमें पारम्परिक और लोक विश्रुत मिथकों–प्रतीकों की भरमार होती है। गोरखपुर जनपद का औरंगाबाद नामक गांव अपनी विलक्षण मृण्मूर्ति–कला के लिए सारी दुनियां में विख्यात है। कला के अध्ययन विशेषतः उनके अभिप्राय के माध्यम से एक तरफ इस क्षेत्र के जीवन–दर्शन का अभिज्ञान संभव हो सकता है तो कला के तकनीकी पक्षों के विवेचन के माध्यम से युग–युगों में इस अंचल की तकनीकी अभिरुचि (लोक–रूचि) का संकेत बरबस ही हो जाता है।

पूर्वी उत्तर प्रदेश की भौगोलिक एवं धार्मिक पहचान के पुरातात्त्विक सन्दर्भ

प्रो. विपुला दुबे

उत्तर प्रदेश का पूर्वी अंचल अपनी भौगालिक प्रकृति एवं संरचना के कारण आदिकाल से ही संचरणशील मानव के अधिवास, आकर्षण का केन्द्र बना, जिसकी छाया यहाँ के कई पुरास्थल नामों में अवशिष्ट है यथा मल्लराष्ट्र, पावा। इस क्षेत्र के जलीय, आर्द्र, समशीतोष्ण होने का बिम्ब पूर्वमध्यकालीन राजाओं के शासन क्षेत्र के लिए प्रयुक्त भौगोलिक विशेषणों 'सौम्य सिन्धु', 'उत्तरसमुद्र', 'दरदगण्डकी', 'सरयूपारजीवितम्' इत्यादि में देखा जा सकता है।

ध्यानर्ह है कि छठीं शताब्दी ई.पू. के दस गणराज्यों में 'मल्लरट्ठ' का विशेष महत्त्व था, इसके दो भागों का उल्लेख दीघनिकाय के महापरिनिब्बानसुत्त एवं कुसजातक में हुआ है– जिनकी राजधानियाँ कुशीनारा एवं पावा में थी। मल्लों को 'बाहुयोधी, बल धारण करने वाला, लक्ष्य भेद में प्रवीण' (मल्ला मत्स्य भेदे बलीयसी) एवं मुक्केबाजी में दक्ष कहा गया है। यह अभिधान शारीरिक दक्षता पर आधारित है जो ऐतिहासिक सन्दर्भ में उचित नहीं प्रतीत होता। जन नाम या देश नाम प्रायः 'मनुष्य वाची' एवं 'समग्रता' का सूचक रहा है यथा 'स्लाद' जिसका अर्थ 'मनुष्य' या आदमी होता है, इसी प्रकार वैदिक वाङ्मय का 'पूरु' सम्पूर्णजन समाज का बोधक है। इस दृष्टि से विचार करने पर 'मल्ल' शब्द भी मानव वाची अर्थ का ही संवाहक प्रतीत होता है। मल्ल का पूर्व रूप मर्य (मरणशील–मानव) है, ऋग्वेद की आरम्भिक ऋचाओं में मर्य मनुष्य अर्थ में अनेक स्थलों पर प्रयुक्त हैं। ऋग्वेद के 8.45.37 में आये 'मर्या' की व्याख्या करते हुए यास्क ने 'मर्या' इति मनुष्यनाम' किया है। कालान्तर में मरणशील, मरणधर्मा होने के कारण ये 'मर्त्य' कहलाये। यहाँ स्वाभाविक रीति से प्रश्न उठता है कि 'मर्य' से 'मल्ल' में परिवर्तन कैसे

आचार्य (अ.प्रा.), प्राचीन इतिहास, पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग, दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

हुआ? प्राकृत व्याकरण के अनुसार 'र' 'र्य' का रूपान्तरण 'ल' और 'ल्ल' में हो जाता है, उदाहरण के लिए पर्याण से पल्लाण, पर्यंक से पल्लंग, पर्यस्त से पल्लट इत्यादि। अतः मानव वाची 'मर्य' ही 'मल्ल' का प्राक्रूप प्रतीत होता है। मर्यों या मल्लों ने गोरखपुर के पूर्वी भाग में स्थित कुशीनारा एवं पावा को अपनी क्रीड़ास्थली इसलिए बनायी होगी क्योंकि प्रकृत्या यह क्षेत्र अनेक छोटी–बड़ी नदियों, नालों, सरोवरों, जंगलों से आवृत्त था, यहाँ की भूमि उर्वरा एवं जलवायु समशीतोष्ण थी जो मानव अधिवास के सर्वथा अनुकूल थी। इस क्षेत्र के जलीय होने का चिह्न मल्लों की दूसरी राजधानी 'पावा' 'पापा' अथवा 'अपापा' में भी सन्निहित है। भगवान् महावीर की निर्वाण भूमि एवं बुद्ध की अन्तिम विहारस्थली होने के कारण बौद्ध एवं जैन दोनों के लिए यह पूज्य भूमि है। जिनप्रभसूरि ने विविध तीर्थकल्प में 'अपापा', 'पापा' एवं 'पावा' इन तीन नामों से इस नगरी का उल्लेख किया है, दिव्य ज्योति के अस्त होने के कारण इसका नाम 'पापा' पड़ा क्योंकि पाप से रक्षण करने वाला स्थल पापात् पाति इति 'पापा' इसे माना गया। पावा, पापा की व्याख्या अन्यों ने भी की है। इनमें ए. कनिंघम एवं कार्लायल प्रमुख हैं। कार्लायल पावा को पावन से व्युत्पन्न मानते हैं। जो स्थल पवित्रता का बोध कराये वह है पावा। भाषा में ध्यातव्य है कि प्राकृत 'प' का 'व' हो जाता है, यथा नृप का नृव, उपल का उवल, कोप का कोव इत्यादि, इसलिए पापा 'पावा' के रूप में लोक में प्रचलित हुआ क्योंकि लोकभाषा प्राकृत ही थी। रोचक तथ्य यह है कि पालि साहित्य में 'पाव' शब्द का प्रयोग 'पाप' अर्थ में ही प्राप्त होता है पवित्र या पावन अर्थ में नहीं; उदाहरण के लिए 'पाणेहि पावं विनयोजयन्ति' अर्थात् अपने प्राणों को लगाकर पाप करते हैं। पालि एवं जैन ग्रन्थों में उल्लिखित पावा, पापा का मूलार्थ पापयुक्ता हो स्वीकार नहीं किया जा सकता। दूसरी तरफ महावीर एवं बुद्ध के बहुत पहले से ही यह नगर अस्तित्वमान था, इसलिए महावीर अथवा बुद्ध से जोड़कर ही इसे देखना या इसकी व्याख्या करना उचित नहीं है। इस क्षेत्र की भौगोलिक प्रकृति, शब्द की प्रकृति को देखते हुए 'पापा' शब्द संस्कृत 'प्रपा' (जलस्रोत) का ही स्मरण दिलाता है। ऐसा लगता है कि प्रपा के अनुवर्ती 'र' का लोप कालान्तर में हो गया और लोक में यह 'पपा' 'पापा' एवं पावा के नाम से रूढ़ हो गया। पावा किसी एक स्थान विशेष का नाम न होकर आरम्भ में उस पूरे परिक्षेत्र (वीरभारी, फाजिलनगर) का बोधक है जो जलस्रोतों (तालाबों, नालों, सरोवरों, नदियों) से आवृत्त था। इस क्षेत्र के इतिहास पर काम करने वाले विद्वानों का मानना है कि यहाँ इतने तालाब सरोवर हैं कि इनकी गणना करना कठिन होगा। मूलतः जल ने युक्त क्षेत्र के मानव को स्थायी जीवन प्रदान करने में अहम भूमिका निभाई।

उत्तर प्रदेश के पूर्वी अंचल के जलीय आर्द्र भौगोलिक चरित्र की अनुगूँज स्थल नामों तक ही सीमित नहीं है बल्कि श्रमण भिक्षुओं के वर्षावासों एवं इस क्षेत्र पर पूर्व मध्यकाल (8वीं से 12–13वीं शताब्दी ई.) में शासन करने वाले मलयकेतु, कलचुरि, सावर्णि एवं गाहड़वाल–शासकों

के दानपत्रों से भी सुनी जा सकती है। सावर्णि शासक विक्रमपाल, कीर्तिपाल को 'सौम्यसिन्धु', 'उत्तरसमुद्र', 'दरदगण्डकी' (भाटपार ताम्रलेख, विक्रम संवत् 1167–1111 ई0) का शासक कहा गया है जो उनकी साम्राज्य सीमा की भौगोलिक पहचान को निर्धारित करता है। सौम्य सिन्धु विशेषण में सौम्य, चन्द्रमा, सुन्दरता, विनम्रता के साथ तरलता, आर्द्रता (Moist) अर्थ का भी व्यंजक है। (मोनियर विलियम्स, संस्कृत–इंग्लिश डिक्शनरी) वहीं सिन्धु नदी का निःसन्देह 'सौम्य सिन्धु' या 'उत्तरसमुद्र' क्षेत्र पश्चिम में घाघरा (सरयू) पूर्व में बड़ी गण्डक एवं उत्तर में हिमालय के मध्यवर्ती भू–भाग का परिचायक है। सौम्य सिन्धु ऐसी नदी का बोधक है जो सदैव जल से भरी रहती थी अर्थात् सदानीरा (गण्डक) 'उत्तर समुद्र' जैसी उपाधि में भी बाढ़ या वर्षा के समय समुद्र जैसा विकराल रूप धारण करने वाली बड़ी गण्डक की स्मृति ही शेष है। दूसरी तरफ ये उपाधियाँ उन सम्प्रभु उपाधियों की कोख से उद्भूत हैं जिन्हें साम्राज्यवादी शासकों ने धारण किया था तथा जो समग्र उत्तरापथ एवं समुद्र को अतिक्रमण कर एकछत्र शासन की व्यंजक थी यथा 'तिसमुदतोय पीत वाहनस' (जिस गौतमीपुत्र के सैन्य वाहनों ने तीन समुद्र के जल का पान किया है), चतुरूदधिसलिलास्वादित यशसो (जिसके यश ने चारों समुद्रों के जल का आस्वादन किया है अर्थात् गुप्तों द्वारा समग्र धरा पर एकछत्र शासन का दावा), 'चतु–स्समुद्रातिक्रान्तकीर्तिः' (जिसकी कीर्ति ने चारों समुद्रों का अतिक्रमण कर लिया है, इस उपाधि को मौखरी एवं वर्धन शासकों ने धारण किया था) इत्यादि। सम्पूर्ण पृथ्वी पर शासन का दम्भ भरने वाली ये उपाधियाँ एकछत्र साम्राज्य के विघटन छोटे–छोटे स्थानीय राज्यों के उदय के बावजूद आगामी राजाओं को अपनी ओर आकृष्ट करती रहीं जिसके परिणामस्वरूप 'उत्तर समुद्र' अथवा 'सौम्य सिन्धु' जैसे स्थानीय विरुदों से राजाओं ने अपनी राजनीतिक आकांक्षा की पूर्ति की। सावर्णि कीर्तिपाल के भाटपार ताम्रलेख एवं गाहड़वाल शासक गोविन्दचन्द्र के दोन बुजुर्ग (बिहार के मैरवा में स्थित) ताम्रलेख में इन्हें 'दरदगण्डकी' क्षेत्र का शासक कहा गया है। गण्डक नदी के विशेषण के रूप में प्रयुक्त 'दरद' को कुछ विद्वानों ने 'दोन दरौली' (बिहार सीवान जनपद में स्थित) से समीकृत किया है, कुछ ने उत्तर पर्वत एवं गण्डक के बीच के भू–प्रदेश को 'दरदगण्डकी' क्षेत्र कहा है। कुछ विद्वानों ने शब्द की व्युत्पत्ति के आधार पर 'दरदगण्डकी' क्षेत्र की पहचान करने का प्रयास किया है, 'दृ' विदारणे से शतृ प्रत्यय के योग से यह शब्द बना है, जो विदीर्ण करने का बोध कराता है, वह नदी जो अपने कूल, घाटों, तटों को दरकाती, गिराती हुई प्रवाहित होती है वह 'दरदगण्डकी' अर्थात् सदानीरा है (गोरखपुर परिक्षेत्र का इतिहास)। गण्डक नदी की उपद्रवी प्रकृति को देखते हुए यह अर्थ समीचीन है, यह नदी प्रायः अपने मार्ग को बदल देती है। इसके प्रचण्ड रूप से इस क्षेत्र की जनता का साक्षात्कार होता रहता है। निस्संदेह उत्तर प्रदेश के पूर्वी अंचल को अलग भौगोलिक पहचान देने में सरयू एवं बड़ी गण्डक का अप्रतिम योगदान रहा है। विक्रम संवत् 1135 के कहला

(गोरखपुर) ताम्रलेख में कलचुरि शासक सोददेव को 'सरयूपार जीवितम्' कहा गया है। इसी प्रकार गोविन्द चन्द्र गाहड़वाल को 'सरूवार' क्षेत्र में ग्रामदान देने का उल्लेख विक्रम संवत् 1202–1146 ई. के लार ताम्रपत्र (देवरिया जिला) में हुआ है। नर्मदा का ऊपरी या उत्तर का सम्पूर्ण क्षेत्र उत्तरापथ या आर्यावर्त के नाम से अभिहित था लेकिन साम्राज्यवादी सत्ता के विघटन के फलस्वरूप क्षेत्रीयता को फलीभूत होने का अवसर मिला। तद्युगीन राजा उस क्षेत्र की प्रमुख नदियों, पर्वतों में अपनी पहचान ढूँढ़ने लगे जिसकी परिणति ये विशेषण हैं।

पूर्वमध्यकाल में अपनी अलग भौगोलिक पहचान के साथ उपस्थित यह क्षेत्र इस काल में शैवोपासना का केन्द्र बना जिस पर विचार आवश्यक है। उल्लेख्य है कि आरम्भ में यह क्षेत्र श्रमण–ब्राह्मण दोनों ही परम्पराओं का संवाहक था। इस क्षेत्र पर शासन करने वाले शासकों ने जैन, बौद्ध एवं ब्राह्मण धर्म, विचार–दर्शन को समान रूप से फलीभूत होने का अवसर दिया, जिसका प्रमाण यहाँ के पुरावशेष एवं पुराभिलेख हैं। उल्लेखनीय है कि पूर्वमध्य काल तक आते–आते यह भूमि शैवपूजकों के अधिष्ठान के रूप में प्रतिष्ठित हुई, यहाँ के बहुसंख्यक शैव मन्दिर, लिंग, मूर्तियाँ एवं इस क्षेत्र पर शासन करने वाले प्रायः सभी शासकों की शैव उपाधियाँ (परमेश्वर परम माहेश्वर) साधु–सन्तों, फकीरों, जन–सामान्य के बढ़ते प्रभाव का सूचक है, इस प्रसंग में शिव के अवतार माने जाने वाले गुरु गोरखनाथ के अवदान को नकारा नहीं जा सकता। बौद्ध धर्म के पतन के पश्चात् गुरु गोरखनाथ ने यंत्र–मंत्र, टोने–टोटके से आक्रान्त, श्रद्धाविहीन पतनोन्मुख समाज के उद्धार हेतु तत्कालीन परिस्थिति के अनुकूल शैवदर्शन को नये रूप में प्रस्तुत कर समाज का कल्याण किया, लेकिन हठयोग योगियों, सिद्धों तक सीमित था, जबकि शैवधर्म अपनी सहज प्रकृति के कारण जनसामान्य में अत्यन्त लोकप्रिय हुआ जिसका प्रबल साक्ष्य राजाओं के राजकीय दस्तावेज हैं।

पूर्वी उत्तर प्रदेश के प्रमुख शैवमन्दिरों में काशी के 'विश्वनाथ' मन्दिर का अपना अलग माहात्म्य है। इस मन्दिर के 'लिंग' का नाम 'अवमुक्त' (अव पाप) मिलता है अर्थात् जिसका दर्शन पाप से मुक्ति दिलाये। अमरेश्वर मन्दिर लेख (एपि–इं. XXX पृ.105) में शिव के पाँच प्रमुख लिंगों में प्रथम स्थान पर 'अवमुक्त' ही उल्लिखित है, अन्य लिंग हैं– केदार, ओंकार, अमर एवं महाकाल। काशी के उत्तर–पूर्व गाजीपुर के समीप मार्कण्डेय महादेव का मन्दिर है जो गंगा–गोमती नदी के संगम पर स्थित है, लोक मान्यता है कि सन्तान प्राप्ति हेतु श्रीकृष्ण ने मार्कण्डेय महादेव की पूजा की थी, सन्तान प्राप्ति हेतु आज भी लोग यहाँ महादेव के दर्शनार्थ आते हैं। देवरिया जिले के सलेमपुर तहसील के मझौली नामक स्थान से अनति दूर 'दीघेश्वर' नाम से विख्यात शिव का मन्दिर है जिसकी प्रतिष्ठा उस क्षेत्र में अत्यधिक है। देवरिया जिले के ही रुद्रपुर कस्बे के समीप 'दुग्धेश्वर' नाम से ख्यात शिव का एक प्राचीन मन्दिर है जिसकी

प्रसिद्धि दूर–दूर तक है। स्वयं रुद्रपुर नाम में शिव की स्मृति शेष है, ईशान संहिता एवं भारतीय परम्परा में स्वस्तिवाचन एवं पूजन के बाद चार बार प्रत्येक प्रहर में शिवपूजन का प्राविधान है, प्रथम प्रहर में 'दुग्ध' से शिव की 'ईशानमूर्ति' को स्नान कराने का विधान है। निश्चय ही इस मन्दिर में शिव के 'ईशान लिंग' की स्थापना हुई होगी। इस क्षेत्र के बरहज कस्बे से पश्चिम तीन–चार किलोमीटर की दूरी पर स्थित 'महेन' नामक ग्राम में 'महेन्द्रनाथ' का शिवमन्दिर है, जो इस क्षेत्र की जनता के लिए अत्यन्त श्रद्धास्पद है। उत्तर प्रदेश एवं बिहार की सीमा पर स्थित 'सोहगरा' नामक स्थान पर एक विशाल शिवलिंग स्थापित है, जो भूरे–चित्तीदार पत्थर से निर्मित साढ़े तीन फीट लम्बा है। स्थानीय मान्यता के अनुसार बाणासुर की पुत्री उषा यहाँ शिव मन्दिर में पूजनार्थ आती थी और शिव के प्रसाद से ही उसे मनोवांछित वर अनिरुद्ध की प्राप्ति हुई। इसमें तथ्यात्मक सच्चाई जो भी हो लेकिन इस शैव मन्दिर का माहात्म्य इतना अधिक है कि सुदूरवर्ती क्षेत्र से लोग यहाँ मनोकामनापूर्ति हेतु आते हैं। सोहगरा का शिवलिंग 'हंसनाथ' के नाम से जाना जाता है। कुशीनगर जिले के तरयासुजान तहसील के पथरवां नामक ग्राम में एक अति प्राचीन 'शिवाला' है, इस शिवाला के शिव को 'बडरहवा बाबा' (बेढंगे वेशभूषावाले) के नाम से जाना जाता है जो अपने भक्तों पर सधः प्रसन्न हो जाते हैं। इसी प्रकार गोरखपुर के खलीलाबाद से कुछ दूरी पर स्थित ताँबा ग्राम में 'ताम्रेश्वर' नाम का शिव मन्दिर है जो अपनी महिमा के लिए प्रसिद्ध है। इन मन्दिरों, लिंगों की प्राचीनता का जहाँ तक प्रश्न है, निश्चयात्मक रीति से ये पूर्व मध्यकाल या उससे कुछ पहले ही अस्तित्व में आ गये थे, क्योंकि इस क्षेत्र पर शासन करने वाले गुप्त, मौखरी, वर्धन, मलयकेतु, कलचुरि, सावर्णि एवं गाहड़वाल शासकों के अभिलेखों से प्रच्छन्न रीति से इसकी पुष्टि होती है। इस क्षेत्र पर प्रकाश देने वाले लेखों में फैजाबाद के करमदण्डा लिंग लेख से ज्ञात होता है कि कुमारगुप्त प्रथम के मंत्री पृथ्वीषेण ने विक्रम संवत् 117 437 ई. में 'पृथ्वीश्वर' नाम से एक शिवलिंग की स्थापना करवायी तथा लिंग के पूजन हेतु 'देवद्रोणी' (देवजुलूस एवं देव सम्पत्ति दोनों का परिचायक माना गया है) की स्थापना की। लेख का आरम्भ 'नमो महादेवाय' से हुआ है। गुप्त शासक परम वैष्णव थे लेकिन उनके मंत्री (हरिषेण, वीरषेण, पृथ्वीषेण) शैव थे। देवरिया जिले के सलेमपुर तहसील का 'सोहनाग' नामक स्थान शिवभक्त परशुराम की तपःस्थली के रूप में विख्यात है। यहाँ से प्राप्त मौखरी नरेश अवन्ति वर्मा के मुहर–लेख में राजा को 'परममाहेश्वर महाराजाधिराज अवन्ति वर्मा मौखरी' कहा गया है, हर्षचरित से भी मौखरियों के शैवोपासक होने की पुष्टि होती है। मौखरियों के हरहा लेख से ज्ञात होता है कि मृगया के लिए निकले सूर्यवर्मा ने अन्धकासुर का विनाश करने वाले शिव का एक जीर्ण मन्दिर देखा, उसने उसका जीर्णोद्धार करवाया। यह मन्दिर 'क्षेमेश्वर' नाम से जगत् में विख्यात हुआ। अभिलेख से विदित होता है कि यह शुभ कार्य विक्रम संवत् 611 554 ई. में सम्पन्न हुआ। वर्धन शासक हर्ष के 631 ई. के मधुवन (आजमगढ़) ताम्रपत्र

में उसके सूर्योपासक पूर्वजों परमसौगत अग्रज के विपरीत हर्ष को 'सर्व सत्वानुकम्पी महेश्वर इव सर्वसतवावुकम्पा' अर्थात् परमशैव, शिव के समान सभी जीवों पर अनुकम्पा करने वाला कहा गया है। यह उपाधि राजनयिक लाभ की दृष्टि से इस क्षेत्र में शैवोपासकों की बहुसंख्या ने राजाओं को शैव उपाधि की ओर आकृष्ट किया। कसया (कुशीनगर) से प्राप्त अतैथिक शिलालेख जिसे मिराशी दसवीं शताब्दी ई. का मानते हैं, में कहा गया है कि शंकरगण ने शिव को प्रसन्न कर उनसे उनका लांछन प्राप्त किया।

सरयूपार शाखा के कलचुरि शासक सोढदेव को कहला ताम्रलेख (वि.सं.1133) में 'परमाहेश्वर' की उपाधि से अलंकृत किया गया है। कलचुरियों की त्रिपुरी शाखा के शासक भी शिव के आराधक थे, बिलहरी अभिलेख (जबलपुर) में तो शैव गुरुओं की वंशावली भी मिलती है। सोढदेव की मुहर पर भी वृषभ का अंकन है। मलयकेतु शासक सौर्यादित्य के लिए गोरखपुर के बगहा ताम्र लेख वि.सं.1077–1020ई. में परमेश्वर की शैव उपाधि प्रयुक्त है तथा सौर्यादित्य को भास्कर एवं ईशान (शिव) का पूजक कहा गया है। वाराणसी से चेदि संवत् 973'1042ई. के कर्णदेव के ताम्रलेख का आरम्भ शिव की वन्दना से हुआ है;'सिद्धम् ओंम् नमः शिवाय, निर्गुणं व्यापकं नित्यं शिवं परमकारणम्।' सावर्णि शासक कीर्तिपाल भाटपार ताम्रलेख में 'परममाहेश्वर' की उपाधि से विभूषित हैं तथा इसमें शिव को पशुपति नाम से स्मरण किया गया है। उल्लेखनीय है कि ताम्रपत्र के पुरोभाग के शीर्ष पर विष्णु के 'वराहावतार' का अंकन है तथा पृष्ठ भाग पर शंख बना है। अधिकांश गाहड़वाल शासकों के लिए उनके ताम्रलेखों में शैव उपाधि 'परमेश्वर परममाहेश्वर' प्रयुक्त है। गोविन्दचन्द्र की पत्नी कुमारदेवी के वाराणसी ताम्रलेख में गोविन्दचन्द्र को म्लेच्छ तुर्कों को दण्डित करने के लिए हर (शिव) द्वारा नियुक्त हरि (विष्णु) का अवतार कहा गया है। गोविन्दचन्द्र का मंत्री लक्ष्मीधर शैव था। इन तथ्यों के आलोक में वैष्णव शैव के समन्वय का सूत्र भी प्राप्त होता है।

उल्लेखनीय तथ्य यह है कि पूर्वी उत्तर प्रदेश पर 7वीं शताब्दी ई. से 12वीं शताब्दी ई. के मध्य शासन करने वाले प्रायः सभी शासकों ने 'शैव उपाधि' धारण की, शैवानुराग अकस्मात् प्रसूत न था। यहाँ के ग्राम–ग्राम, गली–गली से प्राप्त लिंग, शैव मन्दिर, मूर्तियाँ इस तथ्य के परिचायक हैं कि यहाँ की जनता सहज सुलभ बेलपत्र, भाँग–धतूरा जैसी पूजा सामग्री से सद्यःप्रसन्न होने वाले शिव की आराधक थी। शिव संतो, फकीरों, जनसामान्य के देव थे इनकी पूजा–अर्चना व्रत में किसी प्रकार का सामाजिक वर्गीकरण नहीं था। वायुपुराण एवं स्कन्दपुराण से ज्ञात होता है कि शिवरात्रि व्रत का एवं शिव की पूजा चारों वर्ण, अछूत, स्त्री, पुरुष, बाल–युवा–वृद्ध सब कर सकते थे– 'आचाण्डाल मनुष्याणां भुक्ति मुक्तिप्रदायकम्' तथा– यह व्रत भुक्ति एवं मुक्ति दोनों की प्राप्ति के लिए था। तांत्रिक भी इसे विशेष महत्त्व देते थे। यही

कारण रहा होगा कि इस भूभाग पर शासन करने वाले शासक राजदण्ड के भय से जनता पर शासन करने में सक्षम नहीं थे। वे राजनयिक लाभ हेतु अपने को 'परमशैव' घोषित कर दिये। यह धर्म नीचे से ऊपर गया, वैष्णव धर्म का सम्बन्ध प्रायः राजपरिवारों, आभिजात्य वर्ग तक रहा। यही कारण था कि विष्णु को वह लोकप्रियता जनता के मध्य नहीं मिल पायी जो 'शिव' को मिली। राजा मठाचार्यों के शिष्यत्व को ग्रहण कर उनका एवं उनके भक्तों का समर्थन स्वतः प्राप्त कर लेता था। अपने इस धार्मिक नीति के द्वारा राजस्व की वसूली में भी उन्हें सुविधा मिलती रही होगी कि निष्कर्षतः इस क्षेत्र की भौगोलिक पहचान जलस्रोतों एवं जलाधिक्य में निहित थी, जलजमाव के कारण आवागमन में होने वाली कठिनाई ने ही बौद्धभिक्षुओं के लिए चार मास तक उनकी चारिका पर रोक लगाकर 'वर्षावास' का नियमन किया। आरम्भ में यहाँ निवृत्तिमार्गी धारा प्रवाहित हुई लेकिन पूर्व मध्यकाल में बौद्ध धर्म के साथ पतन ख्याति परम्परा के प्रभाव से यह भूमि शैवोपासना का नाभिक केन्द्र बन गयी।

गोरखपुर जनपद के ग्राम-नाम : एक सांस्कृतिक दृष्टि

ध्यानेन्द्र नारायण दूबे*

वर्तमान गोरखपुर (उत्तर प्रदेश) का अतीत अपने सांस्कृतिक पुरावृत्त के लिए प्रख्यात रहा है। यहाँ ब्राह्मण, श्रमण तथा अन्यानेक लौकिक परम्पराओं के स्रोत विद्यमान रहे हैं। इस जनपद के आधुनिक काल में प्रचलित ग्राम–नामों में पौराणिक स्मृतियों का प्रतीकत्व अपने आप अभिव्यक्त हो जाता है। इनमें निहित मूल अवधारणा एवं सांस्कृतिक अस्मिता यथातथ्य उद्घाटन की अपेक्षा रखती ही है– इन बहुरंगी नामों के आधार पर गोरखपुर परिक्षेत्र के ऐतिहासिक भूगोल (Historical Geography) और प्रजातीय भाषाविज्ञान (Ethno-Linguistics) का अध्ययन भी कम रोचक–प्रेरक नहीं।

गोरखपुर जनपद के ग्राम–नाम विविध वर्णा हैं। इन नामों में वृक्षों–वनस्पतियों, पशु–जगत्, कृषि–कर्म और वर्ण–जाति ही नहीं अपितु लोक–विश्वास की थाती सुरक्षित है। रोचक बात यह है कि इस जनपद में प्रचलित ग्राम–नाम इस दृष्टि से आदर्श हैं कि वे समग्र सरयूपार–परिक्षेत्र में लोकप्रिय रहे हैं। ध्यान दें तो पायेंगे कि पिपरा और पकड़ी जैसे नाम यहाँ आस–पास के सभी जनपदों में मिलते हैं। हम यहाँ के ग्राम–नामों के उत्तर पदों की सूची बनाएँ तो यह बात और भी स्पष्ट हो जायेगी। कुछ लोकप्रिय उत्तर पद इस प्रकार हैं– खास, खुर्द, बुजुर्ग, माफी, कला, बारी, कोल, पुर, पुरी, पोयल, चक, गढ़, गढ़वा भार, पट्टी टीकर, घाट, चौरा, दर, गोसाई, पुरवा, टोला, कोला, गाँव, गंज, भारी, खोर, पार, औली, औलिया, औल, और या औरा, डीह, आदि। अब इस सूची पर ही ध्यान दें तो संस्कृत–पालि, प्राकृत और अपभ्रंश के बहुतेरे उदाहरण सामने आ जायेंगे।

ध्यातव्य है कि प्रकृति परिवर्तनशील है और परिवर्तन की प्रक्रिया में जब मानव–प्रकृति जुड़ जाती है तो देश–काल के अनुरूप बदलाव आते ही हैं। गोरखपुर के ऐतिहासिक भूगोल

*एसोसिएट प्रोफेसर, प्राचीन इतिहास, पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग, दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

के अध्ययन से ज्ञात होता है कि सरयू और अचिरावती (राप्ती) के मध्य स्थित इस क्षेत्र में नदी–नाले–पुष्कर अभी वर्तमान शताब्दी के पूर्वार्द्ध तक काफी हद तक वन–सम्पदा से आवृत्त रहे हैं–बीच में जगह–जगह मानव–बस्तियों के विविध रूप अस्तित्व में थे जिनके नाम स्वयमेव अपनी प्रकृति का खुलासा कर देते हैं। बहुत से ग्राम–नाम ऐसे हैं जिनमें उनका पुरावृत्त न सही, जनसंस्कृति की ऐतिहासिक स्मृति सुरक्षित हैं यथा मलाँव। यह एक प्राकृत पद है जिसका संस्कृत स्वरूप होगा 'मल्ल–ग्राम', भले ही आज वहाँ मल्ल जाति के लोग न रहते हों।

उल्लेखनीय है कि भारतीय स्थल–नामों के उत्तर पदों (अन्त में आने वाले शब्दों) का परिचय सर्वप्रथम महर्षि पाणिनि की अष्टाध्यायी में प्राप्त होता है। नगर ऐसा उत्तर पद है जो मध्यकाल और वर्तमान काल में प्रयुक्त होता रहा है यद्यपि पाणिनि के समय में भी प्राच्य और उदीच्य दोनों भागों में इस पद का प्रयोग होता था। 'पुर' तो उसी युग से एक बहुव्यापी उत्तर पद था। 'ग्राम' एक वैदिक पद है और आज तक लोकप्रिय है। इन उत्तर पदों के अलावा पाणिनि ने जिन उत्तर पदों की चर्चा की है वे हैं– खेट (खेड़ा), घोष, कूल, सूद, स्थल, कर्ष, तीर, रूप्य, कच्छ, अग्नि, वक्त्र, गर्त, पलद, ह्रद, प्रस्थ, अर्म, कथा। यह सहज स्वाभाविक है कि कालान्तर में भाषा–प्रकृति के परिवर्तन के आधार पर न जाने कितने प्रकार के उत्तर पदों के प्रचलन लोक–जीवन में जुड़ते गये। गोरखपुर जनपद के ग्राम–नाम इसके जीवन्त उदाहरण हैं।

गोरखपुर जनपद की भौगोलिक–ऐतिहासिक पृष्ठभूमि तथा प्रदेश व देश के अन्य भागों से उसके सांस्कृतिक सम्बन्धों को उपलक्षित करने वाले सन्दर्भ यहाँ के पुराभिलेखों में सुरक्षित हैं। कम से कम आठ अभिलेख उपलब्ध हैं जिनमें से सोहगौरा ताम्र पत्र तो भारत के सर्वप्राचीन तीन अभिलेखों में एक है। ये पुराभिलेख इस प्रकार हैं:

1. सोहगौरा ताम्र–शासन (प्रकाशित)
2. कहला से प्राप्त अभिलेख (प्रकाशित)
3. पाली से प्राप्त अभिलेख (प्रकाशित)
4. पाली से प्राप्त एक अन्य अभिलेख (प्रकाशित)
5. गगहा से प्राप्त अभिलेख (प्रकाशित)
6. उनवल से प्राप्त अभिलेख (प्रकाशित)
7. पीपीगंज से प्राप्त अभिलेख (सहः प्रकाशित)
8. भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण पत्रिका में एक गाहड़वाल अभिलेख की सूचना।

कहने की आवश्यकता नहीं है कि इन पुराभिलेखों का ऐतिहासिक महत्त्व है और इनमें प्रयुक्त स्थल–नामों की पहचान आवश्यक है।

सोहगौरा ताम्र शासन में वर्णित स्थल–नाम गोरखपुर क्षेत्र के भी हैं और बाहर के भी। इसमें उल्लिखित सवतियान (श्रावस्ती) मनवसिति, सिलिमते, वसगमे (वंश ग्राम), तिघवनि, मथुल, चंचु, मोदाम और भलकन जैसे पद अपनी स्पष्ट पहचान चाहते हैं। कहला अभिलेख में पहली बार 'सरयूपार' शब्द का उल्लेख हुआ है, पाली अभिलेख में इसी को 'सरूआर' कहा गया है। रोचक बात यह है कि गोरखपुर जनपद में 'पार' और 'आर' या 'आल' अर्थात् आर पार जैसे उत्तर पद वाले नामों की भरमार है। कुछ अन्य आभिलेखिक ग्राम–नाम इस प्रकार हैं– गुणकल विषय, टिकरी, चन्दुलिखा, महिआरि पाटक, असथी पाटक, थिडल पाटक, वणिया पाटक, दुआरि पाटक, च्छिडाडारेम्भ और थुलिया घट्ट (सभी नाम कहला अभिलेख के हैं)। इसी अभिलेख में कुछ ब्राह्मण–केन्द्रों के नाम मिलते हैं यथा, महुआली, माथुर, हस्तिग्राम, तालीकी, सांकस्थानीय, कुलांच, नागर, कटौधन, कहला, टिकारी (तक्कारी अथवा टकारी)। पाली अभिलेख में उनवल (पथक), सिरसी (पतल) और पाली (ग्राम) के उल्लेख हैं तो पीपीगंज से प्राप्त डॉ. जयमल राय के पास सुरक्षित अभिलेख में भी कुछ ग्राम–नाम इसी जनपद के होने चाहिए। गगहा अभिलेख में सरयूपार को 'सरवार' कहा गया है तथा इस अभिलेख में हथौड (पत्तल), कुण्डलग्राम, गुण्झड ग्राम भी उल्लेखनीय हैं। उनवल से प्राप्त अभिलेख दोहली (पत्तल), मलवली गाम और बाडा पाटक के उल्लेख करता है। इस प्रकार ग्राम–नामों के पुराभिलेखिक साक्ष्य महत्त्वपूर्ण हैं।

व्यक्ति–नाम (Personal-Name) हो अथवा स्थल–नाम (Place-Name) आधुनिक युग में नाम–विज्ञान (Onomastics) का महत्त्व बढ़ता ही गया है। सामाजिक–सांस्कृतिक रीतियों और तदनुकूल मानसिक स्तर के अध्ययन की दृष्टि से यह अधुनातन विद्या श्लाघ्य है। भारतीय स्थल–नाम परिषद् (मैसूर) के नवें राष्ट्रीय अधिवेशन के अध्यक्षीय व्याख्यान के अन्तर्गत प्रसिद्ध भाषाविद्–इतिहासज्ञ प्रो. विश्वम्भरशरण पाठक ने नाम–विज्ञान की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर विस्तृत प्रकाश डाला है। उनके विचार से प्राचीन भारतीय इतिहास में नाम–विज्ञान का 'स्कोप' नाम–दर्शन तथा पुरा भाषावैज्ञानिक उपकरण– दोनों ही दृष्टियों से व्यापक है। ज्ञातव्य है कि देश के अभिधान : भारत : इण्डिया : हिन्दू की निरुक्ति (पूर्वा प्रकाशन, गोरखपुर, 1992) शीर्षक प्रो. पाठक की विलक्षण कृति इस दिशा में एक अभिनव प्रयास है। भारतीय स्थल–नाम–परिषद् के अधिवेशनों–प्रकाशनों तथा इनसे प्रेरित कृतियों के आलोक में स्वदेश के विभिन्न क्षेत्रों का इस शैली में अध्ययन निस्संदेह उपयोगी होगा।

'गोरखपुर' ऐतिहासिक दृष्टि से भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं। यह एक ऋषि–नाम 'गोरक्ष' से जुड़कर यदि तीर्थ बनता गया है तो पूर्वी उत्तर प्रदेश के विकासमान महानगर की गरिमा का संवाहक भी। इस महानगर में गोरखपुर नाम का पुराना गोरखपुर मुहल्ला एवं डाकघर तो है पर इनका भू–राजस्व नाम विचारणीय है। उल्लेखनीय है कि जनपदीय ग्राम–सूची में बड़हलगंज

ब्लाक के अन्तर्गत 'गोरखपुर' (ग्राम संख्या 213) नाम अवश्य अंकित है (सम्भव है यह ग्राम–नाम किसी पूर्वज 'गोरख' के कारण पड़ा हो)।

गोरखपुर जनपद में डीह–डाबर भी कम नहीं। 'डीह' उत्तर पद वाले कुछ नाम नाम–करण की दृष्टि से उल्लेखनीय हैं। डीह एवं देव–कुल से जुड़े नामों में उल्लेखनीय हैं– देवकली, लहुरादेवा, थारूडीह, महाडी, मठौली, धुरियाडीह, खरहादेउर, नाउरदेउर, पकड़डीहा, रानीडीह, नीबी टोला आदि।

ग्राम–नामों का लिङ् परिवर्तन भी लोगों की मानसिकता और उनकी भाषा–प्रकृति के आधार पर होता रहा है। अब नाम चाहे सिधौर हो या सिधौली एक ही बात है। सिधौर यानि सिद्धपुर और सिधौली अर्थात् सिद्धपुरी। सिधौली को सिधौलिया भी कह सकते हैं। बभनौली, धोबौली, रुदौली, अहिरौली या अहिरौलिया आदि नामों की तरह एक मेहरौली गोरखपुर जनपद में भी है। सम्भव है कि यह हो मिहिर–पुरी मूलतः सूर्य–पूजा–केन्द्र है। इस तरह के तथा अन्य अनेक प्रकार के नामों के आधार पर लोगों के रीति–रिवाज, खानपान, प्रकृत–प्रेम और विविध सांस्कृतिक उत्स उद्घाटित हो पाते हैं। ऐसे नामों के वर्गीकरण और उनके ऐतिहासिक मूल्यांकन के आधार पर क्षेत्र विशेष की संस्कृति का यथार्थ सामने आ जाता है और इस क्षेत्र के ग्रामों की प्राचीनता तथा यहाँ जनसन्निवेश का इतिहास उद्घाटित होगा।

जनपदीय नामों में अन्तर्क्षेत्रीय या अन्तर्प्रादेशिक ही नहीं अन्तर्राष्ट्रीय विचार–विनिमय के भी बीजतत्त्व समाविष्ट हैं। 'खोर' उत्तर पद को लें – गोरखपुर जनपद में दर्जनों ग्राम–नाम खोरान्त हैं। 'खोर' या 'खोरी' ब्रजभाषा में अधिक प्रचलित है। 'गंज' एक पारसीक शब्द है 'बाजार' के अर्थ में। उर्दू, फारसी और अरबी के शब्द ऐतिहासिक कारणों से ही इस क्षेत्र में भी आये होंगे। ऐसा प्रतीत होता है कि यहाँ के नाम प्रत्येक वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं यथा– भटौली (भट्टपुरी) भी और गोबड़ौर भी।

ज्ञान, भक्ति एवं वैराग्य का केन्द्र : गीतावाटिका

प्रसून कुमार मल्ल

भवद्विधा भागवतास्तीर्थ भूताः स्वयं विभो।
तीर्थो कुर्वन्ति तीर्थानि स्वान्तस्थेन गदाभृता।।

धर्मराज युधिष्ठिर विदुर जी से कहते हैं– आप जैसे भक्त स्वयं ही तीर्थ रूप होते हैं। आप लोग अपने हृदय में विराजित भगवान् के द्वारा, तीर्थों को भी महान तीर्थ बनाते हुए विचरण करते हैं।

आज गोरखपुर के उत्तरी भाग में स्थित 'गीतावाटिका' भी एक ऐसा ही तीर्थ बन चुका है जिसके कण–कण में युगल महान विभूतियों के तप, साधना एवं प्रेम का रस–सागर लहरा रहा है। गीतावाटिका रूपी इस तीर्थ के विषय में कुछ कहने से पूर्व पाठकों का परिचय इन महान विभूतियों से कराना आवश्यक है।

भाईजी के नाम से विख्यात परमभागवत श्री हनुमानप्रसाद जी पोद्दार के नाम से भला कौन परिचित नहीं होगा किन्तु उनके शील, स्वभागव और सेवाभाव को उनके अभिन्न सहचर प्रीतिरसावतार पूज्य राधा बाबा से अधिक कौन जान सकता है अतः भाईजी के चरित्र को रेखांकित करता पूज्य राधा बाबा का शब्द–चित्र दर्शनीय होगा।

1. धार्मिक ग्लानि और ह्रास को दूर करने के लिए धर्म–प्रचार का जो कार्य आद्यशंकराचार्य रामानुजाचार्य जैसे आचार्यों द्वारा हुआ।
2. जन–जन के आचार–विचार–व्यवहार को नियंत्रित–सुसंस्कृत करने के लिए समाज–जीवन सम्बन्धी प्रश्नों पर व्यवस्था देने का जो कार्य मनु, याज्ञवल्क्य जैसे स्मृतिकारों द्वारा हुआ।

प्रवक्ता–संस्कृत, महाराणा प्रताप इण्टर कॉलेज, गोरखपुर

3. हृदय के कोमल भक्ति–भावनाओं के तरंगित हो उठने पर भक्ति–काव्य की रचना को जो कार्य तुलसीदास, सूरदास जैसे भक्त कवियों द्वारा हुआ।

4. श्रीराधामाधव लीला–सिन्धु में नित्य–निरन्तर निमग्न रहने के आदर्श की प्रतिष्ठा का जो कार्य मीराबाई, चैतन्यमहाप्रभु जैसे रसिक जनों द्वारा हुआ।

इन चारों कार्यधाराओं के अद्‌भुत संगम का पावन दर्शन श्री पोद्दार जी के विशाल व्यक्तित्व में होता है।

सूत्र रूप में भाईजी के प्रति पूज्य बाबा के इन उद्‌गारों की परख के लिए किसी भी सहृदय पाठक को 'गीतावाटिका' द्वारा प्रकाशित भाईजी के जीवन–चरित्र एवं उनके द्वारा रचित एवं सम्पादित विपुल साहित्य की गहराई में जाना होगा। मेरा प्रयास तो गीतावाटिका की सम्भाल करने वाले दो मालियों की ओर संकेत कर देने का है। जिस प्रकार से गीता प्रेस रूपी छोटे पौधे की स्थापना, संवर्धन एवं पोषण पूज्य भाईजी ने किया उसी प्रकार से गीतावाटिका को स्थापित एवं सुव्यवस्थित करने में राधा बाबा की महती भूमिका रही।

गीतावाटिका के सामाजिक योगदान एवं उसके स्वरूप का वर्णन करने से पूर्व यदि पूज्य राधा बाबा का परिचय न दिया जाय तो हमारा उद्देश्य अधूरा ही रहेगा। क्योंकि वाटिका के वर्तमान स्वरूप के शिल्पी तो बाबा ही हैं।

तत्कालीन गया जनपद के जहानाबाद (जिला) के पास फख़रपुर ग्राम के एक ब्राह्मण परिवार में बाबा (श्री चक्रधर मिश्र) का जन्म 1913 ईस्वी में हुआ। क्रान्तिकारी गतिविधियों से दो बार आपको जेल यात्रा करनी पड़ी वहीं पर भगवदीय आदेश से संन्यास का निर्णय लिया और 12 अक्टूबर 1935 को भरा–पूरा परिवार छोड़कर संन्यासी हो गये। 1936 में कलकत्ता में गोयन्दका जी की प्रेरणा से गीतावाटिका आये तथा 'गीता तत्त्व विवेचिनी' टीका के रूप में 'कल्याण' के विशेषांक की योजना बनी, तत्पश्चात् वृन्दावन वास के अपने निर्णय को पूज्य राधा बाबा ने भाईजी के अनुरोध और अपने प्रियतम श्यामसुन्दर का आदेश मानकर त्याग दिया।

27 मार्च 1971 को (भाईजी के नित्यलीलालीन होने के एक सप्ताह बाद) श्री दिनकर गीतावाटिका आये। समाधि पर पुष्प अर्पित करने के उपरान्त उन्होंने बाबा से पूछा कि पोद्दार जी की चिता किसी नदी तट पर न जलाकर वाटिका में क्यों जलायी गयी।

बाबा ने बताया– सन् 1939 में मैंने जब पोद्दार जी से वृन्दावन जाने की अनुमति माँगी तो उन्होंने कहा, दोनों साथ–साथ रहें जब मेरा शरीर न रहे तो आप जहाँ चाहे चले जाइएगा। यह सुनकर मैंने कहा– भाईजी जब इतने दिन आप के साथ रहूँगा तब यदि आपके न रहने पर मेरा शरीर रहा तो मैं आपको छोड़कर अन्यत्र क्यों जाऊँगा? आपके पार्थिव शरीर की जहाँ

अन्त्येष्टि होगी वहीं मैं अपना शेष जीवन बिता दूँगा। यह मेरा निश्चय था इस निश्चय के अनुसार यदि भाईजी की चिता नदी किनारे रचायी गयी होती तो मैं भी वहीं रहता। अतएव पंचों ने यह तय किया कि भाईजी की चिता यहाँ गीतावाटिका में ही जले। अनन्य प्रेम से सराबोर बाबा के उद्‌गार सुनकर दिनकर जी रोमांचित हो उठे।

अपने गुरु–तुल्य अनन्य सहचर हनुमानप्रसाद पोद्दार जी की स्मृति को अपने हृदय में संजोये हुए जीवन के शेष 20 वर्षों के एक–एक क्षण को बाबा ने उनकी चिता–स्थली के 250 गज के अन्दर रहते हुए किस प्रकार व्यतीत किया इसका दर्शन करने वाले भी बड़भागी ही थे। श्री राधाबाबा के लोकोत्तर चरित्र का वर्णन यहाँ सम्भव नहीं है किन्तु प्रख्यात कवि हरिवंश राय 'बच्चन' जी के बाबा के विषय में लिखे गये अनेक शब्द–सुमनों में दो का उल्लेख करके सम्भवतः शाखाचन्द्र न्याय से पाठकों को पूज्य राधा बाबा के व्यक्तित्व का संकेत करा सकूँगा।

बच्चन जी ने अपनी 'जन–गीता' एवं 'नागर–गीता' नाम की दो पुस्तकें पूज्य बाबा की प्रेरणा एवं निर्देशन में लिखीं। इन पुस्तकों में बाबा के प्रति उनके भावपूर्ण उद्‌गार आदरणीय राधेश्याम बंका जी द्वारा लिखित 'वाटिका–वातायन' में देखने योग्य है। 'नागर–गीता' में बाबा के प्रति अपने भाव–सुमनों को समर्पित करते हुए बच्चन जी लिखते हैं– 'गीता' ग्रन्थों से पूर्णतया समझने की वस्तु नहीं। उसके लिए तो किसी ऐसे सिद्ध के सम्पर्क की आवश्यकता है, जो गीता स्वरूप हो। यह साधन से अधिक सौभाग्य से मिलता है– 'सो सब साधन ते नहिं होई।' काष्ठ मौनी स्वामी जी (राधा बाबा) का दर्शन मेरा वही सौभाग्य है। उनके सम्पर्क में आकर भी 'जन–गीता' और 'नागर–गीता' में त्रुटियाँ रह जायें तो यही समझना चाहिए कि "फूलै फरै न बेंत जदपि सुधा बरसहिं जलद।" उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं, नमन है। मैं उनको मनःनमन करता हूँ, यह उन्हें पहुँचना भी है।

'तस्मात्प्रणम्य प्रणिधाय कार्यं'।

'दशद्वार से सोपान तक' में भी बच्चन जी ने अपने भाव–प्रसून समर्पित करते हुए लिखा है– "राधा बाबा को अगर कोई एक–एक लक्षण पर परखे तो उनको सौ टंच खरा पायेगा। मुझे अगर एक विशेषण से ही राधा बाबा को परिभाषित करना हो तो मैं उनको 'विशुद्ध' सन्त कहूँगा।"

तुलसीदास ने भी संत के लिए यह विशिष्ट विशेषण शायद एक ही बार प्रयुक्त किया है– "संत विशुद्ध मिलहिं परि तेही।

चितवहिं राम–कृपा करि जेही।।"

राम ने अगर कभी कृपा कर मेरी ओर देखा तो उसका एक मात्र सबूत मेरे लिए यही

है कि राधा बाबा मुझे मिले।

भौतिक चाकचिक्य के कारण भ्रमित इस समाज को त्याग, तप और साधना के निर्मल, आनन्दमय और शान्त जीवन की ओर प्रेरित करना इन महापुरुषों का जीवन इसी गीतावाटिका में पुष्पित हुआ। सांसारिक धन वैभव एवं यश कीर्ति के मध्य रहकर भी किस प्रकार इससे निर्लिप्त रहा जा सकता है, इस बात की शिक्षा देता हुआ, बड़े–छोटे सभी में अपने प्रियतम श्यामसुन्दर की छवि के दर्शन करते हुए उस पर स्वयं को न्योछावर करते हुए, किसी के दुःख का अनुभव कर स्नेहाश्रुओं से छल–छल करते नेत्र और अवरुद्ध कण्ठ राधा बाबा की छवि जिसने भी देखी उन्हीं का हो कर रह गया।

अपने परम प्रेमास्पद भाईजी के पंचभौतिक कलेवर को त्यागने का कारण बने 'कैंसर' से दीन–दुखियों की चिकित्सा हो सके इसके लिए 'हनुमानप्रसाद पोद्दार स्मारक समिति' का गठन कर उसके अन्तर्गत 'कैंसर अस्पताल' की स्थापना एवं संचालन, चितास्थली पर भव्य स्मारक निर्माण, 1968 से अखण्ड भगवन्नाम संकीर्तन के निरन्तर चलते रहने की व्यवस्था, श्रीराधाकृष्ण साधना मन्दिर की स्थापना एवं श्रीविग्रहों की प्राण–प्रतिष्ठा आदि महत् कार्य तो मानो सन्त के संकल्प मात्र से ही पूर्ण हो गये।

'हनुमानप्रसाद पोद्दार स्मारक समिति' के द्वारा कैंसर अस्पताल, श्रीकृष्ण गो–शाला, श्रीराधाकृष्ण साधना मन्दिर की व्यवस्था, अतिथिशाला का संचालन, अनेक साधकों को निःशुल्क आवासीय सुविधा एवं तमाम जनहित के कार्यों के अतिरिक्त आज की सबसे बड़ी आवश्यकता चरित्र–निर्माण एवं संस्कारों की स्थापना हेतु पूरे वर्ष विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं जिनका विवरण नीचे दिये जाने का प्रयास किया जा रहा है।

1. 5 जनवरी से 11 जनवरी 2018 – शिवपुराण कथा – श्री श्रीकान्त जी शर्मा
2. 6 मार्च से 12 मार्च 2018 भाईजी की 47वीं पुण्यतिथि पर – 'श्रीमद्भागवत कथा'– श्री लक्ष्मीनारायण जी शास्त्री (वृन्दावन) द्वारा।
3. 16 मई से 13 जून 2018 (पुरुषोत्तम मास में) वर्ष भर मनाये जाने वाले पर्वों एवं उत्सवों को श्रीराधाकृष्ण साधना मन्दिर में मनाया गया।
4. 7 जुलाई से 15 जुलाई 2018 तक मन्दिर का पाटोत्सव एवं श्रीमोहन लाल जी (अयोध्या) के द्वारा रामकथा।
5. 20 अगस्त से 26 अगस्त 2018 – 'श्रीमद्भागवत कथा'– श्री नरहरिदास जी महाराज (अयोध्या) द्वारा
6. 31 अगस्त से 5 सितम्बर 2018 – 'श्रीमद्भागवत कथा'– श्री राधेश्याम जी शास्त्री

(वृन्दावन) द्वारा

7. 29 सितम्बर से 6 अक्टूबर 2018 –भक्त महिमा कथा एवं श्रद्धार्चन–भाईजी की 126वीं जयन्ती के अवसर पर।

   कथा व्यास – श्री गौरदास जी।

8. 18 अक्टूबर से 26 अक्टूबर 2018– श्रीराम कथा – श्री शोभाराम दास जी (जयपुर), महाभावनिमग्न राधाबाबा की 27वीं पुण्यतिथि पर।

9. 20 से 26 नवम्बर 2018 – भरत चरित्र – श्री नरेन्द्र शुक्ल धनुषधारी जी द्वारा

10. 9 दिसम्बर से 15 दिसम्बर 2018 – श्रीमद्भागवत महापुराण कथा – कथाव्यास–श्री डॉ. संजयकृष्ण सलिल (वृन्दावन)

11. 25 से 30 दिसम्बर 2018 तक –वृन्दावन के स्वामी श्री चेतराम जी की रासलीला मण्डली द्वारा 'लीला एवं भक्त चरित्र का मंचन।'

12. 31 दिसम्बर 2018 से 6 जनवरी 2019 तक – श्रीमद्भागवत कथा – श्री ईश्वर कृष्ण जी (वृन्दावन)

उल्लेखनीय है कि 1968 की राधाष्टमी के अवसर पर स्थापित अखण्ड भगवन्नाम संकीर्तन के 50 वर्ष पूर्ण होने पर भगवन्नाम संकीतन महिमा की कथा का आयोजन 29 सितम्बर से 06 अक्टूबर 2018 को किया गया।

इस प्रकार समाज में भक्ति, ज्ञान, वैराग्य, प्रेम आदि को पुष्पित–पल्लवित करती हुई यह गीतावाटिका समाज के निर्माण में सच्चरित्र नागरिकों को दिशा दिखाती हुई अपने धर्म, संस्कृति और कर्तव्य रक्षण का कार्य भली–भाँति कर रही है।

विश्वविद्यालय के शिल्पी महन्त दिग्विजयनाथ

डॉ. प्रदीप कुमार राव

श्री गोरक्षपीठ के पीठाधीश्वर महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज का विराट व्यक्तित्व नाथपंथ के महानयोगी बाबा गम्भीरनाथ जी महाराज की छत्रछाया में निर्मित एवं विकसित हुआ था। महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज का बचपन का नाम नान्हू था। 6 वर्ष की अवस्था में उन्हे उनके परिवार द्वारा श्री गोरखनाथ मन्दिर को सुपुर्द कर दिया गया। मेवाड़ राजपरिवार में जन्मे नान्हू से युगपुरुष महन्त दिग्विजयनाथ बनाने में नाथपंथ के सिद्धयोगी बाबा गम्भीरनाथ जी की महत्त्वपूर्ण भूमिका थी। ऐसा लगता है कि योगिराज बाबा गम्भीरनाथ श्री गोरक्षपीठ में महायोगी गोरक्षनाथ जी की कृपा से ही आए थे। वे कौन थे? कहाँ से आए थे? इसकी जानकारी नहीं मिलती। ऐसा अनुमान लगाया जाता है कि वे कश्मीर के किसी राजपरिवार से योगसाधना का संस्कार लेकर श्री गोरक्षनाथ मन्दिर में पहुँचे थे। वे नाथपंथ के ऐसे सिद्ध योगी थे जिन्हें अनेक मानवेतर शक्तियाँ प्राप्त थी। अनेक घटनाएँ प्रमाणित करती हैं कि महायोगी गोरखनाथ जी की सिद्ध योगियो की परम्परा में वे ऐसे सिद्ध योगी थे जिन्होंने बीसवीं शताब्दी की चौखट पर अपनी प्रभावपूर्ण आध्यात्मिक उपस्थिति से भारतीय अध्यात्म के दिव्याकाश को जाज्वल्यमान नक्षत्र की भाँति प्रकाशित किया। भारत की सनातन संस्कृति के अपौरुषेय स्वरूप को पुनः प्रमाणित एवं प्रतिष्ठित किया। उन्होंने मुक्तिपथ के पथिकों को अनजाने, अनचाहे, चुपचाप अपने कर्म के आदर्शों द्वारा प्रेरित किया, उद्‌बुद्ध किया। उनसे प्रभावित उनके अनुयायियों की काफी बड़ी संख्या हो गयी थी। बीसवीं शताब्दी के प्रथम दो दशको में श्री गोरक्षपीठ की व्यवस्था के वे ही नियामक थे। वस्तुतः श्री गोरक्षपीठ एवं श्री गोरखनाथ मन्दिर की भावी भूमिका युगानुकुल नाथपंथ के इस महानयोगी ने तय कर दी थी और उसी के अनुरूप वे भावी महन्त (महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज) को गढ़ रहे थे। योगिराज बाबा गम्भीरनाथ जी के आशीर्वाद एवं

*प्राचार्य, महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर

कृपा से ही नान्हू दिग्विजयनाथ बने और उन्हीं की प्ररेणा से उन्होनें श्री गोरक्षपीठ की ध ार्मिक–आध्यात्मिक– सामाजिक–राष्ट्रीय भूमिका का विस्तार किया।

मेवाड़ राजपरिवार के बालक नान्हू का पालन– पोषण एक राजकुमार की तरह योगिराज बाबा गम्भीरनाथ जी ने किया। उन्होने योग–साधना के साथ–साथ राष्ट्र–समाज के निर्माण और विकास में श्री गोरक्षपीठ को सचेष्ठ और सक्रिय भूमिका के साथ अग्रसर किया। उनके समय में भी श्री गोरक्षपीठ स्वतन्त्रता संग्राम के क्रान्तिकारियों की शरणस्थली बनी रही। योगिराज बाबा गम्भीरनाथ युवा क्रान्तिकारियों को योग–अध्यात्म की पारमार्थिक शक्ति का महत्व बताते थे। इस सिद्ध योगपीठ में पल रहे नान्हू परिवेश के साक्षी भी थे और अध्येता भी। आध्यात्मिक योग साधना के साथ–साथ उन्हें आधुनिक शिक्षा ग्रहण करने की प्ररेणा योगिराज बाबा गम्भीरनाथ ने ही दी। उनका राजकीय जुबली कॉलेज में प्रवेश कराया और पठन–पाठन की यथासम्भव समस्त सुअवसर एवं सुविधाएं उपलब्ध करायी। इस प्रकार मेवाड़ राजकुमार का व्यक्तित्त्व आधुनिक ज्ञान–विज्ञान की शिक्षा एवं राष्ट्रधर्म के साथ–साथ योग–साधना के दार्शनिक एवं क्रियात्मक पक्षों के समवेत स्वर से निर्मित हुआ। शीघ्र ही यह राजकुमार नान्हू से दिग्विजयनाथ बनने की ओर बढ़ चला। बालगंगाधर तिलक, लालालाजपत राय, स्वामी विवेकानन्द, श्री अरविन्द, महामना मदनमोहन मालवीय, चन्द्रशेखर आजाद, पं. रामप्रसाद विस्मिल, सरदार भगत सिंह जैसे स्वतन्त्रता संग्राम सेनानियों एवं क्रान्तिकारियों से प्रेरणा तथा योगीराज बाबा गम्भीरनाथ के निर्देशन एवं आशीर्वाद से श्री गोरक्षपीठ का यह तेजस्वी युवा ऋषि भारत के स्वतन्त्रता संग्राम का सिपाही बन गया तथा महात्मा गांधी के गोरखपुर आगमन पर उनकी सभा का आयोजन कराने, उनके आह्वान पर पढ़ाई छोड़ने एवं चौरी–चौरा काण्ड का नेतृत्व करने तक कांग्रेस के स्वतन्त्रता आन्दोलन में महत्वपूर्ण योगदान दिया। चौरी–चौरा काण्ड के बाद गांधी द्वारा असहयोग आन्दोलन को वापस लेना इस युवा सन्यासी के लिये किसी आघात से कम नहीं था। इस युवा सन्यासी को कांग्रेस की ढुलमुल नीति पसन्द नहीं आयी। अनेक राष्ट्रभक्तों के साथ इस युवा सन्त ने भी अपनी अलग राह पकड़ी और हिन्दू महासभा राष्ट्रसाधना का अगला पड़ाव बना।

यही समय था जब देश के अनेक कालजयी युगद्रष्टा निकट भविष्य में भारत माँ को आजाद होते देख रहे थे और भारत की तस्वीर संजोने लगे थे। दिग्विजयनाथ जी महाराज भी इन्हीं युगद्रष्ट्राओं की कतार में खड़े थे। इनका मानना था कि सशक्त भारत राष्ट्र की आध ारशिला भारतीय संस्कृति के उपासक युवा ही रख सकेंगे और वे ही भारत का प्राचीन गौरव पुनर्प्रतिष्ठत कर सकेंगे। इस युवा सन्यासी ने राष्ट्रनिर्माण में शिक्षा की शक्ति को पहचाना। भारतीय संस्कृति के संस्कारों में ढली हुयी शिक्षा व्यवस्था ही स्वस्थ राष्ट्र के निर्माण में सहायक

होगी। इस विचार से प्रेरित इस युवा सन्यासी ने 1932 में सिद्धयोग पीठ की छत्रछाया में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की नींव रखी। 1932 ई. में स्थापित महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद का बोधवाक्य था–'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' तथा 'जो हठि राखे धर्म को तिहि राखें करतार'। इस प्रकार महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज के नेतृत्त्व में योग–साधना की इस सिद्ध योगपीठ ने भारत माता एवं भारतीय धर्म संस्कृति की रक्षा, तथा उसकी पुनर्प्रतिष्ठा को भी अपनी साधना का हिस्सा बना लिया।

1947 में भारत जब आजाद हुआ, गोरखपुर में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् इण्टर तक की भारत केन्द्रित शिक्षा प्रणाली का तन्त्र विकसित कर चुका था। शिक्षा को समर्थ एवं समृद्ध राष्ट्र के विकास का आधार मानने वाले गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज गोरखपुर को उच्चशिक्षा का केन्द्र बनाने की दिशा में बढ़ चले और महाराणा प्रताप महाविद्यालय की स्थापना की। प्राथमिक से लेकर उच्च शिक्षा के इन महाविद्यालयों की स्थापना के साथ–साथ इस मनीषी के मन में गोरखपुर में विश्वविद्यालय की स्थापना का स्वप्न स्वाभाविक था। योग–अध्यात्म के साधक, गोरक्षपीठ के इस तपस्वी सन्यासी के तप–बल से किसी भी स्वप्न का साकार होना सहज था, सो यह स्वप्न भी शीघ्र आकार लेने लगा, कड़ियाँ जुड़ने लगी, समाज– शासन के स्वर मिलने लगे और विश्वविद्यालय की स्थापना का मार्ग प्रशस्त होने लगा। महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज के इस महायज्ञ को महात्मा गाँधी की हत्या के छीटें भी रोक नहीं पाए।

1945 तक माध्यमिक शिक्षा की नींव मजबूत कर महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज ने उच्च शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षण संस्थाओं की स्थापना के प्रयत्न प्रारम्भ कर दिये और महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् द्वारा महाराणा प्रताप डिग्री कालेज की स्थापना सिविल लाइन्स में कर दी गयी। गोरखपुर के तत्कालीन लगभग सभी प्रतिष्ठित एवं सामाजिक लोग महन्त दिग्विजयनाथ जी के महाराज के लोक आग्रही अभियान के हिस्सा बन चुके थे और इनमें से अनेक महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के पदाधिकारी एवं सदस्य थे। यही टीम गोरखपुर विश्वविद्यालय की स्थापना में सक्रिय हुयी। महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के लगभग सभी पदाधिकारी एवं सदस्य विश्वविद्यालय स्थापना समिति के पदाधिकारी एवं सदस्य बने। गोरखपुर विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए तत्कालीन मुख्यमंत्री गोविन्दवल्लभ पंत से मिलकर महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज ने गोरखपुर में विश्वविद्यालय की स्थापना का आग्रह किया। उनके इस कार्य में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के अध्यक्ष सर सुरेन्द्र सिंह मजीठिया एवं कल्याण के सम्पादक तथा गीताप्रेस के आधार–स्तम्भ एवं महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के सदस्य भाईजी हनुमान प्रसाद सहायक बनें। उस समय गोरखपुर के महाविद्यालय आगरा विश्वविद्यालय से सम्बद्ध थे।

अपने दोनों महाविद्यालयों की स्थापना के साथ–साथ गोरखपुर विश्वविद्यालय की स्थापना हेतु महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज ने इस दिशा में पहल प्रारम्भ की। इसी बीच श्री बब्बन मिश्र और सेन्ट एण्ड्रयूज कॉलेज के तत्कालीन प्राचार्य डॉ. सी.जे. चाको ने गोरक्षपीठाधीश्वर से मिलकर विश्वविद्यालय की स्थापना में सहयोग करने की प्रतिबद्धता जतायी। तय हुआ कि महाराणा प्रताप महाविद्यालय एवं सेण्ट एण्ड्रयूज कालेज दोनों को मिलाकर विश्वविद्यालय स्थापना हेतु प्राथित धनराशि 50 लाख रुपये का मानक पूरा हो जाएगा। महन्त जी ने भाईजी हनुमानप्रसाद पोद्दार एवं डॉ. सर सुरेन्द्र सिंह मजीठिया (डॉ. सर सुरेन्द्र सिंह मजीठिया महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के अध्यक्ष एवं भाईजी सदस्य थे) के साथ उत्तर प्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री पं. गोविन्द बल्लभ पन्त से मिलकर गोरखपुर में विश्वविद्यालय खोलने का प्रस्ताव रखा। पं. गोविन्द बल्लभपन्त जी द्वारा प्रस्ताव की स्वीकृति का आश्वासन प्राप्त होने के पश्चात इस दिशा में सक्रिय प्रयत्न प्रारम्भ हुए। उत्तर प्रदेश के तत्कालीन शिक्षामंत्री डॉ. सम्पूर्णानन्द जी गोरखपुर आए और श्री गोरखनाथ मन्दिर में महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज के साथ बैठक कर गोरखपुर विश्वविद्यालय की स्थापना की घोषणा की। किन्तु भारतीय संविधान में अल्प–संख्यक संस्था को विशेष दर्जा प्राप्त होने के कारण सेन्ट एण्ड्रयूज कालेज के प्रबन्धतन्त्र ने विश्वविद्यालय की स्थापना हेतु कालेज देने से मना कर दिया। एक बार फिर लगा कि गोरखपुर में विश्वविद्यालय की स्थापना मात्र स्वप्न रह जाएगा। परन्तु महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज ने हार नहीं मानी और एक नया महाराणा प्रताप महिला महाविद्यालय की स्थापना कर दी। इस प्रकार महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज द्वारा अपने दोनों महाविद्यालय (महाराणा प्रताप डिग्री कालेज एवं महाराणा प्रताप महिला महाविद्यालय) को विश्वविद्यालय स्थापना हेतु प्राभूत धनराशि के रूप में समर्पित कर दिया गया। दोनों महाविद्यालयों की राशि 50 लाख रुपये आंकी गयी। 50 लाख रुपए की धनराशि का दो महाविद्यालय प्रदेश सरकार को सौंपकर विश्वविद्यालय की स्थापना समिति का गठन हुआ। तत्कालीन जिलाधिकारी पं. सुरति नारायण मणि त्रिपाठी (सितम्बर 1948 से जून 1950 ई.) को जिलाधिकारी होने के कारण इस समिति का अध्यक्ष तथा रायबहादुर मधुसूदन दास (महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के सदस्य) को महामंत्री बनाया गया। महन्त दिग्विजयनाथ जी व मजीठिया साहब उपाध्यक्ष, डॉ. सी.जे. चाको तथा पं. हरिहर प्रसाद दुबे मंत्री बने। भाईजी हनुमानप्रसाद पोद्दार, डॉ. केदारनाथ लाहिड़ी, श्री बब्बन मिश्र, राय राजेश्वरी प्रसाद, श्री महादेव प्रसाद, श्री परमेश्वरी दयाल, खान बहादुर मो. जकी, राम नारायण लाल, पं. प्रसिद्ध नारायण मिश्र, श्री सिंहासन सिंह, श्री कैलाशचन्द्र वाजपेयी, डॉ. हरिप्रसाद शाही, श्री केशव प्रसाद श्रीवास्तव, श्री जगदम्बा प्रसाद, श्री लक्ष्मी शंकर वर्मा, श्री वशिष्ठ नारायण, श्री कमलाकान्त नायक, श्री पुरुषोत्तम दास रईस, श्री सुखदेव प्रसाद, जिलाधिकारी देवरिया एवं जिलाधिकारी बस्ती इस समिति के सदस्य बने। इनमें से अधिकांश महाराणा प्रताप

शिक्षा परिषद् के पदाधिकारी एवं सदस्य थे। स्थानीय प्रशासन की पहल पर रेसकोर्स की 169 एकड़ भूमि विश्वविद्यालय की स्थापना हेतु अधिगृहीत हुई। 1 मई 1950 को तत्कालीन मुख्यमंत्री पं. गोविन्द बल्लभ पंत ने स्वयं विश्वविद्यालय के पहले भवन 'पन्त ब्लाक' का शिलान्यास किया।

विश्वविद्यालय की स्थापना हेतु महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज ने दोनों महाविद्यालय के रूप में न केवल भूमि–भवन दिया बल्कि महाविद्यालय के वे शिक्षक भी दिए जिन्हें ढूढ़–ढूढ़ कर वे अपने प्रभाव और प्रयत्न से लाए थे। गणित विभाग में प्रो. यू.पी. सिंह, हिन्दी विभाग में प्रो. रामचन्द्र तिवारी, प्रो. सत्यनारायण त्रिपाठी, प्रो. शान्ता सिंह, अंग्रेजी में प्रो. नरसिंह श्रीवास्तव, प्रो. प्रताप सिंह, प्रो. मार्कण्डेय सिंह, प्रो. गोरखनाथ सिंह, डॉ. उमा मिश्र, डॉ. बी.एम. सिंह, इतिहास विभाग में डॉ. टी.पी. चन्द, प्रो. शिवाजी सिंह, डॉ. कल्याणी जोरदार, राजनीति शास्त्र विभाग में डॉ. कृष्णानन्द, डॉ. के.एन.सिन्हा, डॉ. पुष्पा नागपाल, डॉ. सुरेन्द्र पन्नू, मनोविज्ञान में डॉ. बी.के. मुखर्जी, भूगोल विभाग में डॉ. महातम सिंह, डॉ. सी.बी. तिवारी, संस्कृत में आचार्य लक्ष्मी नारायण सिंह, वाणिज्य विभाग में डॉ. मिथिलेश सिंह, डॉ. भोलेन्द्र सिंह, डॉ. रामनरेश मणि त्रिपाठी, डॉ. सत्यदेव प्रसाद, डॉ. फतेह बहादुर सिंह, डॉ. हरिहर सिंह, डॉ. बी.बी. सिंह विसेन, दर्शनशास्त्र में डॉ. महादेव प्रसाद, जैसे प्रतिभावान एवं विद्वान महाराणा प्रताप महाविद्यालय एवं महाराणा प्रताप महिला महाविद्यालय के प्राध्यापक विश्वविद्यालय को महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज के प्रयत्नों से ही प्राप्त हुए। ये सभी अपने–अपने विषयों में विश्वविद्यालय में ख्यातिलब्ध आचार्य के रूप में प्रतिष्ठित हुए। आगे चलकर इनमें प्रो. यू.पी. सिंह, डॉ. भोलेन्द्र सिंह, डॉ. सी.बी. तिवारी एवं डॉ. बी.बी. सिंह विसेन कुलपति हुए तथा प्रो. प्रताप सिंह उत्तर प्रदेश उच्च शिक्षा सेवा आयोग के अध्यक्ष बने। तत्कालीन गोरक्षपीठाधीश्वर महंत अवेद्यनाथ जी महाराज के बुलावे पर विश्वविद्यालय से पुनः नवसृजित दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय के संस्थापक प्राचार्य डॉ. बी.एम. सिंह हुए। विश्वविद्यालय की स्थापना में महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज का योगदान इस बात से भी समझा जा सकता है कि गोरखपुर विश्वविद्यालय कार्यपरिषद् में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् का एक स्थायी सदस्य होना परिनियम का हिस्सा बना। आज भी विश्वविद्यालय का पश्चिमी परिसर 'महाराणा प्रताप परिसर' के नाम से प्रतिष्ठित है। उपर्युक्त तथ्यों से स्पष्ट है कि युगपुरुष गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज गोरखपुर विश्वविद्यालय के वास्तविक शिल्पी थे। परिकल्पना से लेकर विश्वविद्यालय को आकार देने तक उनकी भूमिका अद्वितीय थी।

गीताप्रेस : सनातन धर्म एवं संस्कृति की अमूल्य धरोहर

डॉ. शैलेन्द्र प्रताप सिंह*
डॉ. बसन्त नारायण सिंह**

गीताप्रेस धर्म एवं अध्यात्म का पावन मन्दिर है। गोरखपुर में गीताप्रेस की स्थापना का मूल उद्देश्य गीतोपदिष्ट तत्त्वज्ञान का संदेश भारत के कोने–कोने में पहुँचाना था। इसके आदि प्रवर्तक थे–श्रद्धेय श्री जयदयाल जी गोयन्दका। वे तत्त्वज्ञानी महापुरुष थे–गीता अनुशीलन में उनका समस्त साधनापूर्ण जीवन व्यतीत हुआ था। उनको दिव्य आत्मप्रकाश की प्राप्ति भी इसी माध्यम से हुई थी।

गीताप्रेस के संस्थापक ब्रह्मलीन परम श्रद्धेय श्री जयदयाल जी गोयन्दका का उपनाम 'सेठजी' था। इनका आविर्भाव ज्येष्ठ कृष्ण षष्ठी, बृहस्पतिवार विक्रम संवत् 1942 तदनुसार 4 जून 1885 को राजस्थान प्रान्त के चूरू में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री खूबचन्द जी गोयन्दका एवं माता का नाम श्रीमती श्योबाई था।

श्री सेठ जी का जीवनवृत्त था– गीता–प्रचार। उनकी मंगल अभिलाषा थी कि गीता से जो प्रकाश उन्हें मिला है वह मानवमात्र को मिले। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए गीताप्रेस की स्थापना विक्रम संवत् 1980 (सन् 1923 ई.) के मई महीने में हुई। गोविन्द भवन–कार्यालय, कोलकाता के नाम से सोसाइटी पंजीयन के अन्तर्गत पंजीकृत गीताप्रेस आरम्भ से ही एक धार्मिक संस्था के रूप में प्रतिष्ठित रही है।

इसका संचालन संस्था के ट्रस्टबोर्ड के नियन्त्रण में होता है। गीताप्रेस का मुख्य कार्य सस्ते–से–सस्ते मूल्य पर सत्साहित्य का प्रचार और प्रसार करना है। पुस्तकों के मूल्य प्रायः लागत से भी कम रखे जाते हैं, परन्तु इसके लिए यह संस्था किसी प्रकार के चन्दे या आर्थिक

*प्राचार्य, दिग्विजयनाथ पी.जी. कालेज, गोरखपुर
**अधीक्षक, प्रताप आश्रम, गोलघर, गोरखपुर

*

सहायता की याचना नहीं करती।

गीताप्रेस द्वारा प्रकाशित पुस्तकों की गुणवत्ता एवं उपयोगिता का अनुमान इसी बात से सहज रूप से लगाया जा सकता है कि इस वर्ष 1 जनवरी 2018 से 31 दिसम्बर 2018 तक लगभग 60 करोड़ मूल्य की पुस्तकें उपलब्ध करायी गयीं। कल्याण के सदस्यता–शुल्क की धनराशि इससे अलग है।

श्रीमद्भगवद्गीता, श्रीरामचरितमानस, महाभारत, पुराण और पूजा–पद्धतियों के इस देश के सभी भाषा–भाषियों को उनकी भाषा में पुस्तकें मिल सकें, इसके लिए गीताप्रेस अनवरत प्रयास कर रहा है। इस समय 12 क्षेत्रीय भाषाओं में अनेक धार्मिक पुस्तकों का प्रकाशन गीताप्रेस कर रहा है। इससे एक तरफ जहाँ धार्मिक–सांस्कृतिक चेतना को बल मिल रहा है, वहीं क्षेत्रीय भाषाओं के विकास में भी गीताप्रेस के माध्यम से बड़ा योगदान सम्भव हो पा रहा है।

धार्मिक ग्रन्थ तो सभी के हैं, भले ही उनकी भाषा चाहे जो भी हो। इसलिए गीताप्रेस द्वारा यह प्रयास किया जाता है कि धार्मिक ग्रन्थों को पढ़ने–समझने में भाषा बाधक न बने। इसलिए 15 भाषाओं में गीताप्रेस पुस्तकें प्रकाशित कर रहा है, जिसके फलस्वरूप एक तो धार्मिक पुस्तकें लोगों को उनकी भाषा में मिल जाती हैं, दूसरे क्षेत्रीय भाषाओं का विकास भी होता है।

गीताप्रेस के लगभग 1878 वर्तमान प्रकाशनों में लगभग 872 प्रकाशन संस्कृत एवं हिन्दी भाषा के हैं। शेष प्रकाशन मुख्यतया गुजराती, मराठी, तेलुगु, बँगला, ओड़िया, तमिल, कन्नड़ आदि भारतीय भाषाओं के साथ–साथ अंग्रेजी तथा नेपाली भाषा में भी हैं। सम्प्रति हिन्दी, मराठी, अंग्रेजी, गुजराती, ओड़िआ और नेपाली भाषा में सरल गीता का प्रकाशन हुआ है। इस पुस्तक को गीताजी का शुद्ध उच्चारण सीखने वाले सामान्य पाठकों की सुविधा के लिए प्रत्येक चरण के कठिन शब्दों को सामासिक चिह्नों से अलग करके दो रंगों में छापा गया है। इससे श्लोक के प्रत्येक चरण को समझने में सहायता मिलेगी।

गीताप्रेस अपनी पूर्वप्रकाशित पुस्तकों के पुनर्मुद्रण के साथ–साथ नयी–नयी पुस्तकें भी उसी गति से प्रकाशित करता रहता है। देखा जाय तो इस वर्ष 1–02–2018 से 31–12–2018 तक सम्पूर्ण 53 प्रकाशन हुए हैं, जिनमें प्रमुख हैं–

महाभारतमु–सटीक (तेलुगु){**सात खण्डों में सेट**} **महाभारत** आर्य–संस्कृति तथा भारतीय सनातन धर्म का एक महान् ग्रन्थ तथा अमूल्य रत्नों का अपार भण्डार है। महाभारत की महिमा अपार है। औपनिषद् ऋषि ने भी इतिहास–पुराण को 'पंचम वेद' बताकर महाभारत की सर्वोपरि महत्ता स्वीकार की है। गीताप्रेस ने महाभारत का संस्कृत एवं हिन्दी अनुवाद ही प्रकाशित किया था, किन्तु तेलुगु भाषा में इसका प्रकाशन कर तेलुगु भाषी पाठकों के लिए

सराहनीय कार्य किया है। इससे न केवल उक्त भाषा–भाषी लाभान्वित होंगे, अपितु महाभारत को ठीक–ठीक समझने में भी सुविधा होगी।

उपयोगिता की दृष्टि से इस ग्रन्थ के सम्बन्ध में इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि इसकी समस्त प्रतियाँ शीघ्र ही समाप्त हो गयी हैं तथा दूसरे संस्करण के प्रकाशन की प्रक्रिया चल रही है।

श्रीमद्भागवतमहापुराण श्रीधरी टीका (गुजराती) {पाँच खण्डों में} श्रीमद्भागवत साक्षात् भगवान् का स्वरूप है। भगवान् व्यास–सरीखे भगवत्स्वरूप महापुरुष को इसी रचना से ही शान्ति मिली थी। भगवान् के मधुरतम प्रेम–रस का छलकता हुआ सागर है–श्रीमद्भागवत।

गीताप्रेस से पहली बार इस ग्रन्थ का प्रकाशन गुजराती भाषा में किया गया है। इसकी उपयोगिता इसी बात से सिद्ध है कि श्रीमद्भागवत–महापुराण की सबसे प्रामाणिक टीका गुजराती भाषा की 'श्रीधरीटीका' ही मानी जाती है। जिससे पाठकों की बहुप्रतीक्षित माँग पूरी हो गयी है।

इसके अतिरिक्त कुछ अन्य महत्त्वपूर्ण प्रकाशन भी हुए हैं जिनमें– **गुरु चरित्र** (तेलुगु), **श्रीरामचरितमानस–सटीक** (सामान्य संस्करण), **सचित्र सुन्दरकाण्ड, सं. नारदपुराण** (गुजराती), **श्रीभक्तमाल** (गुजराती), **गो–अंक** (गुजराती), **सं. ब्रह्मपुराण** (गुजराती), **सं. ब्रह्मवैवर्तपुराण** (गुजराती), **श्रीप्रेमसुधा सागर** (गुजराती), **भजन–सुधा** (गुजराती), **श्रीरामचरितमानस–सटीक** (असमिया) के नाम उल्लेखनीय हैं।

गीताप्रेस द्वारा प्रकाशित पुस्तकों एवं कल्याण का प्रचार 21 निजी थोक, 5 फुटकर पुस्तक दुकानों, 52 स्टेशन स्टालों तथा हजारों पुस्तक–विक्रेताओं के माध्यम से होता है।

गीताप्रेस द्वारा तीन मासिक–पत्र '**कल्याण**' तथा '**युग–कल्याण**' हिन्दी में एवं '**कल्याण–कल्पतरु**' अंग्रेजी में प्रकाशित किये जाते हैं।

'**कल्याण**' भक्ति, ज्ञान, वैराग्य, धर्म, सदाचार एवं साधन–सम्बन्धी सामग्री द्वारा जन–जन को कल्याण के पथ पर अग्रसरित करने का निरन्तर प्रयास कर रहा है। '**कल्याण**' पत्रिका के 92 अंक निकल चुके हैं तथा जनवरी 2019 का विशेषांक '**श्रीराधामाधव–अंक**' है। यह अंक 'श्रीराधा–माधव' को समर्पित है।

'**कल्याण–कल्पतरु**' के अबतक 63 विशेषांक निकल चुके हैं। अक्टूबर 2018 का विशेषांक '**Welfare All**' है।

समय के बदलाव का प्रभाव गीताप्रेस के प्रकाशनों पर भी पड़ा है, जिसके फलस्वरूप

गीताप्रेस ने आधुनिक टेक्नॉलॉजी को भी अपनाया है तथा प्रकाशनों की शीघ्र उपलब्धता, छपाई की गुणवत्ता एवं व्यापक प्रचार को दृष्टिगत रखते हुए विदेशों से भी अनेक मशीनें आयात की गयी हैं जिससे प्रकाशन कार्य सुगम हुआ है। प्रमुख मशीनें निम्नलिखित हैं–

(1) कोमोरी मशीन (Komori Machine)– बहुरंगी छपाई की यह मशीन उच्च गुणवत्ता के साथ–साथ तीव्र गति से कार्य करती है। लगभग 1,300 शीट प्रति घण्टे छपाई करने वाली यह मशीन जापान से आयात की गयी है। चित्रों की सुन्दर छपाई करके यह मशीन गीताप्रेस के प्रकाशनों की गुणवत्ता को बढ़ा रही है।

(2) गेदरिंग मशीन (Gathering Machine)– पुस्तकों के फर्मों की छपाई के बाद मुड़े हुए विभिन्न जुजों को एकत्र करके पुस्तक को जल्दी तैयार करने के लिए गीताप्रेस परिसर में लगायी गयी यह मशीन 18 स्टेशन की है, जो जुज तक की पुस्तक को एक बार में एकत्र करके कार्य को पूरा करती है। पहले यह कार्य मैनुअल होता था। इससे अधिक संख्या के जुज वाली पुस्तकों को 2 या 3 बार में इस मशीन से कार्य लेकर पूरा किया जाता है।

(3) सी.टी.सी.पी. मशीन (CTCP Machine)– छपाई हेतु आफसेट की प्लेटें तेज गति से बनाने के लिए यह मशीन उपयुक्त है। इस तकनीक से बनी प्लेटें अन्य तकनीकों की तुलना में सस्ती भी हैं जो कि किसी भी रूप में प्रकाशन की लागत को नियंत्रित करती हैं।

(4) Muller Martini Book Sewing Machine (Model Ventura MC-200)– पुस्तकों की सिलाई एक महत्त्वपूर्ण चरण है। इस वर्ष गीताप्रेस में फर्मा सिलाई के लिए चौथी मशीन जर्मनी से आयात की गयी है। इसके पूर्व दो मशीनें जर्मनी तथा एक मशीन इटली से आयात की गयी थीं, जो सफलतापूर्वक कार्य कर रही हैं। इस मशीन के कार्य प्रारम्भ करने के बाद पुस्तकों की सिलाई की आवश्यकता पूर्ण हो गयी है, तथा पुस्तकें जल्दी तैयार हो रही हैं।

नित्यलीलालीन परम श्रद्धेय श्रीहनुमानप्रसाद जी पोद्दार (भाईजी) ने आजीवन '**कल्याण**' एवं '**कल्याण–कल्पतरु**' का सम्पादन–कार्य किया। इन दोनों पत्रिकाओं में न तो कोई विज्ञापन छापा जाता है और न पुस्तकों की समालोचना ही की जाती है।

गीताप्रेस–मुख्य द्वार– इस मुख्य द्वार के निर्माण में भारतीय संस्कृति तथा देश की गौरवमयी प्राचीन कलाओं तथा विख्यात प्राचीन मन्दिरों से प्रेरणा ली गयी है। '**गीताप्रेस का मुख्य द्वार**' एवं '**लीला–चित्र–मन्दिर**', गोरखपुर का एक महत्त्वपूर्ण दर्शनीय आकर्षक स्थल है। इसका उद्घाटन तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जी ने अपने कर–कमलों द्वारा 29 अप्रैल 1955 को किया था।

लीला–चित्र–मन्दिर– गीताप्रेस के लीला–चित्र–मन्दिर में भगवान् श्रीराम और भगवान्

श्रीकृष्ण की लीलाओं के रमणीय 684 चित्रों के अतिरिक्त अनेक हस्तनिर्मित चित्रों का संग्रह है। मन्दिर की दीवार पर संगमरमर पत्थरों पर सम्पूर्ण श्रीमद्भगवद्गीता एवं सन्त–भक्तों के 700 से अधिक दोहे तथा वाणियाँ खुदी हुई हैं।

पुस्तकों का प्रदर्शन– गीताप्रेस, गोरखपुर के मुख्य द्वार के सामने निर्मित विशाल वातानुकूलित पुस्तक–दुकान में विभिन्न भाषाओं में गीताप्रेस द्वारा प्रकाशित पुस्तकों के भव्य प्रदर्शन एवं बिक्री की व्यवस्था है।

धार्मिक एवं आध्यात्मिक साहित्य के प्रकाशन में गीताप्रेस का स्थान एक 'मील का पत्थर' है। गीताप्रेस न केवल धार्मिक एवं आध्यात्मिक साहित्य ही प्रकाशित करता है, अपितु सन्तों, महात्माओं, ऋषियों–मुनियों की वाणी को संरक्षित एवं सुरक्षित रखने में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। विचारों को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक हस्तान्तरित करने में महत्त्वपूर्ण योगदान देता है। इस विश्वप्रसिद्ध संस्था से श्रीजयदयाल जी गोयन्दका, श्रीहनुमानप्रसाद पोद्दार 'भाईजी', स्वामी रामसुखदास जी – सरीखी विभूतियाँ हृदय से जुड़ी हुई थीं तथा उन्होंने संस्था के संरक्षण एवं संवर्धन में अपने–आप को समर्पित कर दिया, जो आगे आनेवाली पीढ़ियों के लिए हमेशा प्रेरणास्रोत बना रहेगा।

और अन्त में, गीताप्रेस से प्रकाशित **बाल–साहित्य** की चर्चा किये बिना बात अधूरी लगती है। यहाँ से प्रकाशित बाल–साहित्य की शताधिक पुस्तकें न केवल बच्चों को हमारी सांस्कृतिक विरासत से जोड़ती हैं, जिससे उनमें त्याग, सच्चाई, प्रेम, सौहार्द, करुणा एवं विश्व–बन्धुत्व आदि गुणों का विकास होता है, अपितु उनके सर्वांगीण विकास में भी सहायक हैं जिससे आगे चलकर वे आदर्श नागरिक के रूप में अपने को सिद्ध कर सकते हैं, जो देश एवं समाज दोनों के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

श्रीगोरखनाथ मंदिर के प्रमुख आयोजन

डॉ. फूलचन्द प्रसाद गुप्त

मकर संक्रान्ति का भारतीय जीवन में विशेष महत्त्व है। आज के दिन खरमास समाप्त हो जाता है और शुभ कार्य प्रारम्भ हो जाते हैं। मकर संक्रान्ति के दिन श्री गोरखनाथ मन्दिर में श्री गोरखनाथ जी को खिचड़ी चढ़ाने की परम्परा है। इस अवसर पर मन्दिर परिसर में एक माह तक चलने वाले मेले की बहुरंगी छटा किसके मन को नहीं मोहती है। इस वर्ष भी मकर संक्रान्ति महापर्व श्रीगोरखनाथ मन्दिर में परम्परागत रूप में मनाया गया। मकर संक्रान्ति के दिन ब्रह्ममुहूर्त में तीन से चार बजे के बीच विधि–विधान से श्रीनाथ जी का पूजन अर्चन हुआ। रोट के महाप्रसाद से गुरु गोरखनाथ जी का भोग लगा। पहली 'खिचड़ी' गोरखनाथ मन्दिर की ओर से गोरक्षपीठाधीश्वर पूज्य महन्त योगी आदित्यनाथ जी महाराज ने चढ़ायी। पूज्य महाराज ने नेपाल राष्ट्र के कल्याण एवं मंगल कामना को लेकर श्रीनाथ जी को खिचड़ी अर्पित की। भोर में चार बजे मन्दिर के कपाट श्रद्धालुओं के लिए खोल दिये गये। श्रद्धालुओं का समूह गुरु गोरखनाथ जी की जय, गौ माता की जय, गंगा माता की जय, भारत माता की जय और हर–हर महादेव के जयघोष के साथ मन्दिर परिसर में उमड़ पड़ा। श्रद्धालुओं की भीड़ इतनी अधिक थी कि दिन में कई बार तो इसकी लम्बाई मुख्य द्वारा तक देखी गयी। श्रद्धालुओं ने गुरु गोरखनाथ जी का एवं परिसर स्थित देव–विग्रहों का दर्शन कर आशीर्वाद प्राप्त किया एवं गुरु गोरखनाथ जी को खिचड़ी चढ़ायी।

21 जनवरी, 2018 को महन्त दिग्विजयनाथ स्मृति सभागार में गुरु श्रीगोरक्षनाथ कालेज ऑफ नर्सिंग के सेवा शपथ ग्रहण समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में उत्तर प्रदेश के माननीय राज्यपाल श्री राम नाईक एवं अध्यक्ष गोरक्षपीठाधीश्वर पूज्य महन्त योगी आदित्यनाथ जी महाराज रहे। इस अवसर पर 'मानव सेवा ही ईश्वर सेवा है' के संकल्प के साथ मरीजों की सेवा

सम्पादक, योगवाणी, श्रीगोरखनाथ मन्दिर, गोरखपुर

के लिए तत्पर नर्स बहनें हथेली पर दीप लेकर सेवा की शपथ लीं। माननीय राज्यपाल जी ने चिकित्सा के क्षेत्र में नर्सों के योगदान पर प्रकाश डाला। पूज्य महाराज जी ने राष्ट्रसन्त महन्त अवेद्यनाथजी महाराज की प्रेरणा से खोले गये नर्सिंग कालेज के दायित्व पर अपना विचार प्रस्तुत किया। इस अवसर पर कालेज की कुल 150 प्रशिक्षु नर्सों ने सेवा का शपथ लिया।

13 फरवरी 2018 को गोरक्षपीठाधीश्वर पूज्य योगी आदित्यनाथ जी महाराज ने मन्दिर परिसर स्थित शक्ति मन्दिर में वैदिक मन्त्रोच्चार के बीच भगवान शिव का महाभिषेक किया और सम्पूर्ण मानव जाति के कल्याण के लिए भगवान भोलेनाथ से प्रार्थना की।

2 मार्च 2018 को होलिकोत्सव पर भगवान नरसिंह की शोभायात्रा में सम्मिलित होने के लिए महायोगी गुरु श्रीगोरखनाथ मन्दिर से निकलने से पहले ही गोरक्षपीठाधीश्वर पूज्य योगी आदित्यनाथ जी महाराज ने मन्दिर परिसर में ही होली की शुरुआत की। प्रातः परम्परागत पूजा अर्चना के बाद सबसे पहले पूज्य महाराजजी ने परिसर में जलायी गयी होलिका की राख को अपने और मन्दिर परिवार के सदस्यों के माथे पर लगाया। सायंकाल महाराज की ओर से मन्दिर परिसर में होली मिलन का आयोजन किया गया जिसमें बड़ी संख्या में शहर के लोगों ने हिस्सा लिया। सबने बारी–बारी से पूज्य महाराजजी को चन्दन का तिलक लगाया और होली की बधाई देकर उनसे आशीर्वाद प्राप्त किया। लगभग एक हजार लोगों ने इस समारोह में भाग लिया। होली–गीतों के बीच यह कार्यक्रम देर रात तक चला।

'अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस' 21 जून के अन्तर्गत श्रीगोरखनाथ मन्दिर में साप्ताहिक योग शिविर एवं शैक्षिक कार्यशाला का आयोजन (15 जून से 21 जून तक) किया गया जिसमें देश के विभिन्न प्रान्तों के एवं स्थानीय प्रशिक्षुओं ने भाग लिया। 15 जून को हिन्दू सेवाश्रम में केन्द्रीपाड़ा, उड़ीसा से पधारे महन्त शिवनाथ जी महाराज ने इस योग शिविर शैक्षिक कार्यशाला का उद्घाटन किया। सात दिन तक चलने वाले इस शिविर में योग के विविध आयामों पर विद्वानों एवं योग–शिक्षकों द्वारा प्रकाश डाला गया। 'योग एवं स्वास्थ्य' पर प्रो. द्वारकानाथ, 'योग का मनोविज्ञान' पर प्रो. डी.एन. यादव, 'प्राणायाम' पर श्री हरिनारायण धर दुबे, 'मुद्रा एवं बन्ध' पर डॉ. जयन्त कुमार, 'योग और महायोगी गोरखनाथ' पर डॉ. दीनानाथ राय, 'अजपाजप' पर डॉ. राजशेखर यादव का व्याख्यान हुआ। शैक्षिक कार्यशाला के अन्तर्गत 'अपनी संस्था – साध्य, साधना और संकल्प' विषय पर विचार–विमर्श हुआ। 20 जून को अपराह्न तीन बजे श्रीगोरखनाथ मन्दिर परिसर स्थित महन्त दिग्विजयनाथ स्मृति सभागार में गोरक्षपीठाधीश्वर पूज्य योगी आदित्यनाथ जी महाराज का 'भारतीय संस्कृति में योग, अध्यात्म और शिक्षा' विषय पर विशेष व्याख्यान हुआ। 21 जून अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस पर योगासन की क्रिया के साथ योग शिविर का समापन हुआ। सात दिनों तक चले इस शिविर में प्रत्येक दिन प्रातः 6.00 बजे से 8.

00 बजे तक योग का अभ्यास एवं ध्यान कराया गया।

भारतीय ज्ञान–परम्परा को गतिशीलता प्रदान करने में गुरु–शिष्य परम्परा का अद्वितीय स्थान है। यदि भारतीय ज्ञान–परम्परा संरक्षित है तो इसका श्रेय गुरु–शिष्य परम्परा को है। इसीलिए प्रत्येक वर्ष आषाढ़ पूर्णिमा को गुरु पूर्णिमा पर्व के रूप में मनाया जाता है। नाथपन्थ में गुरु–शिष्य परम्परा अनूठी है। नाथपन्थ के सर्वोच्च पीठ गोरक्षपीठ में होने वाले भव्य आनुष्ठानिक आयोजन से इसे समझा जा सकता है। गुरु पूर्णिमा के दिन श्रीगोरखनाथ मन्दिर में गुरु–पूजन का कार्यक्रम भोर से ही प्रारम्भ हो जाता है।

श्रीगोरखनाथ मन्दिर में गुरुपूर्णिमा का पर्व आस्था और भक्ति से ओतप्रोत रहा। पूरा परिवार गुरुमय रहा। प्रातःकाल अपने आवास से निकलने के बाद गोरक्षपीठाधीश्वर पूज्य योगी आदित्यनाथ जी महाराज गुरु श्रीगोरखनाथ मन्दिर में पहुँचे और वैदिक मन्त्रोच्चार के बीच विधि–विधान से गुरु गोरखनाथ जी की पूजा–अर्चना की, रोट का प्रसाद चढ़ाया। गुरु गोरखनाथ जी के पूजा–अर्चन के बाद मन्दिर परिसर स्थित देव–विग्रहों की पूजा की। इसके बाद अपने गुरु राष्ट्रसंत ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज एवं सभी नाथ योगियों की समाधि स्थल पर गये और चरन–वन्दन किया।

इसके बाद गोरक्षपीठाधीश्वर तिलक हाल में पहुँचे। पूरा तिलक हाल श्रद्धालु–शिष्यों से भरा था। गुरु को तिलक लगाकर आशीर्वाद प्राप्त करने का क्रम शुरु हुआ तो देर तक चलता रहा। पूज्य सन्त–महन्तों के बाद देशभर से आये एवं स्थानीय शिष्यों ने क्रम से अपने गुरु तक पहुँचकर तिलक लगाकर आशीर्वाद प्राप्त किया।

श्रीगोरक्षपीठ, गोरखनाथ मन्दिर, गोरखपुर की गौरवशाली धार्मिक, आध्यात्मिक एवं सामाजिक परम्परा को नयी दिशा देने वाले युगपुरुष ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज एवं राष्ट्रसन्त ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथजी महाराज के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के साथ ही समाज एवं राष्ट्र की ज्वलंत समस्याओं से सम्बन्धित विभिन्न विषयों पर सप्तदिवसीय समारोह भाद्रपद शुक्ल त्रयोदशी रविवार संवत् 2075 वि. तद्नुसार 23 सितम्बर से आश्विन कृष्ण चतुर्थी, शनिवार 29 सितम्बर 2018 तक आयोजित हुआ। सप्तदिवसीय पुण्य तिथि समारोह में अनेक पूज्य सन्त, धर्माचार्य और विद्वत्जन तथा उद्घाटन एवं आचार्यद्वय के श्रद्धांजलि समारोह में गोरक्षपीठाधीश्वर पूज्य योगी आदित्यनाथ जी महाराज की गरिमामयी उपस्थिति रही।

'भारतीय संस्कृति की विशेषता है लोक कल्याण' विषय पर भारत सरकार में मानव संसाधन विकास राज्यमंत्री डॉ. सत्यपाल सिंह, 'संस्कृत और संस्कृति' विषय पर उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान के अध्यक्ष डॉ. वाचस्पति मिश्र, 'सामाजिक समरसताः भारतीय संस्कृति का प्राण'

विषय पर जनजाति सुरक्षा मंच के राष्ट्रीय संयोजक डॉ. हर्ष सिंह चौहान, 'भारतीय संस्कृति में गौ का महत्त्व' विषय पर हिमाचल प्रदेश के माननीय राज्यपाल आचार्य देवव्रत एवं 'स्वच्छ भारत – समर्थ भारत की आधारशिला' विषय पर भारत सरकार के पूर्व गृहराज्य मंत्री और परमार्थ आश्रम के अध्यक्ष स्वामी चिन्मयानन्द सरस्वतीजी का व्याख्यान हुआ।

युगपुरुष ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथजी के श्रृद्धांजलि समारोह में स्वामी हंसदेवाचार्य, पूर्व सांसद डॉ. एम विलास वेदान्ती एवं गोरक्षपीठाधीश्वर पूज्य योगी आदित्यनाथ जी महाराज ने महन्त दिग्विजयनाथजी महाराज के व्यक्तित्व एवं कृतित्व की चर्चा करते हुए उनके लोकोपकारक रूप पर प्रकाश डाला। राष्ट्रसन्त महन्त अवेद्यनाथजी महाराज के श्रद्धांजलि समारोह में जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी वासुदेवानन्द जी महाराज, स्वामी चिन्मयानन्दजी महाराज, श्री रामजन्मभूमि न्यास के अध्यक्ष महन्त नृत्यगोपालदासजी महाराज, जगत्गुरु अनन्तानन्द द्वाराचार्य स्वामी डॉ. रामकमल दास वेदान्ती, दिगम्बर अखाड़ा अयोध्या के महन्त सुरेशदासजी एवं गोरक्षपीठाधीश्वर पूज्य योगी आदित्यनाथ जी महाराज ने महन्त अवेद्यनाथजी महाराज के धार्मिक, सांस्कृतिक और शैक्षिक अवदानों पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला।

युगपुरुष ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज की 49वीं एवं राष्ट्रसन्त ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज की चतुर्थ पुण्यतिथि के अवसर पर दिनांक 22 सितम्बर से 28 सितम्बर तक अपरान्ह 3.00 बजे से सायं 6.00 बजे तक बाल्मीकि रामायण पर आधारित 'श्रीराम कथा ज्ञान' का आयोजन किया गया। काशी से पधारे जगद्गुरु अनन्तानन्द द्वाराचार्य स्वामी डॉ. रामकमलदास वेदान्तीजी महाराज के श्रीमुख से श्रीरामकथा–अमृत की वर्षा हुई। महन्त दिग्विजयनाथ स्मृति भवन में आयोजित इस श्रीरामकथा का अमृतपान श्रद्धालुओं ने किया।

शारदीय नवरात्र की प्रतिपदा को गोरक्षपीठाधीश्वर पूज्य योगी आदित्यनाथ जी महाराज ने वैदिक मन्त्रोच्चार के बीच श्रीगोरखनाथ मन्दिर स्थित अपने आवास में स्थापित शक्तिपीठ में कलश स्थापना की। लगभग दो घण्टे तक चला यह अनुष्ठानिक कार्यक्रम आराधना और आरती के साथ सम्पन्न हुआ।

पूज्य महाराज जी शारदीय नवरात्र के दूसरे दिन अपने आवास में स्थापित शक्तिपीठ में माँ दुर्गा के द्वितीय स्वरूप माँ ब्रह्मचारिणी की अनुष्ठानिक आराधना की। तीसरे दिन से लेकर छठवें दिन तक की पूजा मन्दिर के प्रधान पुजारी योगी कमलनाथ ने की। नवरात्र के सातवें दिन पूज्य महाराजजी ने माँ कालरात्रि की पूजा–अर्चना की। नाथ–परम्परा के अनुसार अष्टमी में इवन सायंकाल होता है। अतः सायंकाल अष्टमी लग जाने के कारण महाराज जी ने शंखपूजन के साथ महानिशा पूजा की। हवन वेदी पर ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र और अग्नि देवता का आह्वान किया।

नवरात्र की नवमी पर महाराजजी ने श्रीगोरखनाथ मन्दिर में पूरे विधि–विधान से पूजन किया। उन्होंने वैदिक मन्त्रोच्चार के बीच परम्परागत रूप से नौ कन्याओं और एक बटुक भैरव की पूजा की और उन्हें अपने हाथ से भोजन कराया। पूज्य महाराजजी ने नवमी के सायंकाल माँ दुर्गा के पूजन और आरती के साथ अपनी शक्ति आराधना पूरी की।

श्रीगोरखनाथ मिन्दर में विजयादशमी का महापर्व परम्परागत रूप से हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। दोपहर करीब डेढ़ बजे श्रीगोरखनाथ मन्दिर के तिलक हाल में परम्परागत तिलकोत्सव कार्यक्रम आयोजित हुआ। दो घण्टे तक चले इस कार्यक्रम में देश भर से आये हुए साधु–महात्माओं समेत लगभग एक हजार से अधिक श्रद्धालुओं ने गोरक्षपीठाधीश्वर पूज्य योगी आदित्यनाथ जी महाराज को तिलक लगाया और महाराजजी ने सभी को तिलक लगाकर आशीर्वाद दिया।

विजयादशमी के अवसर पर श्रीगोरखनाथ मन्दिर से पूज्य गोरक्षपीठाधीश्वर की परम्परागत शोभा यात्रा श्रद्धा, भक्ति और उत्साह के वातावरण में धूमधाम से निकली। शोभायात्रा में रथ पर सवार गोरक्षपीठाधीश्वर महाराजजी को देखने के लिए सड़क के दोनों किनारों पर श्रद्धालुओं की भारी भीड़ लगी रही। श्रीगोरखनाथ मन्दिर से मानसरोवर मन्दिर और रामलीला मैदान तक सड़कों और छतों पर खड़े लोगों ने पुष्पवर्षा कर न केवल शोभायात्रा का स्वागत किया बल्कि महाराजजी का अभिवादन किया।

शोभा यात्रा जब मानसरोवर मन्दिर पहुँची तो वहाँ योगीजी ने भगवान् शिव सहित सभी विग्रहों का विधि–विधान से पूजन किया। इसके बाद शोभा यात्राा रामलीला मैदान पहुँची जहाँ महाराजजी ने भगवान् राम का राजतिलक किया एवं उपस्थित जनसमूह को राम के आदर्श को जीवन में उतारने के लिए कहा। रामलीला मैदान से गोरक्षपीठाधीश्वर पूज्य महाराजजी के सम्बोधन के बाद शोभा यात्रा वापस श्रीगोरखनाथ मन्दिर पहुँची। वहाँ सन्त–महात्माओं, गरीबों एवं श्रद्धालुओं के लिए महाराजजी द्वारा सहभोज का आयोजन किया गया जहाँ लोगों ने प्रसाद ग्रहण किया।

श्रीगोरखनाथ मन्दिर परिसर में धनतेरस की पूर्व संध्या पर 'एक दीया शहीदों के नाम' कार्यक्रम का आयोजन हुआ। भीम सरोवर ग्यारह हजार दीयों से सजाया गया। हर दीपक शहीदों के नाम समर्पित रहा। इस अवसर पर देशभक्ति–भावपूर्ण वातावरण में युवाओं ने शहीदों की स्मृति में देशभक्ति गीत और नृत्य प्रस्तुत किया एवं वातावरण को देशभक्ति के भाव से भर दिया।

श्रीगोरखनाथ मन्दिर में दीपोत्सव हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। मन्दिर के कुबेर कक्ष

में वैदिक मन्त्रोच्चार के बीच पूज्य महन्त योगी आदित्यनाथ जी महाराज ने दीपावली के दिन दो घण्टे तक माता लक्ष्मी और भगवान गणेश की पूजा अर्चना की। इसके बाद महाराजजी ने मन्दिर परिसर में मिट्टी के दीप जलाकर रखवाये।

कार्तिक मास शुक्ल पक्ष षष्ठी की संध्या बेला में श्रीगोरखनथ मन्दिर, भीम सरोवर पर छठ महापर्व धूमधाम से मनाया गया। भीम सरोवर के जल में खड़ी होकर श्रद्धालु–महिलाओं ने अस्तांचलमागी सूर्य की अर्ध्य देकर उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की और उनसे सुख–समृद्धि की कामना की। सप्तमी की भोर में उदयान्चल के सूर्य की अर्ध्य प्रदान करने के बाद श्रद्धालुओं ने महायोगी गोरखनाथजी की एवं मन्दिर परिसर में स्थित देव–विग्रहों का दर्शन किया।

10 दिसम्बर 2018 को महन्त दिग्विजयनाथ स्मृति सभागार में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद गोरखपुर के संस्थापक सप्ताह समारोह का मुख्य महोत्सव एवं पुरस्कार वितरण आयोजित हुआ जिसमें विभिन्न संस्थाओं के छः सौ से अधिक विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया। संस्थापक सप्ताह समारोह–2018 के अन्तर्गत आयोजित बौद्धिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक और शारीरिक प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतिभागियों को गौरव पत्र और नकद धनराशि से सम्मानित किया गया।

इस समारोह के मुख्य अतिथि भारत गणराज्य के माननीय राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविन्दजी का आशीर्वाद छात्रों को प्राप्त हुआ। विशिष्ट अतिथि उत्तर देश के माननीय राज्यपाल श्री राम नाईक ने छात्रों को जीवन में आगे बढ़ने का मन्त्र बताया। इस अवसर पर गोरक्षपीठाध ीश्वर पूज्य योगी आदित्यनाथ जी महाराज का आशीर्वाद छात्रों को प्राप्त हुआ।

श्रीगोरखनाथ मन्दिर में वर्ष भर धार्मिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और योग से सम्बन्धित कार्यक्रम आयोजित होते रहते हैं। भारतीय तीज–त्योहार, पर्वों का आयोजन यहाँ वर्षभर होता रहता है। इस कारण से श्रीगोरखनाथ मन्दिर सामाजिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक चेतना का केन्द्र है।

हमारी विरासत

अजय कुमार सिंह

जन्म लेते ही कुछ सुविधाएं, संस्कार, सम्पत्ति और अनुकूल या प्रतिकूल एक वातावरण हमें मिल जाता है। इसे ही विरासत कहते हैं। विरासत, पुरखों से मिली वह थाती है, जीवन का वह स्तर है जो हमें जन्मजात मिल जाता है लेकिन वास्तव में उसके पीछे मानव जीवन की हजारों–लाखों वर्षों की विकास यात्रा छिपी होती है। मानवता की यात्रा में यदि हमने अतीत से हासिल को संजोया न होता तो हर बार शून्य से शुरुआत करनी पड़ती। जाहिर है कि इस यात्रा में हमें सफलतापूर्वक आगे बढ़ना है तो अतीत के अनुभवों का अवलोकन कर लेना चाहिए। गलतियों से सबक और पुरुषार्थ से अर्जित की गईं पुरखों की उपलब्धियों पर गर्व हमें भविष्य के संघर्ष के लिए उर्जा देता है। आगे का मार्ग दिखाता है। जैसे किसी व्यक्ति की विरासत है, वैसे ही शहर की विरासत है। वर्तमान में जीवन्त विरासतों जैसे श्रीगोखनाथ मन्दिर, गीताप्रेस के अतिरिक्त अनेक पुराने भवनों, खंडहरों में तब्दील होती दीवारों, जगह–जमीनों में इस विरासत के अलिखित फुटनोट हैं जिन्हें पढ़ा नहीं जा सकता। आंखें बंद कर उस कालखंड में खोकर बस महसूस किया जा सकता है। अपना शहर गोरखपुर भी ऐसी दर्जनों विरासतों, उनसे जुड़े हजारों किस्सों को समेटे हुए है। प्राचीन, मध्य और आधुनिक इतिहास से सम्बद्ध होते हुए भी हमारे वर्तमान को गहराई से प्रभावित करने में सक्षम इनमे से कुछ विरासतों के बारे में हम बार–बार सुनते, पढ़ते हैं लेकिन इनके बारे में और जानने की इच्छा कभी खत्म नहीं होती।

1–पंडित राम प्रसाद बिस्मिल

ऐसी ही एक विरासत है शहीद पंडित राम प्रसाद बिस्मिल की। 'कुछ आरजू नहीं है आरजू तो बस ये है, रख दे जरा सी कोई खाक वतन कफन पे..।' पंडित रामप्रसाद बिस्मिल ने अपने प्राणों का उत्सर्ग सिर्फ इसलिए किया कि हम और हमारी पीढ़ियां आजाद हवा में सांस

*वरिष्ठ पत्रकार

ले सकें। लेकिन आजादी के 70 वर्षों बाद भी इस क्रांतिवीर से मुलाकात के लिए इजाजत की जरूरत पड़ रही थी और किसी ने इस पर एतराज तक नहीं किया। यह सवाल नहीं पूछा कि देश आजाद है तो फिर बिस्मिल की शहादत स्थली 'बंद' क्यों है। बिस्मिल के दीवानों को जेल के उसी मुख्य द्वार से होकर उनकी शहीद स्थली तक जाना पड़ता था जिससे होकर कुख्यात, दुर्दान्त कैदियों से मुलाकात के लिए लोग जाते हैं। बिस्मिल के शहादत दिवस पर जेल में मेला लगता लेकिन सामान्य दिनों में उनकी और साथी क्रांतिकारियों की कोठरी तक लोगों का पहुंचना मुश्किल था। 10 बाई 12 की कोठरी में बिस्मिल ने मां भारती की साधना की थी। अंतिम तीन दिनों में उन्होंने यहीं अपनी आत्मकथा लिखी। कई कविताओं को इसी कोठरी में रचा। जेल की चहारदीवारी के भीतर होने के चलते उन स्मृतियों के बीच कुछ पल गुजारना आम लोगों के लिए मुश्किल था। दिल में सरफ़रोशी की तमन्ना लिए पंडित राम प्रसाद बिस्मिल, ब्रिटिश हुकूमत के नाश की अंतिम इच्छा के साथ जिस जमीन पर शहीद हुए वह ऊंची चहारदीवारियों में बंद है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की सरकार ने इस स्थिति की संवेदनशीलता को न सिर्फ महसूस किया और समझा बल्कि आईजी जेल को यहां भेजकर शहीद स्थली को आम लोगों के लिए खोले जाने की पूरी योजना भी तैयार करा दी। इस योजना पर 19 दिसम्बर को बिस्मिल शहादत दिवस से काम शुरू भी हो गया।

19 दिसम्बर को लगता है मेला

19 दिसम्बर को बिस्मिल की शहादत के दिन उनके स्मारक पर मेला लगता है। जेल प्रशासन की तारीफ करनी होगी कि उसने बिस्मिल की काल कोठरी, उस रजिस्टर जिस पर उन्होंने जेल में आने और आखिरी दिन दस्तखत किए, फांसी के तख्त और उनसे जुड़ी हर चीज को बड़े एहतियात से संभल कर रखा है। विशेष अवसरों या विशेष अनुमतियों के साथ यदि आप जेल के उस हिस्से में पहुंच जाएं, जहां फांसी के पहले बिस्मिल और 11 स्वतंत्रता सेनानियों को रखा गया था तो जर्रे–जर्रे में शहादत की खूशबू महसूस होने लगेगी। 10 बाई 12 की छोटी सी कोठरी में बिस्मिल ने कई कविताएं रचीं। जीवन के अंतिम तीन दिनों में अपनी आत्मकथा लिखी। 18 दिसम्बर 1927 को माता–पिता से अंतिम बार मुलाकात की और अगले ही दिन 19 दिसम्बर की सुबह 6:30 बजे फांसी के फंदे को चूमकर गले में डाल लिया।

जेल की दीवारों पर बिस्मिल की रची पंक्तियां पढ़कर आज भी रोंगटे खड़े हो जाते हैं। फांसी के तख्त की ओर बढ़ रहा 30 साल का वो नौजवान मन मस्तिष्क पर छा जाता है जिसके चेहरे पर खौफ का नामोनिशान नहीं। जो शांति से फंदे की ओर बढ़ा चला जा रहा है और जिसके कंठ से निकले तराने फिजा में गूंज रहे हैं– 'मालिक तेरी रजा रहे और तू ही तू रहे, जब तक कि तन में जान रगों में लहू रहे, तेरा ही जिक्र तेरी ही जुस्तजू रहे।' बताते हैं कि मौत से बेफिक्र रामप्रसाद बिस्मिल ने फांसी के तख्त पर खड़े होकर इतनी जोर से 'वंदे मातरम्' और

'भारत माता की जय' का नारा लगाया कि प्रतिध्वनि, उनकी सांस थम जाने के बाद भी सुनाई देती रही।

डेढ़ लाख लोग शामिल हुए अंतिम यात्रा में

बताते हैं कि रामप्रसाद बिस्मिल की फांसी के वक्त जेल के बाहर सारा शहर उमड़ पड़ा था। उनके शव को फांसीघर के सामने की दीवार तोड़कर परिजनों को सौंपा गया। बिस्मिल की शवयात्रा शहर के जिन इलाकों से गुजरी वहां के लोग साथ आते गए। शव को घंटाघर पर अंतिम दर्शन के लिए रखा गया। वहां से अंतिम संस्कार के लिए राजघाट ले जाया गया। तब तक करीब डेढ़ लाख लोग इस अंतिम यात्रा में शामिल थे। अपने पुत्र की शहादत पर बिस्मिल की मां ने कहा था, 'मैं अपने पुत्र की मृत्यु से प्रसन्न हूं, दुःखी नहीं। मैं श्री रामचंद्र जैसा पुत्र चाहती थी। मेरा पुत्र वैसा ही था।'

पर्यटन विभाग की योजना

मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी के निर्देशानुसार पर्यटन विभाग के मुताबिक पंडित राम प्रसाद बिस्मिल की काल कोठरी और फांसीघर को मिलाकर जल्द ही एक अच्छा स्मारक बनेगा। 1.88 करोड़ की योजना है। जल्द ही धन रिलीज होने की सम्भावना है। इसके तहत शहादत स्थल का सौंदर्यीकरण किया जाएगा। पर्यटकों के लिए मूलभूत सुविधाएं होंगी। यह स्थल जनता के दर्शन हेतु खुल चुका है।

2–शहीद स्थली चौरी चौरा–

आजादी के आंदोलन की कहानी चौरीचौरा कांड के अध्याय के बिना पूरी नहीं हो सकती। चौरी चौरा का इतिहास सारा देश जानता है। इस कांड के बाद महात्मा गांधी ने असहयोग आंदोलन को यह कहते हुए वापस ले लिया था कि हिंसा होने के कारण असहयोग आंदोलन उपयुक्त नहीं रह गया। इधर, अंग्रेजों ने जुल्म की इंतहा कर दी थी। सैकड़ों लोगों को गिरफ्तार किया था। सेशन कोर्ट से 172 दोषियों को फांसी की सजा दी गयी थी। इलाहाबाद हाईकोर्ट में सेनानियों का मुकदमा पंडित मदन मोहन मालवीय ने लड़ा। अंत में 19 की ही फांसी बरकरार रखी गई। जिला एवं सत्र न्यायालय गोरखपुर के अभिलेखागार के रिकार्ड के मुताबिक दो जुलाई 1923 से 11 जुलाई 1923 तक बाराबंकी, अलीगढ़, मेरठ, जौनपुर, गाजीपुर, रायबरेली, बरेली, आगरा, फतेहगढ़, कानपुर, उन्नाव, प्रतापगढ़, झांसी, इटावा आदि जेलों में सेनानियों को फांसी दी गई।

4 फरवरी 1922 को घटित चौरी चौरा कांड की तत्कालीन परिस्थितियों में चाहे जिस प्रकार व्याख्या की गई हो लेकिन स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद सेनानियों के सम्मान के लिए किसी

को मांग उठाने की जरूरत नहीं पड़नी चाहिए थी। अच्छी बात है कि प्रदेश की योगी आदित्यनाथ सरकार इस सोच को बदलने पर जोर दे रही है। अब चौरी चौरा और ऐसे स्मारकों की तस्वीर बदलने लगी है।

चार फरवरी 1922 को अत्याचारी अंग्रेज हुकूमत की चूलें हिला देने वाले एतिहासिक चौरी चौरा का इतिहास वहां शहीद स्मारक पर स्थित शिलापट्ट से उखड़ने लगा था। देश के लिए मर मिटने वाले रणबांकुरों की दशकों तक कितनी बेकद्री हुई यह स्मारक उसका जीता जागता नमूना है। भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के इतिहास में चौरी चौरा का नाम अमिट अक्षरों में लिखा है लेकिन इसे लेकर शुरू से ही गड़बड़ियां होती रही हैं। विडम्बना ही है कि चौरी चौरा में निहत्थे सत्याग्रहियों पर गोली चलाकर अनेक लोगों को मौत के घाट उतारने वाले पुलिसकर्मियों (जिन्हें बाद में आक्रोशित भीड़ ने थाने में बंद कर आग के हवाले कर दिया था) का स्मारक तो अंग्रेज हुकूमत ने चौरीचौरा कांड के तुरंत बाद ही बना दिया लेकिन देश के लिए मर मिटे शहीदों के स्मारक का शिलान्यास आजादी के 35 वर्षों बाद छह फरवरी 1982 को तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने किया। शिलान्यास के बाद स्मारक के बनने में 11 साल और लग गए। 19 जुलाई 1993 को तत्कालीन प्रधानमंत्री पी.वी. नरसिम्हा राव ने इसका लोकार्पण किया।

दशकों तक सरकारों और प्रशासन की उपेक्षात्मक कार्यशैली से चौरी चौरा शहीद स्मारक बुरी तरह बदहाल हो गया है। लोकार्पण के वक्त इसकी हालत ठीक–ठाक थी। परिसर में चारों तरफ मखमली घास थी। फव्वारा और रंगबिरंगी लाइटें देखने वालों का ध्यान बरबस ही अपनी ओर खींच लेती थीं। स्मारक के बीचोंबीच आठ फीट ऊंचे प्लेटफार्म पर 19 मीटर ऊंचा स्तूप दूर से ही दिखता था। स्मारक भवन में 3500 पुस्तकों से लैस लाइब्रेरी, चौरीचौरा कांड को जीवंत बनाती पेंटिंग्स, मार्बल की मूर्तियां और खूबसूरत सजावट थी। लेकिन धीरे–धीरे सब उजड़ा चमन हो गया। जिम्मेदारों ने एक बार स्थापित कर देने के बाद इस ओर मुड़कर देखा ही नहीं। बिना किसी पारिश्रमिक के दो स्वतंत्रता सेनानियों के परिजन लाइब्रेरी और स्मारक की देखरेख करते रहे। इस बीच बिना जाली की खिड़कियों से घुसे बंदरों ने मार्बल की मूतियां तोड़ दीं। पक्षियों ने पेंटिंग गंदी कर दीं और संग्रहालय–वाचनालय में बने लकड़ी के खम्भे वक्त के साथ खराब हो गए। काफी कहने–सुनने पर टूटी मूर्तियों की मरम्मत तो हुई लेकिन बाकी चीजें वैसी की वैसी ही हैं। यहां तक कि ग्रेनाइट पत्थर पर लिखा इतिहास भी उखड़ने लगा। फव्वारा आखिरी बार कब चला किसी को याद नहीं। मखमली घास जाने कब खत्म हो गई। रंगबिरंगी लाइटों का नामोनिशान मिटने को है। परिसर में चारों तरफ कबाड़, गंदगी और टूटी बोतलें बिखरी मिलने लगीं।

चौरीचौरा के राष्ट्रीय महत्व के बावजूद सरकारी वेबसाइटों से स्मारक की स्थिति के बारे

में पूरी जानकारी नहीं मिलती। वेबसाइटों पर चौरी चौरा स्मारक स्थल की तस्वीरों के साथ यहां तक पहुंचने के रेल, हवाई, सड़क मार्ग और आसपास के दर्शनीय स्थलों का संक्षिप्त जिक्र ही किया गया था। स्मारक स्थल पर उपलब्ध सुविधाओं, सम्पर्क आदि के बारे में कोई खास जानकारी नहीं थी। अब इन स्थितियों को ठीक किया जा रहा है।

पर्यटन विभाग की योजना

चौरीचौरा स्मारक के सौन्दर्यीकरण की योजना पर पर्यटन विभाग काम कर रहा है। प्रस्ताव के मुताबिक करीब दो करोड़ की लागत से स्मारक स्थल पर मूलभूत सुविधाओं का विकास किया जाएगा। स्मारक पर जगह–जगह बेंच लगेंगे। ट्वायलेट ब्लाक बनेंगे। टूटे पत्थर बदले जाएंगे। शेड, हाल बनेगा। सोलर लाइटें लगेंगी। इसके साथ ही लाइब्रेरी और स्मारक के अन्य हिस्सों को उचित प्रकार से व्यवस्थित किया जाएगा।

3–बसंतपुर किला

तीन एकड़ क्षेत्रफल में फैले बसंतपुर किले का निर्माण 539 साल पहले राजा सत्तासी बसंत सिंह ने कराया था। शहर की सुरक्षा उनका ध्येय था। किले में सेना हर वक्त चौकस रहती थी। आगे चलकर एक ऐसा वक्त आया जब यह किला सराय के रूप में तब्दील कर दिया गया। आज किला परिसर में रहने वाले ज्यादातर लोग ज्यादातर किले की एतिहासिकता से अन्जान हैं। कोई कहता है कि एक मुगल बादशाह ने इसे बनवाया था। कोई अंग्रेज सिपाहियों की रिहाइश की बात करता है। जबकि इतिहासकार बताते हैं कि 'राजा सत्तासी बसंत सिंह ने इसे 1480 में बनवाया। उस दौर में राप्ती और रोहिन नदियां यहीं पास से होकर गुजरती थीं। 1680 में किले की मरम्मत की गई। उसके बाद यह किला मिलिट्री बेस बन गया। 1801 में अवध के नवाब ने इसे ईस्ट इंडिया कम्पनी को सौंप दिया। अंग्रेज सैनिक और अफसरों ने इसे सराय का रूप दिया। वे यहां ठहरने और मनोरंजन के लिए आते थे।'

किले को संवारने का इंटेक का प्रस्ताव

'इंडियन नेशनल ट्रस्ट फॉर आर्ट एंड कल्चरल हेरिटेज' (इंटेक) ने 2014 में बसंतपुर किले का सर्वे किया था। इंटेक के सह समन्वयक पी.के. लाहिड़ी ने इस दिशा में काफी काम किया था। दुर्भाग्य से गत वर्ष उनका स्वर्गवास हो गया। इसके आजीवन सदस्य अचिन्त्य लाहिड़ी बताते हैं कि बसंतपुर किले के जीर्णोद्धार के प्रस्ताव के तीन भाग थे। पहला–सराय के एतिहासिक स्वरूप के साथ कोई छेड़छाड़ नहीं की जाएगी। दूसरा– इसकी मरम्मत के लिए वही मटेरियल इस्तेमाल होगा जो इसे बनाने में किया गया था। तीसरा– इस धरोहर को इस तरह विकसित किया जाएगा कि रखरखाव के खर्च के लिए किसी और पर निर्भर न रहना पड़े।

योजना है कि बसंतपुर किले को दिल्ली हाट की तर्ज पर विकसित किया जाए जहां देश के अलग–अलग प्रदेशों के कॉटेज हों, स्थानीय व्यंजनों के ठेले लगें और हस्तशिल्प और लोककलाओं को मंच मिले। हाल में गोरखपुर नगर निगम ने इस आशय का एक प्रस्ताव शासन को भेजा है। प्रक्रिया चल रही है। उम्मीद है धरातल पर जल्द ही काम शुरू हो जाएगा।

4–घंटाघर

शहर के भीड़भाड़ भरे उर्दू बाजार में घंटाघर की मौजूदगी पंडित रामप्रसाद बिस्मिल की उस अंतिम यात्रा की याद दिलाती है जिसमें जुटी एतिहासिक भीड़ ने अंग्रेजी हुकूमत की चूलें हिला दी थीं। 1857 के गदर की भी गवाह है यह जगह जिसके योद्धा अली हसन सहित कई देशभक्तों को यहीं पाकड़ के एक पेड़ से लटकाकर अंग्रेजों ने सजाए मौत दे दी थी।

नेशनल ट्रस्ट ऑफ आर्ट एंड कल्चरल हेरिटेज (इंटेक) के समन्वयक महावीर प्रसाद कंदोई ने वरिष्ठ साहित्यकार वेद प्रकाश पांडेय द्वारा सम्पादित पुस्तक 'शहरनामा' में घंटाघर का खास उल्लेख किया है। 'धर्मस्थल और एतिहासिक भवन' शीर्षक से अपने लेख में उन्होंने लिखा है, 'महानगर के उर्दू बाजार में स्थित घंटाघर देशभक्त वीरों की गौरवगाथा की यादगार है। घंटाघर के स्थान पर पाकड़ के पेड़ पर अली हसन और तमाम देशभक्तों को 31 मार्च 1859 को फांसी दी गई थी। उसी स्थान पर सेठ रामखेलावन और ठाकुर प्रसाद ने 1930 में घंटाघर का निर्माण कराया।'

घंटाघर की घड़ी के बारे में बताते हैं कि इसे वर्ष 1937 में स्थापित किया गया था। टावर में तीन घड़ियां लगाई गईं ताकि सभी तरफ के लोगों को सही समय की जानकारी मिल सके। सेठ चीगान साहू की स्मृति में यह घड़ी लगाकर उनके परिवार ने शहर के म्युनिसिपल बोर्ड को सौंपी थी।

5–रीड साहब की धर्मशाला

अंग्रेज कलेक्टर ई.ए. रीड के नाम से मशहूर 'रीड साहब की धर्मशाला' का वास्तुशिल्प मुगलकालीन है। इसमें 17 वीं शताब्दी की भवन निर्माण शैली की झलक मिलती है। हालांकि वक्त के थपेड़ों और जिम्मेदारों की उपेक्षा ने इसे खंडहर में तब्दील कर दिया है।

अब तो यहां मुगलकालीन के नाम पर कुछ दीवारें और चौखटों से उखड़ते दरवाजे ही बचे हैं। धर्मशाला के अंदर के कमरे आवासों में बदल चुके हैं जहां करीब 70 परिवार किराए पर रहते हैं। इन आवासों की हालत अच्छी नहीं कही जा सकती। सड़क ठीकठाक बन गई है।

इतिहास के अध्ययनकर्ता गाहे–बेगाहे आते रहते हैं। तब यहां रहने वालों को अपनी खासियत का एहसास होता है।

खलीलाबाद के किले से मेल खाती है इमारत

'इंडियन नेशनल ट्रस्ट फॉर आर्ट एंड कल्चरल हेरिटेज' (इंटेक) के सह संयोजक और पुरातत्त्वविद रहे पी.के. लाहिड़ी और डीएवीपीजी कालेज के पूर्व प्राचार्य डॉ. कृष्ण कुमार पांडेय की पुस्तक 'आइने गोरखपुर' में रीड साहब की धर्मशाला के वास्तु का वर्णन किया गया है। इसके मुताबिक सन् 1680 ई. में बादशाह औरंगजेब ने सूबेदार काजी खलीलउर्रहमान को गोरखपुर भेजा था। खलीलउर्रहमान ने खलीलाबाद में एक किला बनवाया। धर्मशाला की इमारत उससे मेल खाती है। इससे यह लगता है कि इमारत मुगलकालीन है जिसे बाद में अंग्रेजों ने धर्मशाला का रूप दे दिया।

षटकोणीय मीनारें, तीन खंड और 62 कमरे

धर्मशाला का आकार चतुष्कोणीय है। इसका विशाल मुख्य द्वार पूरब दिशा में है। बेतियाहाता जाने वाली मुख्य सड़क से यह किसी दुर्ग सरीखा दिखता है। मेहराबनुमा मुख्य द्वार के दाएं और बाएं स्थित कोठरियों से होकर षटकोणीय मीनारें हैं जो तीन खंडों में बनी और 40 फुट ऊंची हैं। मुख्य द्वार के ऊपर का हिस्सा हाकिम खाना कहलाता था। धर्मशाला में कुल 62 कमरे बने हुए हैं। मुख्य द्वार के ऊपर एक पत्थर लगा है जिस पर लिखा है–'रीड साहब कलेक्टर थे तो हिन्दू जमीदारों के ठहरने के लिए यह बनवाया गया था' धर्मशाला की देखरेख के लिए एक ट्रस्ट बनाया गया था जो अब भी सक्रिय है।

5,836 रुपए में बन गई थी धर्मशाला

कलेक्टर ई.ए. रीड ने इस धर्मशाला को महज 5,836 रुपए में बनवा दिया था। सन् 1839 में उन्होंने शहर के रईसों और बड़े व्यापारियों की बैठक में धर्मशाला का प्रस्ताव रखा जिसे तत्काल स्वीकार कर लिया गया। धर्मशाला निर्माण के लिए कुल 7,693 रुपए नौ आना सात पाई का चंदा इक्ट्ठा हुआ लेकिन 5,836 रुपए एक आना नौ पाई ही खर्च हुए।

हाल में गोरखपुर नगर निगम ने इस इमारत के जीर्णोद्धार की कोशिशें शुरू की हैं। धर्मशाला का मालिकाना हक फिलहाल नगर निगम के पास नहीं है। नगर निगम सिर्फ केयर टेकर है। इसके किराएदारों का किराया अलग फंड में जमा होता है। सारे तथ्य इक्ट्ठा किए जा रहे हैं। रीड साहब की धर्मशाला जैसी इमारतें गोरखपुर की एतिहासिक धरोहर हैं। इन्हें हर हाल में सुरक्षित और संरक्षित किया जाना चाहिए। उम्मीद है कि नगर निगम की कोशिशें रंग लाएंगी। जल्द ही धर्मशाला को संरक्षित करने की योजना पर काम शुरू होगा।

6–मोती जेल

जर्मनी में यहूदियों के सफाए के लिए हिटलर के गैस चैम्बर हों, फ्रांस की बस्टाई जेल या अपने ही देश में पोर्ट ब्लेयर की जेल हो जहां स्वतंत्रता सेनानियों को कालापानी की सजा दी जाती थी। जालिम हुकूमतों के खात्मे के बाद ऐसी जगहों को स्मारक इसलिए बनाया गया है कि अगली पीढ़ियों को आजादी की कीमत का पता चले। अपने शहर में भी अंग्रेजों के खौफनाक जुल्म की गवाह मोती जेल है। अंग्रेजों ने 150 साल तक इस जगह का खौफनाक इस्तेमाल किया। यहां स्वतंत्रता सेनानियों को फांसी के बाद एक कुंए में डाल दिया जाता था। खूनी कुएं के नाम से मशहूर यह कुंआ आज भी जेल में मौजूद है। बताते हैं कि अंग्रेज यहां निर्दोष दलितों को बंधक बनाकर रखते थे। सुबह गिनकर निकालते, दिन भर अमानवीय काम कराते, शाम को यहीं लाकर वापस बंद कर देते थे। जेल में कदम–कदम पर अंग्रेजों के जुल्मो सितम के निशान मौजूद हैं। वक्त की मार इस जेल की इमारतों पर भी पड़ी है। पिछले साल इस जेल को संरक्षित करने की मांग शहीद बंधू सिंह के वंशज अजय सिंह टप्पू ने उठाई। बंधू सिंह को पकड़ने के बाद अंग्रेजों ने कुछ समय तक इस जेल में रखा था। उनके साथ कई क्रांतिकारी यहां बंद थे। उन सबके स्मारक के तौर पर जेल को संरक्षित करने का प्रस्ताव नगर निगम ने तैयार किया है।

चप्पे–चप्पे पर मौजूद हैं जुल्मो सितम के निशान

मोती जेल का कुख्यात खूनी कुआं सूख चुका है। इसकी गहराई में कबाड़ भरा है। कुएं के पास दीवार की दूसरी तरफ पाकड़ का पुराना घना पेड़ आज भी है। इसी पेड़ की साखों से लटकाकर अंग्रेजों ने जाने कितने क्रांतिवीरों को शहीद कर दिया था। लेकिन आसपास एसा कोई पत्थर, रजिस्टर या बोर्ड नहीं है जिस पर इस कुएं, पेड़, मोती जेल या शहादत देने वाले क्रांतिवीरों के बारे में कुछ भी लिखा हो।

कभी बंदीगृह में रहे परिसर के 60–62 कमरों में रहने वाले, पुरखों से सुनी बातों के आधार पर अंग्रेजों के जुल्मों–सितम की कहानी मुंह जुबानी सुनाते चले जाते हैं। तारतम्य भले न हो लेकिन बिना किसी अध्ययन या सर्वेक्षण के भी उनकी बातों में दम है।

'इंडियन नेशनल ट्रस्ट फॉर आर्ट एंड कल्चरल हेरिटेज' (इंटेक) के अचिन्त्य लाहिड़ी के मुताबिक मोतीजेल में स्वतंत्रता सेनानियों के अलावा दलितों को भी बंद रखा जाता था। उन्हें सुबह गिनकर निकाला जाता। दिन भर जबरन अमानवीय काम कराए जाते। शाम को गिनकर दोबारा यहीं बंद कर दिया जाता। यहां कभी जेलर का आवास, काठीखाना, धोबीखाना, बावर्चीखाना और परागखाना नामक भवन भी थे जो आज अपनी पहचान खो चुके हैं। पहरेदार कक्ष और जेल के मुख्य द्वार के अवशेष ही बचे हैं। जेल की चहारदीवारियां ध्वस्त होकर खंडहरों

में तब्दील हो गई हैं। 1857 की क्रांति के योद्धा बाबू बंधू सिंह और धुरियापार के शाह इनायत अली को फांसी देकर यहां कुंए में डाले जाने का जिक्र पुरातत्त्वविद पी.के. लाहिड़ी और डा. कृष्ण कुमार पांडेय की किताब 'आइने गोरखपुर' में भी मिलता है।

अति प्राचीन है जेल की इमारत

मोती जेल की इमारत अत्यंत प्राचीन है। कुछ इतिहासकार इसे बसंतसराय बनवाने वाले राजा बसंत सिंह (1417–1458) तो कुछ औरंगजेब के सूबेदार काजी खलीलउर्रहमान (सन 1680) द्वारा इसे बनवाया गया मानते हैं। इंटेक के मुताबिक सन् 1801 में अवध के नवाब सआदत अली खां ने गोरखपुर क्षेत्र को अंग्रेजों को सौंप दिया। 14 नवम्बर 1801 को यहां पहले कलेक्टर और जिला जज की नियुक्ति हुई। ईस्ट इंडिया कम्पनी के शासनकाल में ही अंग्रेजों ने यहां स्थित किले के एक हिस्से को तोड़कर इसे गोरखपुर की पहली जेल में बदला।

इतनी बची है मोती जेल

इस वक्त मोती जेल परिसर में चार बंदीगृह भवन बचे हैं। हर भवन में 15 से 18 कमरे हैं। अंग्रेजों के समय कैदियों को रखने के लिए हर कमरे को चार भागों में बांटकर चार कैदियों को रखा जाता था। परिसर के प्राचीन कुएं पर क्रांतिकारियों को फांसी दी जाती थी। उसे खूनी कुआं कहते थे। परिसर के चारों तरफ ऊंची चहारदीवारी है जो जगह–जगह से टूट रही है और ईटे गायब होती चली जा रही हैं।

पर्यटन विभाग भी तलाश रहा सम्भावनाएं

मोती जेल को पर्यटन स्थल के तौर पर विकसित करने की सम्भावाएं पर्यटन विभाग भी तलाश रहा है। कोशिश जेल के मूल स्वरूप को बरकरार रखते हुए एतिहासिक तथ्यों को संरक्षित करने की है।

7– शहीद बंधू सिंह

मंगल पांडेय ने मेरठ छावनी में 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम का बिगुल फूंका तो गुरिल्ला आक्रमण के महारथी बाबू बन्धू सिंह ने गोरखपुर और आसपास के जिलों में। वे नायक थे जिन्होंने मां भारती के चरणों में प्राणों की बलि देकर अपने रक्त से स्वतंत्रता की अलख जगाई। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के निर्देश पर शहीद बंधू सिंह की संघर्ष गाथा को न सिर्फ पाठ्यक्रम में शामिल किया गया बल्कि उनके स्मारकों को संवारने की योजना पर तेजी से काम चल रहा है। बाबू बंधू सिंह 12 अगस्त 1857 को अलीनगर चौराहे पर शहीद हुए थे। अंग्रेजों ने उन्हें फांसी पर लटकाया था। अंत समय तक इस रणबांकुरे ने मातृभूमि की सेवा में स्वयं को समर्पित रखा। बंधू सिंह की शहादत को आजादी के बाद सरकारों ने भुला दिया लेकिन लोगों

ने याद रखा। बंधू सिंह भोजपुरिया इलाके के बिरहा, लोकगीतों में जिंदा रहे। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सांसद रहते उनकी प्रतिमा स्थापित कराई थी। उनके निर्देश पर प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के इस नायक को हाल में छठवीं के पाठ्यक्रम में शामिल कर लिया गया। बन्धू सिंह की शहादत के डेढ़ सौ वर्ष पूरे होने पर तत्कालीन सांसद (मौजूदा मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ) ने घंटाघर में शहीद स्थली पर उनकी मूर्ति का लोकार्पण किया था। उन्होंने ही हाल में बन्धू सिंह को पाठ्यक्रम में शामिल कराया इसलिए लोगों को लगने लगा कि अब स्मारक, शहीद स्थली और हाल्सीगंज में स्थित पार्क के दिन भी बहुरेंगे। पर्यटन विभाग ने इस दिशा में प्रयास शुरू कर दिए हैं।

तरकुलहा देवी मंदिर से भी जुड़ी है शहादत की कहानी

घंटाघर चौक के पश्चिम बरगद के एक पेड़ से लटकाकर 12 अगस्त 1857 को अंग्रेजों ने बन्धू सिंह को फांसी दी थी। मान्यता है कि बन्धू सिंह की फांसी का फंदा सात बार टूट गया था। लेकिन आठवीं बार उन्होंने खुद फंदे को अपने गले में डाल लिया और अपनी अराध्य माता से मुक्ति की प्रार्थना की। इसके बाद फांसी लग गई। बन्धू सिंह शहीद हो गए। उनके शहीद होते ही चौराचौरा क्षेत्र के देवीपुर गांव में माता की पिण्डी के पास स्थित तरकुल का पेड़ ऊपर से टूट गया। उसमें से रक्तधारा निकली जिससे फरेन नाला का पानी पूरी तरह लाल हो गया। शहीद बन्धू सिंह की फांसी की यह कहानी जल्द ही दूर–दूर तक फैल गई। माता की पिण्डी मां तरकुलहा देवी के मंदिर के रूप में विख्यात हो गई। तबसे वहां हर वक्त भक्तों की भीड़ रहती है। नवरात्र में वहां सवा महीने का मेला लगता है। सामान्य दिनों में मंदिर के आसपास मेले जैसा दृश्य रहता है। सौन्दर्य प्रसाधन, लोहे के सामानों, मिठाई, चूड़ी, खिलौने और प्रसाद की सैकड़ों दुकानें लगती हैं।

पांच दशकों तक हुई शहादत की उपेक्षा

बन्धू सिंह की शहादत की सरकारों ने आजादी के बाद भी पांच दशकों तक घोर उपेक्षा की। लेकिन वह महान क्रांतिकारी और अंग्रेजों के सबसे बड़े शत्रु के तौर पर बिरहा–लोकगीतों और लोगों के दिलों में जिंदा रहे। 90 के दशक में बन्धू सिंह के करीबी वंशज विनय कुमार सिंह बिन्नू के नेतृत्व में 'बन्धू सिंह स्मारक समिति' का गठन कर उपेक्षा के खिलाफ संघर्ष छेड़ा गया। बंधू सिंह से भावनात्मक तौर पर जुड़ी भोजपुरिया इलाके की जनता खुश है कि उत्तर प्रदेश सरकार ने तरकुलहा और बन्धू सिंह की शहादत को स्वाधीनता संग्राम से जुड़ा माना। उनके शहादत स्थल और तरकुलहा देवी मंदिर को पर्यटन केंद्र के रूप में विकसित करने की योजना बनी। मंदिर के मुख्य मार्ग का नामकरण बन्धू सिंह के नाम पर किया गया। 'दो मई 1997 को विधायक बेचनराम ने स्मारक स्थल पर शिलान्यास किया था। 24 अप्रैल 1998 को प्रदेश के

तत्कालीन लोकनिर्माण और पर्यटन मंत्री कलराज मिश्र ने इसका लोकार्पण किया था। छह नवम्बर 2011 को तत्कालीन राज्यमंत्री स्वतंत्र प्रभार पंचायती राज महेन्द्र नाथ पांडेय ने एक धर्मशाला का भी लोकार्पण किया था लेकिन उपेक्षा के चलते इन सब स्थलों का बुरा हाल हो गया।

अंग्रेजों ने जिस मोती जेल में बंधू सिंह को बंद रखा उनके नाम पर उस जेल के नामकरण और पर्यटन स्थल के तौर पर विकसित करने की मांग उठने लगी है। 'बन्धू सिंह स्मारक समिति' के मांगपत्र पर नगर निगम ने मोती जेल के संरक्षण और विकास का प्रस्ताव तैयार कराया है। जेल में कई सौ साल पुराना पाकड़ का एक पेड़ और खूनी कुआं आज भी मौजूद है। प्रस्ताव के मुताबिक जेल के पुराने स्वरूप को बरकरार रखते हुए सुन्दरीकरण कराया जाएगा।

8—डोहरिया कला

आजादी के लिए आवाज उठाने पर जालिम अंग्रेजों ने भारतीयों पर कितने जुल्म ढाये, डोहरिया कला इसका जीता जागता उदाहरण है। आजाद देशों में, गुलामी के दौर की ऐसी घटनाओं के सबूत, स्मारकों के रूप में संरक्षित किए जाते हैं ताकि आने वाली पीढ़ियां आजादी की कीमत को समझ सकें। स्मारक हमने भी बनाए लेकिन देखरेख न होने की वजह से वे उद्देश्यहीन होते चले गए। डोहरिया कला में 23 अगस्त 1942 को जालिम अंग्रेजों की गोलियों ने नौ रणबांकुरों के सीने छलनी कर दिए थे। आजादी के ये दीवाने महात्मा गांधी के 'करो या मरो' नारे पर मर मिटे थे। 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' के महात्मा गांधी के एलान पर 'करो या मरो' का नारा लगाते हुए 23 अगस्त 1942 को सहजनवां के डोहरिया कला में आजादी के दीवानों ने जालिम हुकूमत की पुलिस से सीधा मोर्चा लिया था। सीने पर गोलियां खाकर नौ रणबांकुरे शहीद हो गए लेकिन आज जिम्मेदारों की उपेक्षा ने उनकी शहादत स्थली का बुरा हाल बना दिया था। टूटे दरवाजे, दीवारों से उखड़ते मार्बल, टूटी ग्रिल, झाड़ झंखाड़ और गंदगी लम्बे अर्से से स्मारक की पहचान बन गई थी।

डोहरिया कला शहीद स्मारक पर सिर्फ 15 अगस्त, 23 अगस्त, 26 जनवरी और दो अक्टूबर को ही हलचल दिखती। इन दिनों में परिसर की साफ—सफाई होती। शहीदों को याद किया जाता। बाकी दिनों में कोई सुध लेने नहीं आता। सामान्य दिनों में सफाई कर्मचारी भी थोड़ी देर के लिए आते और बैठ कर चले जाते। यह जानकर अच्छा लगा कि प्रदेश सरकार ने इस शहीद स्थली के सुंदरीकरण का भी निर्देश दे दिया है। उत्तर प्रदेश शासन द्वारा पर्यटन विभाग को धनराशि जारी की जा चुकी है। वैसे मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने गोरखपुर के सांसद रहते भी डोहरिया कला के लिए अपनी निधि से धन देकर सभागार और वाचनालय कक्ष

का निर्माण कराया था। मुख्यमंत्री के रूप में शहीद स्मारक डोहरिया कला के विकास की बड़ी योजना को उन्होंने हरी झंडी दे दी है। करीब 80 लाख की लागत से स्मारक स्थल पर पर्यटकों के लिए शेड, बेंच, पेयजल आदि की व्यवस्था कराई जाएगी। स्मारक स्थल की अन्य व्यवस्थाओं को भी ठीक किया जाएगा।

ऐसे हुआ था डोहरिया कांड

महात्मा गांधी ने आठ अगस्त 1942 की शाम मुंबई में 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' और 'करो या मरो' दिया। इन नारों ने देश का सियासी माहौल अचानक काफी गर्म कर दिया। नौ अगस्त 1942 को डोहरिया कला में भी आजादी के दीवानों ने 'भारत माता की जय' का नारा लगाते हुए संघर्ष का बिगुल फूंक दिया। डोहरिया कला में 23 अगस्त 1942 को सुबह से ही बड़ी संख्या में लोग जुटने लगे। तत्कालीन कलेक्टर एम.एम.मास, हाकिम परगना साहब बहादुर और इंस्पेक्टर हल्का सदर ने लोगों को हटाने की पूरी कोशिश की। लेकिन आजादी के दीवाने लगातार नारे लगाते हुए आगे बढ़ते चले जा रहे थे। इसके बाद तत्कालीन थानेदार एनुलहक ने हथियारों से लैस सिपाहियों को बुला लिया। पुलिस निहत्थे सत्याग्रहियों पर लाठीचार्ज करने लगी। जवाब में भीड़ ने भी पत्थरबाजी शुरू कर दी। इसके बाद पुलिसवालों ने फायरिंग कर दी। लोगों ने सीने पर गोलियां झेलीं। नौ आंदोलनकारी शहीद हुए। 23 गंभीर रूप से घायल हो गए। बताते हैं कि उस दिन अंग्रेजों ने डोहरिया कला गांव में आग भी लगा दी थी।

9–प्राचीन सभ्यता लहुरादेवा

मेसोपोटामिया, उत्तरी अफ्रीका, यूरोप, दक्षिण पूर्व एशिया और अमरीका से लेकर सिंधु घाटी, मोहनजोदड़ो, हड़प्पा तक मानव सभ्यता के विकास के क्रम को समझने का सिलसिला कभी रुका नहीं। आदिम युग से आधुनिक समाज तक की मनुष्य की यात्रा प्राचीन इतिहास के विद्यार्थियों और पुरातत्त्ववेत्ताओं को ही नहीं आम लोगों को भी आकर्षित करती है। ऐसे में संतकबीरनगर के लहुरादेवा में ईसा से छह से नौ हजार वर्ष पहले सभ्यता के विकास की कहानी पुरातत्त्ववेत्तओं के लिए अध्ययन का विषय बनी हुई है। वह लहुरादेवा, जहां 2000 से 2008–09 तक चली खुदाई में धान की खेती के सबसे प्राचीन अवशेष मिले। इसके पहले तक माना जाता था कि चीन में ही सबसे पहले धान की खेती के प्रमाण मिले हैं। मध्य गंगा घाटी के इस पूरे क्षेत्र में सभ्यता के विकास के आरम्भ की तारीखें बहुत बाद की बताई जाती थीं। बुद्ध काल से पहले के पुरातात्त्विक प्रमाण सामने नहीं आए थे लेकिन गोरखपुर विवि के प्राचीन इतिहास विभाग के संग्रहालय अधीक्षक रहे पुरातत्त्ववेत्ता कृष्णानंद तिवारी जैसे जानकार के मन में बार–बार यह सवाल उठता था कि जिस इलाके के जनमानस में सतयुग, त्रेता, द्वापर के महानायकों की कहानियां बसती हों वहां मानव सभ्यता के आरम्भ के अवशेष न मिलने की वजह

क्या हो सकती है। श्री तिवारी ने इस सवाल का जवाब अपने गांव लहुरादेवा में भी ढूंढना शुरू किया। जल्द ही उन्हें प्रमाण मिलने लगे। कभी ईंट–भट्ठे के लिए खोदे गड्ढे में, कभी पोखरे के किनारे, तो कभी किसी खेत में। 1973–74 में सोहगौरा की खुदाई में उन्हें नवपाषाण और ताम्रपाषाण काल के सबूत मिले तो यह जिज्ञासा और बढ़ती चली गई। कृष्णानंद, उन्हें मिले मृदभांड, ईंटें और बर्तनों के अवशेष विवि में लाकर अपने वरिष्ठ शिक्षकों को दिखाते तो सबकी आंखें फटी रह जातीं। उस दौर में गोरखपुर विवि के प्रो. शैलनाथ चतुर्वेदी, पुरातत्त्ववेत्ता वी.पी. सिन्हा, वी.एस. वर्मा, इलाहाबाद विवि के प्रो. जी.आर. शर्मा सहित कई विषय विशेषज्ञों ने उनकी मदद की। साल–2000 के बाद राज्य पुरातत्त्व विभाग ने भी ध्यान दिया। छह–सात साल की खुदाई में ईसा पूर्व 6000 से 9000 तक की धान की भूसी, मृदभांड, कुआं, बड़ी–बड़ी ईंटें और दूसरे कई अवशेष मिले। लहुरादेवा को दक्षिण एशिया की सबसे आरम्भिक नियोलिथिक साइटों में गिना जाने लगा। पुरातत्त्वविद राकेश तिवारी ने भी 2009 में एक रिपोर्ट दी। कार्बन डेटिंग के आधार कहा गया कि लहुरादेवा से मिले धान की भूसी और चावल 8000 ईसा पूर्व और 9000 ईसा पूर्व के बीच के समय का है।

आर्यों के बारे में बदल सकती है अवधारणा

प्राचीन इतिहास के शिक्षक और महाराणा प्रताप पीजी कालेज जंगल धूसड़ के प्राचार्य डा. प्रदीप राव लहुरादेवा के महत्व को इस रूप में रेखांकित करते हैं– 'यह सिर्फ सबसे पहले धान की खेती के प्रमाण मिलने का मामला नहीं है। लहुरादेवा प्रमाण है इस बात का कि पूर्वी उत्तर प्रदेश, मानव सभ्यता के विकास के आरम्भ का केंद्र था। इस स्थान की और खुदाई करके और अब तक मिले अवशेषों के विस्तृत अध्ययन से आर्यों के बारे में स्थापित अवधारणा के बदलने की भी सम्भावना है।' दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विवि के इतिहास विभाग के वरिष्ठ शिक्षक प्रो. हिमांशु चतुर्वेदी ने कहा कि लहुरादेवा भारतीय इतिहास की गौरवशाली परम्परा का सबसे बड़ा प्रमाण है।

10–प्राचीन सभ्यता सोहगौरा

मिश्र, मेसोपोटामिया और सिंधु घाटी की सभ्यता। प्राचीन दुनिया के शुरुआती कालक्रमों के इन स्थापित प्रतीकों की तरह सोहगौरा में भी मानव समाज के निर्माण, शासन व्यवस्था और नगरीय विकास की अद्भुत कथाएं समाई हुई हैं। पुरातत्त्व के जानकारों की नजर में मानव समझ के आरम्भ से ही सोहगौरा आबाद था। हालांकि इस बारे में आज तक बहुत विस्तार से लिखा नहीं गया। लेकिन 1960 और 1974 में की गई खुदाई के बाद पुरातत्त्वविदों और इतिहास वेत्ताओं ने जो रिर्पोट्स तैयार कीं वे प्राचीन इतिहास की बनी बनाई अवधारणों को बदल सकती हैं। वे अवधारणाएं, जो कहती हैं कि सभ्यता का विकास पश्चिम से पूरब की ओर हुआ है। इन

रिपोर्ट्स में संकेत मिलते हैं कि चाक और आग के अविष्कार से पहले भी इस इलाके में पेड़ों के रेशों से बनी चटाई पर थापकर हाथ से मिट्टी के बर्तन तैयार कर दिए जाते थे। सोहगौरा का प्रागैतिहासिक महत्व सामने लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले पुरातत्त्वविद् और गोरखपुर विवि के पूर्व संग्रहालय अधीक्षक कृष्णानंद तिवारी के मुताबिक, 'आग के अविष्कार और नवपाषाण काल के अंतिम चरण में धान की भूसी पकाकर बर्तन तैयार किए जाने लगे। ऐसे काले–लाल मृदभांड भी सोहगौरा से मिले हैं। यहां से मिले औजार और दूसरे अवशेष पांच हजार ईसा पूर्व से लेकर 2000 ईसा पूर्व और उसके बाद मध्यकालीन भारत तक के इतिहास के अध्ययन का आधार देते हैं। जिस तरह सिंधु घाटी में मोहनजोदड़ो और हड़प्पा, मानव सभ्यता के विकास के दो महत्वपूर्ण केंद्र थे। बंटवारे में यह दोनों पाकिस्तान में चले जाने के बाद भारत के पुराविदों ने लोथल और कालीबंगा में उससे भी प्राचीन दो केंद्र खोज निकाले। जैसे पश्चिम में लोथल और कालीबंगा का नाम लिया जाता है वैसे ही मध्य गंगा घाटी में सोहगौरा और लहुरादेवा हैं।'

सोहगौरा से मिले ताम्रपत्र अभिलेख से मौर्यकालीन भारत में शासक वर्ग को अनोमा (आमी नदी) के किनारे के इस इलाके में आपात काल की चिंता का प्रमाण मिलता है। ताम्रफलक में दो तल्ले (मंजिल) के दो कोष्ठागारों का जिक्र है, जहां आपात काल के लिए कुछ विशेष अनाज सुरक्षित रखने का आदेश दिया गया था। यह तामपत्र वंशग्राम (बांसगांव शिविर) से जारी हुआ था। कोष्ठागारों की स्थापना शायद आमी नदी से आने वाली बाढ़ के समय प्रजा को अनाज के संकट से मुक्त रखने के लिए की गई थी। यह प्रमाण है कि मौर्य शासनकाल में भी इस इलाके में दो मंजिला भवन बनते थे। अपनी प्राचीनता, वास्तु और जवाबदेह शासन व्यवस्था के अध्ययन के लिहाज से सोहगौरा का विशेष महत्व है। सोहगौरा में नवपाषाण से कुषाण काल, लगातार छह चरणों तक, बस्ती के होने के प्रमाण मिले हैं। यह अथर्ववेदीय, वैदिक और सैंधव कालीन (सिंधुघाटी की सभ्यता) संस्कृति के समानान्तर सांस्कृतिक परम्परा थी।

शिवावतार महायोगी गुरु श्री गोरखनाथ

— डॉ. फूलचन्द प्रसाद गुप्त*

भारत भगवान् के अवतरण की धरती है। इस धरती पर भगवान् राम, भगवान् कृष्ण और भगवान् शिव का प्राकट्य हुआ है। यह गौरव मात्र भारत की धरती को प्राप्त है। यह भगवान् की जन्मभूमि, कर्मभूमि और तपोभूमि है। देश, काल, परिस्थिति के अनुसार भगवान् इस धरती पर अवतरित होते रहे हैं। त्रेतायुग में भगवान् राम, द्वापर में भगवान् कृष्ण का अवतरण 'परित्राणाय साधूनां, विनाशाय च दुष्कृताम्' के लिए हुआ वहीं भगवान् शिव महायोगी गुरु श्री गोरक्षनाथ के रूप में जगत्—कल्याण के लिए चारों युगों में प्रकट हुए।

शिवावतारी, नाथपंथ के प्रवर्तक और हठयोग के प्रणेता गुरु श्री गोरखनाथ की तपःस्थली होने का सौभाग्य गोरखपुर की धरती को प्राप्त है। एक बार गुरु गोरखनाथ समाधि में स्थित थे, जिसे देखकर माँ पार्वती ने भगवान् शिव से उनके विषय में पूछा, तो भगवान् शिव ने कहा—

''अहमेवास्मि गोरक्षो भद्रूम तन्निबोध्त्।
योगमार्ग प्रचाराय मयारूपमिदंध्तम्।।''

अर्थात् ''योग मार्ग से ईश्वर प्राप्ति का मार्ग बताने के लिए मैंने ही गोरख के रूप में अवतार लिया है।'' इसीलिए इन्हें शिवावतारी कहा जाता है। गोरखनाथ जी हठयोग के प्रचारक हैं।

गोरखनाथ जी सतयुग में पंजाब, त्रेतायुग में गोरखपुर, द्वापर युग में द्वारका के आगे हरमुज में और कलयुग में काठियावाड़ गोरखमढ़ी में प्रादुर्भूत हुए। बंगाल में विश्वास किया जाता है कि गोरखनाथ जी उसी प्रान्त में प्रकट हुए थे। नेपाली परम्परा में बताया गया है कि

*प्रवक्ता—हिन्दी, महाराणा प्रताप इण्टर कॉलेज, गोरखपुर

गोरखनाथ जी पंजाब से चलकर नेपाल गये थे।

जब भगवान् विष्णु कमल में प्रकट हुए तब श्री गुरु गोरखनाथ पाताल में तपस्या कर रहे थे। भगवान् विष्णु चारों ओर जल की समस्या से चिन्तित होकर गुरु श्री गोरखनाथ जी के पास सहायता के लिए गये। गुरु श्री गोरखनाथ ने उन्हें धूनी से विभूति दी, जिससे पृथ्वी की रचना हुई और सृष्टि का कार्य सुगम हो सका।

भगवान् श्रीराम के राज्याभिषेक के लिए गुरु श्री गोरखनाथ जी को निमंत्राण भेजा गया था, परन्तु तपस्या में लीन होने के कारण वे उपस्थित न हो सके। उन्होंने अपना आशीर्वाद भेजा था। भगवान् श्रीराम ने उनसे योग सम्बन्धी उपदेश ग्रहण किया था।

द्वापर में द्वारिका–हरमुज में अवतरित हुए, यही उनकी तपस्थली रही। इसी स्थान पर रुक्मिणी और भगवान् कृष्ण के विवाह में उत्पन्न हो रहे विघ्न को दूर करने के लिए देवताओं के आग्रह पर गुरु श्री गोरखनाथ ने उपस्थित होकर विवाह सकुशल सम्पन्न करवाया।

जब धर्मराज युधिष्ठिर द्वारा राजसूय यज्ञ का आयोजन हुआ तब इस यज्ञ के लिए आमंत्राण देने महाबली भीम गुरु श्री गोरखनाथ की तपस्थली गोरखपुर आये थे। उस समय गुरु श्री गोरखनाथ तपस्या में लीन थे। भीम को प्रतीक्षा करनी पड़ी। जहाँ पर महाबली भीम ने विश्राम किया, वहाँ सरोवर बन गया, जो आज भी श्रीगोरखनाथ मन्दिर के प्रांगण में स्थित है।

गुरु गोरखनाथ जी ने अपने सन्दर्भ में कहा–

पूरब देस पछाही घाटी, (जनम) लिष्या हमारा जोगं ।
गुरू हमारा नांवगर कहिए, भेटै भरम विरोगं।।

इस छन्द का अर्थ यद्यपि अध्यात्म से जुड़ा हुआ है परन्तु प्रथम चरण से अर्थ निकलता है कि गुरु श्री गोरखनाथ जी का प्राकट्य पछाँह की घाटी में हुआ और उनके जीवन की तपःस्थली पूरब देश बना।

एक बार गुरु मत्स्येन्द्रनाथ भ्रमण करते हुए गोदावरी नदी के किनारे बसे चन्द्रगिरि नामक गाँव में गये। वहाँ से भिक्षा माँगते हुए एक ब्राह्मण के घर पहुँचे। ब्राह्मणी ने बड़े आदर के साथ उनकी झोली में भिक्षा डाल दी। ब्राह्मणी के मुख पर पातिव्रत्य का अपूर्व तेज था। उसे देखकर मत्स्येन्द्रनाथ को बड़ी प्रसन्नता हुई। परन्तु साथ ही इस सती के चेहरे पर उदासी की एक क्षीण रेखा दिखायी पड़ी। जब इन्होंने इसका कारण पूछा तब उस सती ने निःसंकोच भाव से बताया कि सन्तान न होने के कारण संसार फीका जान पड़ता है। मत्स्येन्द्रनाथ ने तुरन्त झोली से थोड़ी सी भभूत निकाली और ब्राह्मणी के हाथ पर रखते हुए कहा– ''इसे खा ले। तुम्हें

पुत्र होगा।'' इतना कहकर वे तो चले गये। इधर एक पड़ोसिन ने जब यह बात सुनी तब ब्राह्मणी को भभूत खाने से मना कर दिया। फलस्वरूप उसने उस राख को एक गड्ढे में फेंक दिया। बारह वर्ष बाद मत्स्येन्द्रनाथ इधर पुनः आये और उन्होंने उसके द्वार पर जाकर अलख जगाया। ब्राह्मणी के बाहर आने पर उन्होंने कहा– ''अब तो बेटा बारह वर्ष का हो गया होगा। देखूँ, तो वह कहाँ है?'' यह सुनते ही वह स्त्री घबरा गयी और उसने सारा हाल सच–सच बता दिया। मत्स्येन्द्रनाथ उसे लेकर उस गड्ढे के पास गये और वहाँ भी अलख जगाया। आवाज सुनते ही बारह वर्ष का एक तेजपुंज बालक प्रकट हुआ और मत्स्येन्द्रनाथ के चरणों में सिर रखकर प्रणाम करने लगा। यही बालक आगे चलकर गोरखनाथ के नाम से प्रसिद्ध हुआ। मत्स्येन्द्रनाथ ने उस समय से ही उस बालक को अपने साथ रखा और योग की पूरी शिक्षा दी। गुरुपदिष्ट मार्ग से गोरखनाथ जी ने साधना पूरी की और स्वानुभव से योगमार्ग में और भी उन्नति की।

नेपाल के लोग श्री गोरखनाथ को श्री पशुपतिनाथ जी का अवतार मानते हैं। नेपाल के भोगमती, भातगाँव, मृगस्थली, औंधरा, स्वारीकोट और पिडयन आदि कई स्थानों में उनके योगाश्रम हैं। आज भी नेपाल देश की मुद्रा पर एक ओर श्री–श्री गोरखनाथ लिखा रहता है। गोरखनाथ जी के शिष्य होने के कारण ही नेपाली 'गोरखा' कहलाते हैं। गोरखपुर में श्री गोरखनाथ जी ने तपस्या की थी, जहाँ उनका बहुत बड़ा मन्दिर है, वहाँ नेपाल के लोग दर्शन–पूजन के लिए आते हैं।

गोरखनाथ जी महाराज धर्म–प्रचार करते हुए एक बार ज्वाला देवी के यहाँ हिमाचल प्रदेश कांगड़ा पहुँचे। देवी ने उन्हें वहाँ ठहरने की प्रेरणा दी, इस पर श्रीनाथ जी ने कहा कि आपके यहाँ तामसी पदार्थों का भोग लगता है, इसलिए हम यहाँ भोजन नहीं करेंगे। विशेष आग्रह पर गोरखनाथ जी ने कहा कि आप चूल्हा जलाकर खिचड़ी के लिए जल गरम करने हेतु डिब्बी रख दें, मैं भिक्षा (खिचड़ी) माँगकर लाता हूँ। इस पर देवी ने खिचड़ी के लिए डिब्बी चढ़ा दी। खिचड़ी के लिए पानी आज भी गरम हो रहा है किन्तु गोरखनाथ जी पुनः उस स्थान पर आज तक नहीं पहुँचे। वे भ्रमण करते हुए गोरखपुर पहुँच गये। यहाँ की हरीतिमा और रमणीयता पर मुग्ध होकर गोरखनाथ जी ने यहाँ बैठकर तपस्या की, इस प्रकार उनकी यह साधना–स्थली पवित्र तपोभूमि के रूप में विख्यात है। श्री गोरखनाथ जी को यहाँ तपस्या करते हुए देखकर श्रद्धालुओं ने नाथजी के निवास के लिए यहीं पर एक कुटिया बना दी। गोरखनाथ जी ने जिस स्थान पर तपस्या की उसी स्थान पर उनका भव्य मन्दिर निर्मित है, जो लाखों श्रद्धालुओं की श्रद्धा का केन्द्र है।

भगवती इरावती (राप्ती) के तट पर हरीतिमा और रमणीयता से मुग्ध होकर इस स्थान

पर जब गोरखनाथ जी महाराज साधना में लीन हुए तो धीरे–धीरे उनकी साधना की बात फैलने लगी। बहुत से लोग उनके दर्शन और आशीर्वाद के लिए उमड़ पड़े। लोगों ने श्रीनाथ जी के खप्पर में खिचड़ी भरना आरम्भ किया। जिस मुहूर्त में खिचड़ी से खप्पर भरा जाने लगा, उस समय मकर संक्रान्ति पर्व का पुण्यकाल था। भारतीय सांस्कृतिक एवं सामाजिक जीवन में यह पर्व नवान्न–महोत्सव के रूप में मनाया जाता है। लोग भोजन के रूप में खिचड़ी ग्रहण करते हैं। इस तरह गोरखनाथ जी के खप्पर को खिचड़ी से भरने का उपक्रम गोरखनाथ मन्दिर में मकर संक्रान्ति पर्व पर खिचड़ी महोत्सव और मेले के रूप में हुआ। गोरखनाथ जी के खप्पर में अपार चावल–दाल की राशि भर दी गयी पर खप्पर खाली का खाली ही रह गया। यह अद्भुत और यौगिक चमत्कार था। मकर संक्रान्ति के पर्व पर लाखों श्रद्धालु महायोगी गुरु श्री गोरखनाथ जी को खिचड़ी चढ़ाते हैं और गोरखनाथ जी का दर्शन और आशीर्वाद पाते हैं। इस पर्व पर एक महीने का मेला भी लगता है।

एक बार गोरखनाथ जी ने अपने खप्पर में खिचड़ी बनायी। उन्होंने आसपास की जनता को भोजन के रूप में खिचड़ी का प्रसाद ग्रहण करने के लिए आमंत्रित किया। अपार जनसमूह ने खिचड़ी का प्रसाद ग्रहण किया पर खप्पर ज्यों–का–त्यों भरा रह गया। गोरखनाथ जी की असीम योगसिद्धि से लोग चमत्कृत हो गये। इसके पूर्व भी गोरखनाथ जी ने यौगिक चमत्कार प्रकट किया था। उन्होंने लोगों से कहा जिसकी जितनी इच्छा हो, हमारी तपःस्थली से अन्न ले जाय। प्रसाद समझकर लोगों ने अपने–अपने घर अन्न ले जाना आरम्भ किया पर उनका खप्पर खाली नहीं हुआ, अन्न का भण्डार भरा रहा। गोरखनाथ जी का यौगिक चमत्कार लोककल्याणकारक रहा।

गुरु श्री गोरखनाथ के गुरु मत्स्येन्द्रनाथ सिद्ध मत त्याग कर कदली देश में योगिनियों की माया में आसक्त होकर योग ज्ञान भूल गये थे। यह त्रिया राज्य था, जहाँ पुरुषों का प्रवेश वर्जित था। उन्होंने अपने दो शिष्यों लंग और महालंग को लेकर कदली वन में प्रवेश किया। एक सरोवर के तट पर उन्होंने आसन लगाया। वहाँ एक कदली–नारी आयी। गोरखनाथ को उससे पता लगा कि मत्स्येन्द्रनाथ जी महारानी मैनाकिनी के साथ सोलह सौ रमणियों द्वारा परिसेवित होकर विहार में तत्पर हैं। वहाँ योगी का प्रवेश निषिद्ध है। केवल नर्तकियाँ ही उस राजप्रासाद में प्रवेश कर सकती हैं। नर्तकी के वेश में गोरखनाथ जी त्रिया राज्य में प्रविष्ट हुए। त्रिया राज्य की महारानी मैनाकिनी मत्स्येन्द्रनाथ के साथ रत्नसिंहासन पर रमणीय वेश में विराजमान थीं। जब नर्तकी कलिंगा ने अपना नृत्य आरम्भ किया और गोरखनाथ जी नर्तकी वेश में मर्दल पर थाप लगाते हुए अपने गुरुदेव का ध्यान अपनी मर्दली ध्वनि की ओर आकृष्ट किया तो मर्दल की ध्वनि से मत्स्येन्द्रनाथ जी को गोरखनाथ जी का अभीष्ट समझने में एक भी क्षण नहीं लगा।

मर्दल के शब्द निकले– '**जाग मछन्दर गोरख आया**'। 'हे गुरुदेव! आप महायोग–ज्ञान के स्वामी हैं। आपका कामिनी के रूप में आसक्त होना उचित नहीं है। आप इसका त्याग कीजिए। आप आत्मा के योगी हैं। मैं आपको नाथ साध्ना की सि(का स्मरण दिलाता हूँ।'

महायोगी गोरखनाथ जी ने अपने गुरु मत्स्येन्द्रनाथ को सम्बोधित एवं सावधान कर त्रिया राज्य की भोगवृत्ति पर गुरु को विजय दिलायी और गुरु अपने प्रिय शिष्य के साथ त्रिया राज्य से बाहर हो गये।

भगवान् शिव की नाभि से मत्स्येन्द्रनाथ, हाड़ से हाड़िपा (जालन्धरनाथ), कान से कान्हपा (कृष्णपाद) और जटा से गोरखनाथ की उत्पत्ति हुई। एक बार गौरी के मन में एक प्रश्न उठा कि शिव की मृत्यु कभी नहीं होती जबकि उन्हें मृत्यु सदैव मिलती है। गौरी ने शिव जी से इसका रहस्य जानना चाहा। शिवजी ने गौरी के साथ क्षीर–सागर में सप्त शृंग पर एक डोंगी में बैठकर नीर में स्थित एक मत्स्य ने उस उपदेश का श्रवण किया। उसे एकाग्रचित्त होकर उपदेश श्रवण करते हुए देखकर शिव ने सोचा कि इस मत्स्य ने योगज्ञान का श्रवण कर लिया है। उन्होंने उस पर जल छिड़का। जल छिड़कने पर वह मत्स्य दिव्यकाय मत्स्येन्द्र के रूप में प्रत्यक्ष हो गया।

एक बार गिरिजा ने भगवान् शिव से आग्रह किया कि आप चौरासी नाथ सिद्धों मत्स्येन्द्रनाथ, जालन्धरनाथ, कृष्णपाद और गोरखनाथ को विवाह करके वंश चलाने की अनुमति दें। शिव ने कहा कि इन सिद्धों में नाम मात्रा का भी काम विकार नहीं है। गौरी ने चारों सिद्धों की परीक्षा लेनी चाही। भगवान् शिव ने ध्यान बल से चारों सिद्धों का आह्वान किया। देवी ने भुवन–मोहिनी का रूप धारण कर सिद्धों को अन्न परोसा। हाड़िपा ने उनके निवास में झाड़ू लगाने की मनोकामना की। कान्हपा ने सोचा कि ऐसी सुन्दरी मेरी माता हो तो मैं इसकी गोद में बैठकर स्तनपान कर अपना वात्सल्य सफल करूँ। मत्स्येन्द्रनाथ ने सोचा कि ऐसी सुन्दरी मिले तो उसके साथ विहार करूँ। देवी ने उन्हें तत्काल शाप दिया कि जो तुमने योगज्ञान को क्षीर–सागर में भगवान् शिव से श्रवण किया है, उसे भूलकर तुम कुछ समय तक कदली देश में सोलह सौ सुन्दरियों से सेवित महारानी के सौन्दर्य जाल में आसक्त रहोगे। गिरिजा के शाप से ही कदली देश के त्रिया राज्य में रमणी–विहार में आसक्त हुए थे। जहाँ से उन्हें उनके शिष्य गोरखनाथ जी ने योग साधना का स्मरण कराकर रमणी राज्य से मुक्त कराया।

गोरखपुर में श्री गोरखनाथ जी का भव्य मन्दिर उसी स्थान पर बना है जहाँ पर महायोगी गुरु श्री गोरखनाथ जी ने तपस्या की थी। यह मन्दिर 52 एकड़ के सुविस्तृत क्षेत्र में स्थित है जिसे प्राकृतिक सौन्दर्य प्राप्त है। नाथपन्थ के महान प्रवर्तक गुरु श्री गोरखनाथ की तपोभूमि होने के कारण यह मन्दिर नाथ–योगियों, सिद्धों, साधु–महात्माओं एवं गृहस्थों के लिए

श्रद्धास्पद केन्द्र है।

मन्दिर की मुख्य वेदी पर शिवावतार अमरकाय गुरु श्री गोरखनाथ जी महाराज की श्वेत संगमरमर की दिव्य मूर्ति साधनावस्था में प्रतिष्ठित है। इस दिव्य मूर्ति का दर्शन कर भक्त श्रद्धा से गोरखनाथ जी के चरणों में नतमस्तक हो जाता है। गोरखनाथ मन्दिर के गर्भगृह में गोरखनाथ जी की चरण–पादुकाओं की प्रतिमूर्ति भावांकित हैं जिनकी विधिवत पूजा होती है। प्रातःकाल घण्टों–नगाड़ों और तुमुल ध्वनि के साथ श्री गोरखनाथ जी की पूजा विधि–विधान से प्रारम्भ हो जाती है। मध्याह्न में पुनः श्रीनाथ जी की पूजा होती है। सायंकाल भी निर्धारित समय में पूजा–आरती होती है। जिस समय यहाँ पूजा का विश्राम होता है, ठीक उसी समय दांग चौघड़ा (नेपाल) में पूजा प्रारम्भ हो जाती है और जब वहाँ पूजा का विश्राम होता है, ठीक उसी समय माई पाटेश्वरी देवी के मन्दिर तुलसीपुर देवीपाटन (जिला–बलरामपुर) में पूजा प्रारम्भ हो जाती है। इस प्रकार निरन्तर तीनों स्थानों में रात–दिन पूजा चलती रहती है। श्री गोरखनाथ मन्दिर में प्रतिदिन दर्शनार्थियों का समूह उमड़ता रहता है, परन्तु प्रत्येक मंगलवार को हजारों की संख्या में दर्शनार्थ आते हैं और श्रीनाथ जी को फल, फूल, माला, लड्डू और खिचड़ी चढ़ाते हैं।

श्री गोरखनाथ जी द्वारा त्रेतायुग में जलायी गयी अखण्ड ज्योति आज भी अनवरत रूप से जल रही है। माताएँ ज्योति के काजल से बच्चों के नेत्र अंजित करती हैं। मुख्य मन्दिर में ही भगवान् शिव नटराज, विघ्नविनाशक गणेश जी, भगवती महाकाली, श्री भैरवनाथ जी की भव्य मूर्तियाँ स्थापित हैं जिनके दर्शन से भक्त आनन्दित होते हैं। अखण्ड धूना एक दर्शनीय स्थल है। इस धूने में महायोगी गोरखनाथ जी द्वारा त्रेतायुग से प्रज्वलित अग्नि आज भी सुरक्षित है। अनेक त्रिशूलों से समलंकृत भैरव जी का स्थान, शीतला माता का मन्दिर, शिव जी के मन्दिर में प्रस्थापित शिवलिंग और भगवान् शिव की प्रतिमा, दुर्गा माता का मन्दिर दर्शनार्थियों में भक्ति–भाव जगाता है। श्री हनुमान मन्दिर में प्रतिष्ठित हनुमान जी की मूर्ति, श्री हट्ठी माई, नवग्रहों की मूर्तियाँ, श्री राधा–कृष्ण की भव्य प्रतिमा, श्री संतोषी माता, गंगा माता, छठी माता, भगवान् सूर्य की भव्य प्रतिमा का दर्शन भक्तगण करते हैं। श्री गोरखनाथ मन्दिर परिसर स्थित भीम सरोवर, जो युधिठिर के राजसूय यज्ञ में पधारने का निमंत्रण देने के लिए आये हुए भीम के विश्राम करते समय पृथ्वी द्वारा उनका भार न सहन करने के कारण आकारित है, उसके पवित्र जल में स्नान कर भक्त अपने को धन्य मानते हैं। इसी सरोवर के किनारे विश्रामावस्था में भीम की विशाल मूर्ति प्रतिष्ठापित है। बाबा ब्रह्मनाथ, बाबा गम्भीरनाथ, युगपुरुष महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज एवं राष्ट्रसन्त महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज के संगमरमर निर्मित श्रीविग्रह से अलंकृत दिव्य समाधि–मन्दिर आचार्यों की छवि को भक्तों के मानस पटल पर

अंकित करते हैं।

प्रतिवर्ष मकर संक्रान्ति के अवसर पर श्री गोरखनाथ मन्दिर परिसर में विशाल मेला लगता है। मकर संक्रान्ति के पूर्व ही मन्दिर परिसर दुकानों से सज्जित हो जाता है। मकर संक्रान्ति के प्रातःकाल श्री गोरक्षपीठ की ओर से गोरक्षपीठाधीश्वर महायोगी गुरु गोरखनाथ मन्दिर में श्री गोरखनाथ जी को खिचड़ी चढ़ाते हैं। तत्पश्चात् नेपाल नरेश की खिचड़ी चढ़ती है। इसके बाद भक्तों के लिए मन्दिर का कपाट खोल दिया जाता है। भक्त भीम सरोवर के पवित्र जल में स्नान कर गुरु श्री गोरखनाथ जी को खिचड़ी चढ़ाते हैं। आज के दिन लाखों भक्त गुरु श्री गोरखनाथ जी का दर्शन करते हैं एवं खिचड़ी चढ़ाते हैं। दर्शनार्थियों की कतारें कभी–कभी मुख्य द्वार तक देखी जाती हैं। कतारबद्ध श्रद्धालु हर–हर महादेव, गुरु गोरखनाथ के जयघोष से गगनमण्डल को ध्वनित करते हुए गुरु श्री गोरखनाथ का दर्शन करते हैं।

गोरखनाथ जी केवल योगी ही नहीं थे, वरन् वे बड़े विद्वान और कवि भी थे। उनके गोरक्षसहस्रनाम, गोरक्षशतक, गोरक्षपिष्टिका, गोरक्षगीता और विवेकमार्तण्ड आदि अनेक ग्रन्थ संस्कृत भाषा में हैं। लोकभाषा में भी उनकी कविताएँ मिलती हैं। श्रीगोरखनाथ द्वारा रचित हिन्दी ग्रन्थों यथा– सबदी, पद, शिष्या दरसन, प्राणसंकली, नरवै बोध, व्रत आत्मबोध, ग्यान चौतीसा, अभै मात्रा जोग, पन्द्रह तिथि, सप्तवार, मछीन्द्र गोरखबोध, रोमावली, ग्यान तिलक, गोरख–गणेश गुष्टि, गोरख दत्त गुष्टि, महादेव गोरख–गुष्टि, सिद्ध पुरान, दयाबोध, अष्टचक्र, अष्टमुद्रा, पंच अग्नि के छन्दों का संकलन 'गोरखबानी' में किया गया है। श्री गोरखनाथ जी का यह संकलन इतना लोककल्याणपरक सिद्ध हुआ है कि अब तक इसके तीन संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं। इस संकलन के सन्दर्भ में गोरक्षपीठाधीश्वर पूज्य महन्त योगी आदित्यनाथ जी महाराज ने कहा है– ''वास्तव में वर्तमान दौर में जिन कुछ अनिवार्य तत्त्वों–तथ्यों की सर्वाधिक अपेक्षा मानव जाति को है उनमें जीवन–शैली को आदर्श बनाने वाली कृतियों की उपलब्धता होनी ही चाहिए। ऐसी रचनाएँ हमारा मानसिक–कायिक स्तरोन्नयन करने में सक्षम होती हैं। गुरु गोरखनाथ एक योगी होने के साथ–साथ समाज–सापेक्ष चिन्तक के रूप में भी जाने जाते हैं। उनकी बानियाँ नाथ परम्परानुयायियों के लिए तो परम पवित्र हैं ही, लोक के लिए भी श्लाघ्य और आत्मोन्नति का कारक है।''

गोरखबानी के कुछ छन्द जो लोक में प्रचलित हैं, उनमें एक–दो उदाहरण प्रस्तुत हैं–

मरौ वे जोगी मरौ, मरण है मीठा।
तिस मरणीं मरौ, जिस मरणी गोरख मरि दीठा।।

हे योगी! मरो, जीवनमुक्त अवस्था में स्थित होकर अमृतपद प्राप्त कर लो, इस तरह

जीते जी संसार की दृष्टि में मरकर अमृतपद में प्रतिष्ठित हो जाना बड़ा ही मधुर है। हे योगी! उस मृत्यु, अमरता का वरण करो जिसके द्वारा मैंने अमृतपद प्राप्त कर, जीवनमुक्त होकर परमब्रह्म परमात्मा, परम शिव का अपने दिव्य चक्षु से दर्शन कर लिया।

हबकि न बोलिबा, ठबकि न चालिबा, धीरै धरिबा पावं।
गरब न करिबा सहजैं रहिबा, भणत गोरख रावं।।

बिना सोचे–समझे किसी विषय में नहीं बोलना चाहिए, चलने में भी सावधान रहना चाहिए, सोच–विचार कर धीरे–धीरे अपने अभीष्ट कार्य–पथ पर अग्रसर होना चाहिए। मन में अहंकार नहीं आने देना चाहिए, सामान्य जीवन अपनाना चाहिए।

नाथपन्थ में 'नाथ' शब्द का अर्थ प्रभु, कर्ता एवं रक्षक से है। नाथपन्थ की साधना पद्धति का मूल रूप औपनिषदिक योग–धारा तथा आगम–धारा में सम्मिलित है। इस पन्थ के योगी साधना के द्वारा मृत्यु पर विजय प्राप्त कर अमरपद को प्राप्त करते हैं। नाथ में 'ना' का तात्पर्य उस नाथ ब्रह्म से है, जो मोक्ष प्रदान करता है। 'थ' का अर्थ है– अज्ञान के सामर्थ्य को स्थगित करने वाला। 'नाथ' शब्द के विवेचन से यह निष्कर्ष निकलता है कि 'नाथ' शब्द के दो अर्थ हैं– परमतत्त्व, ब्रह्म या गुरु। नाथ शब्द का प्रयोग उपाधि के रूप में किया जाता है। जो साधक नाथ सम्प्रदाय में दीक्षित होता है, दीक्षित होने के बाद उसके नाम में 'नाथ' शब्द जोड़ दिया जाता है।

नवनाथ के रूप में जिन देवताओं का ध्यान नाथ परम्परानुयायी करते हैं, उनके नाम हैं– आदिनाथ, उदयनाथ, सत्यनाथ, सन्तोषनाथ, अचलनाथ, कन्यडिनाथ, चौरंगीनाथ, मत्स्येन्द्रनाथ और गोरक्षनाथ।

गुरु गोरखनाथ महान दार्शनिक भी थे। दार्शनिक चिन्तन द्वारा सत्य की निष्पक्ष खोज उनका लक्ष्य था। उनका उद्देश्य योगसाधना के द्वारा व्यक्ति की सांसारिक चेतना को संकुचित विचारों, पूर्वाग्रहों से मुक्त कर आध्यात्मिक चेतना के स्तर को ऊँचा उठाना था, जहाँ पर वह परम सत्य ब्रह्म का प्रत्यक्ष अनुभव कर सके। गोरक्षनाथ द्वारा उपदिष्ट दार्शनिक सिद्धान्त तथा योगानुशासन मन एवं बुद्धि से परे, उनके पारमार्थिक अनुभव पर आधारित है।

गुरु गोरखनाथ 'हठयोग' के प्रवर्तक हैं। हठयोग का अर्थ हठात् अर्थात् हठ (विशेष आग्रह) पूर्वक योगाभ्यास करने से है। योग–साध्ना मानवता के कल्याण के लिए हमारे महर्षियों और महान योगियों द्वारा प्रचारित विशिष्ट रसायन है जिसका सेवन सभी के लिए सुलभ एवं उपादेय है।

हकारः कीर्तितः सूर्यष्ठकारश्चन्द्र उच्यते ।
सूर्याचन्द्रमसोर्योगाद् हठयोगो निगद्यते ।।

सूर्य (प्राण) को 'ह' कहा जाता हे और चन्द्र (अपान) को 'ठ' कहा जाता है। हठयोग के अन्तर्गत षट्कर्मों में धौति, वस्ति, नेति, नौलि, त्राटक और कपालभाति की क्रियाएँ शरीरस्थ कफ, वात और पित्त का दोष नष्ट कर काया का शोधन कर देती हैं। आसनों के नियमित अभ्यास से शारीरिक एवं मानसिक व्याधियों से मुक्ति मिलती है। प्राणायाम से नाड़ी शोधन होता है और इससे शरीर और मन की स्थिरता सिद्ध होती है। गुरु गोरक्षनाथ जी कहते हैं कि महामुद्रा, नभोमुद्रा, उड्डियानबन्ध, जालन्धरबन्ध और मूलबन्ध के अभ्यास में जो योगी कुशल होता है, वही मुक्ति का पात्र है। हठयोग साधना का परम लक्ष्य षट्चक्र भेदन द्वारा कुण्डलिनी–जागरण कर सहस्रार में शिव का साक्षात्कार है। गुरु गोरखनाथ द्वारा प्रवर्तित हठयोग का उद्देश्य परम शिव का साक्षात्कार करना है।

सामाजिक जीवन में संकीर्णता अस्पृश्यता के रूप में दिखायी पड़ती है। गुरु गोरखनाथ ने जातियों में बँटे समाज को सशक्त एवं समर्थ बनाने के लिए उन तत्त्वों का कठोरता से विरोध ा किया जिन्होंने समाज में ऊँच–नीच, जाति–पाँति का विष बोया था। गुरु गोरखनाथ ने स्वर्ग–नरक के काल्पनिक भय से शोषित समाज को मुक्त करते हुए संयमित जीवन जीने का मार्ग बताया। उन्होंने कहा कि संयमित जीवन जीना स्वर्ग एवं असंयमित जीवन नरक के समान है। बाह्याडम्बर से ईश्वर को प्राप्त नहीं किया जा सकता यदि आचरण शुद्ध न हो। गुरु गोरखनाथ ने अहिंसा पर आधारित सदाचार से युक्त समाज के निर्माण का महान कार्य किया। अपने धर्म को अधिक मानवीय बनाया एवं जाति–व्यवस्था का विरोध किया। यवन भी उनके शिष्य बने। गोरखनाथ जी एवं उनके शिष्यों ने नाथ सम्प्रदाय का वृहत्तर भारत के सम्पूर्ण क्षेत्रों में विस्तार किया। आज भी भारत, नेपाल एवं अन्य देशों में स्थापित नाथपन्थ के मन्दिर, मठ सामाजिक समरसता के क्षेत्र में कीर्तिमान स्थापित कर रहे हैं। नाथ परम्परा में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र सभी वर्णों के सिद्धों को स्वीकार कर समान महत्त्व प्रदान कर मानव द्वारा विभाजित समाज को अस्वीकार कर दिया। जन्म–आधारित जाति व्यवस्था का खण्डन कर दिया। चौरासी सिद्धों में सभी जातियों को समान महत्त्व दिया।

महायोगी गुरु गोरखनाथ ने भारतीय समाज ठीक से देखा था और उसके खण्डित होते हुए रूप से परिचित थे। यह समाज बौद्ध, जैन, द्वैत–अद्वैत, शैव–वैष्णव, निर्गुण–सगुण और कर्मकाण्डों के कारण विभिन्न वर्गों में विभाजित था। अनेक प्रकार की रूढ़ियों, पाखण्ड, आडम्बर समाज में जड़ें जमा चुके थे। उन्होंने देखा यह समाज स्वर्ग–नरक के कल्पना–चक्र में उलझा हुआ है। पाखण्डी स्वर्ग–नरक का भेद बताकर जनता का शोषण कर रहे हैं। ऐसे समाज को

एकता के सूत्र में पिरोते हुए उन्होंने योग–साधना के माध्यम से जीव को जन्म–मरण के चक्र से मुक्ति का मार्ग प्रशस्त किया। इन्द्रिय–निग्रह पर उन्होंने विशेष बल दिया। इस प्रकार गुरु गोरखनाथ जी सर्वसमाज का नेतृत्व एवं पथ–प्रदर्शन किया। नेपाल, राजस्थान एवं गुजरात के राजघरानों से लेकर अछूत एवं शूद्र कहे जाने वाले वर्ग को एक ही माला के पुष्पों को गूँथते हुए सभी प्रकार के भेदों को मिटा दिया। उन्होंने जगत् को नाद एवं बिन्दु से उत्पन्न बताया।

नाथपन्थ के श्रीनाथ तीर्थस्थल भारत ही नहीं बल्कि अन्य देशों में भी प्रतिष्ठित हैं। कुछ स्थानों पर उनकी चरण–पादुकाएँ प्रतिष्ठित हैं। सिक्किम प्रदेश में चांगचिलिंग नामक स्थान पर श्री गोरखनाथ जी का मन्दिर बना हुआ है। अल्मोड़ा में नाथपन्थ का मन्दिर है जिसमें भैरव जी एवं पार्वती जी की मूर्ति स्थापित है। यहाँ पर गुरु गोरखनाथ जी की मूर्ति प्रतिष्ठित है। हरिद्वार में महामना मदनमोहन मालवीय मार्ग पर गुरु श्री गोरखनाथ जी का दिव्य मन्दिर प्रतिष्ठित है। नाथपन्थ की 51 सिद्ध–पीठों में हिमाचल प्रदेश में ज्वालादेवी (कांगड़ा) मन्दिर है जहाँ श्री गोरखनाथ जी की चरण–पादुकाएँ स्थापित हैं। सम्पूर्ण भारत में झेलम का गोरक्षटिल्ला नाथ सम्प्रदाय का महत्त्वपूर्ण तीर्थ स्थान माना जाता है। रोहतक (हरियाणा) में अस्थल बोहरमठ नाथपन्थ का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण तीर्थस्थल है। दिल्ली के रमेशनगर में गोरक्षनाथ मठ प्रतिष्ठित है। पटना के उत्तर गण्डक नदी के संगम पर गंगा के उस पार हरिहर क्षेत्र में गुरु गोरखनाथ की दिव्य सभा विद्यमान है। राजस्थान के बाड़मेर जिले की शिव तहसील में शिव मन्दिर एवं श्री गोरखनाथ जी का मठ अत्यन्त प्रतिष्ठित है। बलरामपुर जिले के तुलसीपुर में स्थित देवीपाटन का प्रसिद्ध मन्दिर भारत के 51 शक्तिपीठों में से है। पीठ के प्रहरी के रूप में भैरवनाथ जी की नित्य पूजा होती है। काशी में भगवान् विश्वनाथ को नाथयोगी आराध्य देव मानते हैं। काशी में नाथपन्थ के अनेक पवित्र तीर्थस्थान हैं। तीर्थराज प्रयाग में एक भैरव एवं महादेव मन्दिर नाथ सम्प्रदाय की देखरेख में संचालित हैं। झूँसी में गंगा के किनारे गुरु गोरखनाथ जी का पवित्र मन्दिर स्थापित है।

नेपाल देश पर गुरु श्री गोरखनाथ जी की सदैव कृपा रही है। नेपाल के लोग गुरु श्री गोरखनाथ जी के प्रति श्रद्धावनत रहते हैं। नेपाल की राजधनी काठमाण्डू में प्रतिष्ठित पशपतिनाथ जी का मन्दिर गुरु श्री गोरखनाथ जी का ही मन्दिर है। काठमाण्डू में ही एक और मन्दिर श्री गोरखनाथ जी का स्थापित है जिसमें श्री गोरक्षनाथ जी के बाल–स्वरूप का दर्शन होता है। बागमती गंगा के किनारे मत्स्येन्द्रनाथ जी का मन्दिर स्थापित है। मृगस्थली में गुरु श्री गोरखनाथ जी का भव्य मन्दिर स्थापित है। दांग में नाथ और सिद्ध भगवन्तनाथ के प्रसिद्ध मठ हैं। यहाँ पर श्री गोरखनाथ जी और भैरवनाथ जी की विशेष पूजा होती है।

इसी प्रकार भारत में और भारत के बाहर अन्य देशों में श्रीनाथ तीर्थस्थल प्रतिष्ठित हैं।

यहाँ स्थापित मठों एवं मन्दिरों में गुरु श्री गोरखनाथ जी की नियमित पूजा होती है। श्रीनाथ तीर्थस्थल नाथ परम्परा के अनुयायियों एवं श्रद्धालुओं की श्रद्धा के केन्द्र हैं।

गुरु श्री गोरखनाथ जी का जीवन–चरित लोकोपकारक का है। लोक–कल्याण के लिए ही हठयोग का प्रवर्तन कर जनसामान्य के लिए मुक्ति का मार्ग प्रशस्त किया। चारों युगों में अवतरित गुरु श्री गोरखनाथ शिव के अवतार हैं। कलयुग में उनके व्यक्तित्व को अत्यन्त प्रभावशाली माना गया है। डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी ने गुरु श्री गोरखनाथ जी के विषय में कहा– ''विक्रम संवत् दसवीं शताब्दी में भारतवर्ष के महान गुरु गोरखनाथ का आविर्भाव हुआ। शंकराचार्य के बाद इतना प्रभावशाली महिमामण्डित महापुरुष भारतवर्ष में दूसरा नहीं हुआ। भारतवर्ष में कोने–कोने में उनके अनुयायी आज भी पाये जाते हैं। भक्ति आन्दोलन के पूर्व सबसे शक्तिशाली धार्मिक आन्दोलन गोरखनाथ का योगमार्ग ही था। भारतवर्ष की ऐसी कोई भाषा नहीं है, जिसमें गोरखनाथ सम्बन्धी कहानियाँ नहीं पायी जाती हों।''

निश्चित रूप से इस महान व्यक्तित्व से व्यक्ति के आत्मिक उन्नयन का मार्ग प्रशस्त हुआ ही, साथ ही समाज का एक सूत्र में बँधना श्रेयस्कर रहा। शिवावतार गुरु श्री गोरखनाथ जी महाराज के चरणों में शत–शत नमन।

जाति न पूछो साधु की -

डॉ. प्रदीप कुमार राव

जाति व्यवस्था भारत के सामाजिक जीवन का अभिन्न हिस्सा है। कर्माधारित वर्णव्यवस्था से जन्माधारित जाति व्यवस्था की विकास–यात्रा का इतिहास या यों कहें कि यह कहानी अत्यन्त रोचक है। स्वहित को समाजहित से महत्त्वपूर्ण मान लेने के मानव स्वभाव का यह सर्वाधिक प्रमुख उदाहरण है। अपने एवं अपने सगे–सम्बन्धियों के लिए किसी सामाजिक–व्यवस्था का कैसे विद्रुपीकरण होता है, यह समझने के लिए भारतीय ऋषियों द्वारा प्रतिष्ठित अत्यन्त वैज्ञानिक एवं सुविचारित वर्ण व्यवस्था से जाति व्यवस्था के जन्म एवं विकास को देखा–समझा जा सकता है। राजा अपने योग्य–अयोग्य पुत्र को राजा बना सके, पुरोहित एवं पुजारी अपने योग्य–अयोग्य पुत्र को पुरोहित एवं पुजारी बना सके, इस स्वहित केन्द्रित दृष्टि से प्रेरित राजा–पुरोहित (क्षत्रिय–ब्राह्मण) समूह ने वर्ण व्यवस्था को धीरे–धीरे जाति व्यवस्था में परिवर्तित किया। इस व्यवस्था के विरूद्ध समाज खड़ा न हो, इसलिए इस व्यवस्था पर धर्म का आवरण चढ़ाया, ईश्वर को इसका कर्ता बना दिया। अपना पाप ईश्वर पर थोप दिया। वैदिक ग्रन्थों, महाकाव्यों, स्मृतियों, पुराणों में वर्णव्यवस्था को ईश्वर द्वारा निर्मित घोषित किया। क्योंकि भारतीय ऋषियों द्वारा स्थापित कर्माधारित–वर्ण व्यवस्था को जन्माधारित जाति व्यवस्था में बदल कर ही राजाओं तथा पुरोहितों द्वारा अपने पुत्र–पुत्रियों, सगे–सम्बन्धियों को राजा–पुरोहित बनाए रखा जा सकता था।

यद्यपि कि भारतीय जाति व्यवस्था ने भारतीय समाज को संगठित रखने, जातीय पंचायतो के माध्यम से अनेक स्वस्थ परम्पराओं को जन्म देने तथा विकसित करने, सामूहिक जीवन पद्धति एवं जीवन मूल्य विकसित करने में बहुत ही महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई तथापि जातीय–श्रेष्ठतावाद, ऊँच–नीच और आगे चलकर छूत–अछूत की कुप्रवृत्तियों का जाति–व्यवस्था शिकार हुई। जाति–व्यवस्था इन्हीं रूढ़िगत कुप्रवृत्तियों के कारण भारतीय समाज का जितना

प्राचार्य, महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर

भला नहीं कर पायी उससे अधिक भारतीय समाज एवं भारत का नुकसान किया। वर्ण–व्यवस्था से परिवर्तित जाति व्यवस्था यदि जन्माधारित होने तक रुकी रहती और ऊँच–नीच तथा छुआ–छूत से मुक्त ज्ञान, कर्म और भक्ति को प्रतिष्ठा देती तो भी आज वह भारतीय समाज की अद्वितीय पहचान होती, दुनिया के सामने सामाजिक वर्गीकरण का अद्वितीय प्रतिमान होती। एक अद्‌भुत, अद्वितीय सामाजिक–व्यवस्था ऊँच–नीच तथा छुआ–छूत जैसी अमानवीय कुरीतियों की भेंट चढ़ गई। जातीय श्रेष्ठतावाद के गर्भ से उत्पन्न अस्पृश्यता अभिशप्त जाति व्यवस्था की जातिवादी प्रवृत्ति आज भी भारत एवं भारतीय समाज के लिए चुनौती बनी हुयी है।

भारतीय समाज की जातिवादी प्रवृत्ति से दुर्भाग्यवश भारतीय समाज का कोई समूह बच नहीं पाया। यहॉ तक कि अपने माता–पिता, परिवार, सगे–सम्बन्धियों से सम्पूर्ण नाता तोड़कर अपना पिण्डदान कर नया जन्म लेकर अपने–अपने गुरु, आराध्य की शरण में परमार्थ मार्ग के पथिक साधु–संन्यासी को भी इस जातिवादी प्रवृत्ति ने नहीं बख्शा। जाति–व्यवस्था की इस कुरीति श्रेष्ठतावादी विचार–दर्शन के खिलाफ समय–समय भारतीय ऋषियों ने न केवल आवाज बुलन्द की अपितु इसके समूलनाश का अभियान चलाया। बाल्मिकि एवं तुलसीदास की कथा के श्रीराम, महर्षि व्यास के श्रीकृष्ण ने अपने समय में इस कुरीति को अस्वीकार किया तथा इसके विरूद्ध समाज को जागृत किया। ऐतिहासिक युग में महात्मा बुद्ध ने भारतीय जाति–व्यवस्था की इस कुरीति के विरूद्ध सनातन संस्कृति के मूलतत्त्वो के आधार पर वैचारिक क्रान्ति का सूत्रपात किया।

महायोगी गोरखनाथ ने जाति–व्यवस्था में व्याप्त ऊँच–नीच, छुआ–छूत के विरूद्ध वैचारिक क्रान्ति आरम्भ की और भारत की सनातन–संस्कृति को पुनर्प्रष्ठित करने का जनाभियान चलाया। परिणाम स्वरूप अछूत कही जाने वाली एवं उपेक्षित जातियों के लोग बड़ी संख्या में नाथपंथ में दीक्षित हुए। इन्हीं अछूत और वंचित समाज से निकले नाथपंथी योगियों के बल पर नाथपंथ ने उस सामाजिक–सांस्कृतिक क्रान्ति को जन्म दिया जिसके गर्भ से मध्यकालीन भक्ति आन्दोलन ने जन्म लिया। कबीर, सूर, तुलसी, रामानन्द, रैदास, रहीम, रसखान, मीरा, जैसे भक्त कवियों ने अपने–अपने आराध्य की उपासना के साथ–साथ भारतीय समाज में व्याप्त ऊँच–नीच, छुआ–छूत, तथा पाखण्डी पूजा–विधानों पर कठोर प्रहार किया। इस वैचारिक अभियान की तेज–धार ने समकालीन पाखण्डियों–जातिवादियों को हासिए पर डाल दिया। कबीर को ऊँच–नीच आधारित जातिवादी विचार–दर्शन के पक्षपाती जातिवादी पण्डितो को ललकारते हुए कहना पड़ा कि– जाति न पूछो साधू की, पूछ लिजिए ज्ञान। कबीर यहीं नहीं रूके, उन्होने अछूत–नीच कहे जाने वाली जातियों के स्वाभिमान को जगाते हुए ताल ठोककर कहा तू बांभन, मैं कासी के जोलाहा। संत रैदास ने सुर में सुर मिलाया और अपनी जाति को गर्व के साथ घोषित करते हुए कहा– कह रैदास चमारा। यह स्थितियॉ यह बताने के लिए पर्याप्त हैं कि कबीर एवं संत रैदास, जैसे सन्त महात्मा भी भारतीय समाज की जातिवादी

मानसिकता के शिकार हो रहे थे, उन्हें भी जाति के नाम पर अपमानित किया जा रहा था और उनके लोक कल्याणकारी प्रयत्नों पर प्रश्न खड़े किए जा रहे थे। उनके प्रयत्नों को खारिज करने के कुत्सित प्रयास हो रहे थे। कहा जा सकता है कि वह पूर्व मध्ययुगीन एव मध्ययुगीन समाज था। भारत का पुरातनपंथी समाज था।

आज इक्कीसवी सदी में जब मानव गाड–पार्टिकल खोज लेने के अथक–प्रयत्न में लगा हुआ है, सूर्य, चन्द्रमा, मंगल सहित अनेक ग्रह नक्षत्रों के पृष्ठ खोल चुका है, मनुष्य की कौन कहे सभी प्राणियों के डी.एन.ए. खोज चुका है, परखनली शिशु पैदा किए जा रहे है, तब भी दूसरी तरफ उपासना के पाखण्ड, जातिवादी श्रेष्ठतावाद का दंभ, भगवान के दरबार में भी भेद–भाव की मध्ययुगीन प्रवृत्तियॉ हमारा पीछा नहीं छोड़ रही हैं। समाप्त प्राय हो चुके जाति आधारित ऊँच–नीच, छुआ–छूत को राजनीतिक स्वार्थ के लिए बुद्धिजीवियों द्वारा वैचारिक रूप से पुनर्जीवित करने के प्रयत्न जारी है। दलित–विमर्श के नाम पर जातिवादी मानसिकता की वही ऊँच–नीच की कुप्रवृत्तियों को बनाए रखने के प्रयत्न हो रहे है। जातिवादी संगठनों द्वारा जातीय अस्मिता के नाम पर अपने एवं अपने पुत्र–पुत्रियों, सगे–सम्बन्धियों के लाभ के लिए, राजनीतिक दलो के हित के लिए सामाजिक विखण्डन की वही मध्य युगीन प्रवृत्तियॉ आज भी अनेक बदले रूपों में प्रभावी है।

प्रकृति पर विजय प्राप्ति का स्वप्न देखने वाला आज का अत्याधुनिक तथाकथित प्रगतिशील समाज भी जो लोकतन्त्र का पक्षधर है, राष्ट्रद्रोह तक जाने की अभिव्यक्ति की आजादी पर फिदा है, दलित विमर्श के पीछे पागल है, नारी की समानता, उसकी सुरक्षा और सम्मान के लिए मोमबत्तियॉ जला–जलाकर कलुषित मन को सात्त्विक करने में दिन–रात एक किए हुए है, वह मीडिया जो पत्रकारिता को लोकतन्त्र का चौथा स्तम्भ मानने और हर गलत बात पर हस्तक्षेप करने का प्रयत्न करना अपना दायित्त्व समझता है, जाति विहीन सामाजिक समरस समाज का पैरोकार है, वे भी जातिवादी मानसिकता से उबर नहीं पा रहे हैं। वह जन्म से लेकर नाथपंथ में दीक्षा के पूर्व तक के जीवन से पूर्णतः नाता तोड़कर एक योगी रूप में संन्यासी का जीवन जीने वाले श्रीगोरक्षपीठ के पीठाधीश्वर महन्त योगी आदित्यनाथ जी महाराज की जाति पूछता है, उनका आकलन करते समय उनको जन्म देने वाले परिवार की जाति को एक अति महत्त्वपूर्ण आधार मानता है। बिना तथ्य जाने 26 दिसम्बर 2018 ई. को एक प्रतिष्ठित पत्रकार द्वारा ट्यूट किया गया–'गोरखपुर के गोरखनाथ धाम समेत भारत के कुछ बड़े मन्दिरों में दलितों के प्रवेश पर मनाही, देखिए पुजारी कैसे करते है अनुसुचित जाति समुदाय से बुरा बर्ताव, वोटों के लिए लुभाना और असल में लताड़ना आँखे खोलने वाला सच देखना ना भूलिए आज शाम 7:00 बजे @ India Today और रात 09:00 बजे @ aajtak पर। गोरखपुर के 'गोरखनाथ धाम' (श्री गोरखनाथ मन्दिर) के ही महन्त हैं– योगी आदित्यनाथ जी महाराज।

यह ट्यूट पहला नही था। यह जातिवादी दृष्टि से महन्त योगी आदित्यनाथ जी के आकलन का एक अद्यतन उदाहरण है। भारतीय राजनीति के पण्डितों द्वारा राजनीति में महन्त योगी आदित्यनाथ जी महाराज का आकलन जाति आधार पर करते हुए हम कई विद्वानों को प्रतिष्ठित चैनलों पर सामान्यतः सुनते हैं। देशभर में अपने को पढ़ा–लिखा और प्रगतिशील तथा ज्ञानी समझने वाले अधिकांश लोग हमें महन्त योगी आदित्यनाथ जी महाराज के राजनीतिक–सामाजिक अस्तित्व पर जातिवादी दृष्टि से मूल्यांकन करते हुए सुझाव देते हैं। इन अधिकांश विद्वानों का सुझाव होता है कि योगी जी यदि 'अमुक' को या उन्हे ही इस पद पर नियुक्त कर दे, 'अमुक' को या 'उन्हें ही' सांसद एवं विधायक हेतु टिकट देने की पैरवी कर दें, तो उन पर 'अमुक' जाति के विरोध का आरोप खारिज होगा। यह कहने वाला विद्वान उसी 'अमुक' जाति का होता है। वह यह निष्कर्ष देता हुआ कहता है कि 'योगी जी' पर 'अमुक' जाति के विरोधी हाने का आरोप है। उत्तर प्रदेश शासन में अधिकारियों की नियुक्ति–स्थानान्तरण इत्यादि में जातिवादी समीक्षा और सूची सोशल मीडिया पर सामान्य है। माना कि शासन प्रशासन में यह अवधारणा पूर्व की सरकारों, मुख्यमंत्रियों के जातिवादी निर्णयों से उपजी होगी, किन्तु शासन–प्रशासन के अतिरिक्त भी महन्त योगी आदित्यनाथ जी महाराज का मूल्यांकन करने वाले बड़ी संख्या में लोग 'जाति' को याद रखना नहीं भूलते। यह अलग बात है कि यह समस्या योगीजी की नही मूल्यांकन करने वाले के स्वयं की जातिवादी मानसिकता की है। ऐसे में ही कबीर बार–बार याद आते है। और बार–बार मन यह कह उठता है– जाति न पूछो साध J की।

गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त योगी आदित्यनाथ जी महाराज के सम्बन्ध में भी कबीर का उद्घोष चरितार्थ है। योगी आदित्यनाथ जी महाराज नाथपंथ में दीक्षित 'योगी' है और भारत की सनातन परम्परा के अनुसार संन्यासी। उनका जीवन एक खुली किताब है। रात्रि के 11–12 बजे तक उनसे मिलने–जुलने वाले और अब तो उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री के सचिवालय के लोग भी जानते हैं कि वे 12 बजे रात्रि के बाद ही सोते हैं। प्रतिदिन 12 बजे रात्रि को सोकर साढ़े तीन बजे जगकर योग–पूजा–पाठ कर प्रातः पॉच बजे से ही पुनः रात्रि 11–12 बजे तक लोक–कल्याण में पूरी शिद्दत से लगने का कार्य नाथपंथ का कोई तपस्वी योगी ही कर सकता है। यह दैविक शक्ति है जो जाति–पाति से उपर, मोह–माया से विरत ब्रह्मचारी को ही प्राप्त हो सकती है।

गोरक्षपीठाधिपति महन्त योगी आदित्यनाथ जी महाराज को किसी जाति का एवं किसी जाति के लिए कार्य करने वाला कहने वालों में कुछ तो जानते हैं कि योगी आदित्यनाथ जी महाराज एक संन्यासी योगी है। वे नाथपंथ के ऐसे योगी है जहॉ जाति के आधार पर ऊँच–नीच का कोई भेद नही होता। ऐसे लोग जान–बुझकर स्वयं की कुत्सित मानसिकता एवं उन्हें बदनाम करने के लिए आरोपित करते हैं। जबकि एक बड़ी संख्या ऐसी है जो वर्तमान परिवेश, स्वाभाविक युगावधारणा एवं महन्त जी महाराज को समझ न पाने के कारण उनके बारे में अपनी

अवधारणा बना लेते हैं। दोनों प्रकार के लोगो की जानकारी और समझ के लिए लोक–कल्याण को समर्पित इस नाथपंथ के योगी, नाथपंथ और श्री गोरक्षपीठ की यशस्वी परम्परा के तथ्य एवं सच सामने आने ही चाहिए। श्री गोरक्षपीठ की यशस्वी परम्परा और यहॉ के पीठाधीश्वर को समझने के लिए नाथपंथ को जानना आवश्यक होगा।

महायोगी गोरखनाथ द्वारा प्रवर्तित नाथपंथ के नाथसिद्धों, नवनाथों और चौरासी सिद्धों का आविर्भाव तथा विचारकाल सामान्यः नवीं शताब्दी से लेकर बारहवीं शताब्दी तक माना जाता है। यह युग भारतीय धर्म–साधना में उथल–पुथल का युग था। सामाजिक–राजनीतिक परिवेश में भारत की सनातन संस्कृति के प्रतिकूल अनेक विकृतियाँ एवं चुनौतियाँ उभर चुकी थीं। इस्लाम एक पांथिक शक्ति के साथ–साथ आक्रमणकारी राजनीतिक ताकत के रूप में भारत में प्रवेश कर रहा था। भारत की धार्मिक–आध्यात्मिक जीवन में तन्त्र–मंत्र, टोने–टोटके प्रभावी होते जा रहे थे। बौद्ध साधना पर इसका व्यापक प्रभाव पड़ चुका था। बौद्ध, शाक्त, शैव और वैष्णव सम्प्रदायों के बीच आपसी मतभेद एवं कटुता बढ़ती जा रही थी।

महात्मा बुद्ध ने जिस वैचारिक अधिष्ठान पर बौद्ध मत का प्रतिपादन किया, लगभग हजार वर्ष बीतते–बीतते वह वैचारिक आन्दोलन भी उन्हीं रूढ़ियों, कुरीतियों, पाखण्डों का शिकार हो चुका था जिनके गर्भ से उसका जन्म हुआ था। आचार–विचार की शुद्धता तार–तार हो रही थी। वामाचार, तन्त्रवाद एवं अनाचार का शिकार समाज तामसी–विलासी–कामुकतापूर्ण कलुषित जीवन का समर्थक दिखने लगा। परिणामतः धर्म से सामान्य–जन का विश्वास डिगने लगा। सामाजिक ह्रास एवं पतन की परिस्थितियों में वैदिक मत की विविध धाराएँ अपने पुनर्प्रतिष्ठा के प्रयत्न में सफल होने का प्रयत्न कर रही थीं। विशेष कर वैष्णव–शैव मत अपने नए कलेवर, वैचारिक शुद्धता और आत्मा–परमात्मा के सम्बन्धों पर विविध दार्शनिक व्याख्याओं के साथ वैदिक संस्कृति को लोकप्रिय बनाने में प्रयत्नरत थे। किन्तु इस प्रयत्न में भारतीय समाज में रूढ़िगत स्वरूप में विकसित होने वाली जाति–व्यवस्था सबसे बड़ी बाधा थी।

बौद्ध युग के बाद यह युग एक बार फिर सामाजिक क्रान्ति की दहलीज पर खड़ा था। भारत के धार्मिक–आध्यात्मिक जीवन में उथल–पुथल के साथ–साथ जाति व्यवस्था में ऊँच–नीच एवं छुआ–छूत से आक्रान्त समाज में एकरसता की डोर कमजोर होती जा रही थी। समाज विखण्डन का शिकार हो रहा था।

उल्लेखनीय है कि पूर्व मध्ययुग अर्थात् छठवीं शताब्दी ईस्वी से 12वी शताब्दी ईस्वी के कालखण्ड में भारत में कई इस्लामी आक्रमण हुए। यह युग भारत के तेजी से बदलते सामाजिक परिवेश का युग है। इसी युग में भारतीय समाज में धार्मिक एवं उपासना पद्धतियों के नाम पर पाखण्ड एवं आडम्बर बढ़े तो दूसरी तरफ जातियों में उपजातियों का तेजी से निर्माण हुआ। जाति व्यवस्था ऊँच–नीच एवं छुआ–छूत की विकृति की शिकार हुयी। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य,

शूद्र वर्ण जन्माधारित जाति में रूढ़ हो ही रहे थे, इनमें भी विखण्डन एवं विभाजन की प्रवृत्ति हावी थी। अनेक विदेशी जातियों के भारतीय समाज में समन्वीकरण ने भी जातीय विखण्डन एवं उपजातियों के निर्माण में भूमिका निभाई। इस युग के जाति–व्यवस्था पर अलबरूनी के किताबुलहिन्द एवं चन्दबरदाई के पृथ्वीराजरासों में विस्तृत विवरण मिलता है।

यह युग जातीय विखण्डन के कारण जातीय अस्तित्व एवं शुद्धता को लेकर काफी संवेदनशील युग है। ब्राह्मण अपनी सांस्कारिक शुद्धता, रूढ़िवादिता और धर्मान्धता को अपनी विशिष्टता एवं श्रेष्ठता का आधार मानते थे तो क्षत्रिय अपने शौर्य–पराक्रम की श्रेष्ठता के अहंकार में डूबे थे। वैश्यों के बीच से कायस्थ जाति का उद्‌भव हो चुका था और वे शासन–प्रशासन में अपनी लिखा–पढ़ी के आधार पर जगह बना चुके थे। जातीय श्रेष्ठतावाद से भारतीय समाज में ऊँच–नीच की एक गहरी खाई बनती जा रही थी। ब्राह्मण–क्षत्रिय पौरोहित्य एवं राज्य के बल पर अपनी श्रेष्ठता पूरे समाज पर जबरन थोप भी रहे थे। समाज में इनके द्वारा घोषित शूद्र के अन्तर्गत आने वाली वे जातियाँ जिनके कौशल एवं परिश्रम पर समाज जी–खा रहा था वे नीच और अछूत घोषित की जा रही थीं।

देबल एवं लक्ष्मीधर ने ब्राह्मणों की अनेक उपजातियों का उल्लेख किया है। अत्रिसृमति तथा मिनतकसार ने ब्राह्मणों का दस श्रेणियों– देवा, मुनि, हिज, राज्य, वैश्य, शुद्र, मरजरा, पशु, म्लेच्छ तथा चाण्डाल– का उल्लेख किया है। क्षेत्रीय आधार पर भी ब्राह्मणों की अनेक उपजातियाँ, यथा बंगाल मे वन्ध्यधतिया, चम्पहटिया, इकिया, बरेन्द्र, वैदिक का उल्लेख है। द्राविड़ और उत्कल से आए दक्षिणत ब्राह्मण कहलाए। बिहार में मैथली, सकद्वीपी, गवावाल, मग, गौड़; उत्तर प्रदेश में कन्नौजिया, सरयूपारीय तथा कश्मीर के कश्मीरी ब्राह्मण कहे जाने लगे थे। स्पष्ट है कि जातियों के अन्दर भी ऊँच–नीच का भाव प्रबल होने लगा था।

क्षत्रियों की भी उत्तर भारत में ही 36 जातियों का उल्लेख मिलने लगता है। अलबरूनी लिखता है समाज में ब्राह्मणों के बाद क्षत्रियों का दूसरा स्थान था। इब्नखुदवर्दा के अनुसार क्षत्रिय दो वर्ग सवकुफरिया तथा कहरिया में विभाजित थे। क्षत्रियों में भी ऊँच–नीच की भावना घर कर गयी थी। इसीप्रकार वैश्यों एवं शूद्रों में भी अनेक जातियों एवं उपजातियों का विकास हो चुका था। जैन पुस्तक प्रशस्ति संग्रह के अनुसार गुजरात तथा राजस्थान में ही श्रीमाली, प्रागवत, उपकेश, घरकटा, पल्लखाल, मोधा, गूजर, नागर, दिसवाल, औद, दुम्बाल वैश्यों की प्रमुख जातियाँ थी। अलबरूनी की माने तो ग्यारहवीं शताब्दी तक वैश्यों और शूद्रों में कोई अन्तर नहीं रह गया था।

अभिदान चिन्तामणि, देसीनमामला तथा विजयन्ती जैसे ग्रन्थों में शूद्र कहे जाने वाले मजदूर, लोहार, पत्थर काटने वाले, शंख बनाने वाले, कुम्हार, जुलाहा, बढई, चर्मकार, तेली, ईंट बनाने वाले, स्वर्णकार, जौहरी, ताँबे का काम करने वाले, चित्रकार, बोझा ढोने वाले, भिश्ती,

दर्जी, धोबी, कलाल, मदिरा बेचने वाले, माली, घूम–घूम कर वस्त्रों के विक्रेता, शिकारी, चाण्डाल, नर्तक, अभिनेता इत्यादि का उल्लेख मिलता है। वैजयन्ती के अनुसार शूद्रों की 64 जातियाँ थी।

उपर्युक्त जातियों, उपजातियों और उनके बीच ऊँच–नीच प्रबल होते भाव के बीच भारतीय समाज में बिखण्डनकारी प्रवृत्ति बढ़ती जा रही थी। इससे समाज और राष्ट्र–निरन्तर कमजोर हो रहा था। वस्तुतः कर्म आधारित वर्ण व्यवस्था जन्माधारित जाति–व्यवस्था का रूप ग्रहण कर चुकी थी। जाति–व्यवस्था में ऊँच–नीच के साथ–साथ अस्पृश्यता धीरे–धीरे बढ़ती जा रही थी। एक तरफ बौद्धमत का पतन और दूसरी तरफ जाति–व्यवस्था में ऊँच–नीच, छुआ–छूत जैसी विकृतियों से पीड़ित भारतीय समाज एक ऐसे धार्मिक–आध्यात्मिक नायक को खोज रहा था जो एक बार फिर सहज जीवन का ऐसा मार्ग दिखाए जो उसे लौकिक जीवनानन्द के साथ पारलौकिक जीवन का मार्ग भी प्रशस्त करे। इन्हीं विषम परिस्थितियों में महायोगी गोरखनाथ का अभ्युदय हुआ। नाथपंथ के प्रवर्तक महायोगी गोरखनाथ जाति व्यवस्था के ऊँच–नीच एवं छुआ–छूत जैसी कुरीतियों के विरूद्ध तनकर खड़े हुए। उन्होंने घोषित किया कि ये कुरीतियाँ शास्त्र–सम्मत नहीं है। उन्होंने सभी के लिए योग का एक ऐसा सहज मार्ग प्रतिपादित किया, जो बिना भेद–भाव के ईश्वर का साक्षात्कार करा सकता था और जिस पथ पर चलकर सभी मो़क्ष के अधिकारी थे। नाथपंथ ने समरस समाज की स्थापना में धार्मिक–आध्यात्मिक दर्शन का न केवल प्रतिपादन किया अपितु सभी जातियों के लिए धर्म–अध्यात्म–योग को सुलभ बना दिया। गोरखनाथ के इसी अभियान का परिणाम था कि भक्ति आन्दोलन में नीच कही जाने वाली जातियों के भक्त ताल ठोककर आगे आए। नाथपंथ में भी नीच कही जाने वाली जातियों के लोग बड़ी संख्या में दीक्षित हुए। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने हिन्दी साहित्य के इतिहास में लिखा है कि 84 सिद्धों में बहुत से मछुए, चमार, धोबी, डोम, कहार, लकड़हारे, दर्जी तथा और बहुत से शूद्र कहे जाने वाले लोग थे। यहाँ तक कि बड़ी संख्या में इस्लाम के अनुयायी भी नाथपंथ में दीक्षित हुए। नाथपंथ के प्रभाव में ही सूफी मत विकसित हुआ। महायोगी गोरक्षनाथ एवं नाथपंथी योगियों ने भारतीय जाति व्यवस्था में कोढ़ की तरह व्याप्त जाति व्यवस्था के ऊँच–नीच, छुआ–छूत के विरूद्ध अभियान चलाया और भारत की सामाजिक–राष्ट्रीय चेतना में एकता के सूत्र बचाए रखने का अहर्निश प्रयन्त किया।

नवीं शताब्दी इस्वी से लेकर अद्यतन नाथपंथ के योगी, सिद्ध, सन्त एवं संन्यासी अपनी पांथिक परम्परा के निर्वहन के साथ–साथ भारत के सामाजिक समरसता एवं राष्ट्रीय एकता –अखण्डता के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहे तथा जन–जागरण करते रहे। यहॉ तक कि आवश्यकता पड़ने पर सामाजिक–राष्ट्रीय हित पर अपनी पांथिक परम्पराओं का भी त्याग किया। नवीं शताब्दी ईस्वी से लेकर अब तक भारत के सामाजिक–राष्ट्रीय जीवन के विकास एवं पाखण्ड, ऊँच–नीच तथा छुआ–छूत के विरूद्ध अनवरत जनजागरण का अभियान नाथपंथ के योगियों ने चलाया। भारत के सामाजिक इतिहास में इतने दीर्घकाल तक अनवरत एवं

अद्यतन छुआ–छूत, ऊँच–नीच जैसे सामाजिक रूढ़ियों–पाखण्डों के विरूद्ध नाथपंथ के योगियो के अलावा यदि किसी को जनाभियान चलाने का गौरव प्राप्त है तो वह एक मात्र कबीर पंथी साधुओं को है। यहॉ यह उल्लेखनीय है कि आजादी के बाद श्री गोरक्षपीठ के अतिरिक्त देश का शायद ही कोई और धर्म केन्द्र हैं जिसने जाति आधारित ऊँच–नीच एवं छुआ–छूत के विरूद्ध खुलकर जनाभियान चलाता रहा है। आज भी यह अभियान इस पीठ के सामाजिक–धार्मिक कार्यो की प्रथम वरीयता है। गोरखपुर स्थित श्रीगोरखनाथ मन्दिर एवं श्रीगोरक्षपीठ नाथपंथ का प्रमुख केन्द्र है।

बीसवी शताब्दी के आरम्भ होते ही योगिराज बाबा गम्भीरनाथ की देख–रेख में श्रीगोरक्षपीठ ने स्वतन्त्रता आन्दोलन में अपनी सक्रिय भूमिका को बनाए हुए सामाजिक–राजनीतिक शुद्धिकरण के युगानुकूल अभियान पर ध्यान केन्द्रित किया। योगिराज बाबा गम्भीरनाथ जी एक सिद्ध योगी थे। नाथपंथ के इस महायोगी को सृष्टि के लय–प्रलय की क्षमता प्राप्त थी। परकाया प्रवेश, धरती पर कहीं भी यौगिक शक्ति से क्षण भर में उपस्थित होने, मृत्यु को रोक देने की अविश्वसनीय शक्ति के धनी इसी महायोगी के संरक्षण में एवं उन्ही की योजनानुसार गोरक्षपीठ के भावी पीठाधीश्वर महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज का व्यक्तित्त्व गढ़ा गया। महात्मा गॉधी की गोरखपुर में सभा कराने, उनके आहवाहन पर पढ़ाई छोड़कर स्वतन्त्रता आन्दोलन में कूदने वाले महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज ने इतिहास प्रसिद्ध चौरी–चौरा काण्ड का नेतृत्त्व किया था। उन्हे फॉसी के फन्दे से महामना मदन–मोहन मालवीय जी की योग्य पैरवी ने बचाया। 1932 ई. में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की स्थापना कर श्री गोरक्षपीठ ने शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में समाज के पिछड़े–गरीब जनता की सेवा का व्रत लिया। कहा जाता है कि योगिराज बाबा गम्भीरनाथ जी की प्रेरणा एवं उनसे प्राप्त निर्देश के अनुरूप में महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज के माध्य से श्री गोरक्षपीठ ने अपनी भूमिका विस्तारित की। इस सिद्ध योगपीठ ने जीवन के सभी क्षेत्रो यथा सामाजिक–सांस्कृतिक और राजनीतिक क्षेत्र में युगानुकुल भारतीय संस्कृति की जीवन–धारा के मूल तत्त्व प्रतिष्ठित करने के अपने विस्तारित भूमिका की नींव रखी। महन्त दिग्विजयनाथ जी इस अभियान के सूत्रधार बने।

1969 ई. महन्त दिग्विजयनाथ जी ब्रह्मलीन हुए। 1920 से 1969 ई. तक देश का कोई कोई ऐसी प्रमुख सामाजिक–राष्ट्रीय आन्दोलन एवं विषय नहीं है, जिसमें महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज ने अपनी सक्रिय भूमिका न निभाई हो। उदाहरण के लिए शिक्षा और सामाजिक समरसता, भारत–नेपाल सम्बन्ध, श्रीराम जन्मभूमि, गो–हत्या बन्दी आन्दोलन और अन्ततः राजनीतिक शुद्धिकरण में महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज की भूमिका जग–जाहिर है।

महन्त दिग्विजयनाथ जी के ब्रह्मलीन होने पर उनके उत्तराधिकारी पीठाधिपति महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने नाथपंथ की यशस्वी परम्परा और महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज

द्वारा प्रारम्भ किए गए सामाजिक–सांस्कृतिक–राष्ट्रीय अभियान को आगे बढ़ाया। इस धर्मपीठ ने मान–अपमान की चिन्ता किए बगैर लोक–कल्याण के लिए राजनीति के दलदल में प्रवेश करने से भी परहेज नहीं किया।

गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज का पूरा जीवन ही सामाजिक–समरता हेतु समर्पित था। उन्होंने हिन्दू समाज की एकता के लिए तथा भारत की सनातन संस्कृति की पुनर्प्रतिष्ठा हेतु अपनी सभी पांथिक सीमाएँ खोल दी। उन्होंने देशभर के धर्माचार्यों को पांथिक सीमाओं से बाहर निकलकर भारतीय राष्ट्रीयता हिन्दुत्त्व के लिए कार्य करने का न केवल आहवान किया अपितु अपने जीवन को स्वयं आदर्श रूप में प्रस्तुत कर दिया। 1980 ई0 में मीनाक्षीपुरम में हुए धर्मपरिवर्तन से आहत होकर उन्होंने चुनावी राजनीति से संन्यास लेकर भारत के गावों के उन गली–मुहल्लों में चल पड़े जहाँ नीच और अछूत कहे जाने वाला वंचित समाज रह रहा था।

गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने साधु–संन्यासियों के सामने वह प्रतिमान खड़ा किया जो कभी महात्मा बुद्ध, महायोगी गोरखनाथ, कबीर, संत रविदास जैसे महापुरूषों ने प्रस्तुत किया था। जाति–पाति आधारित ऊँच–नीच एवं छुआ–छूत विरोधी नाथपंथ के पारम्परिक वैचारिक अधिष्ठान को एक बार फिर मुखर स्वर मिला। महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज द्वारा ऊँच–नीच एंव छुआ–छूत विरोधी अभियान के कुछ उदाहरण ऐसे हैं जो आजाद भारत के सामाजिक जीवन के इतिहास में मील के पत्थर हैं। एक – जब कि नब्बे के दशक में बिहार में जातिवादी राजनीति अपने उत्कर्ष पर थी, सत्ता पर काबिज रहने के लिए जातिवाद की विषवेलि को पूर्णतः खाद–पानी दिया जा रहा था, बिहार एक प्रकार से जातिवादी कुरीतियों की आग में जल रहा था, महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने इस जातिवादी राजनीति के सीने पर चढ़कर बिहार की राजधानी पटना में स्थित महावीर मन्दिर में सूर्यवंशी लाल ऊर्फ फलाहारी बाबा (हरिजन) को नाथपंथ में दीक्षित कर पुजारी घोषित किया। दूसरा – श्रीराम जन्मभूमि पर बनने वाले भव्यतम मन्दिर का शिलान्यास करने जब देशभर के लाखों सन्त–महात्मा, धर्माचार्य एवं धर्मप्रिय भक्त उपस्थित थे, पहला ईंट अछूत कहे जाने वाले भक्त के हाथों से रखवाकर महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने दुनिया को बताया कि हिन्दू समाज में छुआ–छूत एवं ऊँच–नीच न तो शास्त्र–सम्मत है और न ही धर्मसम्मत। यह एक विकृति है, रूढ़ि है। तीसरा उदाहरण 1994 में महन्त जी महाराज ने प्रस्तुत किया। 18 मार्च 1994 ई. को महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने अनेक शैव–वैष्णव प्रमुख सन्त महात्माओं को साथ लेकर काशी के डोमराजा सुजीत चौधरी के घर पर जाकर उनकी अपनी माँ के हाथों भोजन कर अस्पृश्यता की धारण पर जोरदार चोट की। ये कुछ उदाहरण हैं श्री गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज के जो स्पष्ट करते हैं कि जाति आधारित ऊँच–नीच एंव छुआ–छूत के खिलाफ श्री गोरक्षपीठ ने न केवल जन–जागरण किया, अपितु पीठाधिपतियों ने स्वयं का उदाहरण प्रस्तुत कर समाज को

दिशा दी।

महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज के साथ उनके शिष्य एवं उत्तराधिकारी रूप में 1994 ई. से नाथपंथ एवं श्री गोरक्षपीठ की यशस्वी परम्परा के वाहक योगी आदित्यनाथ जी महाराज 1914 ई. में महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज के ब्रह्मलीन होने पर गोरक्षपीठाधीश्वर बनें। अपने वेरण्य गुरुदेव के साथ सामाजिक समरसता की प्रतिष्ठा हेतु जातिवाद के विरूद्ध ऊँच–नीच एवं छुआ–छूत के विरूद्ध जनाभियान चलाने वाले इस युवा योगी ने नाथपंथ की जातीय श्रेष्ठतावाद के विरूद्ध घोषित नाथपंथ के वैचारिक अधिष्ठान को और मजबूती प्रदान की तथा 'हिन्दुत्व ही राष्ट्रीयता है' के यंत्र का उद्घोष किया। महानगरों की दलित पीछड़ी जातियों की बस्तियों से लेकर गाँव के पिछड़े एवं दलितों की गलियों तक मे घूम–घूम कर, सहभोज आयोजित कर सबके साथ बैठकर उनके हाथों के बने जलपान एवं भोजन प्राप्त कर हिन्दू समाज की जातिवादी कुरीति पर साहस के साथ खुलकर प्रहार करने के कारण भी योगी आदित्यनाथ जी महाराज जननायक बनें। जिनके चरणों पर प्रतिदिन हजारों सर श्रद्धा से झुकते हैं वे बिना किसी भेद–भाव के दलितों–पिछड़ो का दुःख–दर्द बांटने में सुबह से शाम तक लगे होते हैं।

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री होने के पूर्व तक गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त योगी आदित्यनाथ जी महाराज जन–समस्याओं के समाधान हेतु जनान्दोलनो के लिए भी जाने जाते थे। अनेक जनान्दोलनों में उनके खिलाफ आपराधिक मुकदमें दर्ज हुए। एक बार वह जेल भी गए। इनमें सड़क–बिजली–पानी–स्वास्थ्य–शिक्षा जैसी बुनियादी सुविधाओं के लिए जनता का दर्द बांटने सड़क पर निकले इस योगी के आन्दोलनों को छोड़ दें तो, जो आन्दोलन किसी बालिका के बालात्कार, किसी की हत्या, किसी के घर उजाड़ने, किसी की भूमि पर कब्जा करने के विरूद्ध गोरक्षपीठाधिपति द्वारा किए गए, वे सभी दलितो–पिछड़ों–कमजारों के लिए ही थे। उन्होंने जेल की यात्रा पुलिस अभिरक्षा में आततायियों द्वारा राजकुमार अग्रहरि की हत्या किए जाने पर उनके परिवार को न्याय दिलाने के लिए की थी।

गोरक्षपीठाधीश्वरों का जीवन जनता के बीच बीतता है। उनका सबकुछ जग–जाहिर होता है। उनका जीवन खुली किताब की तरह होता है। कोई भी पढ़ सकता है। वे लोक–कल्याण को ही मोक्ष का साधन मानते हैं। वे अपनी मुक्ति से अधिक औरो की मुक्ति के लिए चिन्तित रहते हैं। महायोगी गोरक्षनाथ के अनुयायी नाथपंथ के योगी इस धरती पर अपना जन्म लोक–कल्याण के लिए ही हुआ मानते है। प्राणि मात्र को दुखों से मुक्ति दिलाना उनका साध्य है। लोक–कल्याण के मार्ग में बाधा बने पाखण्डों–रूढ़ियों–कुरीतियों का समूलनाश करना इन नाथपंथी योगियों की परम्परा का हिस्सा है, यह उनके मूल स्वभाव का अंग है, यह उनका डी.एन.ए. है। यही कारण है कि उनका विचार, उनका दर्शन उनके जीवन, व्यवहार एवं व्यवस्था में भी दिखता है।

श्री गोरक्षनाथ मन्दिर एवं उनके द्वारा संचालित सेवा केन्द्रो तथा संस्थाओं में कार्यरत सेवाभावी साधुओं, भक्तों, पदाधिकारियों एवं कर्मचारियों की जाति नहीं पूछी जाती। श्रीगोरखनाथ मन्दिर के पुजारियों, साधुओं, कर्मचारियों की जाति कोई नहीं जानता। किन्तु जब बार–बार साधु की जाति पूछी जाती हो, तो आइना दिखाने के लिए कबीर और रविदास की तरह ताल ठोककर जाति बताना भी आवश्यक लगने लगता है। जिन्हे जातिवादी व्यवस्था प्रिय है, जो जाति जानने के लिए बेताब रहते हैं, उन्हें जानना चाहिए कि श्री गोरखनाथ मन्दिर के वर्तमान प्रधान पुजारी पूज्य योगी कमलनाथ जी दलित परिवार में जन्मे हैं। आदिशक्ति माँ पाटेश्वरी मन्दिर देवी पाटन, तुलसीपुर (बलरामपुर) के महन्त मिथिलेशनाथ योगी भी दलित परिवार में पैदा हुए हैं। चौक बाजार (महाराजगंज) के श्री गोरखनाथ मन्दिर के मुख्य पुजारी फलाहारी बाबा भी दलित परिवार से आते हैं। हमारे महाविद्यालय के छात्रावास परिसर में स्थित बुढ़िया माई मन्दिर के मुख्य पुजारी श्री सन्तराज निषाद हैं। श्री गोरखनाथ मन्दिर के भण्डारे में भण्डारी दलित हैं। गोरखनाथ मन्दिर के मुंशी श्री यासीन अंसारी है। भूमि इत्यादि का कार्य श्री जाकिर अली देखते हैं। मन्दिर की समस्त प्रशासनिक व्यवस्था श्री द्वारिका तिवारी के हाथों में है। मन्दिर परिसर में संचालित गुरु श्रीगोरक्षनाथ संस्कृत उच्चतर माध्यमिक विद्यालय एवं गुरु श्रीगोरक्षनाथ विद्यापीठ में निःशुल्क पढ़ने वाले लगभग साढ़े पॉच सौ बच्चें ब्राह्मण हैं, जो मन्दिर परिसर में बने छात्रावास में निःशुल्क रहते है एवं उनका भोजन–वस्त्र इत्यादि सभी प्रकार की व्यवस्था श्री गोरखनाथ मन्दिर करता है। इसी प्रकार सभी संस्थाओं के संस्थाध्यक्ष, शिक्षक, चिकित्सक, कर्मचारी की जातिगत गणना कोई भी करके सन्तुष्ट हो सकता है।

श्री गोरक्षनाथ मन्दिर एवं श्री गोरक्षपीठ के महन्त एवं पीठाधीश्वर सभी के साथ बैठकर भोजन करते हैं। यहाँ तक कि अपने कर्मचारियों के साथ भी भोजनालय तक में कोई भेद भाव नहीं करते। मुझे नहीं पता कि हममे से कितने लोग अपने नीचे कार्य करने वाले कर्मचारी के साथ चौके पर बैठकर भोजन करते हैं। गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त योगी आदित्यनाथ जी महाराज का जातीय चश्मे से आकलन करने वालो को यह समीक्षा भी करनी चाहिए कि जो महन्त योगी आदित्यनाथ जी अपने सगे भाई–बहन के लिए सन्त परम्परा की लीक से हटकर आज तक कुछ नहीं किये, वे किसी जातीय बन्धन के शिकार कैसे हो सकते हैं। पारिवारिक सम्बन्धों की डोर जातीय सम्बन्धों की डोर से किसी भी कीमत पर बहुत अधिक मजबूत होती है। पारिवारिक सम्बन्धों की डोर तोड़ चुका संन्यासी जातीय डोर से बँधा होगा, मुझे लगता है कि यह सोचना या तो मूर्खता है या शरारत।

गोरखपुर में
मा. मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी
द्वारा किये गये
शिलान्यास कार्यों की
भौतिक प्रगति

जनपद गोरखपुर में मा. मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी द्वारा किये गये शिलान्यास कार्यों की भौतिक प्रगति विवरण दिनांकः 31.12.2018

क्र. सं.	कार्य का नाम	तहसील का नाम	कार्यदायी संस्था का नाम	कार्य की लागत (रु. लाख में)
1	2	3	4	5
1	भीटी चौराहा से जोन्हिया, कुडेरा, मुण्डा, भैसई, पटखौली, बखिरा सहजनवॉ मार्ग	सहजनवॉ	नि.ख.–2(प्र.प.) लो.नि.वि., गोरखपुर	333.39
2	चड़राव से नेवास सम्पर्क मार्ग	सहजनवॉ	नि.ख.–2(प्र.प.) लो.नि.वि., गोरखपुर	431.73
3	छपिया चौराहा से बाधागाढ़ा वाया मछलीपालन मार्ग	सदर/ सहजनवॉ	नि.ख.–2(प्र.प.) लो.नि.वि., गोरखपुर	358.19
4	जैतपुर पिपरौली मार्ग कालेसर चौराहा से बनौड़ा वाया खरैला अदिलापार तेनुआ कोल्हुई मार्ग	सहजनवॉ	नि.ख.–2(प्र.प.) लो.नि.वि., गोरखपुर	485.36
5	बेला से जदवापुर वाया लुहसी बसन्तपुर मार्ग	सदर	नि.ख.–2(प्र.प.) लो.नि.वि., गोरखपुर	481.92
6	खुटहना से डुमरैला वाया महिलवार आशापार मार्ग	खजनी	नि.ख.–2(प्र.प.) लो.नि.वि., गोरखपुर	453.24
	योगः– कुल शिलान्यासः– 6			**2543.83**
7	जनपद गोरखपुर में सर्किट हाऊस परिसर में एनेक्सी भवन के निर्माण कार्य	सदर	निर्माण खण्ड(भवन) लो.नि.वि.	1532.38
8	अवस्थापना विकास निधि के अन्तर्गत स्वीकृत टाउनहाल के सामने कलेक्ट्रेट परिसर गोरखपुर में आम जन के बैठने हेतु दक्षिणी–पश्चिमी प्रवेश द्वार के निकट पार्क, फब्बारा का निर्माण एवं पार्क में बैठने हेतु सी.सी. पैडेस्टल बेंच इत्यादि का कार्य।	सदर	निर्माण खण्ड(भवन) लो.नि.वि.	20.56
9	एन.एच.–29 के छूटे शहरी भाग (नौसढ़ चौराहें से बाघागाड़ा तक) के 04 लेने में चौड़ीकरण एवं सुदृढ़ीकरण का कार्य। (अ.जि.मार्ग)	सदर	निर्माण खण्ड(भवन) लो.नि.वि.	2493.60
10	जनपद गोरखपुर में (नन्दा नगर) अण्डर पास के निर्माण कार्य	सदर	निर्माण खण्ड(भवन) लो.नि.वि.	1674.26
11	राज्य सड़क निधि योजनान्तर्गत कुसुम्ही पिपराइच मार्ग के कि.मी. 1 से 9 तक का चौड़ीकरण एवं सुदृढ़ीकरण का कार्य	सदर	निर्माण खण्ड(भवन) लो.नि.वि.	1627.33

1	2	3	4	5
	(अ.जि.मार्ग)			
12	राज्य सड़क निधि योजनान्तर्गत पिपराइच बरगदही मार्ग का चौड़ीकरण एवं सुदष्ढ़ीकरण का कार्य (अ.जि.मार्ग)	सदर	निर्माण खण्ड(भवन) लो.नि.वि.	1857.33
13	केन्द्रीय सड़क निधि योजनान्तर्गत सोनबरसा पिपराइच मार्ग का चौड़ीकरण एवं सुदृढ़ीकरण का कार्य (अ.जि.मार्ग)	सदर	निर्माण खण्ड(भवन) लो.नि.वि.	1958.00
14	केन्द्रीय सड़क निधि योजनान्तर्गत भटहट माधी बॉसस्थान मार्ग के कि.मी. 1 से 11.50 तक मार्ग का चौड़ीकरण एवं सुदष्ढ़ीकरण का कार्य (अ.जि.मार्ग)	सदर	निर्माण खण्ड(भवन) लो.नि.वि.	2043.00
15	लोहरपुरवा ठाकुर नगर बी.एम.सी.टी. तक मार्ग का चौड़ीकरण एवं सुदृढ़ीकरण का कार्य (अ.जि.मार्ग)	कैम्पियरगंज	निर्माण खण्ड(भवन) लो.नि.वि.	1612.95
16	करमैनी बलुआ खडखडिया मार्ग का चौड़ीकरण एवं सुदृढ़ीकरण का कार्य (अ.जि.मार्ग)	सदर	निर्माण खण्ड(भवन) लो.नि.वि.	2963.00
17	राज्य सड़क निधि योजनान्तर्गत बलुघट्टा पासी टोला से हाथरवाल व पिडरिया होते हुये घुटली चौराहा तक	चौरीचौरा	निर्माण खण्ड(भवन) लो.नि.वि.	107.09
18	राज्य सड़क निधि योजनान्तर्गत विश्वनाथपुर कुशवाहा से भरतपुर ग्राम तक मार्ग का निर्माण कार्य	चौरीचौरा	निर्माण खण्ड(भवन) लो.नि.वि.	200.29
19	राज्य सड़क निधि योजनान्तर्गत भौवापार (जयपुर) से इब्राहिम सम्पर्क मार्ग	चौरीचौरा	निर्माण खण्ड(भवन) लो.नि.वि.	263.54
20	राज्य सड़क निधि योजनान्तर्गत छबैला पिच से रेहार टोला सम्पर्क माग	चौरीचौरा	निर्माण खण्ड(भवन) लो.नि.वि.	138.48
21	राज्य सड़क निधि योजनान्तर्गत दक्षिण टाला (छपरा मंसूर) से बैकुण्ठपुर पिच मार्ग तक सम्पर्क मार्ग	चौरीचौरा	निर्माण खण्ड(भवन) लो.नि.वि.	127.54
22	राज्य सड़क निधि योजनान्तर्गत फुटहवा इनार– सरदारनगर रेलवे क्रांसिग से केशवापट्टी सम्पर्क मार्ग	चौरीचौरा	निर्माण खण्ड(भवन) लो.नि.वि.	120.25
23	राज्य सड़क निधि योजनान्तर्गत धानी खडखड़िया विश्रामपुर चौराहा मरहठा मार्ग (अन्य जिला माग्र) का चौड़ीकरण एवं सुदृढ़ीकरण का कार्य	कैम्पियरगंज लो.नि.वि.	निर्माण खण्ड(भवन)	1559.00
24	आर.आई.डी.एफ.–23 योजनान्तर्गत एस.एल.जी. मार्ग किमी. 65 से सूरस (भरवल) सम्पर्क मार्ग का निर्माण कार्य	कैम्पियरगंज लो.नि.वि.	निर्माण खण्ड(भवन)	176.80
25	आर.आई.डी.एफ.–23 योजनान्तर्गत करमैनी बलुआ खडखडिया मार्ग से घघवा मराठा मार्ग के बन्दोह होते हुए खरकटवा सम्पर्क मार्ग	कैम्पियरगंज	निर्माण खण्ड(भवन) लो.नि.वि.	168.68
	योगः– कुल शिलान्यासः– 19			**20644.08**

1	2	3	4	5
26	जंगल कौड़िया ब्लाक मुख्यालय से सिहोरवा, मजनू, डोहरिया होते हुए डोमिनगढ़ पुल तक 7.00 मी. पिच चौड़ीकरण	कैम्पियरगंज	निर्माण खण्ड–3 लो.नि.वि.	3400.00
27	पीपीगंज से मखनहा, मछरियाघाट, सरहरी होते हुए महराजगंज चौराहा तक पिच मार्ग का चौड़ीकरण 7.00 मी. एवं सुदृढ़ीकरण	कैम्पियरगंज	निर्माण खण्ड–3 लो.नि.वि.	2319.00
28	कन्टाईन माँ स्थान बी.एम.टी. मार्ग से नेतवर, पड़रहवा, फरदहनी, मगरू चौराहा, जसवल तक पिच चौड़ीकरण 7.00 मी.	कैम्पियरगंज	निर्माण खण्ड–3 लो.नि.वि.	2976.00
29	महेवा चुंगी से मलौली बन्धा मार्ग का चौड़ीकरण एवं सुदृढ़ीकरण	सदर	निर्माण खण्ड–3 लो.नि.वि.	6217.00
30	बाघागाढ़ा से जरलही सम्पर्क मार्ग का चौड़ीकरण एवं सुदृढ़ीकरण	सदर/ सहजनवॉ	निर्माण खण्ड–3 लो.नि.वि.	2031.00
31	जनपद गोरखपुर में राजघाट पुल से हावर्ट बन्धा होते हुए डोमिनगढ़ कोलिया व कोलिया गाहासाड़ बन्धा होते हुए जंगल कौड़िया से कालेसर मार्ग (चार लेन) तक मार्ग (अन्य जिला मार्ग/नव निर्माण) का चौड़ीकरण एवं सुदष्ढ़ीकरण व नव निर्माण का कार्य।	सदर	निर्माण खण्ड–3 लो.नि.वि.	2886.63
32	गोरखपुर–महराजगंज–निचलौल मार्ग (झुगिंया चुंगी) से फर्टिलाईजर गेट तक मार्ग का चौड़ीकरण एवं सुदृढ़ीकरण का कार्य। (शहरी मार्ग)	सदर	निर्माण खण्ड–3 लो.नि.वि.	576.22
33	नाबार्ड वित्त पोषित आर.आई.डी.एफ.–22 योजनान्तर्गत स्वीकृत गोरखपुर देवरिया उप मार्ग (अन्य जिला मार्ग) के किलोमीटर 2,3,4 के सदृढ़ीकरण का कार्य	सदर	निर्माण खण्ड–3 लो.नि.वि.	384.52
34	मोहरीपुर जंगल नन्दलाल सिंह रामपुर चक शेरपुर चमराहा सिहोरवा सम्पर्क मार्ग	सदर	निर्माण खण्ड–3 लो.नि.वि.	2167.00
35	डोमिनगढ़ पश्चिम रेलवे के बगल तुफानी निषाद के घर पुल रेलवे के दक्षिण सिउरिया तक सम्पर्क मार्ग	कैम्पियरगंज	निर्माण खण्ड–3 लो.नि.वि.	77.82
36	आजाद चौक मिर्जापुर अ.जि.म. के किमी.–1,2(900) में सी.सी. का कार्य	सदर	निर्माण खण्ड–3 लो.नि.वि.	268.91
37	ग्रामसभा जंगल औराही में गजराज टोला के सिवान में ष्यामा टोला तक सम्पर्क मार्ग का नव निर्माण कार्य	सदर	निर्माण खण्ड–3 लो.नि.वि.	173.86
	योगः– कुल शिलान्यासः– 12			**23477.96**
38	केन्द्रीय सड़क निधि के अन्तर्गत पटनाघाट रितुआखोर से घघसरा मार्ग का चौड़ीकरण एवं सुदृढ़ीकरण का कार्य	सहजनवॉ	प्रान्तीय खण्ड, लो.नि.वि.	1818.00
39	केन्द्रीय सड़क निधि के कटधर विगही मार्ग का चौड़ीकरण एवं सुदृढ़ीकरण का कार्य	सहजनवॉ	प्रान्तीय खण्ड, लो.नि.वि.	2316.00

1	2	3	4	5
40	केन्द्रीय सड़क निधि के अन्तर्गत कौडीराम गोला मार्ग चौड़ीकरण एवं सुदृढ़ीकरण का कार्य	गोला	प्रान्तीय खण्ड, लो.नि.वि.	3336.00
41	हरनही खजूरी प्रधानमंत्री सड़क कि.मी. 6 से सोनबरसा चौराहा तक मार्ग का निर्माण कार्य	सहजनवॉ	प्रान्तीय खण्ड, लो.नि.वि.	142.71
42	आमी नदी पर स्थित बंशीघाट पर पूर्व निर्मित सेतु के अतिरिक्त पहुॅच मार्ग का निर्माण कार्य	सहजनवॉ	प्रान्तीय खण्ड, लो.नि.वि.	275.92
43	आमी नदी पर स्थित पूर्व निर्मित फरसाडाड़ सेतु के अतिरिक्त पहुॅच मार्ग का निर्माण कार्य।	सहजनवॉ	प्रान्तीय खण्ड, लो.नि.वि.	862.22
44	राज्य सड़क निधि के अन्तर्गत हरनही –सोनबरसा कटसहरा –मगहर मार्ग का चौड़ीकरण एवं सुदृढीकरण कार्य	खजनी	प्रान्तीय खण्ड, लो.नि.वि.	1170.40
45	सोनबरसा कटसहरा देवरिया मार्ग कि.मी. 8 से चॉदपार माइनर से गनौरी सीवान होते हुए महेता पुलिया तक सम्पर्क मार्ग (ल. 3.00 कि.मी.)	सहजनवॉ	प्रान्तीय खण्ड, लो.नि.वि.	244.99
46	सोनबरसा कटसहरा देवरिया मार्ग कि.मी. 6 से कटसहरा प्रा. स्वास्थ्य केन्द्र से पनिचरा सीवान तक मार्ग (ल. 2.50 कि.मी.)	सहजनवॉ	प्रान्तीय खण्ड, लो.नि.वि.	203.88
47	गोरखपुर धधसरा मार्ग कि.मी. 3 से सीहापार ईट भटठे से रामजीत हरिजन के धर तक सम्पर्क मार्ग (ल. 1.00 कि.मी.)	सहजनवॉ	प्रान्तीय खण्ड, लो.नि.वि.	61.92
48	कटधर बिगही मदनपुरा राउतपार मार्ग के कि.मी. 10 से ग्रामसभा मझौरा तक सम्पर्क मार्ग (ल. 2.00 कि.मी.)	सहजनवॉ	प्रान्तीय खण्ड, लो.नि.वि.	160.66
49	हरपुर भीटी मार्ग के कि.मी. 3 से महदेइया टेकुआपाती बन्नीवारी होते हुए मदुई तक सम्पर्क मार्ग (ल. 1.80 कि.मी.)	सहजनवॉ	प्रान्तीय खण्ड, लो.नि.वि.	112.73
50	सीहापार धधसरा मार्ग कि.मी. 3 से जयराम के घर होते हुए काशी विश्वकर्मा के धर तक सम्पर्क मार्ग (ल. 1.00 कि.मी.)	सहजनवॉ	प्रान्तीय खण्ड, लो.नि.वि.	61.92
51	पचौरी पिच मार्ग कि.मी. 1 से ओवर हेड टेंक होते हुए समयमाता स्थान पचौरी सीवान तक सम्पर्क मार्ग (ल. 1.90 कि.मी.)	सहजनवॉ	प्रान्तीय खण्ड, लो.नि.वि.	136.52
52	हरपुर बसखुरा मार्ग के कि.मी. 1 से नगरा सरैया होते हुए कुचडेहरी तक सम्पर्क मार्ग (ल. 2.20 कि.मी.)	सहजनवॉ लो.नि.वि.	प्रान्तीय खण्ड,	176.38
53	सोनबरसा पचौरी देवरिया मार्ग कि.मी. 6 से पचौरी दक्षिणी सीवान तक सम्पर्क मार्ग (ल. 1.00)	सहजनवॉ	प्रान्तीय खण्ड, लो.नि.वि.	82.34
54	सीधापार धधसरा मार्ग के कि.मी. 2 से सीहापार बाबूलाल निषाद के घर से राजकीय हाई स्कूल विद्यालय तक सम्पर्क मार्ग (ल. 1.00 कि.मी.)	सहजनवॉ	प्रान्तीय खण्ड, लो.नि.वि.	61.83

1	2	3	4	5
55	सीहापार जोन्हिया मार्ग कि.मी. 3 से सीहापार उमेष हरिजन के घर से हरगोबिन्द प्रजापति के धर तक सम्पर्क मार्ग (ल. 1.00 कि.मी.)	सहजनवॉ	प्रान्तीय खण्ड, लो.नि.वि.	61.92
56	कटधर बिगही राउतपार मार्ग के कि.मी. 10 से पकडी से सरस्वती देवी गौरी षंकर प्रा. विद्यालय होते हुए बरौली गॉव तक सम्पर्क मार्ग (ल. 1.00 कि.मी.)	सहजनवॉ	प्रान्तीय खण्ड, लो.नि.वि.	60.91
57	सानेबरसा कटसहरा देवरिया मार्ग के कि.मी. 5 से सिन्धवलिया से गोरेडीह सम्पर्क मार्ग (ल. 1.20 कि.मी.)	सहजनवॉ	प्रान्तीय खण्ड, लो.नि.वि.	73.33
58	कटसहरा सन्तकबीरनगर मार्ग कि.मी. 3 से गोरेडीह गॉव से नगवा होते हुए सुगौना तक सम्पर्क मार्ग (ल. 2.00)	सहजनवॉ	प्रान्तीय खण्ड, लो.नि.वि.	162.40
59	रामपुर पाण्डेय कटया सुरैनी मार्ग के कि.मी. 4 से उसरापार सम्पर्क मार्ग (ल. 1.00 कि.मी.)	खजनी	प्रान्तीय खण्ड, लो.नि.वि.	61.34
60	हरनही सिसवा सोनबरसा प्रधानमंत्री सड़क मार्ग के कि.मी. 4 से उरूवा गॉव तक सम्पर्क मार्ग (ल. 1.40 किमी.)	खजनी	प्रान्तीय खण्ड, लो.नि.वि.	85.48
61	उरूवा दुधरा पिपरी कि.मी. 6 से मुरारपुर सम्पर्क मार्ग (ल. 1.20 कि.मी.)	खजनी	प्रान्तीय खण्ड, लो.नि.वि.	70.04
62	रावतपार सम्पर्क मार्ग कि.मी. 2 से बेलदारीपुर सम्पर्क मार्ग (ल. 3.00 कि.मी.)	खजनी	प्रान्तीय खण्ड, लो.नि.वि.	195.59
63	रायपुर ढबिया मकरहा रापतपुर मार्ग कि.मी. 5 से केवटहिया होते हुए नरगडा षिवदत्त सिंह सम्पर्क मार्ग (ल. 1.90 कि.मी.)	खजनी	प्रान्तीय खण्ड, लो.नि.वि.	141.90
64	जिगिना फरसाडाड के कि.मी. 3 से बनगॉवा मदुई षिव मन्दिर होते हुए रानीपार षिवाला तक सम्पर्क मार्ग (3.20 किमी)	सहजनवॉ	प्रान्तीय खण्ड, लो.नि.वि.	230.74
65	रहीमाबाद डोमहर मार्ग के ि0मी0 1 से उज्जीखोर होते हुए मटकापार सम्पर्क मार्ग (ल. 2.00 कि.मी.)	सहजनवॉ	प्रान्तीय खण्ड, लो.नि.वि.	118.51
66	कटधर बिगही मदनपुरा राउतपार मार्ग के कि.मी. 9 से मंझरिया गॉव तक सम्पर्क मार्ग (ल. 1.50 कि.मी.)	सहजनवॉ	प्रान्तीय खण्ड, लो.नि.वि.	115.06
67	भैसहिया प्रानपुर चॉदपुर के कि.मी. 1 से चेचुआपार बरासेहा गॉव तक मार्ग (ल. 2.00 कि.मी.)	सहजनवॉ	प्रान्तीय खण्ड, लो.नि.वि.	140.84
68	भैसहिया प्रानपुर चॉदपुर मार्ग के कि.मी. 3 से रावतपार (सन्तकबीरनगर सीवान) तक मार्ग (ल. 1.50 कि.मी.)	सहजनवॉ	प्रान्तीय खण्ड, लो.नि.वि.	99.82
69	सहजनवॉ से फरसाडाड़ मार्ग के कि.मी. 2 से ग्रामसभा भडसार प्रा.पा. तक सम्पर्क मार्ग (ल. 1.20 कि.मी.)	सहजनवॉ	प्रान्तीय खण्ड, लो.नि.वि.	88.95
70	सोनबरसा पचौरी मार्ग कि.मी. 5 से मदरिया पिच मार्ग से सिन्धवलिया सीवान तक सम्पर्क मार्ग (ल. 1.00 कि.मी.)	सहजनवॉ	प्रान्तीय खण्ड, लो.नि.वि.	61.73

1	2	3	4	5
71	सोनबरसा कटसहरा देवरिया मार्ग कि.मी. 3 से तुर्कवलिया से सुरसिया पुलिया होते हुए भदरकी गॉव तक सम्पर्क मार्ग (ल. 2.50 कि.मी.)	सहजनवॉ	प्रान्तीय खण्ड, लो.नि.वि.	183.64
72	जलालाबाद पिच मार्ग के कि.मी. 1 से रामजानकी मन्दिर होते हुए पचौरी सम्पर्क मार्ग (ल. 1.00 कि.मी.)	सहजनवॉ	प्रान्तीय खण्ड, लो.नि.वि.	66.01
73	सहजनवॉ बखिरा मार्ग के कि.मी. 2 से भगौरा पेट्रोल पम्प से हरिजन बस्ती होते हुए मिठाई निशाद के घर तक सम्पर्क मार्ग (ल. 1.20 कि.मी.)	सहजनवॉ	प्रान्तीय खण्ड, लो.नि.वि.	88.97
74	कुर्सा पचौरी मार्ग कि.मी. 4 से गंगटही रामवक्ष मिश्रा के घर होते हुए पुलिया से धोबौली सिवान तक सम्पर्क मार्ग (ल. 1.00 कि.मी.)	सहजनवॉ	प्रान्तीय खण्ड, लो.नि.वि.	61.63
75	चीनी मिल रोड हरिहरपुर चौराहें से बाथ खुर्द होते हुए कोनी टड़वा मार्ग के कि.मी. 1 से बाथ खुर्द सम्पर्क मार्ग (ल. 1.50 कि.मी.)	बॉसगांव	प्रान्तीय खण्ड, लो.नि.वि.	86.05
76	सिकरीगंज बथुआ मार्ग कि.मी. 6 से लोन्द्रा सम्पर्क मार्ग (ल. 1.00 कि.मी.)	खजनी	प्रान्तीय खण्ड, लो.नि.वि.	58.60
77	अहिरौली सम्पर्क मार्ग कि.मी. 1 से बनकटी खुर्द (पिताम्बरपुर) सम्पर्क मार्ग (ल. 1.60 कि.मी.)	खजनी	प्रान्तीय खण्ड, लो.नि.वि.	193.90
78	बेलुकागाडा कि.मी. 1 से गुल्लौर होते हुए बेलडाड सम्पर्क मार्ग (ल. 1.10 कि.मी.)	सहजनवॉ	प्रान्तीय खण्ड, लो.नि.वि.	82.23
79	जी0जी0सी0 मार्ग के कि.मी. 26 से धरसरिया पिच मार्ग के बीकू भैसा सम्पर्क मार्ग (ल. 1.50)	खजनी	प्रान्तीय खण्ड, लो.नि.वि.	110.20
80	कर्मदेवा खुर्द से खडहादेउर होते हुए अतरौडा हरिजन बस्ती सम्पर्क मार्ग (ल. 1.80 कि.मी.)	खजनी	प्रान्तीय खण्ड, लो.नि.वि.	110.19
81	जनपद गोरखपुर में ड्राइवर प्रशिक्षण केन्द्र (डी.टी.आई.) का निर्माण कार्य	सदर	प्रान्तीय खण्ड, लो.नि.वि.	489.00
82	सम्भागीय परिवहन कार्यालय गोरखपुर का निर्माण कार्य	सदर	प्रान्तीय खण्ड, लो.नि.वि.	573.00
	योगः– कुल शिलान्यासः– 45			**15096.40**
83	जनपद गोरखपुर में बेतियहाता हनुमान मन्दिर से साई काम्प्लेक्स तथा साई काम्प्लेक्स से महेवा चुंगी सम्प पम्पिंग स्टेशन तक नाले का निर्माण कार्य।	सदर	सी.एण्डडी.एस. (यूनिट–14), उ.प्र. जल निगम	212.51
84	जनपद गोरखपुर के ग्राम पंचायत गोपालगंज उर्फ हरनामपुर विकास खण्ड कैम्पियरगंज में राजकीय बालिका इण्टर कालेज की स्थापना।	कैम्पियरगंज	सी.एण्डडी.एस. (यूनिट–14), उ.प्र. जल निगम	310.23

1	2	3	4	5
85	जनपद गोरखपुर के ग्राम सोनौरा बुजुर्ग में राजकीय इण्टर कालेज की स्थापना।	कैम्पियरगंज	सी.एण्डडी.एस. (यूनिट–14), उ.प्र. जल निगम	310.23
86	जनपद गोरखपुर में कान्हा गोशाला का निर्माण	सदर	सी.एण्डडी.एस. (यूनिट–14), उ.प्र. जल निगम	819.00
87	जनपद गोरखपुर के ग्राम पंचयात रूदाईन उर्फ मझगांवा विकास खण्ड बॉसगॉव में राजकीय इण्टर कॉलेज का निर्माण	बॉसगॉव	सी.एण्डडी.एस. (यूनिट–14), उ.प्र. जल निगम	377.00
	योगः– कुल शिलान्यासः– 5			**2028.97**
88	आश्रय योजना गोरखनाथ (127 बेड)	सदर	सी.एण्डडी.एस. (यूनिट–19), उ.प्र. जल निगम	353.00
89	आश्रय योजना गोरखनाथ (39 बेड)	सदर	सी.एण्डडी.एस. (यूनिट–19), उ.प्र. जल निगम	169.00
90	मुक्ता काशी मंच का नवीनीकरण	सदर	सी.एण्डडी.एस. (यूनिट–19), उ.प्र. जल निगम	389.00
	योगः– कुल शिलान्यासः– 3			**911.00**
91	बस स्टेशन नौसढ़ गोरखपुर के पुर्ननिर्माण का कार्य	सदर	राजकीय निर्माण निगम लि., गोरखपुर इकाई–02	191.00
92	बस स्टेषन कचहरी, गोरखपुर के पुर्ननिर्माण का कार्य	सदर	राजकीय निर्माण निगम लि., गोरखपुर इकाई–02	199.00
93	अत्याधुनिक सुविधाओं से युक्त प्रेक्षागृह एवं सांस्कृतिक केन्द्र गोरखपुर के नवनिर्माण का कार्य	सदर	राजकीय निर्माण निगम लि., गोरखपुर इकाई–02	4950.19
94	राजकीय पालीटेक्निक सहजनवां के आवासीय/अनावासीय भवनों का निर्माण	सहजनवॉ	राजकीय निर्माण निगम लि., गोरखपुर इकाई–02	645.42
	योगः– कुल शिलान्यासः– 4			**5985.61**
95	पं. दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय परिसर में गुरु श्री गोरक्षनाथ शोध पीठ का निर्माण	सदर	राजकीय निर्माण निगम लि., गोरखपुर इकाई–03	1155.57
	योगः– कुल शिलान्यासः–1			**1155.57**
96	बी.आर.डी.मेडिकल कॉलेज, गोरखपुर परिसर में बाबा राघव दास मेडिकल कॉलेज गोरखपुर से सम्बद्ध नेहरू चिकित्सालय में अतिरिक्त लेबर काम्प्लैक्स का निर्माण	सदर	उ.प्र. राजकीय निर्माण नि.लि.	932.69

1	2	3	4	5
97	उ.प्र.राज्य सड़क परिवहन निगम के क्षेत्रीय कार्यषाला गोरखपुर के निर्माण के सम्बन्ध में	सदर	उ.प्र. राजकीय निर्माण नि.लि.	804.50
98	महन्त अवेद्यनाथ राजकीय महाविद्यालय जंगल कौड़िया गोरखपुर का निर्माण	कैम्पियरगंज	उ.प्र. राजकीय निर्माण नि.लि.	1191.00
	योगः– कुल शिलान्यासः– 3			**2928.19**
99	जनपद गोरखपुर के अन्तर्गत ग्राम कसिहार सेमरा मानिकचक सम्पर्क मार्ग पर राप्ती नदी के चन्दा घाट पर सेतु, पहुॅच मार्ग व अतिरिक्त पहुॅच मार्ग का निर्माण।	गोला	उ.प्र. राज्य सेतु निगम लिमिटेड, सेतु निर्माण इकाई	3526.32
100	जनपद गोरखपुर के अन्तर्गत विधानसभा क्षेत्र सहजनवॉ के ग्राम ढढौना से ग्राम भरवलिया के बीच आमी नदी पर सेतु, पहुॅच मार्ग व अतिरिक्त पहुॅच मार्ग तथा सुरक्षात्मक कार्य का निर्माण।	खजनी	उ.प्र. राज्य सेतु निगम लिमिटेड, सेतु निर्माण इकाई	1232.48
101	जनपद गोरखपुर में जैतपुर–कैली मार्ग पर आमी नदी पर ग्राम गाडर एवं शाहिदाबाद के मध्य सेतु, पहुॅच मार्ग व अतिरिक्त पहुॅच मार्ग तथा सुरक्षात्मक कार्य का निर्माण।	सहजनवॉ/ खजनी	उ.प्र. राज्य सेतु निगम लिमिटेड, सेतु निर्माण इकाई	1593.16
102	जनपद गोरखपुर के चरगांवा विकास खण्ड के अन्तर्गत जंगल अयोध्या प्रसाद को जोडने के लिए चिलुआताल के कोल्हुआ घाट पर सेतु, पहुॅच मार्ग व अतिरिक्त पहुॅच मार्ग कार्य का निर्माण।	सदर	उ.प्र. राज्य सेतु निगम लिमिटेड, सेतु निर्माण इकाई	2120.84
	योगः– कुल शिलान्यासः– 4			**8472.80**
103	अमृत योजना के अन्तर्गत गोरखपुर नगर निगम, पेयजल पुनर्गठन योजना के अन्तर्गत स्काडा के माध्यम से नलकूपों का आटोमेशन कार्य। (आटोमेशन आफ ट्यूबेल थ्रु स्काडा)	सदर	उ.प्र. जल निगम विद्युत/यान्त्रिक	853.80
	योगः– कुल शिलान्यासः– 1			**853.80**
104	पं. दीनदयाल उपाध्याय नगर विकास योजना के अन्तर्गत रामगढ़ताल के सौन्दर्यीकरण की योजना। (नया सवेरा)	सदर	निर्माण इकाई उ.प्र. जल निगम	1885.88
105	अमृत कार्यक्रम के अन्तर्गत गोरखपुर सीवरेज जोन–1 दक्षिणी भाग (महादेव झारखण्डी) गोरखपुर के निर्माण से सम्बन्धित परियोजना	सदर	निर्माण इकाई उ.प्र. जल निगम	10181.58
106	अमृत कार्यक्रम के अन्तर्गत नगर निगम, गोरखपुर की सीवरेज–परियोजना जोन–ए–1 उत्तरी, (अपर पार्ट) की परियोजना	सदर	निर्माण इकाई उ.प्र. जल निगम	7227.36
107	गोरखपुर के रामगढ़ताल में वाटर स्पार्टर्स काम्लेक्स की योजना	सदर	निर्माण इकाई उ.प्र. जल निगम	4012.00
	योगः– कुल शिलान्यासः– 4			**23306.82**
108	कजाकपुर ग्राम समूह पेयजल योजना	सदर	दशम खण्ड, उ.प्र. जल निगम	266.34

1	2	3	4	5
109	गौरी मंगलपुर ग्राम समूह पेयजल योजना	सदर	दशम खण्ड, उ.प्र. जल निगम	156.70
	योगः– कुल शिलान्यासः– 2			**423.04**
110	दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर परिसर में अनुसूचित जाति एवं जनजाति छात्राओं हेतु 100 क्षमता के छात्रावास का निर्माण कार्य।	सदर	लैकफेड	455.49
	योगः– कुल शिलान्यासः– 1			**455.49**
111	जनपद गोरखपुर में गरीब एवं मेधावी छात्रों हेतु आई.ए.एस. एवं पी.सी.एस. कोचिंग सेन्टर का निर्माण कार्य।	सदर	यू.पी.सिडको गोरखपुर (उ.प्र.समाज कल्याण नि.लि.)	871.51
112	जनपद गोरखपुर में राजकीय अनुसूचित जाति छात्रावास लालडिग्गी गोरखपुर का निर्माण कार्य।	सदर	यू.पी.सिडको गोरखपुर (उ.प्र.समाज कल्याण नि.लि.)	416.01
113	जयप्रकाश नारायण बालिका विद्यालय सिसवां अनन्तपुर सहजनवॉ	सहजनवॉ	यू.पी.सिडको गोरखपुर (उ.प्र.समाज कल्याण नि.लि.)	2468.50
114	राजकीय कन्या दीक्षा विद्यालय गोरखपुर के परिसर मे इलाहाबाद के क्षेत्रीय सचिव मा.शिक्षा परिषद के कार्यालय हेतु जीर्ण–क्षीर्ण भवन, हाल एंव बाउन्डी वाल का पुर्ननिर्माण का कार्य।	सदर	यू.पी.सिडको गोरखपुर (उ.प्र.समाज कल्याण नि.लि.)	464.33
115	ए.टी.एस. पतरा गोला ट्रन्जिट हास्टल, गेस्ट हाउस	गोला	यू.पी.सिडको गोरखपुर (उ.प्र.समाज कल्याण नि.लि.)	284.00
116	राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान चरगावां, गोरखपुर को नवीनीकरण एवं सुदृढ़ीकरण		यू.पी.सिडको गोरखपुर (उ.प्र.समाज कल्याण नि.लि.)	499.00
	योगः– कुल शिलान्यासः– 6			**4220.35**
117	राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान भटहट, गोरखपुर के भवन का निर्माण	सदर	यू.पी.प्रोजेक्ट कार्पो. लि.	627.51
118	जनपद गोरखपुर के विकास भवन का जीर्णोद्वार	सदर	यू.पी.प्रोजेक्ट कार्पो. लि.	294.25
119	जनपद गोरखपुर स्थित आधुनिक स्वागत केन्द्र के जीर्णोद्वार एवं सौन्दर्यीकरण की योजना	सदर	यू.पी.प्रोजेक्ट कार्पो. लि.	111.41
120	ग्राम सभा पंचगांवा में गूरम पोखरा के समय माता जी का पर्यटन विकास	कैम्पियरगंज	यू.पी.प्रोजेक्ट कार्पो. लि.	12.58
121	रेलवे स्टेषन स्थित पर्यटन सूचना केन्द्र का जीर्णोद्वार	सदर	यू.पी.प्रोजेक्ट कार्पो. लि.	21.89

1	2	3	4	5
122	महन्त अवेद्यनाथ जी महराज स्टेडियम जंगल कौड़िया का निर्माण	कैम्पियरगंज	यू.पी.प्रोजेक्ट कार्पो. लि.	1188.72
123	जनपद गोरखपुर के गोरखनाथ मन्दिर स्थल पर भीम कुण्ड ताल की सीढ़ियों पर कोटा स्टोन लगाने एवं सौन्दर्यीकरणका कार्य	सदर	यू.पी.प्रोजेक्ट कार्पो. लि.	97.62
124	वीर बहादुर सिंह स्पोट्स कॉलेज गोरखपुर में एवं डायनिंग हाल का निर्माण कार्य	सदर	यू.पी.प्रोजेक्ट कार्पो. लि.	155.00
125	वीर बहादुर सिंह स्पोट्स कॉलेज गोरखपुर में मल्टीजिम भवन का निर्माण	सदर	यू.पी.प्रोजेक्ट कार्पो. लि.	57.00
	योगः– कुल शिलान्यासः– 9			**2565.98**
126	नाबार्ड द्वारा स्वीकृत डा. राम मनोहर लोहिया नलकूप निर्माण परियोजना (विशेष घटक) के अन्तर्गत ग्राम–सरहरी, विकास खण्ड–जंगल कौड़िया में राजकीय नलकूप संख्या–381 जी.जी. का निर्माण	कैम्पियरगंज	नलकूप खण्ड–प्रथम	22.70
127	नाबार्ड द्वारा स्वीकृत डा. राम मनोहर लोहिया नलकूप निर्माण परियोजना (विशेष घटक) के अन्तर्गत ग्राम–कोल्हुआ, विकास खण्ड–ब्रह्मपुर में राजकीय नलकूप संख्या–78 एस.एन.जी. का निर्माण	चौरीचौरा	नलकूप खण्ड–प्रथम	22.70
128	चौधरी चरण सिंह नलकूप निरीक्षण भवन गोरखपुर के पुनरोद्धार का कार्य	सदर	नलकूप खण्ड–प्रथम	31.91
129	जनपद गोरखपुर में 50 अदद राजकीय नलकूपों के निर्माण कार्य की परियोजना	सदर	नलकूप खण्ड–प्रथम	1345.70
	योगः– कुल शिलान्यासः– 4			**1423.01**
130	नाबार्ड द्वारा स्वीकृत डा. राम मनोहर लोहिया नलकूप निर्माण परियोजना (विशेष घटक) के अन्तर्गत ग्राम–सोनईचा (अस्थौला), विकास खण्ड–गगहा में राजकीय नलकूप संख्या–491 बी.जी. का निर्माण	खजनी	नलकूप खण्ड–द्वितीय	22.70
131	नाबार्ड द्वारा स्वीकृत डा. राम मनोहर लोहिया नलकूप निर्माण परियोजना (विशेष घटक) के अन्तर्गत ग्राम–भिसिया खुर्द, विकास खण्ड–बेलघाट में राजकीय नलकूप संख्या–492 बी.जी. का निर्माण	बॉसगॉव	नलकूप खण्ड–द्वितीय	22.70
	योगः– कुल शिलान्यासः– 2			**45.40**
132	नाबार्ड द्वारा स्वीकृत डा. राम मनोहर लोहिया नलकूप निर्माण परियोजना (विशेष घटक) के अन्तर्गत ग्राम–गोपालपुर उर्फ हरनामपुर, विकास खण्ड–कैम्पियरगंज में राजकीय नलकूप संख्या–419 पी.जी. का निर्माण	कैम्पियरगंज	नलकूप खण्ड–महराजगंज	22.70
	योगः– कुल शिलान्यासः– 1			**22.70**
133	आई.पी.डी.एस. योजना के अन्तर्गत 2ग5 एम.पी.ए. क्षमता का 33/11 के.वी. विद्युत उपकेन्द्र राप्तीनगर (नगर) गोरखपुर के निर्माण कार्य	सदर	पूर्वान्चल विद्युत वितरण निगम लिमिटेड	228.60

1	2	3	4	5
134	आई.पी.डी.एस. योजना के अन्तर्गत 2x5 एम.पी.ए. क्षमता का 33/11 के.वी. विद्युत उपकेन्द्र धर्मषाला (नगर) गोरखपुर के निर्माण कार्य	सदर	पूर्वान्चल विद्युत वितरण निगम लिमिटेड	228.60
135	आई.पी.डी.एस. योजना के अन्तर्गत 2x5 एम.पी.ए. क्षमता का 33/11 के.वी. विद्युतउपकेन्द्र मुण्डेराबाजार (ग्रामीण) गोरखपुर के निर्माणकार्य	चौरीचौरा	पूर्वान्चल विद्युत वितरण निगम लिमिटेड	228.60
136	न्यू दीन दयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना के अन्तर्गत 1x5 एम.पी.ए. क्षमता का 33/11 के.वी. विद्युत उपकेन्द्र हरपुर अनंतपुर (ग्रामीण) गोरखपुर के निर्माण कार्य		पूर्वान्चल विद्युत वितरण निगम लिमिटेड	160.00
137	न्यू दीन दयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना के अन्तर्गत 1x5 एम.पी.ए. क्षमता का 33/11 के.वी. विद्युत उपकेन्द्र नैयापार (ग्रामीण) गोरखपुर के निर्माण कार्य	सदर	पूर्वान्चल विद्युत वितरण निगम लिमिटेड	155.00
138	आई.पी.डी.एस. योजना के अन्तर्गत गोरखपुर नगर में एल.टी. लाइन करो अण्डरग्राउण्ड केबल में बदलने का कार्य। (प्रथम चरण)	सदर	पूर्वान्चल विद्युत वितरण निगम लिमिटेड	3325.00
	योगः– कुल शिलान्यासः– 6			**4325.80**
139	हिन्दुस्स्तान उर्वरक एवं रसायन लि. के समतलीकरण का कार्य।	सदर	हिन्दुस्स्तान उर्वरक एवं रसायन लि.	3250.00
	योगः– कुल शिलान्यासः– 1			**3250.00**
140	उत्तर प्रदेश राज्य चीनी निगम लि. की सहायक कम्पनी उत्तर प्रदेश राज्य चीनी एवं गन्ना विकास निगम लि. इकाई पिपराइच में 3500 टी.सी.डी. पेराई क्षमता की नई चीनी मिल को जनरेषन प्लान्ट एवं आसवानी का	सदर	उत्तर प्रदेश राज्य चीनी निगम लि.	38466.00
	योगः– कुल शिलान्यासः– 1			**38466.00**
141	मलौनी तटबन्ध के कि.मी. 30.30 पर तरकुलानी रेगुलेटर के निकट पम्पिंग स्टेषन का निर्माण कार्य।	सदर	बाढ़ खण्ड	4060.00
	योगः– कुल शिलान्यासः– 1			**4060.00**
142	उ.प्र.राज्य सड़क परिवहन निगम के डिपो कार्यषाला गोरखपुर का निर्माण	सदर	यू.पी.आर.एन.एस.एस. निर्माण प्रखण्ड, गोरखपुर प्रथम (पैकफेड)	464.79
143	जनपद गोरखपुर के स्पोर्टस स्टेडियम में निर्मित खेल अवस्थानाओं के विकास एवं सुदृढीकरण	सदर	यू.पी.आर.एन.एस.एस. निर्माण प्रखण्ड, गोरखपुर प्रथम (पैकफेड)	429.99
144	वीर बहादुर सिंह स्पोर्टस कॉलेज गोरखपुर में छात्रावास भवन मरम्मत	सदर	यू.पी.आर.एन.एस.एस. निर्माण प्रखण्ड, गोरखपुर प्रथम (पैकफेड)	639.55

1	2	3	4	5
145	वीर बहादुर सिंह स्पोर्टस कॉलेज गोरखपुर में मिट्टी भराई कार्य	सदर	यू.पी.आर.एन.एस.एस. निर्माण प्रखण्ड, गोरखपुर प्रथम (पैकफेड)	168.28
146	वीर बहादुर सिंह स्पोर्टस कॉलेज गोरखपुर में आर.सी.सी. रोड का निर्माण	सदर	यू.पी.आर.एन.एस.एस. निर्माण प्रखण्ड, गोरखपुर प्रथम (पैकफेड)	94.65
147	वीर बहादुर सिंह स्पोर्टस कॉलेज गोरखपुर में छात्रावास भवन निर्माण	सदर	यू.पी.आर.एन.एस.एस. निर्माण प्रखण्ड, गोरखपुर प्रथम (पैकफेड)	789.73
148	राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान, जंगल कौड़िया गोरखपुर के भवन निर्माण कार्य।	सदर	यू.पी.आर.एन.एस.एस. निर्माण प्रखण्ड, गोरखपुर प्रथम (पैकफेड)	627.51
	योगः– कुल शिलान्यासः– 7			**2586.99**
149	बीर बहादुर सिंह स्पोर्ट कालेज ड्रेनेज सिस्टम का कार्य	सदर	यू.पी.आर.एन.एस.एस. निर्माण प्रखण्ड, गोरखपुर द्वितीय (पैकफेड)	636.63
	योगः– कुल शिलान्यासः– 1			**636.63**
150	जनपद गोरखपुर के विकास खण्ड बॉसगांव के ग्राम ठठउर में स्थित समय माता मन्दिर का पर्यटन विकास	बॉसगॉव	ग्रामीण अभियन्त्रण विभाग गोरखपुर	116.71
151	कॅन्सट्रक्सन ऑफ मल्टिपरपज सीड स्टोर एण्ड टेक्नोलॉजी डिसिमिनेशन सेन्टर का निर्माण	बॉसगॉव,	ग्रामीण अभियन्त्रण विभाग गोरखपुर	80.14
152	कॅन्सट्रक्सन ऑफ मल्टिपरपज सीड स्टोर एण्ड टेक्नोलॉजी डिसिमिनेशन सेन्टर का निर्माण भौवापार, पिपरौली	खजनी	ग्रामीण अभियन्त्रण विभाग गोरखपुर	80.14
153	कॅन्सट्रक्सन ऑफ मल्टिपरपज सीड स्टोर एण्ड टेक्नोलॉजी डिसिमिनेशन सेन्टर का निर्माण चरगावां	सदर	ग्रामीण अभियन्त्रण विभाग गोरखपुर।	80.14
	योगः– कुल शिलान्यासः– 4			**357.13**
154	जनपद गोरखपुर में लेक व्यू विस्तार आवासीय योजना के अन्तर्गत तारामण्डल के निकट दो एकड़ भूमि पर बेसमेन्ट एवं स्टिल्ट के साथ आठ तलों की बहुमंजिली भवनों का निर्माण कार्य	सदर	गोरखपुर विकास प्राधिकरण गोरखपुर	4573.40
155	जनपद गोरखपुर में रामगढताल परियोजना के अन्तर्गत सर्किट हाउस के निकट 10.29 एकड़ में पार्क का निर्माण एवं सौन्दर्यीकरण का निर्माण कार्य	सदर	गोरखपुर विकास प्राधिकरण गोरखपुर	989.52
156	गीडा के अधिसूचित क्षेत्र ग्राम नौसढ से ग्राम कालेसर तक पथ प्रकाश व्यवस्था के अन्तर्गत एल.ई.डी. लगाने का कार्य।	सदर	गोरखपुर विकास प्राधिकरण गोरखपुर	336.43

1	2	3	4	5
157	देवरिया बाईपास मार्ग पर बुद्ध विहार के सामने 33 के.वी. रानीबाग फीडर को भूमिगत करने का कार्य।	सदर	गोरखपुर विकास प्राधिकरण गोरखपुर	57.69
158	नकहा रेलवे ओवर ब्रिज से स्पोर्ट कालेज के मुख्य मार्ग तक सड़क के दोनो तरफ आर.सी.सी. नाले का निर्माण कार्य।	सदर	गोरखपुर विकास प्राधिकरण गोरखपुर	382.89
159	आजाद चौक कजाकपुर रोड फुलवरिया सुलभ शौचालय से श्री अध्या नाथ पाण्डे के मकान तक सी.सी.रोड एवं नाली का निर्माण कार्य।	सदर	गोरखपुर विकास प्राधिकरण गोरखपुर	70.62
160	मुहल्ला कजाकपुर न्यू विवेकपुरम कालोनी में श्री शम्भू शरण शुक्ला के मकान तक सी.सी.सड़क एवं नाली का निर्माण कार्य।	सदर	गोरखपुर विकास प्राधिकरण गोरखपुर	54.93
161	मु. भरवलिया निकट सत्तू यादव के मकान से श्री शेषनाथ कन्नौजिया से मौर्या काम्प्लेक्स तक सी.सी.सड़क व नाली का निर्माण कार्य।	सदर	गोरखपुर विकास प्राधिकरण गोरखपुर	38.70
162	न्यू कालोनी माधोपुर गोरखपुर से काली मन्दिर से लेकर एन.एच.चिल्ड्रेन एकेडमी सीनियर सेकेन्ड्री स्कूल के चारो तरफ सड़क एवं नाली का निर्माण कार्य।	सदर	गोरखपुर विकास प्राधिकरण गोरखपुर	44.40
163	मलौनी मन्दिर से श्री गंगेश मिश्रा प्रधानाचार्य के मकान होते हुये श्री मृत्युन्जय सिंह के मकान तक सी.सी.रोड का निर्माण कार्य।	सदर	गोरखपुर विकास प्राधिकरण गोरखपुर	37.39
164	वार्ड नं0–59 महुई सुघरपुर के प्रयागपुरम कालोनी में लिटिल एंगिल स्कूल से श्री रामनाथ यादव के मकान तक सी.सी.सड़क एवं नाली का निर्माण कार्य।	सदर	गोरखपुर विकास प्राधिकरण गोरखपुर	37.37
165	वार्ड नं0–55 रसूलपुर में ग्रीन सिटी फेज–द्वितीय में श्री बनारसी के मकान से हिमांशु व श्री हरि नन्दन लाल श्रीवास्तव के मकान होते हुए पट्टन मुख्य सड़क पर सी.सी.सड़क एवं नाली का निर्माण कार्य।	सदर	गोरखपुर विकास प्राधिकरण गोरखपुर	45.40
166	मुहल्ला दिव्य नगर कालोनी (निकट शंकर जी मन्दिर) श्री घनश्याम सागर के मकान के सामने से श्री राजकुमार श्रीवास्तव के मकान तक पिच रोड के सुदृढ़ीकरण का कार्य।	सदर	गोरखपुर विकास प्राधिकरण गोरखपुर	17.02
167	रेलवे स्टेषन सौन्दर्यीकरण योजना के अन्तर्गत महाराणा प्रताप की मूर्ति के पूरब से निकट सिंचाई विभाग के डाक बंगला तक पिच रोड का सुदृढ़ीकरण का कार्य।	सदर	गोरखपुर विकास प्राधिकरण गोरखपुर	18.33
168	मुहल्ला मिर्जापुर (निकट मिर्जापुर मस्जिद) से आलम गिरी व आदित्य मौर्या के मकान तक सी.सी.सड़क व नाली का निर्माण कार्य।	सदर	गोरखपुर विकास प्राधिकरण गोरखपुर	20.89
169	गौतम विहार प्राइवेट कालोनी निकट एल.आई.सी. भूखण्ड संख्या–23 से ललिता पाण्डेय तक इन्टरलाकिंग एवं नाली का निर्माण कार्य।	सदर	गोरखपुर विकास प्राधिकरण गोरखपुर	13.18
170	मुहल्ला रसूलपुर के शक्ति नगर कालोनी में श्री सूरज श्रीवास्तव के मकान से श्री अजय सिंह के मकान तक सड़क एवं नाली का निर्माणकार्य।	सदर	गोरखपुर विकास प्राधिकरण गोरखपुर	12.11
171	मुहल्ला खरैया पोखरा (भोला जी पुरम कालोनी) प्रयास हास्पिटल से राजकिषोर व अषोक सिंह के मकान तक इन्टरलाकिंग का निर्माण कार्य।	सदर	गोरखपुर विकास प्राधिकरण गोरखपुर	17.12

1	2	3	4	5
172	बुद्ध विहार व्यवसायिक योजना में निकट मनप्रिय हास्पिटल से ग्लोबल हास्पिटल के पश्चिम तक इन्टरलाकिंग का निर्माण कार्य।	सदर	गोरखपुर विकास प्राधिकरण गोरखपुर	16.49
	योगः– कुल शिलान्यासः– 19			**6783.88**
173	वार्ड सं. 04 में अवस्थापना विकास निधि के अन्तर्गत स्वीकृत सोनौली रोड से काली मंदिर तक हाट मिक्स से सड़क निर्माण कार्य।	सदर	नगर निगम गोरखपुर	27.83
174	वार्ड सं. 07 में अवस्थापना विकास निधि के अन्तर्गत स्वीकृत झुगिया फर्टीलाईजर रोड से फतेहपुर तक सड़क निर्माण कार्य।	सदर	नगर निगम गोरखपुर	16.09
175	वार्ड सं. 08 में अवस्थापना विकास निधि के अन्तर्गत स्वीकृत नन्दानगर रेलवे क्रसिंग से आदर्शनगर मुर्गी फार्म तक सड़क/नाली निर्माण कार्य।	सदर	नगर निगम गोरखपुर	51.33
176	वार्ड सं. 09 में अवस्थापना विकास निधि के अन्तर्गत स्वीकृत चरगावॉ में बी. ब्लाक में पूर्व पार्षद श्री रामजनम यादव के घर के पास पार्क सौन्दर्यीकरण का कार्य।	सदर	नगर निगम गोरखपुर	21.70
177	वार्ड सं. 11 में अवस्थापना विकास निधि के अन्तर्गत स्वीकृत सरस्वतीपुरम लेन 3 में श्री मुकेश कुमार सिंह एवं लालबाबू चौहान आदि के घर के पास सड़क निर्माण कार्य।	सदर	नगर निगम गोरखपुर	35.11
178	वार्ड सं. 12 में अवस्थापना विकास निधि के अन्तर्गत स्वीकृत आजाद नगर सेक्टर 2 में डा0 चितवन सिंह से अंगद यादव तक हाट मिक्स प्लांट से सड़क निर्माण कार्य।	सदर	नगर निगम गोरखपुर	40.00
179	वार्ड सं. 12 में अवस्थापना विकास निधि के अन्तर्गत स्वीकृत सोनौली रोड से भगवती चौराहा होते हुये सी.सी. रोड तक सड़क का निर्माण।	सदर	नगर निगम गोरखपुर	41.59
180	वार्ड सं. 15 में अवस्थापना विकास निधि के अन्तर्गत स्वीकृत जंगल सालिक राम पोखरा टोला हरिजन बस्ती स्थित पोखरे का सौन्दर्यीकरण का कार्य।	सदर	नगर निगम गोरखपुर	20.09
181	वार्ड सं. 19 में अवस्थापना विकास निधि के अन्तर्गत स्वीकृत महावीरपुरम कालोनी में अवध स्टीक से दीपक श्रीवास्तव के मकान तक हा.मि.प्ला. से सड़क निर्माण कार्य।	सदर	नगर निगम गोरखपुर	36.73
182	वार्ड सं. 22 में अवस्थापना विकास निधि के अन्तर्गत स्वीकृत जंगल तुलसी राम पूर्वी मे श्री महेश प्रसाद सिंह के मकान से श्री रामवती प्रजापती के मकान होते हुये प्रयाग यादव के मकान तक सड़क निर्माण कार्य।	सदर	नगर निगम गोरखपुर	29.60
183	वार्ड सं. 24 में अवस्थापना विकास निधि के अन्तर्गत स्वीकृत मु. मिर्जापुर पचपेड़वा में विभिन्न लेन में नाली/इ.ला. का कार्य।	सदर	नगर निगम गोरखपुर	77.32
184	वार्ड सं. 29 में अवस्थापना विकास निधि के अन्तर्गत स्वीकृत सुपरपेण्ट से खरे आटा चक्की होते हुए जगेसर पासी चौक तक हाट मिक्स प्लांट से सड़क निर्माण कार्य।	सदर	नगर निगम गोरखपुर	35.22

1	2	3	4	5
185	वार्ड सं. 30 में अवस्थापना विकास निधि के अन्तर्गत स्वीकृत महेवा स्टोर में फर्श/आर.सी.सी. प्लेटफार्म का निर्माण कार्य।	सदर	नगर निगम गोरखपुर	26.64
186	वार्ड सं. 30 में अवस्थापना विकास निधि के अन्तर्गत स्वीकृत महेवा में एन.एच. 28 से अघोर पीठ तक हा.मि.प्ला. द्वारा सड़क सुदृणीकरण।	सदर	नगर निगम गोरखपुर	15.05
187	वार्ड सं. 32 में अवस्थापना विकास निधि के अन्तर्गत स्वीकृत मुख्य मार्ग अग्रसेन तिराहा से बक्सीपुर चौक तथा एक मिनारा मस्जिद से मारवाड़ तक हाट मिक्स प्लांट द्वारा सड़क निर्माण कार्य।	सदर	नगर निगम गोरखपुर	43.35
188	वार्ड सं. 35 में अवस्थापना विकास निधि के अन्तर्गत स्वीकृत दारुल उलूम मदरसा से के.एम.लाल एवं आर.ओ.बी. से राधा मैरेज के सामने तक हाट मिक्स प्लांट द्वारा सड़क निर्माण एवं नाली निर्माण।	सदर	नगर निगम गोरखपुर	33.70
189	वार्ड सं. 42 में अवस्थापना विकास निधि के अन्तर्गत स्वीकृत बजाज पार्क से गीडा आफिस तक हाट मिक्स प्लांट द्वारा सड़क निर्माण कार्य।	सदर	नगर निगम गोरखपुर	37.94
190	वार्ड सं. 46 में अवस्थापना विकास निधि के अन्तर्गत स्वीकृत दुर्गाबाड़ी रोड पर आर्यनगर में पूर्व मन्त्री श्री अमरमणी त्रिपाठी जी के घर के बगल में शिव राधिका हास्पीटल से डा. सच्चिदानन्द वैश्य के मकान से होते हुये ज्ञानमती निवास तथा डा. अभिनव त्रिपाठी जी के मकान तक नाली/इ.ला. गली निर्माण/सड़क निर्माण।	सदर	नगर निगम गोरखपुर	14.91
191	वार्ड सं. 48 में अवस्थापना विकास निधि के अन्तर्गत स्वीकृत गिरधरगंज में हनुमान मंदिर के पीछे पार्क का सौन्दर्यीकरण कार्य।	सदर	नगर निगम गोरखपुर	15.21
192	वार्ड सं. 52 में अवस्थापना विकास निधि के अन्तर्गत स्वीकृत मोहद्दीपुर चौराहे से ओवर ब्रिज तक आर.सी.सी. डिवाइडर का निर्माण।	सदर	नगर निगम गोरखपुर	10.60
193	वार्ड सं. 53 में अवस्थापना विकास निधि के अन्तर्गत स्वीकृत मोहल्ला विस्तार नगर में पंचमुखी हनुमान मंदिर से बष्जेश त्रिपाठी एवं ई.डबलू.एस.–284 से ई.डबलू.एस.–239 तक नाली एवं सड़क निर्माण।	सदर	नगर निगम गोरखपुर	19.73
194	वार्ड सं. 55 में अवस्थापना विकास निधि के अन्तर्गत स्वीकृत गोरखनाथ मंदिर के पीछे लगन पैलेस से हरियाली मैरेज (रामलीला मैदान रोड) तक नाली मरम्मत एवं सड़क चौड़ीकरण एवं एस.डी.बी.सी. से सड़क निर्माण।	सदर	नगर निगम गोरखपुर	72.74
195	वार्ड सं. 57 में अवस्थापना विकास निधि के अन्तर्गत स्वीकृत श्रीवास्तव प्रीन्टिंग प्रेस से काली मंदिर/लक्ष्मी निवास तक हाट मिक्स प्लांट से सड़क व नाली निर्माण।	सदर	नगर निगम गोरखपुर	28.35
196	वार्ड सं. 63 में अवस्थापना विकास निधि के अन्तर्गत स्वीकृत दीवान बाजार में चरनलाल चौक से बेनीगंज चौक तक हाट मिक्स प्लांट से सड़क निर्माण।	सदर	नगर निगम गोरखपुर	36.16

1	2	3	4	5
197	वार्ड सं. 65 में अवस्थापना विकास निधि के अन्तर्गत स्वीकृत पवन त्रिपाठी पूर्व पार्षद आवास से रामलीला मैदान तक पिच सड़क निर्माण	सदर	नगर निगम गोरखपुर	15.11
198	वार्ड सं. 66 में अवस्थापना विकास निधि के अन्तर्गत स्वीकृत निरंकारी भवन के सामने से डा. मलहोत्रा के मकान होते हुए सब्जी मण्डी रोड तक सड़क निर्माण।	सदर	नगर निगम गोरखपुर	32.23
199	वार्ड सं. 69 में अवस्थापना विकास निधि के अन्तर्गत स्वीकृत महुईसुधरपुर में मु. फुलवरिया में बाबुलाल गुप्ता, श्यामनारायण तिवारी, पवन चौबे एवं रामाज्ञा श्रीवास्तव के निकट गलियों में नाली एवं इ.ला. का कार्य।	सदर	नगर निगम गोरखपुर	40.40
200	अवस्थापना विकास निधि के अन्तर्गत स्वीकृत नगर निगम परिसर की सड़कों का निर्माण कार्य।	सदर	नगर निगम गोरखपुर	15.28
201	अवस्थापना विकास निधि के अन्तर्गत स्वीकृत नगर निगम परिसर में स्थित पोखरे के सौन्दर्यीकरण एवं उसमें म्यूजिकल फाउण्टेन लगाने का कार्य।	सदर	नगर निगम गोरखपुर	58.55
202	वार्ड सं. 24/5 में अवस्थापना विकास निधि के अन्तर्गत स्वीकृत एल्यूमिनियम फैक्ट्री रोड से रामप्रीत तिराहा तक नाली मरम्मत एवं सड़क का पुर्ननिर्माण।	सदर	नगर निगम गोरखपुर	46.23
203	वार्ड सं. 68 में 14वें वित्त आयोग के अन्तर्गत स्वीकृत कोतवाली के पास एक अदद मिनी नलकूप का अधिष्ठापन (नखास चौक कोतवाली रोड)	सदर	नगर निगम गोरखपुर	12.50
204	वार्ड सं. 29 में 14वें वित्त आयोग के अन्तर्गत स्वीकृत हुमॉयूपुर उत्तरी में एक अदद मिनी नलकूप का अधिष्ठापन	सदर	नगर निगम गोरखपुर	12.50
205	वार्ड सं. 39 में 14वें वित्त आयोग के अन्तर्गत स्वीकृत पाण्डेयहाता मे मिनी नलकूप का अधिष्ठापन	सदर	नगर निगम गोरखपुर	12.50
206	वार्ड सं. 25 में 14वें वित्त आयोग के अन्तर्गत स्वीकृत जनप्रिय बिहार के कसाईबाड़ा में एक अदद मिनी नलकूप का अधिष्ठापन कार्य।	सदर	नगर निगम गोरखपुर	12.50
207	वार्ड सं. 37 में 14वें वित्त आयोग के अन्तर्गत स्वीकृत कल्यानपुर में एक अदद मिनी नलकूप का अधिष्ठापन	सदर	नगर निगम गोरखपुर	12.50
208	वार्ड सं. 55 में 14वें वित्त आयोग के अन्तर्गत स्वीकृत रसूलपुर इस्लामिया नगर में एक अदद मिनी नलकूप का अधिष्ठापन।	सदर	नगर निगम गोरखपुर	12.50
209	वार्ड सं. 10 में 14वें वित्त आयोग के अन्तर्गत स्वीकृत हरिहरपुरम कालोनी में एक अदद मिनी नलकूप का अधिष्ठापन	सदर	नगर निगम गोरखपुर	12.50
210	वार्ड सं. 32 में 14वें वित्त आयोग के अन्तर्गत स्वीकृत सुमेर सागर से मंदिर के पास एक अदद मिनी नलकूप का अधिष्ठापन।	सदर	नगर निगम गोरखपुर	12.50
211	14वें वित्त आयोग के अन्तर्गत स्वीकृत 60 एचपी बूस्टर पम्प सेट आई.आई. 2 एलटी इन्डक्सन मोटर व पम्प 7200 एलपीएम डिस्चार्ज, 27 मी0 हेड, स्पीड 1450 आर.पी.एम. की आपूर्ति एवं अधिष्ठापन	सदर	नगर निगम गोरखपुर	27.50

1	2	3	4	5
212	14वें वित्त आयोग के अन्तर्गत स्वीकृत 30 एचपी बूस्टर पम्प सेट्स आई.आई. 2 एलटी इन्डक्सन मोटर व पम्प 3500 एलपीएम डिस्चार्ज, 27 मी0 हेड, स्पीड 1450 आर.पी.एम. की आपूर्ति एवं अधिष्ठापन	सदर	नगर निगम गोरखपुर	20.00
213	वार्ड सं. 01 में 14वें वित्त आयोग के अन्तर्गत स्वीकृत महादेव झारखण्डी टुकड़ा नं0 1 के मु. महादेवपुरम में मुख्य मार्ग से वीर भद्र के मकान तक तथा मिश्रा जी के मकान से पार्क तक सड़क के दोनों तरफ डीप ड्रेन का निर्माण।	सदर	नगर निगम गोरखपुर	40.71
214	वार्ड सं. 02 में 14वें वित्त आयोग के अन्तर्गत स्वीकृत मेडिकल कालेज हाईडिल से सेमरा तक नाला निर्माण ।	सदर	नगर निगम गोरखपुर	53.50
215	वार्ड सं. 05 में 14वें वित्त आयोग के अन्तर्गत स्वीकृत अशोक नगर में आनन्द मषरुम से जयकरन सिंह के घर होते हुए षिव मंदिर तक डीप ड्रेन का निर्माण।	सदर	नगर निगम गोरखपुर	27.03
216	वार्ड सं. 08 में 14वें वित्त आयोग के अन्तर्गत स्वीकृत पवन बिहार कालोनी में पानी टंकी से तुर्रा नाला तक नाला निर्माण।	सदर	नगर निगम गोरखपुर	53.85
217	वार्ड सं. 09 में 14वें वित्त आयोग के अन्तर्गत स्वीकृत मिलेनियम सिटी से करीम नगर चौराहा तक नाला निर्माण।	सदर	नगर निगम गोरखपुर	20.02
218	वार्ड सं. 11 में 14वें वित्त आयोग के अन्तर्गत स्वीकृत पिपराइच रोड से जंगल मातादीन हरिजन बस्ती होते हुये जेल बाई पास तक नाला निर्माण।	सदर	नगर निगम गोरखपुर	51.02
219	वार्ड सं. 12 में 14वें वित्त आयोग के अन्तर्गत स्वीकृत मिर्जापुर पचपेड़वा मलिन बस्ती में मातेश्वरी माता मंदिर से देवपोखर होते हुये राम नगर रोड तक नाली निर्माण।	सदर	नगर निगम गोरखपुर	33.33
220	वार्ड सं. 14 में 14वें वित्त आयोग के अन्तर्गत स्वीकृत बहरामपुर क्रासिंग से ऋशि पाण्डेय तक आर.सी.सी. नाला निर्माण।	सदर	नगर निगम गोरखपुर	54.20
221	वार्ड सं. 15 में 14वें वित्त आयोग के अन्तर्गत स्वीकृत फातिमा अस्पताल के पास इन्इद्रप्रस्थपुरम से संगम चौक तक नाला निर्माण।	सदर	नगर निगम गोरखपुर	53.66
222	वार्ड सं. 15 में 14वें वित्त आयोग के अन्तर्गत स्वीकृत पादरी बाजार पुलिस चौकी से फलहारी कुटी तक नाला निर्माण का कार्य।	सदर	नगर निगम गोरखपुर	40.59
223	वार्ड सं. 20 में 14वें वित्त आयोग के अन्तर्गत स्वीकृत झरना टालो में रेशमा देवी से छठ घाट मोड़ तक आर.सी.सी. नाला निर्माण।	सदर	नगर निगम गोरखपुर	52.43
224	वार्ड सं. 27 में 14वें वित्त आयोग के अन्तर्गत स्वीकृत धर्मशाला बाजार में सुमेरसागर मुख्य मार्ग से चौधरी स्वीस्ट वर्कस शाप तक आर.सी.सी. नाला निर्माण।	सदर	नगर निगम गोरखपुर	11.72
225	वार्ड सं. 38 में 14वें वित्त आयोग के अन्तर्गत स्वीकृत मेडिकल रोड पर दिप्ती चतुर्वेदी से धर्मपुर रोड पर नाली निर्माण।	सदर	नगर निगम गोरखपुर	24.10

1	2	3	4	5
226	वार्ड सं. 42 में 14वें वित्त आयोग के अन्तर्गत स्वीकृत बीरबहादुर सिंह की मूर्ति के निकट से एम.पी. बालिका इ0का0 मोड़ तक बाये पटरी पर आर.सी.सी. नाला निर्माण।	सदर	नगर निगम गोरखपुर	29.18
227	वार्ड सं. 42 में 14वें वित्त आयोग के अन्तर्गत स्वीकृत दिग्विजय नाथ कालेज गेट के निकट से एच.पी. डिफेन्स एकेडमी होते हुये एच.पी. स्कूल तक दाहिने पटरी पर आर.सी.सी. नाला निर्माण।	सदर	नगर निगम गोरखपुर	43.30
228	वार्ड सं. 43 में 14वें वित्त आयोग के अन्तर्गत स्वीकृत तुरहाबारी में अंगद चौहान से गटटू पीर बाबा तक नाला निर्माण।	सदर	नगर निगम गोरखपुर	34.69
229	वार्ड सं. 49 में 14वें वित्त आयोग के अन्तर्गत स्वीकृत भेड़ियागढ़ में सतीश सिंह के मकान से प्रदीप सिंह के मकान होते हुये सम्पवेल तक आर.सी.सी. नाला निर्माण।	सदर	नगर निगम गोरखपुर	48.22
230	वार्ड सं. 55 में 14वें वित्त आयोग के अन्तर्गत स्वीकृत शान्ति वरन लान से कौड़िहवा तिराहा तक आर.सी.सी. नाली का कार्य।	सदर	नगर निगम गोरखपुर	24.42
231	वार्ड सं. 58 में 14वें वित्त आयोग के अन्तर्गत स्वीकृत नंगलिया अस्पताल के पास नाला एवं पुलिया निर्माण।	सदर	नगर निगम गोरखपुर	43.04
232	वार्ड सं. 30 में 14वें वित्त आयोग के अन्तर्गत स्वीकृत महेवा चुँगी से मंदिर तक पाइप लाइन का कार्य।	सदर	नगर निगम गोरखपुर	54.05
233	14वें वित्त आयोग के अन्तर्गत स्वीकृत रसूलपुर भट्टा स्थित पम्पिंग सेट हेतु पाइप लाइन बिछाने का कार्य।	सदर	नगर निगम गोरखपुर	30.24
234	वार्ड सं. 05 में 14वें वित्त आयोग के अन्तर्गत स्वीकृत बषारतपुर में एच.एन. सिंह चौराहा से एल्युमिनियम फैक्ट्री तक हाट मिक्स प्लांट द्वारा सड़क सुधार कार्य।	सदर	नगर निगम गोरखपुर	100.45
235	वार्ड सं. 18 में 14वें वित्त आयोग के अन्तर्गत स्वीकृत दिव्यनगर कालोनी की मुख्य सड़क का निर्माण।	सदर	नगर निगम गोरखपुर	137.92
236	वार्ड सं. 42 में 14वें वित्त आयोग के अन्तर्गत स्वीकृत कचहरी चौक से हरिओम तिराहा होते हुये याक्षी कम्पाउण्ड तक हाट मिक्स प्लांट द्वारा सड़क निर्माण।	सदर	नगर निगम गोरखपुर	63.96
237	वार्ड सं. 15 में अमृत मिशन के अन्तर्गत स्वीकृत शिवपुर सहबाजगंज में बैंक कालोनी पार्क का सौन्दर्यीकरण एवं सुधार कार्य।	सदर	नगर निगम गोरखपुर	77.76
238	वार्ड सं. 10 में अमष्त मिशन के अन्तर्गत स्वीकृत राप्तीनगर पार्क का मरम्मत, सौन्दर्यीकरण एवं सुधार कार्य।	सदर	नगर निगम गोरखपुर	44.20
239	वार्ड सं. 12 मु. मिर्जापुर पचपेडवा में देवेन्द्र शुक्ला से ओम प्रकाश चौहान एवं विभिन्न लेन मे नाली एवं इ.ला. निर्माण कार्य।	सदर	नगर निगम गोरखपुर	46.12
240	वार्ड सं. 12 क्षत्रिय बाबा मन्दिर के सामने चावला लेन बद्री टिम्बर का मकान एवं शेष क्षतिग्रस्त रोड पर नाली व इ.ला. निर्माण कार्य।	सदर	नगर निगम गोरखपुर	19.33

1	2	3	4	5
241	वार्ड सं. 12 रिंकू राय से साक्षी पैलेस होते हुये मातेश्वरी मन्दिर तक नाली व हाट मिक्स प्लांट द्वारा सड़क का निर्माण कार्य।	सदर	नगर निगम गोरखपुर	42.88
242	वार्ड सं. 13 हुमायूँपुर चौक से शिवमंदिर (नौतनवा रेलवे क्रासिंग) तक सी.सी. सड़क एवं नाली निर्माण।	सदर	नगर निगम गोरखपुर	61.36
243	वार्ड सं. 30 श्री अजय तिवारी से श्री ज्ञानेन्द्र सिंह के मकान होते हुये श्री गिरजेश त्रिपाठी पत्रकार तक हा.मि.प्ला. द्वारा सड़क निर्माण कार्य	सदर	नगर निगम गोरखपुर	17.99
244	वार्ड सं. 43 मु. राजेन्द्र नगर पश्चिमी में मुख्य मार्ग से एम.पी. पालीटेक्निक गेट तक व पी.के. अग्रवाल के घर से आर.पी. श्रीवास्तव प. मदन मोहन के मकान तक सड़क पटरी पर इ.ला. व नाली का निर्माण कार्य।	सदर	नगर निगम गोरखपुर	19.68
245	वार्ड सं. 43 मु. राजेन्द्र नगर पश्चिमी में अशोक श्रीवास्तव से रमेश चन्द्र पाण्डेय व विजय वर्मा से श्रीमती सीता त्रिपाठी एवं प्रदीव जयसवाल से ए.के. गुप्ता तक सड़क व इ.ला. व नाली निर्माण कार्य।	सदर	नगर निगम गोरखपुर	19.30
246	वार्ड सं. 55 मु. रसूलपुर में चोधरी पैलेस से अशोक कुमार पाण्डेय व डा. महेन्द्र पाठक से बी.बी. मणि त्रिपाठी एवं पंकज पाण्डेय से जे.पी. विद्यालय एवं नरेश विश्वकर्मा के मकान तक हा.मि.प्ला. द्वारा सड़क एवं नाली निर्माण कार्य।	सदर	नगर निगम गोरखपुर	49.19
247	वार्ड सं. 55 रसूलपुर में सेन्ट जोसफ स्कूल से मेन रोड तक हा.मि.प्ला. द्वारा सड़क एवं नाली निर्माण कार्य।	सदर	नगर निगम गोरखपुर	40.62
248	वार्ड सं. 65 रसूलपुर मुख्य मार्ग से पटेल जी, इमामबाड़ा, शिव प्रसाद, रामबेलास, जियाउद्दीन एवं रैन बसेरा से विश्वकर्मा मंदिर तक नाली व इ.ला. निर्माण कार्य।	सदर	नगर निगम गोरखपुर	45.10
249	वार्ड सं. 65 पुराना गोरखपुर में अकरम से छेदी सुल्तान का घर होते हुये बरकतुल्लाह तक नाली, इ.ला. निर्माण कार्य।	सदर	नगर निगम गोरखपुर	14.76
250	वार्ड सं. 23 दाउदपुर इन्दिरा नगर में ज्ञानदीप पब्लिक स्कूल के पास एक अदद मिनी नलकूप का अधिष्ठापन।	सदर	नगर निगम गोरखपुर	14.76
251	वार्ड सं. 31 शाहपुर आवास विकास कालोनी में श्री चन्द्रशेखर सिंह के घर के पीछे पार्क में एक अदद नलकूप का अधिष्ठापन।	सदर	नगर निगम गोरखपुर	14.76
252	वार्ड सं. 56 हजारीपुर प्राथमिक विद्यालय परिसर में एक अदद नलकूप का अधिष्ठापन।	सदर	नगर निगम गोरखपुर	14.76
253	वार्ड सं. 65 पुराना गोरखपुर शिव मंदिर पर एक अदद मिनी नलकूप का अधिष्ठापन।	सदर	नगर निगम गोरखपुर	14.76
254	वार्ड सं. 60 इलाहीबाग बन्धे के पास एक अदद मिनी कलकूप का अधिष्ठापन।	सदर	नगर निगम गोरखपुर	14.76
255	वार्ड सं. 7 मानवेला में पोखरे से हनुमान मंदिर के पीछे होते हुए झुंगिया फर्टिलाइजर रोड स्थित पुरानी पुलिया तक आर.सी.सी. नाला निर्माण कार्य	सदर	नगर निगम गोरखपुर	53.10

1	2	3	4	5
256	वार्ड सं. 11 जेल बाई पास के किनारे सुन्दर नगर कालोनी से पुलिया तक आर.सी.सी. नाला निर्माण कार्य।	सदर	नगर निगम गोरखपुर	52.99
257	वार्ड सं. 12 लच्छीपुर में दुर्गा मंदिर से पिन्टु जनरल स्टोर होते हुये रामप्रसाद आप्टीशियन अहाता तक आर.सी.सी. नाले का निर्माण।	सदर	नगर निगम गोरखपुर	29.27
258	वार्ड सं. 15 जंगल सालिकराम में इन्द्रप्रस्थपुरम कालोनी से फातिमा हास्पीटल होते हुए शताब्दीपुरम चौराहा तक आर.सी.सी. नाला निर्माण।	सदर	नगर निगम गोरखपुर	51.96
259	वार्ड सं. 35 सुरजकुण्ड कालोनी में आर.ओ.बी. के किनारे महिपाल सिंह से मुख्य मार्ग (मंन्तबली) तक आर.सी.सी. नाला निर्माण कार्य।	सदर	नगर निगम गोरखपुर	16.89
260	रानीडिहा से भक्ता तिराहा तक 110 वाट एलईडी लाईट आपूर्ति/ फिटिंग का कार्य।	सदर	नगर निगम गोरखपुर	40.76
261	वार्ड सं. 09 मेडिकल कालेज रोड स्थिति कष्णा स्वीट हाउस से करीमनगर चौराहा तक हाट मिक्स प्लांट द्वारा सड़क निर्माण कार्य।	सदर	नगर निगम गोरखपुर	70.37
262	वार्ड सं. 11 पिपराइच रोड से मु. ज्ञानपुरम में पूर्व विधायक श्री लल्लन प्रसाद त्रिपाठी के घर तक हाट मिक्स प्लांट द्वारा सड़क निर्माण कार्य।	सदर	नगर निगम गोरखपुर	18.24
263	वार्ड सं. 14 माधोपुर में श्री रामजनम निषाद से सदानन्द साहनी तक सी.सी. सड़क व नाली निर्माण कार्य।	सदर	नगर निगम गोरखपुर	19.00
264	वार्ड सं. 15 महुआ पेड़ तिराहे से फातिमा बाई पास तक हाट मिक्स प्लांट द्वारा सड़क निर्माण कार्य।	सदर	नगर निगम गोरखपुर	48.81
265	वार्ड सं. 20 सिघासनपुर में अंजली ज्वेलर्स से राम आधारे तक इ.ला. सड़क, आर.सी.सी. नाली निर्माण कार्य।	सदर	नगर निगम गोरखपुर	53.71
266	वार्ड सं. 22 आटा चक्की से हनुमान मंदिर होते हुए श्री चन्द्रभान प्रजापति एवं अनरुद्ध कुमार के घर तक हा.मि.प्ला. से सड़क निर्माण कार्य।	सदर	नगर निगम गोरखपुर	52.67
267	वार्ड सं. 33 बेतियाहाता दक्षिणी में दुर्गा मंदिर रोड से नवल्स एकेडमी के उत्तरी गेट से धमेन्द्र तिवारी से पी0सी0 सिंह तक नाली सड़क का निर्माण	सदर	नगर निगम गोरखपुर	19.57
268	वार्ड सं. 35 सूरजकुण्ड कालोनी (सरस्वती शिशु बालिका विद्यालय) में पी.एन. श्रीवास्तव से सेन्ट्रल बैंक तक हा.मि.प्ला. द्वारा सड़क एवं साइड पटरी पर इ.ला. निर्माण कार्य।	सदर	नगर निगम गोरखपुर	32.46
269	वार्ड 40 राजू के मकान से रंजन के मकान व मजार होते हुए ट्रान्सफार्मर चिलमापुर तक हाट मिक्स प्लांट द्वारा सड़क नाली निर्माण कार्य।	सदर	नगर निगम गोरखपुर	52.26
270	वार्ड 41 मिर्जापुर गोड़ियाना में मुन्नु पंडित से हार्बट बाँध राजेश कुशवाहा तक सी.सी. सड़क व नाली का निर्माण कार्य।	सदर	नगर निगम गोरखपुर	52.13
271	वार्ड 43 मो. संतोषनगर में सोनौली रोड से शिवम इन्दस्ट्रीज तक हाट मिक्स प्लांट द्वारा सड़क चौड़ीकरण का कार्य।	सदर	नगर निगम गोरखपुर	31.22

1	2	3	4	5
272	वार्ड 66 श्री न्यू माधोपुर कालोनी गैस गोदाम के सामने से बी.एन. पब्लिक स्कूल व विजय सिंह के मकान होते हुये श्री जितेन्द्र यादव तक सड़क सी.सी. सड़क निर्माण कार्य।	सदर	नगर निगम गोरखपुर	23.74
273	वार्ड 69 महुईसुारपुर में शिवाजी नगर सेक्टर 2 में डा. सिन्हा के मकान से फलवरिया चौराहे तक हा.मि.प्ला. द्वारा सड़क व नाली का निर्माण कार्य	सदर	नगर निगम गोरखपुर	48.87
274	लखनऊ गोरखपुर रोड पर नगर निगम सीमा से नौसढ़ तिराहे की ओर बन्धे का सौन्दर्यीकरण।	सदर	नगर निगम गोरखपुर	100.00
275	इण्डस्ट्रीयल एरिया में नकहा रेलवे स्टेशन मार्ग के निकट विभिन्न गलियों में हाट मिक्स प्लांट द्वारा सड़क निर्माण कार्य।	सदर	नगर निगम गोरखपुर	82.50
276	लाल बहादुर शास्त्री चौराहे के विकास एवं सौन्दर्यीकरण के अन्तर्गत विभिन्न कार्य।	सदर	नगर निगम गोरखपुर	100.00
277	वार्ड–16, शास्त्रीपुरम में झूला पार्क का मरम्मत, सौन्दर्यीकरण एवं सुधार कार्य तथा 05 वर्ष हेतु रख–रखाव।	सदर	नगर निगम गोरखपुर	51.20
278	वार्ड–40, दीवान बाजार पार्क (न्यू कालोनी) मरम्मत, सौन्दर्यीकरण एवं सुधार कार्य तथा 05 वर्ष हेतु रख–रखाव।	सदर	नगर निगम गोरखपुर	31.50
279	वार्ड–20 आवास विकास कालोनी के मकान सं. 368 के सामने पार्क का मरम्मत, सौन्दर्यीकरण एवं सुधार कार्य तथा 05 वर्ष हेतु रख–रखाव।	सदर	नगर निगम गोरखपुर	36.50
280	वार्ड–56, मकान सं. ई.डबलू.एस. 377 के सामने पार्क का मरम्मत, सौन्दर्यीकरण एवं सुधार कार्य तथा 05 वर्ष हेतु रख–रखाव।	सदर	नगर निगम गोरखपुर	48.00
281	वार्ड–50, में मकान सं. ई.डबलू.एस. 03 के सामने पार्क का मरम्मत, सौन्दर्यीकरण एवं सुधार कार्य तथा 05 वर्ष हेतु रख–रखाव।	सदर	नगर निगम गोरखपुर	36.10
282	वार्ड–35, लालडिग्गी पार्क का मरम्मत, सौन्दर्यीकरण एवं सुधार कार्य।	सदर	नगर निगम गोरखपुर	416.64
	योगः– कुल शिलान्यासः– 110			**4510.47**
महायोग :–				**181537.90**